

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीकासमण्णिदो

तस्स

संतकम्मगब्भिएसु सेस-अट्ठारह-अणियोगद्दारेसु

७ णिबंधणाणियोगद्दारं

णिट्ठवियअट्ठकम्मं केवलणाणेण दिट्ठपरमट्ठं ।
णमिऊणरिट्ठणेमि वोच्छामि णिबंधणणियोगं ॥

भूदबलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिद-सेसअट्ठारसअणियोगद्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो । तंजहा– निबध्यते तदस्मिन्निति निबंधनम् , जं दव्वं जम्हि णिबद्धं तं णिबंधणं ति भणिदं होदि । णिबंधणे त्ति अणियोगद्दारे णिबंधणं ताव अपयदणिबंधणणिराकरणट्ठं णिक्खिवियव्वं । तं जहा–

जिन्होंने आठ कर्मोंका अन्त करके प्रगट हुए केवलज्ञानके द्वारा पदार्थके यथार्थ स्वरूपको देख लिया है ऐसे अरिष्टनेमि जिनेन्द्र (बाईसवें तीर्थंकर) को नमस्कार करके निबन्धन अनुयोगद्वारका कथन करते हैं ॥

भूतबलि भट्टारकने चूंकि यह सूत्र देशामर्शक रूपसे लिखा है, अत एव इस सूत्रके द्वारा सूचित शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी कुछ संक्षेपसे प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— 'निबध्यते तदस्मिन्निति निबन्धनम्' इस निरुक्तिके अनुसार जो द्रव्य जिसमें सम्बद्ध है उसे निबन्धन कहा जाता है। 'निबन्धन' इस अनुयोगद्वारमें पहिले अप्रकृत निबन्धनके निराकरणार्थ निबन्धनका निक्षेप करते हैं। वह इस प्रकार है—नामनिबन्धन, स्थापनानिबन्धन, द्रव्यनिबन्धन,

णामणिबंधणं ठवणणिबंधणं दव्वणिबंधणं खेत्तणिबंधणं कालणिबंधणं भावणिबंधणं चेदि छव्विहं णिबंधणं होदि। जस्स णामस्स वाचगभावेण पवुत्तीए जो अत्थो आलंबणं होदि सो णामणिबंधणं णाम, तेण विणा णामपवुत्तीए अभावादो। तं च णामणिबंधणमत्थाहिहाण-पच्चयभेएण तिविहं। तत्थ अत्थो अट्ठविहो एग-बहुजीवाजीवजणिदपादेक्क-संजोगभंगभेएण। एदेसु अट्ठसु अत्थेसुप्पण्णणाणं[1] पच्चयणिबंधणं। जो णामसद्दो पवुत्तो[2] संतो अप्पाणं चेव जाणावेदि तमभिहाणणिबंधणं णाम। अथवा, एदं सव्वं पि दव्वादिणिबंधणेसु पविसदि त्ति मोत्तूण णिबंधणसद्दो चेव णामणिबंधणं ति घेत्तव्वं, एवं संते पुणरुत्तदोसाभावादो। ठवणणिबंधणं दुविहं सब्भावासब्भावट्ठवणणिबंधणभेएण। जं जहा[3] अणुयारइ अप्पिददव्वं तं तहा ठविदं सब्भावट्ठवणणिबंधणं। तव्विवरीयमसब्भावट्ठवणणिबंधणं। जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि जस्स वा दव्वस्स[4] सहावो दव्वंतरपडिबद्धो तं दव्वणिबंधणं। खेत्तणिबंधणं णाम गाम-णयरादीणि[5], पडिणियदखेत्ते तेसिं पडिबद्धत्तुवलंभादो। जो जम्हि काले पडिबद्धो अत्थो तक्कालणिबंधणं। तं जहा— चूअ[6]फुल्लाणि चेत्तमासणिबद्धाणि, अंबिलियाहुल्लाणि आसाढमासणिबद्धाणि, वियइल्ल-

क्षेत्रनिबन्धन, कालनिबन्धन और भावनिबन्धन इस प्रकार निबन्धन छह प्रकारका है। जिस नामकी वाचक रूपसे प्रवृत्तिमें जो अर्थ आलम्बन होता है वह नाम निबन्धन है, क्योंकि, उसके विना नामकी प्रवृत्ति सम्भव नहीं है। वह नामनिबन्धन अर्थ, अभिधान और प्रत्ययके भेदसे तीन प्रकारका है, उनमें एक व बहुत जीव तथा अजीवसे उत्पन्न प्रत्येक व संयोगी भंगोंके भेदसे अर्थ आठ प्रकारका है। इन आठ अर्थोंमें उत्पन्न हुआ ज्ञान प्रत्ययनिबन्धन कहलाता है। जो संज्ञा शब्द प्रवृत्त होकर अपने आपको जतलाता है वह अभिधाननिबन्धन कहा जाता है। अथवा, यह सभी चूंकि द्रव्यनिबन्धन आदिक निबन्धनोंमें प्रविष्ट हैं, अत एव उसे छोड़कर 'निबन्धन' शब्दको ही नामनिबन्धन रूपसे ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा होनेपर पुनरुक्त दोष नहीं आता।

स्थापनानिबन्धन सद्भावस्थापनानिबन्धन और असद्भावस्थापनानिबन्धनके भेदसे दो प्रकारका है। जो जिस प्रकारसे विवक्षित द्रव्यका अनुसरण करता है उसको उसी प्रकारसे स्थापित करना सद्भावस्थापनानिबन्धन है। उससे विपरीत असद्भावस्थापनानिबन्धन है। जो द्रव्य जिन द्रव्योंका आश्रय करके परिणमन करता है, अथवा जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे प्रतिबद्ध है वह द्रव्यनिबन्धन कहलाता है। ग्राम व नगर आदि क्षेत्रनिबन्धन हैं, क्योंकि, प्रतिनियत क्षेत्रमें उनका सम्बन्ध पाया जाता है। जो अर्थ जिस कालमें प्रतिबद्ध है वह कालनिबन्धन कहा जाता है। यथा— आम्र वृक्षके फूल चैत्र माससे सम्बद्ध हैं, अम्लिकाके फूल आषाढ़ माससे

१ काप्रतौ 'अत्थेसुप्पण्णणाणं' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। काप्रतौ 'सद्दो ण वुत्तो' ताप्रतौ 'सद्दो [ण] वुत्तो' इति पाठः। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। का-ताप्रत्योः 'तं जहा' इति पाठः। ४ प्रत्योरुभयोरेव 'सहस्स' इति पाठः। ५ ताप्रतौ 'गामणयरादीहि इति पाठः। ६ प्रत्योरुभयोरेव 'भूअ' इति पाठः।

फुल्लाणि वइसाह-जेट्ठमासणिबद्धाणि; तत्थेव तेसिमुवलंभादो। एवमण्णेसिं पि कालणिबंधणं जाणिऊण वत्तव्वं। पंचरत्तियाओ णिबंधो त्ति वा। जं दव्वं भावस्स आलंबणमाहारो होदि तं भावणिबंधणं। जहा लोहस्स हिरण्ण-सुवण्णादीणि णिबंधणं, ताणि अस्सिऊण तदुप्पत्तिदंसणादो[1], उप्पण्णस्स वि लोहस्स तदावलंबणदंसणादो। कोहुप्पत्तिणिमित्तदव्वं कोहणिबंधणं उप्पण्णकोहावलंबणदव्वं वा। एत्थ एदेसु णिबंधणेसु केण णिबंधणेण पयदं? णाम-ट्ठवणणिबंधणाणि मोत्तूण सेससव्वणिबंधणेसु पयदं। एदं णिबंधणाणिओगद्दारं जदि वि छण्णं दव्वाणं णिबंधणं परूवेदि तो वि तमेत्थ मोत्तूण कम्मणिबंधणं चेव घेत्तव्वं, अज्झप्पविज्जाए अहियारादो। किमट्ठं णिबंधणाणिओगद्दारमागयं? दव्व-खेत्त-काल-भावेहि कम्माणि परूविदाणि, मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगपच्चया वि तेसिं परूविदा, तेसिं कम्माणं पाओग्गपोग्गलाणं पि परूवणा कदा। संपहि तेसिं कम्माणं लद्धप्पसरूवाणं वावारपदुप्पायणट्ठं णिबंधणाणियोगद्दारमागयं। तत्थ जं तं णोआगमदो-कम्मदव्वणिबंधणं तं दुविहं—मूलकम्मणिबंधणं उत्तरकम्मणिबंधणं चेदि। तत्थ अट्ठ मूलकम्माणि, तेसिं णिबंधणं वत्तइस्सामो। तं जहा—

सम्बद्ध हैं, विचकिल नामक वृक्षविशेषके फूल वैशाख व ज्येष्ठ माससे सम्बद्ध हैं; क्योंकि, वे इन्हीं मासोंमें पाये जाते हैं। इसी प्रकार दूसरोंके भी कालनिबन्धनका जानकर कथन करना चाहिये। अथवा पंचरात्रिक निबन्धन कालनिबन्धन है (?)। जो द्रव्य भावका आलम्बन अर्थात् आधार होता है वह भावनिबन्धन है। जैसे – लोभके चांदी-सोना आदिक निबन्धन हैं, क्योंकि, उनका आश्रय करके लोभकी उत्पत्ति देखी जाती है, तथा उत्पन्न हुआ लोभ भी उनका आलम्बन देखा जाता है। क्रोधकी उत्पत्तिका निमित्तभूत द्रव्य अथवा उत्पन्न हुआ क्रोध जिसका आलम्बन होता है वह क्रोधनिबन्धन कहा जाता है।

शंका—यहां इन निबन्धनोंमेंसे कौनसा निबन्धन प्रकृत है?

समाधान—नामनिबन्धन और स्थापनानिबन्धनको छोड़कर शेष सब निबन्धन यहां प्रकृत हैं। यह निबन्धनानुयोगद्वार यद्यपि छह द्रव्योंके निबन्धनकी प्ररूपणा करता है तो भी यहां उसे छोड़कर कर्मनिबन्धनको ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यहां आध्यात्मविद्याका अधिकार है।

शंका—निबन्धनानुयोगद्वार किसलिये आया है?

समाधान—द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके द्वारा कर्मोंकी प्ररूपणा की जा चुकी है; उनके मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग रूप प्रत्ययोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है; तथा उन कर्मोंके योग्य पुद्गलोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है। अब आत्मलाभको प्राप्त हुए उन कर्मोंके व्यापारका कथन करनेके लिये निबन्धनानुयोगद्वार आया है।

उनमें जो नोआगमकर्मद्रव्यनिबन्धन है वह दो प्रकारका है—मूलकर्मनिबन्धन और उत्तरकर्मनिबन्धन। उनमें मूल कर्म आठ हैं, उनके निबन्धनका कथन करते हैं। यथा—

---

१ ताप्रतौ 'तदुववत्तिदंसणादो' इति पाठः।

तत्थ णाणावरणं सव्वदव्वेसु णिबद्धं[1], णोसव्वपज्जाएसु ॥१॥

सव्वदव्वेसु णिबद्धं ति केवलणाणावरणमस्सिदूण भणिदं । कुदो ? तिकालविसय-अणंतपज्जायभरिदछदव्वविसयकेवलणाणविरोहित्तादो । णोसव्वपज्जाएसु त्ति वयणं सेस-णाणावरणाणि पडुच्च भणिदं, सेसणाणाणं सव्वदव्वग्गहणसत्तीए अभावादो । मदि-सुद-णाणाणं सव्वदव्वविसयत्तं किण्ण वुच्चदे, तासिं मुत्तामुत्तासेसदव्वेसु वावारुवलंभादो ? ण एस दोसो, तेसिं दव्वाणमणंतेसु पज्जाएसु तिकालविसएसु तेहि सामण्णेणावगएसु विसेससरूवेण वावाराभावादो । भावे वा केवलणाणेण समाणत्तं तेसिं पावेज्ज । ण च एवं, पंचणाणुवदेसस्स अभावप्पसंगादो । णोसद्दो सव्वपडिसेहओ[2] त्ति किण्ण घेप्पदे ? [ण,] णाणावरणस्साभावस्स पसंगादो, सु [व] वयणविरोहादो च । तम्हा णोसद्दो देसपडिसेहओ त्ति घेत्तव्वं ।

एवं दंसणावरणीयं ॥ २ ॥

दंसणावरणीयं णाम अप्पाणम्मि चेव णिबद्धं, अण्णहा णाण-दंसणाणमेयत्तप्प-

उनमें ज्ञानावरण सब द्रव्योंमें निबद्ध है, वह सब पर्यायोंमें निबद्ध नहीं है ॥१॥

'सब द्रव्योंमें निबद्ध है' यह केवल ज्ञानावरणका आश्रय करके कहा गया है, क्योंकि, वह तीनों कालोंको विषय करनेवाली अनन्त पर्यायोंसे परिपूर्ण ऐसे छह द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञानका विरोध करनेवाली प्रकृति है । 'सब पर्यायोंमें निबद्ध नहीं है' यह वचन शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी अपेक्षासे कहा गया है, क्योंकि, शेष चार ज्ञानोंमें सब द्रव्योंको ग्रहण करनेकी शक्ति नहीं पाई जाती।

शंका—मतिज्ञान व श्रुतज्ञान सब द्रव्योंको विषय करनेवाले हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते; क्योंकि, उनका मूर्त व अमूर्त सब द्रव्योंमें व्यापार पाया जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उन द्रव्योंकी त्रिकालविषयक अनन्त पर्यायोंमें उन ज्ञानोंकी सामान्य रूपसे प्रवृत्ति है, विशेष रूपसे नहीं है। अथवा यदि उनमें उनकी विशेष रूपसे भी प्रवृत्ति स्वीकार की जाय तो वे दोनों ज्ञान केवलज्ञानकी समानताको प्राप्त हो जावेंगे। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर पांच ज्ञानोंका जो उपदेश प्राप्त है उसके अभावका प्रसंग आता है ।

शंका—'नो' शब्दको सबके प्रतिषेधक रूपसे क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वैसा स्वीकार करनेपर एक तो ज्ञानावरणके अभावका प्रसंग आता है, दूसरे स्ववचनका विरोध भी होता है। इसलिये 'नो' शब्दको देशप्रतिषेधक ही ग्रहण करना चाहिये ।

इसी प्रकार दर्शनावरण भी सब द्रव्योंमें निबद्ध है, सब पर्यायोंमें वह निबद्ध नहीं है ॥२॥

शंका—दर्शनावरणीय कर्म आत्मामें ही निबद्ध है, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर ज्ञान

१ काप्रतौ 'णिबंधणं', ताप्रतौ 'णिबंधणं (णिबद्धं)' इति पाठः । २ काप्रतौ 'सद्दपडिसेहओ', ताप्रतौ सद्द (व्व) पडिसेहओ' इति पाठः ।

संगादो। ण च विसय-विसयिसण्णिवादाणंतरसमए सामण्णग्गहणं दंसणं, विषय-विषयि-सन्निपातानन्तरमाद्यग्रहणमवग्रह इति लक्षणात् ज्ञानत्वं प्राप्तस्यावग्रहस्य दर्शनत्वविरोधात्। किं च— ण विसेसेण विणा सामण्णं चेव घेप्पदि, दव्व-खेत्त-काल-भावेहि अविसेसिदस्स गहणत्ताणुववत्तीदो। किं च — णाणेण किमवत्थुपरिच्छेदो[1] आहो वत्थुपरिच्छेदो कीरदि? ण पढमपक्खो, घड-पडादिवत्थूणं परिच्छेदयाभावेण सयललोगसंववहाराभावप्पसंगादो। ण बिदियपक्खो वि, दंसणस्स णिव्विसयत्तप्पसंगादो। एवं दंसणं पि ण वुत्तदोसे अइक्कमइ। [ण च] णाण-दंसणेहि अक्कमेण वत्थुपरिच्छेदो कीरदि, दोण्णमक्कमेण पवुत्ति-विरोहादो। एदं कुदो णव्वदे? "हंदि दुवे णत्थि उवजोगा"[2] इदि वयणादो। ण च कमेण वत्थुपरिच्छित्तिं कुणंति, केवलणाण-दंसणाणं पि कमपवुत्तिप्पसंगादो। दोण्णमेक्कदरस्स अभावो वि होज्ज, अग्गहिदग्गहणाभावादो। तम्हा एवं दंसणावरणस्से त्ति वयणं

और दर्शनके एक होनेका प्रसंग आता है। यदि कहा जाय कि विषय और विषयीके संनिपातके अनन्तर समयमें जो सामान्य ग्रहण होता है वह दर्शन है तो यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, विषय और विषयीके संनिपातके अनन्तर जो आद्य ग्रहण होता है वह अवग्रह कहा जाता है, इस प्रकारके लक्षणसे ज्ञानस्वरूपको प्राप्त हुए अवग्रहके दर्शन होनेका विरोध आता है। दूसरे, विशेषके विना केवल सामान्यका ग्रहण करना शक्य भी नहीं है, क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी विशेषतासे रहित केवल सामान्यका ग्रहण बन नहीं सकता। तीसरे, ज्ञान क्या अवस्तुको ग्रहण करता है अथवा वस्तुको? प्रथम पक्ष तो सम्भव नहीं है, क्योंकि, ज्ञानके घट पट आदि वस्तुओंका परिच्छेदक न रहनेसे समस्त लोकव्यवहारके अभाव हो जानेका प्रसंग आता है। द्वितीय पक्ष भी नहीं बनता है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर दर्शनके निर्विषय हो जानेका प्रसंग आता है। इसी प्रकार दर्शनमें भी उक्त दोनों दोषोंका प्रसंग आता है। ज्ञान व दर्शन युगपत् वस्तुका परिच्छेदन करते हैं, यह भी नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि, दोनोंकी युगपत् प्रवृत्ति होनेमें विरोध आता है।

प्रतिशंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

प्रतिशंका समाधान—यह "खेद है कि दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते" इस आगम-वचनसे जाना जाता है।

यदि कहा जाय कि वे क्रमसे वस्तुका परिच्छेदन करते हैं तो यह भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर केवलज्ञान और केवलदर्शनके भी क्रमप्रवृत्तिका प्रसंग आता है। तथा दोनोंमेंसे किसी एकका अभाव भी हो जाना चाहिये, क्योंकि, वैसा होनेपर दूसरेके अगृहीत-ग्रहण सम्भव नहीं है। इस कारण "ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण भी है" ऐसा जो वचन कहा गया है वह घटित नहीं होता है?

---

१ काप्रतौ 'परिच्छिदि' इति पाठः। २ दंसण-णाणावरणक्खए समाणम्मि कस्स पुव्वअरं। होज्ज समं उप्पाओ हंदि दुए णत्थि उवओगा॥ सम्मइ० २-९.

ण घडदे । ण एस दोसो, सरूवस्स बज्झत्थपडिबद्धस्स संवेयणं[1] दंसणं णाम । ण च बज्झत्थेण असंबद्धं सरूवमत्थि, णाण-सुह-दुक्खाणं सव्वेसिं पि बज्झत्थावट्ठंभबलेणेव तेसिं पवुत्तिदंसणादो । तदो एवं दंसणावरणीयस्से त्ति वयणं घडदि त्ति सिद्धं । सेसं जाणिऊण वत्तव्वं ।

वेयणीयं सुह-दुक्खम्हि णिबद्धं ॥ ३ ॥

सिरोवेयणादी दुक्खं णाम । तस्स उवसमो तदणुप्पत्ती वा दुक्खुवसमहेउदव्वादिसंपत्ती वा सुहं णाम । तत्थ वेयणीयं णिबद्धं, तदुप्पत्तिकारणत्तादो ।

मोहणीयमप्पाणम्मि णिबद्धं ॥ ४ ॥

कुदो ? सम्मत्त-चरित्ताणं जीवगुणाणं घायणसहावादो । सम्मत्त-चारित्ताणि णाण-दंसणाणीव बज्झत्थसंबद्धाणि चेव, तदो मोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धमिदि किण्ण वुच्चदे । ण एस दोसो, चत्तारि वि घाइकम्माणि जीवम्हि चेव णिबद्धाणि त्ति जाणावणट्ठं बज्झत्थाणवलंबणादो[2] ।

आउअं भवम्मि णिबद्धं ॥ ५ ॥

कुदो ? भवधारणलक्खणत्तादो । को भवो णाम ? उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि बाह्य अर्थसे सम्बद्ध आत्मस्वरूपके जाननेका नाम दर्शन है । यदि कहा जाय कि आत्मस्वरूप बाह्य अर्थसे सम्बन्ध नहीं रखता सो भी कहना ठीक नहीं है क्योंकि ज्ञान, सुख व दुखरूप उन सभीकी प्रवृत्ति बाह्य अर्थके आलम्बनसे ही देखी जाती है । अत एव "ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण भी है" यह वचन संगत ही है, यह सिद्ध है । शेष कथन जानकर करना चाहिये ।

वेदनीय सुख व दुखमें निबद्ध है ॥३॥

सिरकी वेदना आदिका नाम दुख है । उक्त वेदनाका उपशान्त हो जाना, अथवा उसका उत्पन्न ही न होना, अथवा दुक्खोपशान्तिके कारणभूत द्रव्यादिककी प्राप्ति होना; इसे सुख कहा जाता है । उनमें वेदनीय कर्म निबद्ध है, क्योंकि वह उनकी उत्पत्तिका कारण है ।

मोहनीय कर्म आत्मामें निबद्ध है ॥४॥

कारण कि उसका स्वभाव सम्यक्त्व व चारित्र रूप जीवगुणोंके घातनेका है ।

शंका—ज्ञान व दर्शनके समान सम्यक्त्व एवं चारित्र भी चूंकि बाह्य अर्थसे ही सम्बन्ध रखते हैं, अत एव 'मोहनीय कर्म सब द्रव्योंमें निबद्ध है'; ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, चारों ही घातिया कर्म जीव द्रव्यमें ही निबद्ध हैं, यह जतलानेके लिये यहां बाह्य अर्थका अवलम्बन नहीं लिया है ।

आयु कर्म भवके विषयमें निबद्ध है ॥ ५ ॥

कारण कि भव धारण करना यह उसका लक्षण है।

शंका—भव किसे कहते हैं ?

१ काप्रतौ 'पडिबद्धस्स तंवेयणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'बज्झत्थाणावलंबणादो' इति पाठः ।

चरिमसमओ त्ति जो अवत्थाविसेसो सो भवो णाम ।

णामं तिधा णिबद्धं, पोग्गलविवागणिबद्धं जीवविवागणिबद्धं खेत्तविवागणिबद्धं ॥ ६ ॥

वण्ण-गंध-रस-फास-संघादणादीणं विवागो पोग्गलणिबद्धो, तेसिमुदएण वण्णादीणमुप्पत्तिदंसणादो । तित्थयरादीणि कम्माणि जीवणिबद्धाणि, तेसिं विवागस्स जीवे चेवुवलंभादो । आणुपुव्वी खेत्तणिबद्धा, पडिणियदखेत्ते चेव तिस्से विवागुवलंभादो । तेण णामं तिधा णिबद्धं ति सिद्धं ।

गोदमप्पाणम्हि णिबद्धं ॥ ७ ॥

कुदो ? उच्च-णीचगोदाणं जीवपज्जायत्तणेण दंसणादो ।

अंतराइयं दाणादिणिबद्धं ॥ ८ ॥

कुदो ? दाणादीणं विग्घकरणे तव्वावारुवलंभादो । एवं मूलपयडिणिबंधणपरूवणं समत्तं ।

संपहि उत्तरपयडिणिबंधणं वुच्चदे । तं जहा—

चत्तारि णाणावरणीयाणि दव्वपज्जायाणं देसणिबद्धाणि ॥ ९ ॥

ओहिणाणं [दव्वदो] मुत्तिदव्वाणि चेव जाणदि णामुत्तधम्माधम्म-कालागास-सिद्ध-

---

समाधान—उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक जो विशेष अवस्था रहती है उसे भव कहते हैं ।

नामकर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है—पुद्गलविपाकनिबद्ध, जीवविपाकनिबद्ध और क्षेत्रविपाकनिबद्ध ॥६॥

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श और संघात आदि नामप्रकृतियोंका विपाक पुद्गलमें निबद्ध है, क्योंकि, उनके उदयसे वर्णादिककी उत्पत्ति देखी जाती है । तीर्थङ्कर आदिक कर्म जीवमें निबद्ध हैं, क्योंकि, उनका विपाक जीवमें ही पाया जाता है । आनुपूर्वी कर्म क्षेत्रमें निबद्ध है, क्योंकि, उसका विपाक प्रतिनियत क्षेत्रमें ही पाया जाता है । इस कारण नामकर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है, यह सिद्ध होता है ।

गोत्र कर्म आत्मामें निबद्ध है ॥ ७ ॥

कारण कि उच्च व नीच गोत्र जीवकी पर्यायस्वरूपसे देखे जाते हैं ।

अन्तराय कर्म दानादिकमें निबद्ध है ॥ ८ ॥

कारण कि दानादिकोंके विषयमें विघ्न करनेमें उसका व्यापार पाया जाता है ।

इस प्रकार मूलप्रकृतिनिबन्धनप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब उत्तर प्रकृतियोंके निबन्धनकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—

चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियां द्रव्योंकी पर्यायोंके एकदेशमें निबद्ध हैं ॥९॥

अवधिज्ञान द्रव्यकी अपेक्षा मूर्त द्रव्योंको ही जानता है; धर्म, अधर्म, काल, आकाश और

जीवदव्वाणि, "रूपिष्ववधेः"[1] इति वचनात्। खेत्तदो घणलोगब्भंतरट्ठिदाणि[2] चेव जाणदि, णो बहित्थाणि[3]। कालदो असंखेज्जेसु वासेसु जमदीदमणागयं तं चेव जाणदि, णो बहित्थं[4]। भावदो असंखेज्जलोगमेत्तदव्वपज्जाए तीदाणागद-वट्टमाणकालविसए जाणदि। तेणोहिणाणं सव्वदव्वपज्जयविसयं ण होदि। तदो ओहिणाणावरणं सव्वदव्वाणं देस-णिबद्धं ति भणिदं। मणपज्जवणाणं पि जेण दव्व-खेत्त-काल-भावाणं विसईकदेगदेसं तेण मणपज्जवणाणावरणीयं पि देसणिबद्धं। एवं मदि-सुदणाणावरणीयाणं पि[5] देस-णिबद्धत्तं परूवेयव्वं।

केवलणाणावरणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं ॥ १० ॥

कुदो? विसईकदासेसदव्व[6]केवलणाणपडिबंधयत्तादो। खेत्त-काल-भावग्गहणं[7] सुत्ते ण कदं, तेण तमेत्थ वत्तव्वं? ण, दव्वेहिंतो पुधभूदक्खेत्त-काल-भावाणमभावादो।

थीणगिद्धितियं णिद्दा पयला य अचक्खुदंसणावरणीयं अप्पाणम्मि णिबद्धं ॥ ११ ॥

सिद्ध जीव इन अमूर्त द्रव्योंको वह नहीं जानता; क्योंकि, 'अवधिज्ञानका निबन्धरूपी द्रव्योंमें है', ऐसा सूत्रवचन है। क्षेत्रकी अपेक्षा वह घनलोकके भीतर स्थित द्रव्योंको ही जानता है, उसके बाहर स्थित द्रव्योंको नहीं जानता। कालकी अपेक्षा वह असंख्यात वर्षोंके भीतर जो अतीत व अनागत वस्तु है उसे ही जानता है, उनके बाहर स्थित वस्तुको नहीं जानता। भावकी अपेक्षा वह अतीत, अनागत एवं वर्तमान कालको विषय करनेवाली असंख्यात लोक मात्र द्रव्यपर्यायोंको जानता है। इसलिये अवधिज्ञान द्रव्योंकी समस्त पर्यायोंको विषय करनेवाला नहीं है। इसी कारण अवधिज्ञानावरण सब द्रव्योंके एकदेशमें निबद्ध है, ऐसा कहा है। मनःपर्ययज्ञान भी चूंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा एक देशको ही विषय करनेवाला है; अत एव मनः-पर्ययज्ञानावरणीय भी देशनिबद्ध है। इसी प्रकार मतिज्ञानावरणीय और श्रुतज्ञानावरणीयकी भी देशनिबद्धताका कथन करना चाहिये।

केवलज्ञानावरणीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है ॥१०॥

कारण कि वह समस्त द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञानका प्रतिबन्धक है।

शंका— यहां सूत्रमें क्षेत्र, काल और भावका ग्रहण नहीं किया गया है, इसलिये उनका यहां कथन करना चाहिये?

समाधान— नहीं, क्योंकि, द्रव्योंसे पृथग्भूत क्षेत्र, काल और भावका अभाव है।

स्त्यानगृद्धित्रय, निद्रा, प्रचला और अचक्षुदर्शनावरणीय आत्मामें निबद्ध है ॥११॥

---

१ त. सू. १-२७. २ काप्रतौ '-वरणीयं पदेसाणिबद्धं' इति पाठः। २ प्रत्योरुभयोरेव 'ट्ठिदाणं' इति पाठः। ३ प्रत्योरुभयोरेव 'बहिट्ठाणि' इति पाठः। ४ प्रत्योरुभयोरेव 'बहिट्ठं' इति पाठः। ५ काप्रतौ 'प देसणिबद्धं' ताप्रतौ 'पि देसणिबद्धं' इति पाठः। ६ प्रत्योरुभयोरेव 'विसमईकदासेसदव्वं' इति पाठः। ७ काप्रतौ 'कालभवग्गहणं', ताप्रतौ 'कालणिबद्धग्गहणं' इति पाठः।

जीवस्स सगसंवेयणघाइत्तादो । रस-फास-गंध-सद्द-दिट्ठ-सुदाणुभूदत्थविसयसग-त्तिविसयजीवोवजोगो अचक्खुदंसणं णाम । तम्हा[1] अचक्खुदंसणेण बज्झत्थणिबंधणेण[2] होदव्वमिदि ? सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ बज्झत्थणिबंधणत्तं ण विवक्खिदं । किमट्ठं विवक्खा ण कीरदे ? सव्वं पि दंसणं णाणं व बज्झत्थविसयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं ण कीरदे ।

चक्खुदंसणावरणीयं[3] गरुअलहुअणंतपदेसिएसु दव्वेसु णिबद्धं ॥१२॥

संखेज्जासंखेज्जपदेसियपोग्गलदव्वं चक्खुदंसणस्स विसओ ण होदि, किंतु अणंत-पदेसियपोग्गलदव्वं चेव विसओ होदि त्ति जाणावणट्ठमणंतपदेसिएसु दव्वेसु त्ति भणिदं । एदं वयणं देसामासियं, तेण सव्वेसिं दंसणाणमचक्खुमाणिदाणमेसा परूवणा कायव्वा । गरुअलहुअविसेसणं अणंतपदेसियक्खंधस्स होदि, गरुआणं लोहदंडादीणं हलुआणमक्क-[4] तूलादीणं[5] च चक्खिदिएण[6] गहणुवलंभादो । अगुरुअलहुअविसेसणं किण्ण कीरदे ? ण, चक्खिदियविसए परमाणुआदीणमसंभवादो । पुव्वं सव्वं पि दंसणमज्झत्थविसयमिदि परूविदं, संपहि चक्खुदंसणस्स बज्झत्थविसयत्तं परूविदं ति णेदं घडदे, पुव्वावरविरो-

कारण कि उक्त प्रकृतियां जीवके स्वसंवेदनको घातनेवाली हैं ।

शंका—रस, स्पर्श, गन्ध, शब्द, दृष्ट, श्रुत व अनुभूत अर्थको विषय करनेवाली अपनी शक्तिविषयक जीवके उपयोगको अचक्षुदर्शन कहा जाता है । इसीलिये अचक्षुदर्शनका निबन्धन बाह्य अर्थ होना चाहिये ?

समाधान—यह कहना सत्य है, किन्तु उक्त बाह्यार्थनिबन्धनताकी यहां विवक्षा नहीं की गई है ।

शंका—उसकी विवक्षा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—सभी दर्शन ज्ञानके समान बाह्य अर्थको विषय करनेवाला नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ यहां उसकी विवक्षा नहीं की गई है ।

चक्षुदर्शनावरणीय कर्म गुरु व लघु ऐसे अनन्त प्रदेशवाले द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ १२ ॥

संख्यात व असंख्यात प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य चक्षुदर्शनका विषय नहीं होता, किन्तु अनन्त प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य ही उसका विषय होता है; इस बातको जतलानेके लिये 'अनन्त प्रदेशवाले द्रव्योंमें' यह कहा है । यह वचन देशामर्शक है, इसलिये उससे अचक्षु संज्ञावाले सब दर्शनोंकी यह प्ररूपणा करनी चाहिये । 'गुरु व लघु' यह अनन्त प्रदेशवाले स्कन्धका विशेषण है, क्योंकि, चक्षु इन्द्रियके द्वारा लोहदण्डादिरूप गुरु और अर्कतूल (आकके पेड़का रूआ) आदिरूप लघु पदार्थोंका ग्रहण पाया जाता है ।

शंका—'अगुरुअलघु' यह विशेषण क्यों नहीं करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, परमाणु आदि चक्षु इन्द्रियके विषय नहीं होते ।

शंका—सभी दर्शन अध्यात्म अर्थको विषय करनेवाला है, ऐसी प्ररूपणा पहले की जा चुकी है । किन्तु इस समय बाह्यार्थको चक्षुदर्शनका विषय कहा है, इस प्रकार यह कथन संगत

१ काप्रतौ 'तं जहा' इति पाठः । २ काप्रतौ 'विबंधणेण' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'चक्खुदंसणीयं' इति पाठः । ४ काप्रतौ 'हलुहाण', ताप्रतौ 'हलुहाण (लहुआण)' इति पाठः । ५ मप्रतिपाठोऽयम् । काप्रतौ—'मक्कचुलादीणं', ताप्रतौ—'मक्कतुल्लादीणं' इति पाठः । ६ काप्रतौ 'चक्खिदिएया', ताप्रतौ 'चक्खिदिएय (ण)' इति पाठः ।

हादो ? ण एस दोसो, एवंविहेसु बज्झत्थेसु पडिबद्धसगसत्तिसंवेयणं[1] चक्खुदंसणं ति जाणावणट्ठं बज्झत्थविसयपरूवणाकरणादो। पंचण्णं दंसणाणमचक्खुदंसणमिदि एगणिद्देसो किमट्ठं कदो ? तेसिं पच्चासत्ती अत्थि त्ति जाणावणट्ठं कदो[2]। कधं तेसिं पच्चसत्ती ?
५) विसईदो[3] पुधभूदस्स अक्कमेण सग-परपच्चक्खस्स चक्खुदंसणविसयस्सेव तेसिं विसयस्स परेसिं जाणावणोवायाभावं[4] पडि समाणत्तादो।

ओहिदंसणावरणीयं रूविदव्वेसु णिबद्धं ॥ १३ ॥

रूविदव्वविसयसगसत्तिसंवेयणविघादकरणादो वि पुव्वं व बज्झत्थविसयपरूवणाए कारणं वत्तव्वं।

नहीं है; क्योंकि, इसमें पूर्वापरविरोध है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके बाह्य पदार्थोंमें प्रतिबद्ध आत्मशक्तिका संवेदन करनेको चक्षुदर्शन कहा जाता है; यह बतलानेके लिये उपर्युक्त बाह्यार्थविषयताकी प्ररूपणा की गई है।

शंका—पांच दर्शनोंके लिये 'अचक्षुदर्शन' ऐसा एक निर्देश किसलिये किया है ?

समाधान—उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति है, इस बातके जतलानेके लिये वैसा निर्देश किया गया है।

शंका— उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति कैसे है ?

समाधान—विषयीसे पृथग्भूत अतएव युगपत् स्व और परको प्रत्यक्ष होनेवाले ऐसे चक्षुदर्शनके विषयके समान उन पांचों दर्शनोंके विषयका दूसरोंके लिये ज्ञान करानेका कोई उपाय नहीं है। इसकी समानता पांचों ही दर्शनोंमें है, यही उनमें प्रत्यासत्ति है।

विशेषार्थ—यहां शंकाकारका कहना है कि जिस प्रकार चक्षुदर्शनकी स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार की गयी है इसी प्रकारसे स्पर्शनेन्द्रियादिसे उत्पन्न होनेवाले शेष पांच दर्शनोंकी स्वतंत्र सत्ता स्वीकार न कर उन्हें एक अचक्षुदर्शनके ही अन्तर्गत क्यों कहा गया है। इसके उत्तरमें यहां यह कहा गया है कि जिस प्रकार चक्षुदर्शनकी विषयभूत वस्तु विषयी (अप्राप्यकारी चक्षु) से पृथक् होनेके कारण एक साथ स्व और पर दोनों के लिये प्रत्यक्ष होती है और इसीलिए दूसरोंको उसका ज्ञान भी कराया जा सकता है, इस प्रकार उक्त पांचों दर्शनोंकी विषयभूत वस्तु विषयी (प्राप्यकारी स्पर्शनेन्द्रियादि) से पृथक् न रहनेके कारण एक साथ स्व और पर दोनोंके लिये प्रत्यक्ष नहीं हो सकती, और इसीलिये उसका दूसरोंको एक साथ ज्ञान भी नहीं कराया जा सकता है। यही इन पांचों दर्शनोंमें प्रत्यासत्ति है जो सबमें समान है।

अवधिदर्शनावरणीय रूपी द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ १३ ॥

रूपी द्रव्यविषयक आत्मशक्तिके संवेदनका विघात करनेके कारण पहिलेके ही समान इसकी भी बाह्यार्थविषयक प्ररूपणाका कारण कहना चाहिये।

१ काप्रतौ 'सत्तित्तवेयणं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'कुदो' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'पच्चासत्तिविमइदो' इति पाठः। ४ मप्रतिपाठोऽयम्। का-ताप्रत्योः 'अचक्खुदंसण' इति पाठः। ५ काप्रतौ '-वायाभावा' इति पाठः।

केवलदंसणावरणीयं सव्वदव्वे णिबद्धं ॥ १४ ॥

अणंतसम्मत्त-णाण-चरण-सुहादिसत्तीणं[1] केवलदंसणविसयाणं बज्झत्थं चेव अस्सिदूण अवट्ठाणुवलंभादो। केवलदंसणादीणं बज्झत्थणिबंधो[2] किमट्ठं वुच्चदे ? दंसणविसयजाणावणट्ठं, अण्णहा दंसणविसयस्स अज्झत्थस्स परेसिमपच्चक्खस्स जाणावणोवायाभावादो।

सादासादाणमप्पाणम्हि णिबंधो ॥ १५ ॥

कुदो ? सादासादविवागफलाणं[3] सुह-दुक्खाणं जीवे समुवलंभादो।

मोहणीयं दुविहं—दंसणमोहणीयं चारित्तमोहणीयं चेदि। तत्थ दंसणमोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं, णोसव्वपज्जाएसु ॥ १६ ॥

मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं च सव्वदव्वेसु णिबद्धं, सव्वदव्वसद्दहणगुणविघादकरणादो। सम्मत्तं णोसव्वपज्जाएसु णिबद्धं। कुदो? तत्तो सम्मत्तस्स एगदेसघादुवलंभादो। दंसणमोहणीयं जेण घादिकम्मं तेण अप्पाणम्मि णिबद्धमिदि किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो,

केवलदर्शनावरणीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ १४ ॥

कारण कि केवलदर्शनकी विषयभूत अनन्त सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र एवं सुख आदि रूप शक्तियोंका अवस्थान बाह्य अर्थका ही आश्रय करके पाया जाता है।

शंका—केवलदर्शनादिकोंकी बाह्यार्थनिबद्धताका कथन किसलिये किया जाता है ?

समाधान—दर्शनका विषय बतलानेके लिये उसका कथन किया गया है। कारण कि दर्शनका विषयभूत अर्थ अध्यात्मरूप होनेसे दूसरोंको प्रत्यक्ष नहीं है, अतएव इसके बिना उसका ज्ञान करानेके लिये और कोई दूसरा उपाय ही नहीं था।

सातावेदनीय और असातावेदनीय आत्मामें निबद्ध है ॥ १५ ॥

कारण कि साता व असाता सम्बन्धी विपाकके फलरूप सुख व दुख जीवमें ही पाये जाते हैं।

मोहनीय कर्म दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीयके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें दर्शनमोहनीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है, सब पर्यायोंमें नहीं ॥ १६ ॥

मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय सब द्रव्योंमें निबद्ध हैं, क्योंकि, वे समस्त द्रव्यों सम्बन्धी श्रद्धान गुणका विघात करनेवाली प्रकृतियां हैं। सम्यक्त्व दर्शनमोहनीय प्रकृति कुछ पर्यायोंमें निबद्ध है, क्योंकि, उसके द्वारा सम्यक्त्वके एकदेशका घात पाया जाता है।

शंका—दर्शनमोहनीय चूंकि घातिया कर्म है, अत एव 'वह आत्मामें निबद्ध है'; ऐसी प्ररूपणा यहां क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, छह द्रव्य और नौ पदार्थ विषयक श्रद्धानका

१ ताप्रतौ 'णाणावरणसुहादि' इति पाठः। २ उभयोरेव प्रत्योः 'णिबद्धो' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'विवाकगलाणं', ताप्रतौ 'विवाकगलाणं (सादासादविवागाणं), मप्रतौ 'विवाकफलाणं' इति पाठः।

छदव्व-णवपयत्थविसयसद्दहणं सम्मदंसणं ति घाइज्जमाणजीवसंपदुप्पायणट्ठं बज्झत्थ-णिबंधणपरूवणाकरणादो।

चारित्तमोहणीयमप्पाणम्मि णिबद्धं ॥ १७ ॥

राग-दोसा वज्झत्थालंबणा, तेसिं च णिरोहो चारित्तं। तदो चारित्तमोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं ति वत्तव्वं[2]। सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ णावेक्खिदं। कुदो? बहुसो पदुप्पायणेण उवएसेण विणा एत्थ तदवगमादो।

णिरयाउअं णिरयभवम्मि णिबद्धं ॥ १८ ॥

कुदो? तत्थ णिरयभवधारणसत्तिदंसणादो।

सेसाउआणि वि अप्पप्पणो भवेसु[3] णिबद्धाणि ॥ १९ ॥

तत्तो तेसिं भवाणमवट्ठाणुवलंभादो।

णामं तिधा णिबद्धं— जीवणिबद्धं पोग्गलणिबद्धं खेत्तणिबद्धं च ॥ २० ॥

एवं णामणिबद्धं तिविहं चेव होदि, अण्णस्स अणुवलंभादो। पोग्गलविवाग-णिबद्धपयडिपरूवणट्ठं गाहासुत्तं भणदि—

नाम सम्यग्दर्शन है, अत एव घाते जानेवाले जीवगुणोंकी प्ररूपणा करनेके लिये बाह्यार्थ-निबन्धनकी प्ररूपणा की गई है।

चारित्रमोहनीयकर्म आत्मामें निबद्ध है ॥ १७ ॥

शंका— राग और द्वेष बाह्य अर्थका आलम्बन करनेवाले हैं, और चूंकि उन्हींके निरोध करनेका नाम चारित्र है अत एव चारित्रमोहनीय कर्म सब द्रव्योंमें निबद्ध है; ऐसा यहां कहना चाहिये?

समाधान—यह सत्य है, किन्तु उसकी यहां अपेक्षा नहीं की गई है। कारण कि बहुत बार प्ररूपणा की जानेसे उपदेशके बिना भी यहां उसका ज्ञान हो जाता है।

नारकायु नारक भवमें निबद्ध है ॥ १८ ॥

कारण कि उसमें नारक भव धारण करानेकी शक्ति देखी जाती है।

शेष तीन आयु कर्म भी अपने अपने भवोंमें निबद्ध है ॥ १९ ॥

क्योंकि, उनसे उन भवोंका अवस्थान पाया जाता है।

नाम कर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है—जीव द्रव्यमें निबद्ध है, पुद्गलमें निबद्ध है, और क्षेत्रमें निबद्ध है ॥ २० ॥

इस प्रकार नामका निबन्धन तीन प्रकारका ही है, क्योंकि, इनके अतिरिक्त अन्य कोई निबन्धन पाया नहीं जाता। पुद्गलविपाकनिबद्ध प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिये गाथासूत्र कहते हैं—

---

१ काप्रतौ 'जीवस्स' इति पाठः। २ काप्रतौ 'णिबद्धं ति त्ति घेत्तव्वं' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'भवं वा' इति पाठः।

पंच य छ त्ति य छप्पंच दोण्णि पंच य हवंति अट्ठेव ।
सरीरादीफस्संता पयडीओ आणुपुव्वीए ॥ १ ॥
अगुरुलहु-परुवघादा आदाउज्जोव णिमिणणामं च ।
पत्तेय-थिर-सुहेदरणामाणि य पोग्गलविवागा[1] ॥ २ ॥

पंच सरीराणि, छ संठाणाणि, तिण्णि अंगोवंगाणि, छ संघडणाणि, पंच वण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अट्ठ फासा, अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-आदाउज्जोव-पत्तेय-साहारण-सरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणि च पोग्गलणिबद्धाणि[2]। कुदो ? एदेसिं विवागेण सरीरादीणं णिप्पत्तिदंसणादो। एवं बावण्णणामपयडीओ पोग्गलणिबद्धाओ। संपहि जीवणिबद्धणामपयडिपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

गदिजादी उस्सासो दोण्णि विहाया तसादितियजुगलं ।
सुभगादीचदुजुगलं जीवविवागा य तित्थयरं[3] ॥ ३ ॥

चत्तारिगदि-पंचजादि-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-अजसकित्ति-तित्थयरपयडीओ अप्पाणम्मि णिबद्धाओ। कुदो ? एदासिं विवागस्स जीवे चेवुवलंभादो। एवमेदाओ सत्तावीसणामपयडीओ जीवविवागियाओ। संपहि खेत्तणिबद्धपयडिपरूवणट्ठं गाहासुत्तं

शरीरसे लेकर स्पर्श पर्यन्त अर्थात् शरीर संस्थान,आंगोपांग, संसहनन, वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श ये अनुक्रमसे पांच, छह, तीन, छह, पांच, दो, पांच और आठ प्रकृतियां अगुरुलघु, परघात, उपघात, आतप, उद्योत, निर्माण, प्रत्येक व साधारण, स्थिर व अस्थिर तथा शुभ व अशुभ; ये नामकृतियां पुद्गलविपाकी है ॥ १-२ ॥

पांच शरीर, छह संस्थान, तीन आंगोपांग, छह संहनन, पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श, अगुरलघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, प्रत्येक, व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण ये नामकर्मकी प्रकृतियां पुद्गलनिबद्ध हैं, क्योंकि, इनके विपाकसे शरीरादिकोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। इस प्रकार ये बावन नामप्रकृतियां पुद्गलनिबद्ध हैं। अब जीवनिबद्ध नामप्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

गति, जाति, उच्छ्वास, दो विहायोगतियां, त्रस आदिक तीन युगल, सुभग आदिक चार युगल और तीर्थंकर, ये प्रकृतियां जीवविपाकी हैं ॥ ३ ॥

चार गति, पांच जाति, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुःस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्ति, अयशःकीर्ति और तीर्थंकर, ये प्रकृतियां आत्मामें निबद्ध हैं, क्योंकि, इनका विपाक जीवमें ही पाया जाता है। इस प्रकार ये सत्ताईस नामप्रकृतियां जीवविपाकी हैं। अब क्षेत्रनिबद्ध प्रकृतियोंकी

---

१ देहादी फासंता पण्णासा णिमिण-तावजुगलं च । थिर-सुह-पत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई ॥ गो.क.४७.
२ काप्रतौ 'णिबद्धाणाम' इति पाठः । ३ तित्थयरं उस्सास बादर-पज्जत्त-सुस्सरादेज्ज । जस-तस-विहाय-सुभगदु-चउगइ-पणजाइ सगवीसं ॥ गदि जादी उस्सासं विहायगदि तसतियाण जुगलं च । सुभगादिचउज्जुगलं तित्थयरं चेदि सगवीसं ॥ गो. क. ५०-५१.

भणदि—

चत्तारि आणुपुव्वी खेत्तविवागा त्ति जिणवरुद्दिट्ठा ।
णीचुच्चागोदाणं होदि णिबंधो दु अप्पाणे ॥ ४ ॥

चत्तारि आणुपुव्वीओ खेत्तणिबद्धाओ । कुदो ? पडिणियदखेत्तम्हि चेव तासिं फलोवलंभादो । णीचुच्चागोदाणं पुण णिबंधो अप्पाणम्मि चेव, तेसिं फलस्स जीवे चेवुवलंभादो ।

दाणंतराइयं दाणे लाभे भोगे तदेव उवभोगे ।
गहणे होंति णिबद्धा विरियं जह केवलावरणं ॥ ५ ॥

एदाओ पंच वि पयडीओ जीवणिबद्धाओ चेव, घाइकम्मत्तादो । किंतु घाइज्जमाण-जीवगुणजाणावणट्ठमेसा गाहा परूविदा । दाणंतराइयं दाणविग्घयरं, लाहविग्घयरं लाहंतराइयं, भोगविग्घयरं भोगंतराइयं, उपभोगविग्घयरं उवभोगंतराइयं । गहणसद्दो उवभोगग्गहणे त्ति पादेक्कं संबंधेयव्वो । जहा केवलणाणावरणीयं परूविदं अणंतदव्वेसु णिबद्धमिदि तहा विरियंतराइयं पि परूवेयव्वं, जीवादो पुधभूददव्वं अस्सिऊण विरियस्स पवुत्तिदंसणादो । एवमेत्थ अणियोगद्दारे एत्तियं चेव परूविदं, सेसअणंतत्थविसय-उवदेसाभावादो ।

एवं णिबंधणे त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

प्ररूपणा करनेके लिये गाथासूत्र कहते हैं—

चार अनुपूर्वी प्रकृतियां क्षेत्रविपाकी हैं, ऐसा जिनेन्द्र देवके द्वारा निर्दिष्ट किया गया है । नीच व ऊंच गोत्रोंका निबन्ध आत्मामें है ॥ ४ ॥

चार आनुपूर्वी प्रकृतियां क्षेत्रनिबद्ध हैं, क्योंकि, प्रतिनियत क्षेत्रमें ही उनका फल पाया जाता है । परन्तु नीच व ऊंच गोत्रका निबन्ध आत्मामें ही है, क्योंकि, उनका फल जीवमें ही पाया जाता है ।

दानान्तराय दानके ग्रहणमें, लाभान्तराय लाभके ग्रहणमें, भोगान्तराय भोगके ग्रहणमें, तथा उपभोगान्तराय उपभोगके ग्रहणमें निबद्ध है । वीर्यान्तराय केवलज्ञानावरणके समान अनन्त द्रव्योंमें निबद्ध है ॥ ५ ॥

ये पांचों ही प्रकृतियां जीवनिबद्ध ही हैं, क्योंकि, वे घातिया कर्म हैं । किन्तु उनके द्वारा घाते जानेवाले जीवगुणोंका ज्ञापन करानेके लिये इस गाथाकी प्ररूपणा की गई है । दानमें विघ्न करनेवाला दानान्तराय, लाभमें विघ्न करनेवाला लाभान्तराय, भोगमें विघ्न करनेवाला भोगान्तराय, और उपभोगमें विघ्न करनेवाला उपभोगान्तराय है । ग्रहण शब्दका अर्थ उपभोगग्रहण है, इस कारण इसका प्रत्येकके साथ सम्बन्ध करना चाहिये । जिस प्रकार केवलज्ञानावरणीयकी अनन्त द्रव्योंमें निबद्धताकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार वीर्यान्तरायकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, जीवसे भिन्न द्रव्यका आश्रय करके वीर्यकी प्रवृत्ति देखी जाती है । इस प्रकार इस अनुयोगद्वारमें इतनी ही प्ररूपणा की गई है, क्योंकि, शेष अनन्त पदार्थविषयक निबन्धनके उपदेशका अभाव है ।

इस प्रकार निबन्धन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

८

पक्कमाणियोगद्दारं

जयउ भुवणेकतिलओ तिहुवणकलिकलुसधुवणवावारो ।
संतियरो संतिजिणो पक्कमअणियोगकत्तारो ॥ १ ॥

पक्कमे त्ति अणियोगद्दारस्स थोवत्थपरूवणे[1] कीरमाणे अपयदत्थणिराकरणदुवारेण पयदत्थपरूवणट्ठं णिक्खेवो कीरदे । तं जहा—णामपक्कमो, ठवणपक्कमो, दव्वपक्कमो, खेत्तपक्कमो, कालपक्कमो, भावपक्कमो चेदि छव्विहो पक्कमो । णाम-ठवणं गदं । दव्वपक्कमो दुविहो आगम-णोआगमदव्वपक्कमभेएण । तत्थ आगमदव्वपक्कमो पक्कमाणिओगद्दारजाणगो अणुवजुत्तो । णोआगमदव्वपक्कमो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेदेण । जाणुगसरीर-भवियं गदं । तव्वदिरित्तपक्कमो दुविहो—कम्मपक्कमो णोकम्मपक्कमो चेदि । तत्थ कम्मपक्कमो अट्ठविहो । णोकम्मपक्कमो तिविहो—सचित्त-अचित्त-मिस्सभेएण । अस्साणं हत्थीणं पक्कमो सचित्तपक्कमो णाम । हिरण्ण-सुवण्णादीणं पक्कमो अचित्तपक्कमो णाम । साभरणाणं हत्थीणं अस्साणं वा पक्कमो मिस्सपक्कमो णाम । खेत्तपक्कमो तिविहो— उड्ढलोगपक्कमो अधोलोगपक्कमो तिरियलोगपक्कमो चेदि । एत्थ आधेये आधारोवयारेण तत्थट्ठियजीवाणं उड्ढाधोतिरियलोगो त्ति सण्णा, अण्णहा तिण्णं लोगाणं

लोकके एक मात्र तिलक स्वरूप, तीन लोकके शत्रुभूत पाप-मैलके धोनेमें व्यापृत, शान्तिके करनेवाले और प्रक्रम अनुयोगके कर्ता ऐसे शान्तिनाथ जिनेन्द्र जयवन्त होवें ॥ १ ॥

प्रक्रम इस अनुयोगद्वारके स्तोक अर्थकी प्ररूपणा करते समय अप्रकृत अर्थके निराकरण द्वारा प्रकृत अर्थकी प्ररूपणा करनेके लिये निक्षेप किया जाता है । वह इस प्रकार है—नामप्रक्रम, स्थापनाप्रक्रम, द्रव्यप्रक्रम, क्षेत्रप्रक्रम, कालप्रक्रम और भावप्रक्रम; इस प्रकार प्रक्रम छह प्रकारका है । इनमें नामप्रक्रम और स्थापनाप्रक्रम अवगत हैं । द्रव्यप्रक्रम आगमद्रव्यप्रक्रम और नोआगमद्रव्यप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें प्रक्रम अनुयोगद्वारका ज्ञायक उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यप्रक्रम है । नोआगमद्रव्यप्रक्रम ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । इनमेंसे ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यप्रक्रम अवगत हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यप्रक्रम कर्मप्रक्रम और नोकर्मप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें कर्मप्रक्रम आठ प्रकारका है । नोकर्मप्रक्रम सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है । अश्वों और हाथियोंका प्रक्रम सचित्तप्रक्रम, हिरण्य और सुवर्ण आदिकोंका प्रक्रम अचित्तप्रक्रम, तथा आभरण सहित हाथियों व अश्वोंका प्रक्रम मिश्रप्रक्रम कहलाता है ।

क्षेत्रप्रक्रम ऊर्ध्वलोकप्रक्रम, अधोलोकप्रक्रम और तिर्यग्लोकप्रक्रमके भेदसे तीन प्रकारका है । यहां आधेयमें आधारका उपचार करनेसे उन लोकोंमें स्थित जीवोंकी ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और

---

१ ताप्रतौ 'थोवत्त (त्थ) पपरूवणे' इति पाठः ।

थावराणं पक्कमाणुववत्तीदो। समयावलिया-खण-लव-मुहुत्तादी कालपक्कमो[1]। भावपक्कमो दुविहो– आगमदो णोआगमदो[2] च। तत्थ आगमदो पक्कमाणिओगद्दारजाणओ उवजुत्तो। णोआगमदो भावपक्कमो ओदइयादिपंचभावा। एत्थ कम्मपक्कमे पयदं। प्रक्रामतीति प्रक्रमः कार्मणपुद्गलप्रचयः। आदाणिओ एत्थ भणदि– जहा कुंभारो एयादो मट्टियपिंडादो अणेयाणि घडादीणि उप्पादेदि तहा इत्थी पुरिसो णवुंसओ थावरो तसो वा जो वा सो वा एयविहं कम्मं बंधिदूण अट्ठविहं करेदि, अकम्मादो कम्मस्स उप्पत्तिविरोहादो? एत्तो णिग्गहो कीरदे—जदि अकम्मादो[3] कम्मुप्पत्ती ण होदि तो अकम्मादो[3] तुब्भेहि संकप्पिदएगकम्मुप्पत्ती वि ण होदि, कम्मत्तं पडि विसेसाभावादो। अह कम्मइयवग्गणादो जमेगमुप्पण्णं तं जइ कम्मं ण होदि तो तत्तो ण अट्ठकम्माणमुप्पत्ती, अकम्मादो[3] कम्मुप्पत्तिविरोहादो। ण च एयंतेण कारणाणुसारिणा कज्जेण होदव्वं, मट्टियपिंडादो मट्टियपिंडं मोत्तूण घट-घटी-सरावालिंजरुट्टियादीणमणुप्पत्तिप्पसंगादो। सुवण्णादो सुवण्णस्स घटस्सेव उप्पत्तिदंसणादो कारणाणुसारि चेव कज्जं ति ण वोत्तुं जुत्तं, कढिणादो[4] सुवण्णादो जलणादिसंजोगेण सुवण्णजलुप्पत्तिदंसणादो। किं च—कारणं व ण कज्जमुप्पज्जदि,

तिर्यग्लोक संज्ञा है; क्योंकि, इसके बिना स्थिरशील तीन लोकोंका प्रक्रम बन नहीं सकता। समय, आवली, क्षण, लव और मुहूर्त आदिकको कालप्रक्रम कहा जाता है। भावप्रक्रम दो प्रकार का है— आगमभावप्रक्रम और नोआगमभावप्रक्रम। उनमें प्रक्रम अनुयोगद्वारका ज्ञायक उपयोग युक्त जीव आगमभावप्रक्रम है। औदयिक आदिक पांच भावोंको नोआगमभावप्रक्रम कहा जाता है। यहां कर्मप्रक्रम प्रकृत है। 'प्रक्रामतीति प्रक्रमः' इस निरुक्तिके अनुसार कार्मण पुद्गलप्रचयको प्रक्रम कहा गया है।

शंका— यहां शंकाकार कहता है कि जिस प्रकार कुम्हार मिट्टीके एक पिण्डसे अनेक घटादिकोंको उत्पन्न करता है उसी प्रकार स्त्री, पुरुष, नपुंसक, स्थावर, त्रस अथवा जो कोई भी जीव एक प्रकारके कर्मको बांधकर उसे आठ भेद रूप करता है; क्योंकि, अकर्मसे कर्मकी उत्पत्तिका विरोध है?

समाधान— इस शंकाका निग्रह करते हैं। यदि अकर्मसे कर्मकी उत्पत्ति नहीं होती है तो फिर तुम्हारे द्वारा संकल्पित एक कर्मकी उत्पत्ति भी अकर्मसे नहीं हो सकती, क्योंकि, कर्मत्वके प्रति कोई विशेषता नहीं है। यदि कहा जाय कि कार्मण वर्गणासे जो एक उत्पन्न हुआ है वह यदि कर्म नहीं है, तो फिर उससे आठ कर्मोंकी उत्पत्ति नहीं हो सकती; क्योंकि, अकर्मसे कर्मकी उत्पत्तिका विरोध है। दूसरे, कारणानुसारी ही कार्य होना चाहिये, यह एकान्त नियम भी नहीं है; क्योंकि, मिट्टीके पिण्डसे मिट्टीके पिण्डको छोड़कर घट, घटी, शराव, अलिंजर और उष्ट्रिका आदिक पर्याय विशेषोंकी उत्पत्ति न हो सकनेका प्रसंग अनिवार्य होगा। यदि कहो कि सुवर्णसे सुवर्णके घटकी ही उत्पत्ति देखी जानेसे कार्य कारणानुसारी ही होता है, सो ऐसा कहना भी योग्य नहीं है; क्योंकि, कठोर सुवर्णसे अग्नि आदिका संयोग होनेपर सुवर्णजलकी उत्पत्ति देखी

१ ताप्रतौ 'मुहुत्तादिकालपक्कमो' इति पाठः। २ काप्रतौ 'आगमणोआगमदो' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'अक्कमादो' इति पाठः। ४ का-ता-मप्रतिषु 'कढिणादो' इति पाठः।

सव्वप्पणा कारणसरूवमावण्णस्स उप्पत्तिविरोहादो। जदि एयंतेण [ण] कारणाणुसारि चेव कज्जमुप्पज्जदि तो मुत्तादो पोग्गलदव्वादो अमुत्तस्स गयणुप्पत्ती होज्ज, णिच्चेयणादो पोग्गलदव्वादो सचेयणस्स जीवदव्वस्स वा उप्पत्ती पावेज्ज। ण च एवं, तहाणुवलंभादो। तम्हा[1] कारणाणुसारिणा कज्जेण होदव्वमिदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे—होदु णाम केण वि सरूवेण कज्जस्स कारणाणुसारित्तं, ण सव्वप्पणा; उप्पाद-वय-ट्ठिदिलक्खणाणं जीव-पोग्गल-धम्माधम्म-कालागासदव्वाणं सगवइसेसियगुणाविणाभाविसयलगुणाणमपरिच्चाएण पज्जायंतरगमणदंसणादो। ण च कम्मइयवग्गणादो कम्माणि एयंतेण पुधभूदाणि, णिच्चेयणत्तेण मुत्तभावेण पोग्गलत्तेण च ताणमेयत्तुवलंभादो। ण च एयंतेण अपुधभूदाणि चेव, णाणावरणादिपयडिभेदेण ट्ठिदिभेदेण अणुभागभेदेण च जीवपदेसेहि अण्णोण्णाणुगयत्तेण च भेदुवलंभादो। तदो सिया कज्जं कारणाणुसारि सिया णाणुसारि त्ति सिद्धं।

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्[2] ॥ १ ॥

जाती है। इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार कारण उत्पन्न नहीं होता है उसी प्रकार कार्य भी उत्पन्न नहीं होगा, क्योंकि, कार्य सर्वात्मना कारण रूप ही रहेगा इसलिए उसकी उत्पत्तिका विरोध है।

शंका—यदि सर्वथा कारणका अनुसरण करनेवाला ही कार्य नहीं होता है तो फिर मूर्त पुद्गल द्रव्यसे अमूर्त आकाशकी उत्पत्ति हो जानी चाहिये, इसी प्रकार अचेतन पुद्गल द्रव्यसे सचेतन जीव द्रव्यकी भी उत्पत्ति पायी जानी चाहिये। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता। इसीलिये कार्य कारणानुसारी ही होना चाहिये ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं। किसी विशेष स्वरूपसे कार्य कारणानुसारी भले ही हो, परन्तु वह सर्वात्म स्वरूपसे वैसा सम्भव नहीं है; क्योंकि, उत्पाद व्यय व ध्रौव्य लक्षणवाले जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्य अपने विशेष गुणोंके अविनाभावी समस्त गुणोंका परित्याग न करके अन्य पर्यायको प्राप्त होते हुए देखे जाते हैं। दूसरे, कर्म कार्मण वर्गणासे सर्वथा भिन्न भी नहीं हैं, क्योंकि, उनमें अचेतनत्व, मूर्तत्व और पौद्गलिकत्व स्वरूपसे कार्मण वर्गणाके साथ समानता पायी जाती है। इसी प्रकार वे उससे सर्वथा अभिन्न भी नहीं हैं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि रूप प्रकृतिभेद, स्थितिभेद व अनुभागभेदसे तथा जीवप्रदेशोंके साथ परस्पर अनुगत स्वरूपसे उनमें कार्मण वर्गणासे भेद पाया जाता है। इसलिये कार्य कथंचित् कारणानुसारी है और कथंचित् वह तदनुसारी नहीं भी है, यह सिद्ध है।

शंका—चूंकि असत् कार्य किया नहीं जा सकता है, उपादानोंके साथ कार्यका सम्बन्ध रहता है, किसी एक कारणसे सभी कार्योंकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है, समर्थ कारणके द्वारा शक्य कार्य ही किया जाता है, तथा कार्य कारणस्वरूप ही है— उससे भिन्न सम्भव नहीं है; अतएव इन हेतुओंके द्वारा कारणव्यापारसे पूर्व भी कार्य सत् ही है, यह सिद्ध है ॥१॥

१ काप्रतौ 'तं जहा' इति पाठः। २ सांख्यकारिका ९.

इदि के वि भणंति। एदं पि ण जुज्जदे। कुदो? एयंतेण संते कत्तारवावारस्स विहलत्तप्पसंगादो, उवायाणग्गहणाणुववत्तीदो, सव्वहा संतस्स संभवविरोहादो, सव्वहा

विशेषार्थ— सांख्यमतमें प्रधानकी सिद्धिमें उपयोगी होनेसे सत्कार्यवादको स्वीकार किया गया है। कार्यको सत् सिद्ध करनेके लिये उपर्युक्त कारिकामें निम्न हेतु दिये गये हैं—(१) यदि कारणव्यापारके पूर्वमें कार्यको असत् स्वीकार किया जाय तो उसका उत्पन्न होना शक्य नहीं है, जैसे खरविषाण। अत एव कारणव्यापारके पूर्वमें भी कार्यको सत् ही स्वीकार करना चाहिये। कारणके द्वारा केवल उसकी अभिव्यक्ति की जाती है जो उचित ही है। जैसे तिलोंमें तैल जब पहिलेसे ही सत् है तभी वह कोल्हू आदिके द्वारा निकाला जा सकता है, बालुकामेंसे तैलका निकाला जाना किसी प्रकार भी शक्य नहीं है। (२) दूसरा हेतु 'उपादानग्रहण' दिया गया है— उपादानग्रहणका अर्थ है कारणोंसे कार्यका सम्बन्ध। अर्थात् कारण कार्यसे सम्बद्ध हो करके ही उसका उत्पादक हो सकता है, न कि असम्बद्ध रह कर। और वह सम्बन्ध चूंकि असत् कार्यके साथ सम्भव नहीं है, अतएव कारणव्यापारसे पूर्वमें भी कार्यको सत् ही स्वीकार करना चाहिये। (३) यदि कहा जाय कि कारण असम्बद्ध ही कार्यको उत्पन्न कर सकते हैं, अत: इसके लिये कार्यको सत् मानना आवश्यक नहीं है; सो यह कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि, वैसा माननेपर जिस प्रकार मिट्टीके द्वारा अपनेसे असम्बद्ध घट कार्य किया जाता है उसी प्रकार असम्बद्धत्वकी समानता होनेसे घटके समान पट आदिक कार्य भी उसके द्वारा उत्पन्न किये जा सकते हैं। इस प्रकार एक ही किसी कारणसे सब कार्योंके उत्पन्न होनेका प्रसंग अनिवार्य होगा। परन्तु ऐसा चूंकि सम्भव नहीं है अतएव यह स्वीकार करना चाहिये कि सम्बद्ध कारण सम्बद्ध कार्यको ही उत्पन्न करता है, न कि असम्बद्धको। इस प्रकार यह तीसरा हेतु देकर सत्कार्य सिद्ध किया गया है। (४) यहां शंका की जा सकती है कि असम्बद्ध रहकर भी वही कार्य उत्पन्न किया जा सकता है जिसके उत्पन्न करनेमें कारण समर्थ है। इसीलिये सर्वसम्भवका प्रसंग देना उचित नहीं है। इसके उत्तरमें 'शक्तस्य शक्यकरणात्' यह चतुर्थ हेतु दिया गया है। उसका अभिप्राय है कि शक्त कारण शक्य कार्यको ही करता है। यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि कारणमें रहनेवाली वह कार्योत्पादनरूप शक्ति क्या समस्त कार्यविषयक है या शक्य कार्यविषयक ही है? यदि उक्त शक्ति समस्त कार्यविषयक स्वीकार की जाती है तो सबसे सभीके उत्पन्न होनेका जो प्रसङ्ग दिया गया है वह तदवस्थ ही रहेगा। इसलिये यदि उक्त शक्तिको शक्य कार्यविषयक ही स्वीकार किया जाय तो फिर स्वयमेव सत् कार्य सिद्ध हो जाता है, क्योंकि अविद्यमान शक्य कार्यमें तद्विषयक शक्तिकी सम्भावना ही नहीं रहती। अतएव कार्य सत् ही है। (५) सत् कार्यको सिद्ध करनेके लिये अन्तिम हेतु 'कारणभाव' दिया गया है। उसका अभिप्राय यह है कि कार्य चूंकि कारणात्मक है, अतएव जब कारण सत् है तो उससे अभिन्न कार्य कैसे असत् हो सकता है? नहीं हो सकता। अतः कार्य कारणव्यापारके पूर्व भी सत् ही रहता है। यह सांख्योंका अभिमत है। आगे वीरसेन स्वामी स्वयं इस अभिप्रायका निरास करनेवाले हैं।

समाधान—इस प्रकार किन्हीं कपिल आदिका कहना है जो योग्य नहीं है। कारण कि कार्यको सर्वथा सत् माननेपर कर्ताके व्यापारके निष्फल होनेका प्रसंग आता है। इसी प्रकार सर्वथा कार्यके सत् होनेपर उपादानका ग्रहण भी नहीं बनता, सर्वथा सत् कार्यकी उत्पत्तिका विरोध है,

संते कज्ज-कारणभावाणुववत्तीदो। किं च—विप्पडिसेहादो ण संतस्स उप्पत्ती। जदि अत्थि, कधं तस्सुप्पत्ती? अह उप्पज्जइ, कधं तस्स अत्थित्तमिदि?

किं च— णिच्चपक्खे ण कारणं कज्जं वा अत्थि, णिव्वियप्पभावेण पागभाव-पद्धंसाभावविरहिए तदणुववत्तीदो। आविब्भावो उप्पादो, तिरोभावो विणासो त्ति ण वोत्तुं जुत्तं, णिच्चस्स अत्थस्स दोण्णं मज्झे एगम्हि चेव भावे अवट्ठियस्स अणाहेआदिसयत्तेण अवत्थंतरसंकंतिवज्जियस्स दुब्भावविरोहादो। वुत्तं च—

नित्यत्वैकान्तपक्षेऽपि विक्रिया नोपपद्यते।
प्रागेव कारकाभावः क्व प्रमाणं क्व तत्फलं[1] ॥ २॥

कार्यके सर्वथा सत् होनेपर कार्य-कारणभाव ही घटित नहीं होता। इसके अतिरिक्त असंगत होनेसे सत् कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है; क्योंकि, यदि कार्य कारणव्यापारके पूर्वमें भी विद्यमान है तो फिर उसकी उत्पत्ति कैसे हो सकती है? और यदि वह कारणव्यापारसे उत्पन्न होता है तो फिर उसका पूर्वमें विद्यमान रहना कैसे संगत कहा जावेगा?

और भी— नित्य पक्षमें कारण और कार्यका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, उस अवस्थामें निर्विकल्प होनेके कारण प्रागभाव और प्रध्वंसाभावसे रहित अर्थमें कार्य-कारणभाव बन नहीं सकता। यदि कहा जाय कि आविर्भावका नाम उत्पाद और तिरोभावका नाम विनाश है, तो यह भी कहना योग्य नहीं है; क्योंकि, इन दोनोंमेंसे किसी एक ही अवस्थामें रहनेवाले नित्य पदार्थका अनाधेयातिशय (विशेषता रहित) होनेसे चूंकि अवस्थान्तरमें संक्रमण सम्भव नहीं है, अतएव उसमें आविर्भाव एवं तिरोभाव रूप दो अवस्थाओंके रहनेका विरोध है, अर्थात् कूटस्थ नित्य होनेसे यदि वह तिरोभूत है तो तिरोभूत ही सदा रहेगा, और यदि आविर्भूत है तो सदा आविर्भूत ही रहेगा। कहा भी है—

नित्य एकान्त पक्षमें भी पूर्व अवस्था (मृत्पिण्डादि) के परित्यागरूप और उत्तर अवस्था (घटादि) के ग्रहण रूप विक्रिया घटित नहीं होती, अतः कार्योत्पत्तिके पूर्वमें ही कर्त्ता आदि कारकोंका अभाव रहेगा। और जब कारक ही न रहेंगे तब भला फिर प्रमाण (प्रमृति क्रियाका अतिशय साधक) और उसके फल (अज्ञाननिवृत्ति) की सम्भावना कैसे की जा सकती है? अर्थात् उनका भी अभाव ही रहेगा ॥२॥

विशेषार्थ—सांख्य मतमें चेतन पुरुषको कूटस्थ नित्य स्वीकार किया गया है। इस मतका निराकरण करनेके लिये उक्त कारिकाका अवतार हुआ है। उसका अभिप्राय यह है कि यदि पुरुषको सर्वथा नित्य माना जाता है तो वह विकार रहित होनेसे चेतना रूप क्रियाका कर्त्ता भी नहीं हो सकता, क्योंकि, उस अवस्थामें कारक (कुम्भकारादि) अथवा ज्ञापक (प्रमाता) हेतुओंका व्यापार असम्भव है। अथवा यदि कारक व ज्ञापक हेतुओंका व्यापार स्वीकार किया जाता है तो फिर पूर्व स्वभाव (अकारक अथवा अप्रमाता) का परित्याग करके उत्तर स्वभाव (उत्पत्ति अथवा चेतना क्रियाका कर्त्तृत्व) को ग्रहण करनेके कारण उसकी कूटस्थताका विघात होता है। अतएव कूटस्थ नित्यताका पक्ष बनता नहीं है।

[1] आ. मी. ३७.

यदि सत्सर्वथा कार्यं पुंवन्नोत्पत्तुमर्हति ।
परिणामप्रक्लृप्तिश्च नित्यत्वैकान्तबाधिनी[1] ॥ ३ ॥
पुण्यपापक्रिया न स्यात् प्रेत्यभावः फलं[2] कुतः ।
बन्धमोक्षौ च तेषां न येषां त्वं नासि नायकः[3] ॥४॥

सदकरणात्, उपादानग्रहणात्, सर्वसम्भवाभावात्, शक्तस्य शक्यकरणात्, कारणभावाच्च असंतं चेव कज्जमुप्पज्जदि त्ति के वि भणंति। तण्ण जुज्जदे, विसेससरूवेणेव सामण्णसरूवेण वि असंते बुद्धिविसयमइक्कंते वयणगोयरमुल्लंघिय ट्ठिदकारणकलावबावारविरोहादो। अविरोहे वा, मट्टियपिंडादो घडो व्व गद्दहसिंगं पि उप्पज्जेज्ज, असंतं पडि

यदि कार्य सर्वथा सत् है तो वह पुरुषके समान उत्पन्न नहीं हो सकता। और परिणामकी कल्पना नित्यत्वरूप एकान्त पक्षकी विघातक है ॥३॥

विशेषार्थ— अभिप्राय यह है कि यदि कार्यको सर्वथा सत् ही स्वीकार किया जाता है तो जैसे सांख्य मतमें पुरुषकी उत्पत्ति नहीं मानी गई है वैसे ही पुरुषके समान सर्वथा सत् होनेसे प्रकृतिसे महान व अहंकारादिकी भी अनुत्पत्तिका अनिवार्य प्रसंग आता है, जो उन्हें अभीष्ट नहीं है। इस प्रसंगको टालनेके लिये यदि कहा जाय कि यथार्थमें न कोई कार्य उत्पन्न होता है और न नष्ट ही होता है। किन्तु जिस प्रकार कछवा अपने विद्यमान अंगोंको कभी बाहिर निकलता है और कभी भीतर छुपा लेता है, इसी प्रकार पूर्वमें विद्यमान महान् व अहंकारादिका प्रधानसे आविर्भाव मात्र होता है। इस प्रकारके आविर्भाव व तिरोभावरूप परिणामको छोड़कर कार्य-कारणभाव वास्तवमें है ही नहीं। सो इस कथनको असंगत बतलाते हुए उत्तरमें यहां कहा गया है कि पूर्वस्वभाव (तिरोभूत अवस्था) के नाश और उत्तरस्वभाव (आविर्भूत अवस्था) के उत्पन्न होनेका नाम ही तो परिणाम है। फिर भला ऐसे परिणामकी कल्पना करनेपर नित्यत्वरूप एकान्त पक्षमें कैसे बाधा न उपस्थित होगी ? अवश्य होगी।

इसके अतिरिक्त सर्वथा नित्यत्वकी प्रतिज्ञामें मन, वचन व कायकी शुभ प्रवृत्तिरूप पुण्य क्रिया तथा उनकी अशुभ प्रवृत्तिरूप पाप क्रिया भी नहीं बन सकती। अत एव पुण्य व पापका अभाव होनेपर जन्मान्तरप्राप्तिरूप प्रेत्यभाव तथा सुख व दुखके अनुभवनरूप पुण्य एवं पापका फल भी कहांसे होगा ? नहीं हो सकेगा। इसलिये हे भगवन् ! जिन एकान्तवादियोंके आप नेता नहीं हैं उनके मतमें बन्ध व मोक्षकी व्यवस्था भी नहीं बन सकती ॥ ४ ॥

अब सत् कार्यके किये न जा सकनेसे उपादनोंका ग्रहण होनेसे, सबसे सबकी उत्पत्तिका अभाव होनेसे, शक्त कारण द्वारा शक्य कार्यके ही किये जानेसे तथा कारणभाव होनेसे असत् ही कार्य उत्पन्न होता है; ऐसा कणाद (वैशेषिकदर्शनके कर्ता) और गौतम (न्यायदर्शनके कर्ता) आदि कितने ही ऋषि कहते हैं वह भी योग्य नहीं है, क्योंकि, कार्य जैसे विशेष (घटादि आकार) स्वरूपसे असत् है वैसे ही यदि उसे सामान्य (मृत्तिका आदि) स्वरूपसे भी असत् स्वीकार किया जाय तो ऐसा कार्य न तो बुद्धिका ही विषय हो सकता है और न वचनका भी। अत एव बुद्धि व वचनके अविषयतभूत ऐसे कार्यके लिये स्थित कारणकलापके व्यापारका विरोध आता है। और यदि विरोध न माना जाय तो फिर जैसे मिट्टीके पिण्डसे घट उत्पन्न होता है वैसे ही उससे गधेका सींग भी उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, असत्त्वकी

१ आ. मी. ३९. २ काप्रतौ 'प्रेत्यभावफलं' इति पाठः। ३ आ. मी. ४०.

विसेसाभावादो। किं च- जदि पिंडे असंतो घडो समुप्पज्जइ तो वालुवादो वि तदुप्पत्ती होदु, असंतं पडि विसेसाभावादो। किं च—इदं चेव एदस्स कारणं, ण अण्णमिदि एदं पि ण जुज्जदे; णियामयाभावादो। भावे वा, कारणे कज्जस्स अत्थित्तं मोत्तूण कोवरो णियामयो होज्ज? ण सहावो णियामओ, कज्जुप्पत्तीए पुव्वं कज्जस्सहावस्स[1] अभावादो। ण चासंतो[2] असंतस्स णियामयो होदि, अइप्पसंगादो। किं च—पिंडे घडो व्व तिहुवणमुप्पज्जउ, असंतं पडि भेदाभावादो। ण च एवं, परिमियकज्जुप्पत्तिदंसणादो। किं च—समत्थो वि कुंभारो मट्टियपिंडे घडं व पडं किण्ण उप्पादेदि, विसेसाभावादो? विसेसभावे वा सगसत्तं मोत्तूण कोवरो विसेसो होज्ज? वुत्तं च—

यद्यसत्सर्वथा कार्यं तन्माजनि खपुष्पवत्।
मोपादाननियामो भून्माश्वासः कार्यजन्मनि[3] ॥ ५ ॥

अपेक्षा दोनोंमें कोई विशेषता नहीं है। दूसरे, यदि मृत्पिण्डमें अविद्यमान घट उससे उत्पन्न होता है तो वह मृत्पिण्डके समान वालुसे भी क्यों न उत्पन्न हो जावे? अवश्य ही उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, असत्त्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है। [अर्थात् जैसे वह मृत्पिण्डमें अविद्यमान है वैसे ही वह वालुमें भी अविद्यमान है। फिर क्या कारण है कि वह मृत्पिण्डसे तो उत्पन्न होता है और वालुसे नहीं उत्पन्न होता? अत एव मानना चाहिये कि घट मृत्पिण्डमें व्यक्तिरूपसे अविद्यमान होकर भी शक्तिरूपसे विद्यमान है, किन्तु वालुमें वह शक्तिरूपसे भी विद्यमान नहीं है; अतएव वह जैसे मृत्पिण्डसे उत्पन्न होता है वैसे वालुसे उत्पन्न नहीं हो सकता।]

और भी—कार्यको सर्वथा असत् माननेपर यही इसका कारण है, अन्य नहीं है; यह भी घटित नहीं होता, क्योंकि, इसका कोई नियामक नहीं है। और यदि कोई नियामक है भी, तो वह कारणमें कार्यके अस्तित्वको छोड़कर दूसरा भला कौनसा नियामक हो सकता है? यदि कहो कि स्वभाव नियामक है तो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, कार्योत्पत्तिके पूर्वमें कार्यके स्वभावका अभाव है। और एक असत् कुछ दूसरे असत्का नियामक हो नहीं सकता, क्योंकि, वैसा होनेपर अतिप्रसंग आता है। इसके अतिरिक्त—मृत्पिण्डमें जैसे घट उत्पन्न होता है वैसे ही उससे तीनों लोक भी उत्पन्न हो जाने चाहिये; क्योंकि, असत्त्वकी अपेक्षा इनमें कोई भेद भी नहीं है। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, परमित कार्यकी उत्पत्ति देखी जाती है। इसके सिवाय समर्थ भी कुम्हार मृत्पिडमें जैसे घटको उत्पन्न करता है वैसे पटको क्यों नहीं उत्पन्न करता, क्योंकि, किसी भी विशेषताका यहां अभाव है। अथवा यदि कोई विशेषता है, तो वह अपने अस्तित्वको छोड़कर और दूसरी क्या हो सकती है? कहा भी है—

यदि कार्य सर्वथा (पर्यायके समान द्रव्यसे भी) असत् है तो वह आकाशकुसुमके समान उत्पन्न ही नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त वैसी अवस्थामें घटका उपादान मिट्टी है, तन्तु नहीं है, इस प्रकारका उपादाननियम भी नहीं बन सकेगा। इसीलिये अमुक कार्य अमुक कारणसे उत्पन्न होता है, अमुकसे नहीं; इस प्रकारका कोई भी आश्वासन कार्यकी उत्पत्तिमें नहीं हो सकता ॥ ५ ॥

१ ताप्रतौ 'कज्जस्स सहावस्स' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। का-ताप्रत्योः 'णवासंतो' इति पाठः।
३ आ. मी. ४२.

किं च– ण णिच्चादो कारणकलावादो असंतं कज्जमुप्पज्जइ, णिच्चस्स अणाहेयादि-सयस्स पमाणगोयरमइक्कंतस्स अणहिलप्पस्स असंतस्स कारणत्तविरोहादो। ण कमेण कुणदि, णिच्चम्मि कमाभावादो। भावे वा, अणिच्चं होज्ज; अवत्थादो अवत्थंतरं गयस्स[1] णिच्चत्तविरोहादो। ण च अकमेण कुणदि, एगसमए समुप्पाइदसयलकज्जस्स विदियसमए असंतप्पसंगादो। ण च अकज्जं कारणमत्थित्तमल्लियइ, पमाणविसयमइक्कंतस्स अत्थित्त-विरोहादो।

ण च अणिच्चादो कारणादो असंतं कज्जमुप्पज्जदि, अट्ठियस्स कारणत्तविरोहादो। ण ताव उप्पज्जमाणमुप्पादेदि, एगसमए चेव सव्वकज्जाणमुप्पत्तिप्पसंगादो। ण च एवं, विदियसमए सव्वकज्जस्स अणुवलद्धिप्पसंगादो। ण च उप्पण्णमुप्पादेदि, अणवट्ठियस्स दुसमयअवट्ठाणविरोहादो। ण च णट्ठं कज्जमुप्पादेदि, अभावस्स सयलसत्तिविरहियस्स

और भी—नित्य कारणकलापसे तो असत् कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि, सर्वथा नित्य वस्तु अनाधेयातिशय होनेसे न प्रमाणकी विषय हो सकती है और न वचनकी भी विषय हो सकती है। इस प्रकार असत् होनेसे [गधेके सींगके समान] उसके कारणताका विरोध है। [इतनेपर भी यदि उसे कारण स्वीकार किया जाता है तो यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि विवक्षित कारण क्या क्रमसे कार्यको करता है या अक्रमसे ?] क्रमसे तो वह कार्यको कर नहीं सकता, क्योंकि, नित्यमें क्रमकी सम्भावना ही नहीं है। अथवा यदि उसमें क्रमकी सम्भावना है तो फिर वह अनित्यताको प्राप्त होना चाहिये, क्योंकि, एक अवस्थासे दूसरी अवस्थाको प्राप्त होनेपर नित्यताका विरोध है। अक्रमसे वह कार्यको करता है, यह द्वितीय पक्ष भी योग्य नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक समयमें समस्त कार्यको उत्पन्न करके द्वितीय समयमें उसके असत्त्वका प्रसंग आता है। इस प्रकारसे कार्यव्यापारसे रहित कारण अस्तित्वको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि, प्रमाण (अनुमानादि) का अविषय होनेसे उसके अस्तित्वका विरोध है।

अनित्य कारणसे असत् कार्य उत्पन्न होता है, यह बौद्धाभिमत भी ठीक नहीं है; क्योंकि, स्थिति रहित वस्तुके कारणताका विरोध है [यदि स्थितिसे रहित अर्थ भी कारण हो सकता है तो वह क्या उत्पद्यमान होता हुआ कार्यको उत्पन्न करता है, उत्पन्न होकर कार्यको उत्पन्न करता है, नष्ट होकर कार्यको उत्पन्न करता है, अथवा विनश्यमान होता हुआ कार्यको उत्पन्न करता है ?] उत्पद्यमान होता हुआ तो वह कार्यको उत्पन्न कर नहीं सकता, क्योंकि, इस प्रकारसे एक समयमें ही समस्त कार्योंके उत्पन्न होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर द्वितीय समयमें समस्त कार्योंकी अनुपलब्धिका प्रसंग प्राप्त होता है। उत्पन्न होकर वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, अवस्थानसे रहित उसका दो समयोंमें रहनेका विरोध है। नष्ट हो करके वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, नष्ट होनेपर अभाव स्वरूपको प्राप्त हुए उसके समस्त शक्तियोंसे रहित होनेके कारण कार्यको उत्पन्न करनेका विरोध

१ काप्रतौ 'सयस्स' इति पाठः।

कज्जुप्पायणत्तविरोहादो। अविरोहे वा, ससर्सिगादो वि ससी समुप्पज्जेज्ज, अभावं पडि विसेसाभावादो। ण च विणस्संतमुप्पादेदि, विणट्ठाविणट्ठभावे मोत्तूण विणस्संतभावस्स तइज्जस्स अणुवलंभादो। तदो णासंतं पि कज्जमुप्पज्जदि। णोभयसरूवं कज्जमुप्पज्जइ, विरोहादो उभयपक्खदोसप्पसंगादो वा। णाणुभयपक्खो वि, णीरूवस्स उप्पत्तिविरोहादो। ण च कज्जाभावो, उवलब्भमाणस्स अभावविरोहादो। तदो सिया संतं, सिया असंतं, सिया अवत्तव्वं, सिया संतं च असंतं च, सिया संतं च अवत्तव्वं च, सिया असंतं च अवत्तव्वं च, सिया संतं च असंतं च अवत्तव्वं कज्जमुप्पज्जदि त्ति णिच्छओ कायव्वो; अण्णहा पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो।

एदेसिं भंगाणमत्थो वुच्चदे। तं जहा—कज्जं सिया संतमुप्पज्जदि, पोग्गलभावेण मट्टियादिवंजणपज्जाएहि य संतस्स दव्वस्स घडपज्जाएण उप्पत्तिदंसणादो। सिया असंतमुप्पज्जइ, पिंडागारेण णट्ठस्स पोग्गलदव्वस्स घडभावेण उप्पत्तिदंसणादो। सिया अवत्तव्वं कज्जमुप्पज्जइ, पोग्गलदव्वस्स अत्थपज्जाएहि वयणविसयमइक्कंतस्स घडभावेणुप्पत्तिदंसणादो, विहि-पडिसेहधम्माणं सगसरूवापरिच्चाएण अण्णोण्णाणुगयत्तादो जच्चंतर-

है। और यदि इस विरोधको नहीं माना जाता है, तो फिर खरगोशके सींगसे भी चन्द्रमा उत्पन्न हो जाना चाहिये, क्योंकि, अभावकी अपेक्षा उनमें कोई विशेषता नहीं है। विनश्यमान होता हुआ वह कार्यको उत्पन्न करता है, यह पक्ष भी असंगत है; क्योंकि, विनष्ट और अविनष्ट पदार्थोंको छोड़कर तीसरा कोई विनश्यमान पदार्थ पाया नहीं जाता। इस कारण सत् कार्यके समान असत् कार्य भी उत्पन्न नहीं हो सकता है। यदि कहा जाय कि उभय (सत्-असत्) स्वरूप कार्य उत्पन्न होता है, सो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, उसमें विरोध आता है। अथवा, उभय पक्षमें दिये गये दोषोंका प्रसंग अनिवार्य होगा। अनुभय (न सत् न असत्) पक्ष भी नहीं बनता, क्योंकि, वैसी अवस्थामें निःस्वरूप होनेसे उसकी उत्पत्तिका विरोध है। यदि कार्यका ही अभाव स्वीकार किया जाय तो यह भी अनुचित होगा, क्योंकि, जो प्रत्यक्षादिसे उपलभ्यमान है उसका अभाव माननेमें विरोध आता है। इस कारण कथंचित् सत्, कथंचित् असत्, कथंचित् अवक्तव्य, कथंचित् सत् व असत्, कथंचित् सत् व अवक्तव्य, कथंचित् असत् व अवक्तव्य, तथा कथंचित् सत् व असत् और अवक्तव्य कार्य उत्पन्न होता है ऐसा निश्चय करना चाहिये; क्योंकि, इसके बिना एकान्त पक्षोंमें दिये गये पूर्वोक्त दोषोंका प्रसंग अनिवार्य है।

इन भंगोंका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है—कार्य कथंचित् सत् उत्पन्न होता है, क्योंकि, पुद्गल स्वरूपसे और मृत्तिका आदि व्यञ्जन पर्यायरूपसे भी सत् द्रव्यकी घट पर्याय स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है। कथंचित् वह असत् उत्पन्न होता है, क्योंकि, पिण्डरूप आकारसे नष्ट हुए पुद्गल द्रव्यकी घट स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है। कथंचित् अवक्तव्य कार्य उत्पन्न होता है, क्योंकि, अर्थ पर्यायोंकी अपेक्षा वचनके अविषयभूत पुद्गल द्रव्यकी घट स्वरूपसे उत्पत्ति देखी जाती है, अथवा अपने स्वरूपको न छोड़कर परस्परमें अनुगत होनेसे जात्यन्तर भावको प्राप्त हुए विधि-प्रतिषेध धर्मोंको कहनेवाले शब्दका अभाव है, इसलिये भी कार्य अवक्तव्य उत्पन्न होता है।

मावण्णाणं पदुप्पायणसद्दाभावादो वा । कुदो जच्चंतरत्तं ? संजोग-समवाएहि विणा अण्णोण्णाणुगयत्तादो । को संजोगो ? पुधप्पसिद्धाण मेलणं संजोगो । को समवाओ ? एगत्तेण अजुदसिद्धाणं मेलणं । ण विहि-पडिसेहाणं[1] संजोगो, पुधप्पसिद्धीए अभावादो । ण समवाओ वि, सामण्णसरूवेण सव्वकालमण्णोण्णाजहावुत्तीए ट्ठिदाण संबंधाणुववत्तीदो । ण च एयतेण दुविहसंबंधाभावो, विहि[2]-प्पडिसेहविसेसं पडुच्च तदुभयमबंधुवलंभादो । ण च विहि-प्पडिसेहाणं पुधभावो णत्थि, भिण्णपच्चयगेज्झत्तेण पुधभूददव्वावट्ठाणेण च तदुवलभादो । तदो सिद्धं जच्चंतरत्तं ।

सिया संतमसंतं च उप्पज्जदि णेगमणयावलंबणेण । को णेगमो ? यदस्ति न तद्द्वयमतिलंघ्य वर्तत इति नैकगमो नैगमः । सिया संतं च अवत्तव्वं च अवत्तव्वेण सह विहिधम्मप्पणाए । एवं णेगमणयमस्सियूण ट्ठिदसेसभंगाणं पि अत्थो वत्तव्वो । ण च

शंका—जात्यन्तरता क्यों है ?

समाधान—कारण कि वे विधि-प्रतिषेध धर्म संयोग व समवायके विना परस्परमें अनुगत हैं ।

शंका—संयोग किसे कहते हैं ?

समाधान—पृथक् प्रसिद्ध पदार्थोंके मेलको संयोग कहते हैं ।

शंका—समवाय किसे कहते हैं ?

समाधान—अयुतसिद्ध पदार्थोंका एक रूपसे मिलनेका नाम समवाय है ।

विधि और प्रतिषेध धर्मोंका संयोग तो सम्भव नहीं है, क्योंकि, उनमें पृथक्सिद्धत्वका अभाव है । समवायकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, सामान्य स्वरूपसे सब कालमें परस्पर अजहत् वृत्तिसे स्थित उक्त दोनों धर्मोंका सम्बन्ध नहीं बन सकता । और एकान्ततः इन दो प्रकारके सम्बन्धोंका अभाव हो, ऐसा भी नहीं है; क्योंकि, विधि-प्रतिषेधविशेषकी अपेक्षा वे दोनों सम्बन्ध पाये जाते हैं । विधि व प्रतिषेध धर्मोंके भिन्नता नहीं हो, यह भी बात नहीं है; क्योंकि, भिन्न प्रत्यय द्वारा ग्राह्य होनेसे तथा पृथग्भूत द्रव्योंमें रहनेसे उनमें भिन्नता पायी जाती है । इसलिये उनमें जात्यन्तरत्व सिद्ध है ।

नैगम नयकी अपेक्षा कथंचित् सत् व असत् कार्य उत्पन्न होता है ।

शंका—नैगम नय किसे कहते हैं ?

समाधान—'जो विद्यमान है वह भेद व अभेद इन दोनोंका उल्लंघन करके नहीं रहता' इस कारण जो उन दोनोंमेंसे किसी एकको विषय न करके विवक्षाभेदसे दोनोंको ही विषय करता है वह नैगम नय कहा जाता है ।

अवक्तव्यके साथ विधि धर्मकी प्रधानतासे कार्य कथंचित् सत् व अवक्तव्य उत्पन्न होता है । इसी प्रकार नैगम नयका आश्रय करके स्थित शेष भंगोंके भी अर्थका कथन करना चाहिये ।

---

१ ताप्रतौ 'विहिपडिसेहणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'विविह' इति पाठः ।

एत्थ पुव्वुत्तदोसा संभवंति, एयंतविसयाणं दोसाणमणेयंते संभवविरोहादो । को अणेयंतो णाम ? जच्चंतरत्तं । उप्पत्ती णाम ण परदो, अणवत्थापसंगादो । ण सदो, असंतस्स कारणत्ताणुववत्तीदो । दीसइ च सव्वत्थाणं सत्तं, तदो णिच्चा सव्वत्था त्ति णत्थि कज्जुप्पत्ती ? ण एस दोसो, पमाणगोयरमइक्कंतस्स णिच्चत्थस्स अत्थित्तविरोहादो । णिच्चत्थो पमाणविसयमइक्कंतो, अक्कमेण कमेण वा तत्थ कम्म-कत्तारपज्जायाणमभावादो, भावे च अणिच्चत्तप्पसंगादो । ण च कज्जं परदो चेव उप्पज्जदि सदो वा, दव्व-खेत्त-काल-भावे पडुच्च उप्पज्जमाणकज्जुवलंभादो । ण च पमाणेण विसईकयत्थो पमाणपडिकूलदाए[1] अवगयअप्पमाणत्तेहि वियप्पाभासेहि अण्णहा काउं सक्किज्जदि, अव्ववत्थापसंगादो ।

वत्थुविणासो ण परदो होदि, पसज्ज-पज्जुदासलक्खणअभावाणमण्णेहिंतो उप्पत्ति-

यहां पूर्वोक्त (सत् व असत् एकान्त पक्षमें दिये गये) दोषोंकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, एकान्तको विषय करनेवाले दोषोंकी अनेकान्तके विषयमें सम्भावना नहीं है ।

शंका—अनेकान्त किसे कहते हैं ।

समाधान—जात्यन्तरभावको अनेकान्त कहते हैं ।

शंका—उत्पत्ति किसी दूसरेसे नहीं हो सकती, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनवस्थाका प्रसंग आता है । [अर्थात् विवक्षित घटादि कार्यकी उत्पत्ति जिस किसी दूसरेसे होती है, वह भी अन्य किसी दूसरेसे ही उत्पन्न होगा । इस प्रकार उत्तरोत्तर कल्पना करनेपर व्यवस्था नहीं बनेगी, इसलिये अनवस्था दोष सम्भव है ।] यदि कहा जाय कि कार्य किसी दूसरेसे उत्पन्न न होकर स्वतः उत्पन्न होता है, तो यह भी सम्भव नहीं है; क्योंकि, असत् पदार्थके कारणता बन नहीं सकती । और चूंकि सब पदार्थोंका सत्त्व देखनेमें आता है, इसीलिये समस्त पदार्थोंके नित्य होनेसे कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नित्य पदार्थ चूंकि प्रमाणगोचर नहीं है, अर्थात् प्रत्यक्ष व अनुमानादि किसी भी प्रमाणसे सिद्ध नहीं है, अत एव उसके अस्तित्वका विरोध है । नित्य अर्थ प्रमाणका विषय नहीं है, क्योंकि, युगपत् अथवा क्रमसे उसमें कर्म व कर्ता रूप पर्यायोंका अभाव है । और यदि उनका सद्भाव है तो फिर उसके अनित्य होनेका प्रसंग आता है । इसके अतिरिक्त कार्य परसे ही उत्पन्न होता हो अथवा स्वतः ही उत्पन्न होता हो, यह बात भी नहीं है; क्योंकि, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावका आश्रय करके उत्पन्न होनेवाला कार्य पाया जाता है । दूसरे, प्रमाणके प्रतिकूल होनेसे जिनकी अप्रमाणता ज्ञात हो चुकी है ऐसे विकल्पाभासों (परतः उत्पन्न है या स्वतः उत्पन्न है, इत्यादि) के द्वारा प्रमाणसे विषय किया गया पदार्थ अन्यथा करनेके लिये शक्य नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारसे अव्यवस्थाका प्रसंग आता है ।

शंका—वस्तुका विनाश परके निमित्तसे नहीं होता है, क्योंकि, प्रसज्य व पर्युदासरूप

१ काप्रतौ 'पडिकुलदाए' इति पाठः ।

विरोहादो । तदो णिरहेउओ विणासो । वुत्तं च भास्से[1]—

जातिरेव हि भावानां निरोधे हेतुरिष्यते ।
यो जातश्च न च ध्वस्तो नश्येत् पश्चात् स केन वः[2] ॥६॥

खणक्खइणो च ण कज्जमुप्पज्जदि, उप्पण्णुप्पज्जमाणेहिंतो कज्जुप्पत्तिविरोहादो । तदो ण कज्जमुप्पज्जदि त्ति ? ण, उप्पत्तीए विणा खणखइत्तविरोहादो । ण चाणुप्पण्णं विणस्सदि, गद्दहसिंगस्स वि विणासप्पसंगादो[3] । ण च खणक्खइवत्थू अत्थि, पमाण-पमेयाणमभावप्पसंगादो । वुत्तं च—

क्षणिकैकान्तपक्षेऽपि प्रेत्यभावाद्यसम्भवः ।
प्रत्यभिज्ञाद्यभावान्न कार्यारम्भः कुतः फलम्[4] ॥ ७ ॥

तदो उप्पाद-ट्ठिदि-भंगलक्खणं सव्वं दव्वं ति इच्छेयव्वं । उत्तं च—

अभावोंका दूसरोंसे उत्पन्न होनेका विरोध है । इसीलिये विनाश निर्हेतुक है । कहा भी भाष्य में—

पदार्थोंके विनाशमें जाति (उत्पत्ति) को ही कारण माना जाता है । परन्तु जो उत्पन्न होकर भी नष्ट नहीं होता है वह फिर पीछे आपके यहां किसके द्वारा नाशको प्राप्त होगा ? नहीं हो सकेगा ॥ ६ ॥

दूसरे, क्षणक्षयी कारणसे कार्य उत्पन्न भी नहीं हो सकता है; क्योंकि, उत्पन्न अथवा उत्पद्यमान कारणोंसे कार्यकी उत्पत्तिका विरोध है । इस कारण कार्य उत्पन्न नहीं होता ।

समाधान—ऐसा जो बौद्धका कहना है वह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उत्पत्तिके विना क्षणक्षयित्वका विरोध है । पदार्थ उत्पन्न हुए बिना नष्ट नहीं हो सकता; क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर गधेके सींगके भी विनाशका प्रसंग आता है । दूसरे क्षणक्षयी वस्तुका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर प्रमाण और प्रमेय दोनोंके अभावका प्रसंग आता है । कहा भी है—

क्षणिक एकान्त पक्षमें भी प्रत्यभिज्ञान आदिका अभाव होनेसे कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता, और जब कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता है तब उसके अभावमें भला पुण्य एवं पाप रूप फलकी सम्भावना कहांसे की जा सकती है ? तथा पुण्य व पापका अभाव होनेपर जन्मान्तर रूप प्रेत्यभाव एवं बन्ध-मोक्षादिका भी सद्भाव नहीं रह सकता ॥ ७ ॥

विशेषार्थ—सब पदार्थ क्षणक्षयी हैं, ऐसा एकान्त स्वीकार करनेपर स्मृति व प्रत्यभिज्ञान आदिकी सम्भावना नहीं की जा सकती है । कारण कि स्मृति पूर्वमें अनुभव किये गये पदार्थके विषयमें ही होती है । परन्तु जिसका वर्तमानमें अनुभव किया गया है वह तो उसी क्षणमें उत्पन्न होनेके साथ ही नष्ट हो चुका । इस प्रकार विषयका अभाव होनेसे स्मरण ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता । स्मरणके अभावमें प्रत्यभिज्ञान भी असम्भव है, क्योंकि, प्रत्यक्ष व स्मरणके

१ काप्रतौ 'भाष्ये', ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम् । २ उद्धृतेयं कारिका कसायपाहुडे १, पृ० २२७. ३ काप्रतौ 'विणासपसंगादो वि' इति पाठः । ४ आ. मी. ४१.

घटमौलिसुवर्णार्थी नाशोत्पादस्थितिष्वयम् ।
शोक-प्रमोद-माध्यस्थ्यं जनो याति सहेतुकम्[1] ॥ ८ ॥
पयोव्रतो न दध्यत्ति न पयोऽत्ति दधिव्रतः ।
अगोरसव्रतो नोभे तस्मात्तत्त्वं त्रयात्मकम्[2] ॥ ९ ॥

निमित्तसे 'यह वही देवदत्त है, गायके सदृश गवय होता है' इस प्रकार जो एकत्व व सादृश्य आदि विषयक ज्ञान उत्पन्न होता है उसे प्रत्यभिज्ञान कहा जाता है। पदार्थके सर्वथा क्षणिक होनेपर पूर्वोत्तर अवस्थाओंमें रहनेवाले एकत्व आदि धर्मोंके असम्भव होनेसे उक्त लक्षणवाले प्रत्यभिज्ञानकी भी सम्भावना नहीं की जा सकती है। इस प्रकार स्मरण व प्रत्यभिज्ञान आदिके साथ ही पूर्वोत्तर अवस्थाओंमें अवस्थित एक प्रमाता आत्माके भी न रह सकनेसे कार्यका आरम्भ नहीं हो सकता। कार्यके अभावमें उसके फल स्वरूप पुण्य-पाप एवं बन्ध-मोक्ष आदि भी नहीं बन सकते। अतएव वह क्षणिक एकान्त पक्ष ग्राह्य नहीं है।

इसलिये सब द्रव्यको उत्पाद, स्थिति (ध्रौव्य) व भंग (व्यय) स्वरूप स्वीकार करना चाहिये। कहा भी है—

घट, मुकुट और सुवर्णसामान्यका अभिलाषी यह मनुष्य क्रमशः घटके नाश, मुकुटके उत्पाद और सुवर्णसामान्यकी स्थितिमें शोक, प्रमोद एवं माध्यस्थ्य भावको प्राप्त होता है। यह सहेतुक है, अकारण नहीं है ॥ ८ ॥

विशेषार्थ—यहां वस्तुको उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य स्वरूप सिद्ध करनेके लिये निम्न प्रकार लौकिक दृष्टान्त दिया गया है—कल्पना कीजिये कि तीन मनुष्य क्रमसे सुवर्णघट, सुवर्णका मुकुट एवं सुवर्णसामान्यकी अभिलाषासे किसी विशेष दुकानपर जाते हैं। इसी समय दुकानदारके द्वारा सुवर्णघटको नष्ट करके मुकुटका निर्माण करानेपर उनमेंसे सुवर्णघटका अभिलाषी दुखी, मुकुटका अभिलाषी हर्षित और सुवर्णसामान्यका ग्राहक हर्ष-विषाद दोनोंसे ही रहित होकर मध्यस्थ रहता है। अब यदि कार्यका विनाश न होता तो घटके नष्ट होनेपर तदभिलाषी व्यक्तिको दुखी न होना चाहिये था। इसी प्रकार यदि कार्यका उत्पाद न होता तो मुकुटाभिलाषी व्यक्तिका हर्षित होना असंगत था। निरन्वय विनाशके होनेपर (ध्रौव्यके अभावमें) सुवर्णसामान्यके ग्राहककी उदासीनता भी स्थिर नहीं रह सकती थी। परन्तु चूंकि व्यवहारमें वैसा देखा जाता है; अतएव द्रव्यको उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य स्वरूप मानना ही चाहिये।

'मैं केवल दूधको ग्रहण करूंगा' ऐसा नियम लेनेवाला व्यक्ति दहीको नहीं खाता है, 'मैं केवल दही खाऊंगा' ऐसा नियम रखनेवाला व्यक्ति दूधको नहीं लेता है, तथा 'मैं गोरससे भिन्न पदार्थको ग्रहण करूंगा' ऐसा व्रत लेनेवाला व्यक्ति दूध व दही दोनोंको ही नहीं खाता है। इसीलिये वस्तुतत्त्व उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य इन तीनों स्वरूप है ॥ ९ ॥

विशेषार्थ—पर्याय स्वरूपसे होनेवाले उत्पाद व व्ययमें न सर्वथा भेद है और न सर्वथा अभेद ही है, किन्तु वे कथंचित् भेदाभेदको प्राप्त हैं। कारण कि दूधके अपने स्वरूपको छोड़कर दही रूपमें परिणत होनेपर भी यदि उनमें सर्वथा अभेद ही स्वीकार किया जाय तो दूधका

१ आ. मी. ५९. २ आ. मी. ६०.

न सामान्यात्मनोदेति न व्येति व्यक्तमन्वयात् ।
व्येत्युदेति विशेषात्ते सहैकत्रोदयादि सत्[1] ॥१०॥

सव्वं पि वत्थु विहि-पडिसेहप्पयं ति घेत्तव्वं, अण्णहा कज्ज-कारणभावविरोहादो । वुत्तं च—

भावैकान्ते पदार्थानामभावानामपह्नवात् ।
सर्वात्मकमनाद्यन्तमस्वरूपमतावकम्[2] ॥११॥

नियम करनेवालेके दहीका ग्रहण तथा दहीका नियम करनेवालेके दूधका ग्रहण करना अनुचित ठहरेगा । उसी प्रकार अन्वय प्रत्ययके विषयभूत गोरस सामान्यसे भी दूध व दही रूप विशेषोंको यदि सर्वथा भिन्न स्वीकार किया जाय तो गोरस-भिन्न भोजनका नियम करनेवालेके उन दोनोंका त्याग करना अयुक्तिसंगत होगा । परन्तु ऐसा है नहीं, अतएव सिद्ध है कि वस्तुतत्त्व अनेकान्तसे अनुगत होकर उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य स्वरूप ही है ।

कोई भी वस्तु सामान्य स्वरूपसे न उत्पन्न होती है और न नष्ट भी होती है, क्योंकि, इनमें सामान्य स्वरूपसे स्पष्टतया अन्वय देखा जाता है । किन्तु वही विशेष स्वरूपसे नष्ट भी होती है और उत्पन्न भी होती है । हे भगवन् ! इस प्रकार आपके मतमें एक ही वस्तुमें उत्पादादि तीनों ही एक साथ रहते हैं । इन्हीं तीनोंसे युक्त वस्तुको सत् कहा जाता है ॥१०॥

विशेषार्थ—पूर्वोत्तर पर्यायोंमें रहनेवाले साधारण स्वभावका नाम सामान्य है, जैसे सुवर्णसे उत्तरोत्तर होनेवाली कटक व कुण्डलादि रूप पर्यायोंमें सुवर्णसामान्य । इसकी अपेक्षा वस्तुका उत्पाद व विनाश सम्भव नहीं है, क्योंकि, कटकरूप पर्यायका नाश होकर कुण्डलरूप पर्यायके उत्पन्न होनेपर भी 'यह वही सुवर्ण है जिसके पहिले कटक बनवाये गये थे' ऐसा अन्वय प्रत्यय पाया जाता है । उत्पाद व विनाश केवल विशेष (पर्याय) की अपेक्षा होता है । यदि कटक व कुण्डल रूप आकारके समान सुवर्णद्रव्यका भी विनाश व उत्पाद हुआ होता तो उन दोनोंमें समान रूपसे सुवर्णत्वका बोध नहीं हो सकता था । परन्तु होता अवश्य है, अतः सिद्ध है कि सामान्य स्वरूपसे वस्तु उत्पाद-व्ययसे रहित होकर कथंचित् नित्य और वही विशेषकी अपेक्षा कथंचित् अनित्य भी है । ये सामान्य और विशेष धर्म भी परस्पर सापेक्ष रहते हैं, न कि निरपेक्ष । इस प्रकार उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये तीनों ही वस्तुमें एक साथ पाये जाते हैं । इन्हीं तीनोंसे युक्त वस्तुको सत् कहा जाता है और यही द्रव्यका लक्षण है ।

सभी वस्तु विधि-प्रतिषेधात्मक है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि, इसके बिना कार्य-कारणभावका विरोध है । कहा भी है—

अस्तित्वविषयक एकान्त पक्षमें अभावोंका अपलाप होनेसे दूसरोंके मतमें पदार्थोंके सर्वरूपता, अनादिता, अनन्तता और अस्वरूपताका प्रसंग आता है ॥११॥

विशेषार्थ—सांख्योंका अभिमत है कि सब पदार्थ सत्स्वरूप ही हैं, कोई भी असत् (अभाव) स्वरूप नहीं है । उनमें जो परिवर्तित अवस्थायें देखी जाती हैं वे आविर्भाव व तिरोभावके कारण होती हैं । उनके यहां निम्न २५ तत्त्व स्वीकार किये गये हैं—पुरुष, प्रकृति, महान्

---

१ आ. मी. ५७. २ आ. मी. ९.

कार्यद्रव्यमनादि स्यात् प्रागभावस्य निह्नवे ।
प्रध्वंसस्य च धर्मस्य प्रच्यवेऽनन्ततां व्रजेत्[1] ॥१२॥
सर्वात्मकं तदेकं स्यादन्यापोहव्यतिक्रमे ।
अन्यत्रसमवाये न व्यपदिश्येत सर्वथा[2] ॥१३॥

(बुद्धि), अहंकार, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय (वाक् , पाणि, पाद, पायु व उपस्थ), मन, पांच तन्मात्र (गन्ध, रस, रूप, स्पर्श व शब्द) और पांच भूत (पृथिवी, जल, तेज, वायु व आकाश) । इनमें प्रकृति कर्त्री और पुरुष भोक्ता है । प्रकृतिसे महान्, महान्से अहंकार, अहंकारसे ग्यारह इन्द्रियां व पांच तन्मात्र, तथा पांच तन्मात्रोंसे पांच भूतोंका आविर्भाव और इसके विपरीत क्रमसे उन सबका तिरोभाव (जैसे पृथिव्यादि पांच भूतोंका तिरोभाव गन्धादि पांच तन्मात्रोंमें) होता है । इस प्रकार सांख्यमतमें सब कार्य सत् ही हैं । उनके इस एकान्त पक्षको दूषित करते हुए उपर्युक्त कारिकामें कहा गया है कि सब पदार्थोंको सर्वथा सत् माननेपर अन्योन्याभाव, प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव और अत्यन्ताभाव, ये चारों ही अभाव नहीं बन सकेंगे । इनमेंसे महान् व अहंकारादिमें प्रकृतिका तथा प्रकृतिमें महदादिका अन्योन्याभाव न रहनेसे महदादिक प्रकृतिस्वरूप व प्रकृति महदादिस्वरूप भी हो सकती है । इस प्रकार अन्योन्याभावके अभावमें सबके सब स्वरूप हो जानेका प्रसंग अनिवार्य होगा । इसी प्रकार प्रागभाव (कार्योत्पत्तिके पूर्वमें उसका अभाव) के न रह सकनेसे महदादिके अनादिताका तथा प्रध्वंसाभाव (विनाश) के न रहनेसे उनके अनन्तताका प्रसंग भी दुर्निवार होगा । साथ ही प्रकृतिमें भोक्तृत्वका तथा पुरुषमें कर्तृत्वका अत्यन्ताभाव न रहनेपर प्रकृति व पुरुषका कोई निश्चित लक्षण भी नहीं बन सकेगा, अतः निःस्वरूपताका प्रसंग भी कैसे टाला जा सकेगा ? इसीलिये उक्त एकान्त पक्ष ग्राह्य नहीं हो सकता ।

प्रागभावका अपलाप होनेपर कार्यरूप द्रव्यके अनादि हो जानेका प्रसंग आता है । तथा प्रध्वंसरूप धर्मका (प्रध्वंसाभावका) अभाव होनेपर वह अनन्तता (अविनश्वरता) को प्राप्त हो जावेगा ॥१२॥

विशेषार्थ — कार्यके उत्पन्न होनेके पूर्वमें जो उसकी अविद्यमानता है उसे प्रागभाव कहा जाता है । इसको न माननेपर घट-पटादि कार्य अपने स्वरूपलाभ (उत्पत्ति) के पूर्वमें भी विद्यमान ही रहना चाहिये । इस प्रकार प्रागभावके अभावमें घटादि कार्योंके अनादि हो जानेका अनिष्ट प्रसंग आता है । कार्यके विनाशका नाम प्रध्वंसाभाव है । इसे स्वीकार न करनेपर चूंकि घटादि कार्योंका उत्पन्न होनेके पश्चात् कभी विनाश तो होगा ही नहीं, अत एव उनके अनन्त (अन्त रहित) हो जानेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि घटादि पर्यायविशेषोंका अपनी उत्पत्तिके पूर्वमें और विनाशके पश्चात् उन उन आकारविशेषोंमें अवस्थान देखा नहीं जाता । अत एव यह स्वीकार करना चाहिये कि पदार्थ सर्वथा भाव (अस्तित्व) स्वरूप नहीं है, किन्तु अपने अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वे कथंचित् भावस्वरूप तथा दूसरे पदार्थोंके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा कथंचित् अभावस्वरूप भी हैं ।

अन्यापोह (अन्योन्याभाव) का उल्लंघन होनेपर विवक्षित कोई एक तत्त्व सब तत्त्वों

१ आ. मी. १० २ आ. मी. ११.

अभावैकान्तपक्षेऽपि भावापह्नववादिनाम् ।
बोध-वाक्यं प्रमाणं न केन साधन-दूषणम्[1] ॥१४॥
विरोधान्नोभयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषाम् ।
अवाच्यतैकान्तेऽप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते[2] ॥१५॥

स्वरूप हो जावेगा । अन्यत्रसमवाय, अर्थात् ज्ञानादि गुणविशेषोंका अपने समवायी (आत्मादि) के अतिरिक्त दूसरे समवायीमें समवाय होनेपर अर्थात् अत्यन्ताभावके अभावमें अभीष्ट स्वरूपसे किसी भी तत्त्वका निर्देश नहीं किया जा सकेगा ॥ १३ ॥

विशेषार्थ—विवक्षित स्वभावकी दूसरे स्वभावोंसे रहनेवाली भिन्नताका नाम अन्योन्याभाव है, जैसे गायरूप स्वभाव (पर्याय) की अश्वादि स्वभावोंसे रहनेवाली भिन्नता । इस अन्योन्याभावको न माननेपर गाय अश्वस्वरूप और अश्व गायस्वरूप भी हो सकता है । इस प्रकार द्रव्यकी सब पर्यायें सभी पर्यायों स्वरूप हो सकती हैं । इससे लोकव्यवहारका विरोध होगा । अत एव द्रव्यकी विभिन्न पर्यायोंमें परस्पर भेदको प्रगट करनेवाले अन्योन्याभावको स्वीकार करना ही चाहिये । एक द्रव्यमें दूसरे द्रव्यसम्बन्धी असाधारण गुणोंके त्रैकालिक अभावको अत्यन्ताभाव कहा जाता है, जैसे पुद्गल द्रव्यमें चैतन्य गुणका अभाव और जीव द्रव्यमें रहनेवाला रूपादि गुणोंका अभाव । इस अत्यन्ताभावको स्वीकार न करनेसे एक द्रव्यके गुणोंका दूसरे द्रव्यमें समवाय सम्भव होनेपर दूसरोंके द्वारा कल्पित प्रकृति-पुरुषादिरूप तत्त्वोंका नियमित स्वरूप नहीं बन सकेगा । अत एव तत्त्वव्यवस्थाको स्थिर रखनेके लिये अत्यन्ताभावका भी अपलाप नहीं किया जा सकता है ।

'कोई भी पदार्थ सत्स्वरूप नहीं है' इस प्रकारसे सर्वथा अभाव पक्षको स्वीकार करनेपर भी सत्स्वरूपताका अपलाप करनेवाले शून्यैकान्तवादियों (माध्यमिक) के यहां बोधरूप स्वार्थानुमान और वाक्यरूप परार्थानुमान प्रमाणका भी सद्भाव नहीं रह सकेगा । ऐसी अवस्थामें शून्यता रूप स्वपक्षकी सिद्धि किस प्रमाणसे की जावेगी, तथा सत्स्वरूप पदार्थको स्वीकार करनेवाले अन्य वादियोंके पक्षको दूषित भी किस प्रमाणके द्वारा किया जावेगा ? ॥१४॥

विशेषार्थ—'पदार्थोंकी जिस स्वरूपसे प्ररूपणा की जाती है वह उनका स्वरूप वास्तवमें है नहीं, क्योंकि, पदार्थोंके एकानेकरूपता बनती नहीं है । अत एव बाह्य या आभ्यन्तर कोई भी पदार्थ सत्स्वरूप नहीं है ।' यह शून्यैकान्तवादी माध्यमिकोंका अभिमत है । इस एकान्त पक्षको असंगत बतलाते हुए यहां कहा गया है कि जो वादी शून्यमय जगत्को स्वीकार करते हैं उनके यहां सत् स्वरूप किसी भी पदार्थके न रहनेसे अपने अभीष्ट (शून्यता) पक्षके साधक और परपक्ष (सत्स्वरूपता) को दूषित करनेवाले अनुमानादि प्रमाणकी भी सत्ता सम्भव नहीं है । और ऐसा होनेपर प्रमाणके अभावमें उनका अभीष्ट तत्त्व भी सिद्ध नहीं हो सकता । इसलिये यदि स्वपक्षको सिद्ध करनेके लिये किसी प्रमाणविशेषकी सत्ता स्वीकार की जाती है तो उसके सद्भावमें 'सर्वथा शून्यमय जगत् है' यह उनका एकान्त पक्ष नहीं रहता ।

'पदार्थ सत् व असत् स्वरूप हैं' इस प्रकार अनेकान्तविरोधियोंके यहां उभयस्वरूपताका भी एकान्त पक्ष नहीं बनता, क्योंकि, उसमें विरोध है । तथा 'पदार्थ सर्वथा वचनके अगोचर

१ आ. मी. १२. २ आ. मी. १३.

कथंचित्ते सदेवेष्टं कथंचिदसदेव तत् ।
तथोभयमवाच्यं च नययोगान्न सर्वथा[1] ॥१६॥

हैं' इस प्रकारका भी एकान्त पक्ष सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर 'अवाच्य हैं' इस वाक्यका प्रयोग भी अयुक्त होगा ॥१५॥

विशेषार्थ— जो वादी पदार्थको सत् व असत् (उभय) स्वरूप मानकर भी उन दोनों धर्मोंमें परस्पर सापेक्षता स्वीकार नहीं करते उनके यहां उभयस्वरूपता भी असम्भव है, क्योंकि, जिस स्वरूपसे वे सत् हैं उसी स्वरूपसे उन्हें असत् माननेमें विरोध आता है। इस प्रकार स्याद्वाद न्यायके विना उक्त प्रकारसे उभयस्वरूपता भी नहीं बनती। किन्तु स्याद्वादका अवलम्बन करनेपर पदार्थको उभय (सत्-असत्) स्वरूप माननेमें कोई विरोध नहीं रहता। कारण कि स्वकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा सत्स्वरूप वस्तुको परकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा असत्स्वरूप भी मानना ही पड़ेगा, क्योंकि, इसके विना सबके सत् स्वरूप हो जानेका अनिवार्य प्रसंग आनेसे घट-पटादि पदार्थोंमें विभिन्नरूपता सम्भव नहीं है। जो वादी (बौद्ध) सत् व असत् पक्षोंमें दिये गये दोषोंके परिहारकी इच्छासे तत्त्वको अवक्तव्य स्वीकार करते हैं वे अपने इस अभिमतका परिज्ञान दूसरोंको किस प्रकारसे करावेंगे? कारण कि स्वसंवेदनसे तो दूसरोंको समझाया नहीं जा सकता है। यदि कहा जाय कि 'तत्त्व क्षणक्षयी व कल्पनातीत होनेसे अवाच्य है' इत्यादि वाक्योंके द्वारा दूसरोंको समझाया जा सकता है, सो यह भी उचित नहीं है; क्योंकि, ऐसा होनेपर 'सर्वथा अवक्तव्य है' यह सिद्धान्त स्वयमेव खण्डित हो जाता है। यह कथन तो उस व्यक्तिके समान स्ववचनबाधित है जो कि 'मैं मौनव्रती हूं' इन शब्दोंके द्वारा अपने मौनव्रतकी सूचना देता है।

हे भगवन्! आपका अभीष्ट तत्त्व कथंचित् सत् स्वरूप ही है, वह कथंचित् असत् स्वरूप ही है, कथंचित् उभय (सत्-असत्) स्वरूप भी है, और कथंचित् अवाच्य भी है। वह अभीष्ट तत्त्व नयके सम्बन्धसे ऐसा है, सर्वथा वैसा नहीं है ॥१६॥

विशेषार्थ—उक्त प्रकारसे सत्, असत्, उभय और अवाच्य स्वरूप एकान्त पक्षोंमें दोषोंको दिखाकर यहां इस कारिकाके द्वारा सप्तभंगीको प्रगट किया गया है। यद्यपि कारिकामें चार ही भंगोंका निर्देश है, तथापि उसमें प्रयुक्त 'च' शब्दके द्वारा शेष तीन भंगोंकी भी सूचना कर दी गयी है। प्रश्नके वश एक ही वस्तुमें विधि व निषेधकी कल्पना करनेको सप्तभंगी कहा जाता है। वह नयविवक्षाके अनुसार ही सम्भव है, न कि सर्वथा। वे सात भंग निम्न प्रकार हैं– (१) कथंचित् घट सत् स्वरूप है। इसमें द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे विधिकी कल्पना की गई है, क्योंकि, घटादिक सभी पदार्थ अपने अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावसे सत् स्वरूप ही हैं। यदि उन्हें अपने द्रव्यादिककी अपेक्षा सत् न माना जाय तो फिर वे खरविषाणके समान वस्तु ही नहीं रहेंगे। (२) कथंचित् घट असत् स्वरूप है। इसमें पर्यायार्थिक नयकी प्रधानतासे प्रतिषेधकी कल्पना की गई है, क्योंकि, परकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावसे घट असत् ही है। यदि परकीय द्रव्यादिकी अपेक्षा विवक्षित वस्तुको असत् न स्वीकार किया जावे तो जिस प्रकार घट

---

१ आ. मी. १४. सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं। दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि ॥ पंचा. १४.

ण च एयादो अणेयाणं कम्माणं वुत्पत्ती विरुद्धा, कम्मइयवग्गणाए अणंताणंत-संखाए अट्ठकम्मपाओग्गभावेण अट्ठविहत्तमावण्णाए एयत्तविरोहादो। णत्थि एत्थ एयंतो, एयादो घडादो अणेयाणं खप्पराणमुप्पत्तिदंसणादो। वुत्तं च—

कम्मं ण होदि एयं अणेयविहमेय बंधसमकाले।
मूलुत्तरपयडीणं परिणामवसेण जीवाणं ॥१७॥

जीवपरिणामाणं भेदेण परिणामिज्जमाणकम्मइयवग्गणाणं भेदेण च कम्माणं बंध-समकाले चेव अणेयविहत्तं होदि त्ति घेत्तव्वं। कधं मुत्ताणं कम्माणममुत्तेण जीवेण सह संबंधो? ण,[1] अणादिबंधणबद्धस्स जीवस्स संसारावत्थाए अमुत्तत्ताभावादो। अणादिबंधो

स्वकीय द्रव्यादिसे सत् है, उसी प्रकार वह परकीय द्रव्यादिककी अपेक्षा भी सत् ही ठहरेगा। और वैसा होनेपर 'यह घट है, पट नहीं है' इस प्रकारका भेद न रह सकनेसे सबके सब स्वरूप हो जानेका प्रसंग अनिवार्य होगा। अतएव अपने द्रव्यादिकी अपेक्षा वस्तु जैसे सत है वैसे ही वह परकीय द्रव्यादिकी अपेक्षा असत् भी है, यह मानना ही चाहिये। (३) कथंचित् घट सत् व असत् (उभय) स्वरूप है। यहां द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा क्रमसे विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। कारण कि यदि ऐसा न माना जावे तो फिर घटादि वस्तुओंमें क्रमशः होनेवाले सत् व असत् रूप विकल्पके व्यवहारका विरोध होगा। (४) कथंचित् घट अवक्तव्य है। इसमें युगपत् विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। चूंकि सत् व असत् रूप दोनों धर्मोंको एक साथ सूचित करनेवाला कोई भी शब्द सम्भव नहीं है, अतएव उस अवस्थामें वस्तुको अवक्तव्य मानना उचित ही है। 'च' शब्दसे सूचित शेष तीन भंग—(५) कथंचित् घट सत् व अवक्तव्य है। यहां विधिके साथ ही युगपत् विधि व प्रतिषेध की कल्पना की गई है। (६) कथंचित् घट असत् व अवक्तव्य है। यहां प्रतिषेधके साथ युगपत् विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। (७) कथंचित् घट सत्-असत् व अवक्तव्य है। यहां क्रमशः विधि व प्रतिषेध-की कल्पनाके साथ युगपत् भी विधि व प्रतिषेधकी कल्पना की गई है। इस प्रकार ये सात वाक्य ही सम्भव हैं। प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ भंगोंमें दो अथवा तीनके संयोग से उत्पन्न वाक्य इन्हींमें अन्तर्भूत होंगे, उनसे भिन्न सम्भव नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त एकसे अनेक कर्मोंकी उत्पत्ति विरुद्ध है, ऐसा कहना भी अयुक्त है: क्योंकि, आठ कर्मोंकी योग्यतानुसार आठ भेदको प्राप्त हुई अनन्तानन्त संख्यारूप कार्मण वर्गणाको एक माननेका विरोध है। दूसरे, एकसे अनेक कार्योंकी उत्पत्ति नहीं होती; ऐसा एकान्त भी नहीं है, क्योंकि, एक घटसे अनेक खप्परोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। कहा भी है—

कर्म एक नहीं है, वह जीवोंके परिणामानुसार मूल व उत्तर प्रकृतियोंके बन्धके समान-कालमें ही अनेक प्रकारका है ॥ १७ ॥

जीवपरिणामोंके भेदसे और परिणमायी जानेवाली कार्मण वर्गणाओंके भेदसे बन्धके समकालमें ही कर्म अनेकप्रकारका होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

शंका—मूर्त कर्मोंका अमूर्त जीवके साथ सम्बन्ध कैसे हो सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि अनादिकालीन बन्धनसे बद्ध रहनेके कारण जीवका संसार

१ ताप्रतौ 'ण' इत्येतत्पदं नास्ति।

कुदो णव्वदे ? जीव-सरीराणं वट्टमाणबंधण्णहाणुववत्तीदो। ण च वट्टमाणबंधघडावणट्ठं जीवस्स वि[1]रूवित्तं वोत्तुं जुत्तं, जीव-देहाणं महापरिमाणत्तादो रूवित्तणेण च उवलद्धि-लक्खणपत्ताणं रूव-रस-गंध-पासाणं पुधभूदाणमुवलंभप्पसंगादो। किं च— ण जीवदव्वमत्थि, 'रूपिणः पुद्गलाः'[2] इच्चेदेण लक्खणेण जीवाणं पोग्गलेसु अंतब्भावादो। ण च दव्वं दव्वं-तरस्स असाहारणगुणेण परिणमइ, अच्चंताभावेण णिरुद्धपवुत्तीदो। काणि दव्वाणमसा-हारणलक्खणाणि ? चेयणलक्खणं जीवदव्वं, रूव-रस-गंध-पासलक्खणं पोग्गलदव्वं, ओगाहणलक्खणमायासदव्वं, जीव-पोग्गलाणं गमणागमणणिमित्तकारणं धम्मदव्वं, तेसि-मवट्ठाणस्स णिमित्तकारणलक्खणमधम्मदव्वं, दव्वाणं परिणमणस्स णिमित्तकारणलक्खणं कालदव्वं। किं दव्वं णाम ? स्वकासाधारणलक्षणापरित्यागेन द्रव्यांतरासाधारणलक्षण-परिहारेण द्रवति द्रोष्यत्यदुद्रुवत् तांस्तान् पर्यायानिति द्रव्यं[3]। तदो जीवो अमुत्तो चेव, पोग्गलस्स असाहारणगुणेहि तस्स परिणामाभावादो। मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगा

अवस्थामें अमूर्त होना सम्भव नहीं है।

शंका— अनादिबन्धका परिज्ञान किस प्रमाणसे होता है ?

समाधान— चूंकि जीव और शरीरका वर्तमान बन्ध अनादिबन्धके विना बन नहीं सकता है, अत एव इस अन्यथानुपपत्तिरूप हेतुसे उसका ज्ञान हो जाता है।

शंका— वर्तमान बन्धको घटित करानेके लिये पुद्गलके समान जीवको भी रूपी कहना योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर जीव और शरीर दोनों चूंकि महान् परिमाणवाले हैं और रूपी भी हैं; अतएव वे इन्द्रियग्राह्य हो जाते हैं। इसलिए उनके रूप, रस, गन्ध और स्पर्शके अलग अलग ग्रहण होनेका प्रसंग आता है। दूसरे, जीव द्रव्यको इस प्रकारसे रूपी स्वीकार करनेपर उसका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है, क्योंकि, 'जो रूपी हैं वे पुद्गल हैं' इस सूत्रोक्त लक्षणके अनुसार रूपी माननेसे जीवोंका पुद्गलोंमें अन्तर्भाव हो जाता है। तीसरे, एक द्रव्य दूसरे द्रव्यके असाधारण गुणरूपसे परिणत भी नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसी प्रवृत्ति अत्यन्ताभावके द्वारा रोकी जाती है। द्रव्योंके असाधारण लक्षण कौनसे हैं ? जीव द्रव्यका असाधारण लक्षण चेतना; पुद्गल द्रव्यका रूप, रस, गन्ध व स्पर्श; आकाश द्रव्यका अवगाहन, धर्म द्रव्यका जीवों और पुद्गलोंके गमनागमनमें निमित्तकारणता, अधर्म द्रव्यका उक्त जीवों और पुद्गलोंके अवस्थानमें निमित्तकारणता, तथा काल द्रव्यका असाधारण लक्षण द्रव्योंके परिणमनमें निमित्तकारण होना है। द्रव्य किसे कहते हैं ? अपने असाधारण स्वरूपको न छोड़-कर दूसरे द्रव्योंके असाधारण स्वरूपका परिहार करते हुए जो उन उन पर्यायोंको वर्तमानमें प्राप्त होता है, भविष्यमें प्राप्त होगा व भूतकालमें प्राप्त हो चुका है वह द्रव्य कहलाता है। इसलिये जीव अमूर्तिक ही है, क्योंकि पुद्गल द्रव्यके जो रूप और रसादिक असाधारण गुण हैं उनके स्वरूपसे उसका परिणमन हो नहीं सकता। इसके अतिरिक्त मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और

१ काप्रतौ 'वि' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते। २ तत्त्वा० ५-५. ३ यथास्वं पर्यायैर्द्रूयन्ते द्रवन्ति वा तानि द्रव्याणि। स. सि ५-२.

जीवादो[1] अपुधभूदा कम्मइयवग्गणक्खंधाणं तत्तो पुधभूदाणं कधं परिणामांतरं संपादेंति ? ण एस दोसो, जलणट्ठिददहणगुणेण तेल्लस्स वट्टिगयस्स[2] कज्जलागारेण परिणामुवलंभादो । वुत्तं च—

राग-द्वेषाद्यूष्मा स योग[3]-वर्त्यात्मदीप आवर्ते[4] ।
स्कन्धानादाय पुनः परिणमयति तांश्च कर्मतया ॥१८॥

जदि मिच्छत्तादिपच्चएहि कम्मइयवग्गणक्खंधा अट्ठकम्मागारेण परिणमंति तो एगसमएण सव्वकम्मइयवग्गणक्खंधा कम्मागारेण [किं ण] परिणमंति, णियमाभावादो ? ण, दव्व-खेत्त-काल-भावे त्ति चदुहि णियमेहि णियमिदाणं परिणामुवलंभादो । दव्वेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ चेव वग्गणाओ एगसमएण एगजीवादो कम्मसरूवेण परिणमंति । खेत्तेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तोगाहणाओ जीवेणोगाढखेत्तट्ठियाओ चेव परिणमंति, ण सेसाओ । कालेण एगसमयमादिं कादूण जाव असंखेज्जलोगमेत्तकालं कम्मइयवग्गणसरूवेण ट्ठिदाओ चेव परिणमंति, ण सेसाओ ।

योग ये जीवसे अभिन्न होकर उसमें उससे पृथग्भूत कार्मण वर्गणाके स्कन्धोंके परिणामान्तर (रूपित्व) को कैसे उत्पन्न करा सकते हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अग्निमें स्थित दहन गुणके निमित्तसे वत्तीमें रहनेवाले तेलका कज्जलके आकारसे परिणाम पाया जाता है । कहा भी है—

संसारमें राग-द्वेषरूपी उष्णतासे संयुक्त वह आत्मारूपी दीपक योगरूप वत्तीके द्वारा [कार्मण वर्गणाके] स्कन्धोंको ग्रहण करके फिर उन्हें कर्मस्वरूपसे परिणमाता है ॥१८॥

शंका—यदि मिथ्यात्वादिक प्रत्ययोंके द्वारा कार्मण वर्गणाके स्कन्ध आठ कर्मरूपसे परिणमन करते हैं तो समस्त कार्मण वर्गणाके स्कन्ध एक समयमें आठ कर्मरूपसे क्यों नहीं परिणत हो जाते, क्योंकि, उनके परिणमनका कोई नियामक नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव, इन चार नियामकों द्वारा नियमको प्राप्त हुए उक्त स्कन्धोंका कर्मरूपसे परिणमन पाया जाता है । यथा— द्रव्यकी अपेक्षा अभवसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणी और सिद्ध जीवोंके अनन्तवें भाग मात्र ही वर्गणायें एक समयमें एक जीवके साथ कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं । क्षेत्रकी अपेक्षा जीवके द्वारा अवगाहको प्राप्त क्षेत्रमें स्थित अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अवगाहनावाली वर्गणायें ही कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष वर्गणायें कर्मस्वरूपसे परिणत नहीं होतीं । कालकी अपेक्षा एक समयसे लेकर असंख्यात लोक मात्र कालके भीतरकी कार्मणवर्गणा स्वरूपसे स्थित ही वे वर्गणायें कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष नहीं होती । भावकी अपेक्षा कार्मणवर्गणा पर्यायरूपसे परिणत

---

१ मप्रतौ 'जोगजीवादो' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'वड्ढिगयस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'सयोग-' इति पाठः । ४ मप्रतौ 'आदत्ते' इति पाठः ।

भावेण कम्मइयवग्गणपज्जाएण परिणदाओ चेव कम्मसरूवेण परिणमंति, ण सेसाओ[1]। वुत्तं च—

एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं।
बंधइ जहुत्तहेऊ[2] सादियमहणादियं वा वि[3] ॥१९॥

सो च एवंविहलक्खणो पक्कमो पयडिपक्कमो ठिदिपक्कमो अणुभागपक्कमो चेदि तिविहो। तत्थ पयडिपक्कमो दुविहो– मूलपयडिपक्कमो उत्तरपयडिपक्कमो चेदि। तत्थ मूलपयडिपक्कमं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवं एगसमयपबद्धम्हि आउअदव्वं, णामा-गोददव्वं अण्णोण्णं सरिसं होदूण विसेसाहियं, णाण-दंसणावरण-अंतराइयाणं दव्वमण्णोण्णेण सरिसं होदूण विसेसाहियं। मोहणीयदव्वं विसेसाहियं। वेयणीयदव्वं विसेसाहियं। सव्वत्थ विसेसपमाणमणंतरहेट्ठिमदव्वमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूण तत्थ एगखंडमेत्तं होदि। वुत्तं च—

आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ।
आवरण-अंतराए तुल्लो अहिओ दु मोहे वि ॥२०॥

ही वे कर्मस्वरूपसे परिणत होती हैं, शेष नहीं। कहा भी है—

जीव एकक्षेत्रमें अवगाहको प्राप्त हुए तथा कर्मके योग्य सादि, अनादि अथवा उभय स्वरूप पुद्गलप्रदेशसमूहको यथोक्त हेतुओं (मिथ्यात्व आदि) द्वारा अपने सब प्रदेशोंसे बांधता है ॥१९॥

इस प्रकारके लक्षणसे संयुक्त वह प्रक्रम प्रकृतिप्रक्रम, स्थितिप्रक्रम और अनुभागप्रक्रमके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमें प्रकृतिप्रक्रम मूलप्रकृतिप्रक्रम और उत्तरप्रकृतिप्रक्रमके भेदसे दो प्रकारका है। इनमें मूलप्रकृतिप्रक्रमका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है—एक समयप्रबद्धमें आयुका द्रव्य सबसे स्तोक है। नाम व गोत्र कर्मोंका द्रव्य परस्परमें समान होकर उससे विशेष अधिक है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय इन तीन कर्मोंका द्रव्य परस्परमें समान होकर नाम व गोत्रकी अपेक्षा विशेष अधिक है। मोहनीयका द्रव्य उससे विशेष अधिक है। वेदनीयका द्रव्य उससे विशेष अधिक है। सब जगह विशेषका प्रमाण अनन्तर अधस्तन द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करके जो एक खण्ड प्राप्त होता है उतने मात्र है। कहा भी है—

आयु कर्मका भाग सबसे स्तोक है। नाम व गोत्र कर्ममें वह समान हो करके उससे अधिक है। आवरण अर्थात् ज्ञानावरण व दर्शनावरण तथा अन्तरायमें वह समान होकर उक्त दोनों कर्मोंकी अपेक्षा विशेष अधिक है। मोहनीयमें उनसे विशेष अधिक है। किन्तु वेदनीय

१ ते खलु पुद्गलस्कन्धा अभव्यानन्तगुणाः सिद्धानन्तभागप्रमितप्रदेशा घनांगुलस्यासंख्येयभागक्षेत्रावगाहिन एक-द्वि-त्रि-चतुः-संख्येयासंख्येयसमयस्थितिकाः पंचवर्ण-पंचरस-द्विगन्ध-चतुःस्पर्शस्वभावा अष्टविधकर्मप्रकृतियोग्याः योगवशादात्मनात्मसात् क्रियन्त इति प्रदेशबन्धः समासतो वेदितव्यः। स. सि. ८–२४. २ ताप्रतौ 'जुहुत्तुहेयो सादियमणादियं' इति पाठः। ३ एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं। बंधदि सगहेदूहिं य अणादियं सादियं उभयं ॥ गो. क. १८५.

सव्वुवरि वेदणीए भागो अहिओ दु कारणं किंतु ।
सुह-दुक्खकारणत्ता ठिदिविसेसेण सेसाणं[1] ॥२१॥

एवं सत्तविह-छव्विहबंधगेसु वि पदेसपक्कमो परूवेयव्वो, विसेसाभावादो । एवं मूलपयडिपक्कमो समत्तो ।

उत्तरपयडिपक्कमो दुविहो– उक्कस्सउत्तरपयडिपक्कमो जहण्णउत्तरपयडिपक्कमो चेदि । तत्थ उक्कस्सए पयदं— सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणकसायमाणपदेसग्गं । अपच्चक्खाणकोधे विसेसाहियं । अपच्चक्खाणमायाए विसेसाहियं । अपच्चक्खाणलोहपदेसग्गं विसेसाहियं । पच्चक्खाणमाणपदेसग्गं विसेसाहियं । कोहे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । अणंताणुबंधिमाणपदेसग्गं विसेसाहियं । कोधे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । मिच्छत्ते विसेसाहियं । केवलदंसणावरणे विसेसाहियं । पयलाए विसेसाहियं । णिद्दाए विसेसाहियं । पयलापयलाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । णिद्दाणिद्दाए विसेसाहियं । थीणगिद्धीए विसेसाहियं । केवलणाणावरणे विसेसाहियं । आहारसरीरणामाए पक्कदव्वं अणंतगुणं । वेउव्वियसरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । ओरालियसरीरणामाए

कर्मका द्रव्य सर्वोत्कृष्ट हो करके मोहनीयकी अपेक्षा विशेष अधिक है । इसका कारण वेदनीयका सुख व दुखमें निमित्त होना है । शेष कर्मोंका हीनाधिक भाग उनकी स्थितिविशेषसे है ॥२०-२१॥

इसी प्रकारसे सात प्रकारके व छह प्रकारके कर्मोंको बांधनेवाले जीवोंमें भी प्रदेशप्रक्रमका कथन करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार मूलप्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ ।

उत्तरप्रकृतिप्रक्रम दो प्रकारका है— उत्कृष्ट उत्तरप्रकृतिप्रक्रम और जघन्य उत्तरप्रकृतिप्रक्रम । उनमें उत्कृष्ट उत्तरप्रकृतिप्रक्रम प्रकृत है— अप्रत्याख्यान कषायोंमें मानका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है । अप्रत्याख्यान क्रोधमें उससे अधिक प्रदेशाग्र है । अप्रत्याख्यान मायामें उससे अधिक प्रदेशाग्र है । अप्रत्याख्यान लोभमें उससे अधिक प्रदेशाग्र है । उससे प्रत्याख्यान मानका प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है । मायामें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है । लोभमें विशेष अधिक प्रदेशाग्र है । अनन्तानुबन्धी मानका प्रदेशाग्र उससे विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । वह प्रक्रमद्रव्य प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य आहारशरीर नामकर्ममें अनन्तगुणा है । प्रक्रमद्रव्य वैक्रियिकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य औदारिकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य तैजसशरीर नामकर्ममें

---

१ आउगभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो । घादितिये वि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ॥ सुह दुक्खणिमित्तादो बहुणिज्जरगो त्ति वेदणीयस्स । सव्वेहितो बहुगं दव्वं होदि त्ति णिद्दिट्ठं ॥ सेसाणं पयडीणं ठिदिपडिभागेण होदि दव्वं तु । आवलिअसंखभागो पडिभागो होदि णियमेण ॥ गो. क. १९२–१९४.

पक्कमदव्वं विसेसाहियं । तेजासरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । कम्मइयसरीरणामाए पक्कमदव्वं विसेसाहियं । देवगइ-णिरयगईणं पक्कमदव्वं संखेज्जगुणं । मणुसगईए विसेसाहियं । तिरिक्खगईए विसेसाहियं । अजसगित्तीए विसेसाहियं । दुगुंछाए पक्कमदव्वं संखेज्जगुणं । भयपक्कमदव्वं विसेसाहियं । हस्स-सोगपक्कमदव्वं विसेसाहियं । रदि-अरदिपक्कमदव्वं विसेसाहियं । इत्थि-णवुंसयवेदपक्कमदव्वं विसेसाहियं । दाणंतराए संखेज्जगुणं । लाभंतराए विसेसाहियं । भोगंतराए विसेसाहियं । परिभोगंतराए विसेसाहियं । विरियंतराए विसेसाहियं । कोहसंजलणे विसेसाहियं । मणपज्जवणाणावरणे विसेसाहियं । ओहिणाणावरणे विसेसाहियं । सुदणाणावरणे विसेसाहियं । मदिणाणावरणे विसेसाहियं । माणसंजलणे विसेसाहियं । ओहिदंसणावरणे विसेसाहियं । अचक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । चक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं । पुरिसवेदे विसेसाहियं । मायासंजलणे[1] विसेसाहियं । अण्णदरम्हि आउए विसेसाहियं । णीचागोदे विसेसाहियं । लोहसंजलणे विसेसाहियं । असादे विसेसाहियं । उच्चागोदे जसगित्तीए विसेसाहियं । सादे विसेसाहियं । एवमुक्कस्सपयडिपक्कमो समत्तो ।

जहण्णए पयदं– सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कमदव्वं । कोहे विसेसाहियं । मायाए विसेसाहियं । लोभे विसेसाहियं । पच्चक्खाणमाणे विसेसाहियं । कोधे विसेसाहियं । मायाए

विशेष अधिक है । प्रक्रमद्रव्य कार्मणशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । देवगति और नरकगतिका प्रक्रमद्रव्य संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें प्रक्रमद्रव्य संख्यातगुणा है । भयमें प्रक्रमद्रव्य विशेष अधिक है । हास्य व शोकमें प्रक्रमद्रव्य विशेष अधिक है । रति व अरतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेद व नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें संख्यातगुणा है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । अन्यतर आयुमें विशेष अधिक है । नीच गोत्रमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें विशेष अधिक है । उच्चगोत्र और यशःकीर्तिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें विशेष अधिक है । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ ।

जघन्य प्रकृतिप्रक्रम प्रकृत है—प्रक्रमद्रव्य अप्रत्याख्यान मानमें सबसे स्तोक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यान मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष

१ प्रत्योरुभयोरेव 'माणसंजलणे' इति पाठः ।

विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। अणंताणुबंधिमाणे विसेसाहियं। कोधे विसेसाहियं। मायाए विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। मिच्छत्ते विसेसाहियं। केवलदंसणावरणे विसेसाहियं। पयलाए विसेसाहियं। णिद्दाए विसेसाहियं। पयलापयलाए विसेसाहियं। णिद्दाणिद्दाए विसेसाहियं। थीणगिद्धीए विसेसाहियं। केवलणाणावरणे विसेसाहियं। ओरालियसरीरे अणंतगुणं। तेजइयसरीरे विसेसाहियं। कम्मइयसरीरे विसेसाहियं। तिरिक्खगईए संखेज्जगुणं। जसाजसगित्तीए सरिसं विसेसाहियं। मणुसगईए विसेसाहियं। दुगुंच्छाए संखेज्जगुणं। भये विसेसाहियं। हस्स-सोगे विसेसाहियं। रदि-अरदीसु विसेसाहियं। अण्णदरम्हि वेदे विसेसाहियं। माणसंजलणाए[1] विसेसाहियं। कोधे विसेसाहियं। मायाए विसेसाहियं। लोभे विसेसाहियं। दाणंतराइए विसेसाहियं। लाहंतराइए विसेसाहियं[2]। भोगंतराइए विसेसाहियं। परिभोगंतराइए विसेसाहियं। विरियंतराइए विसेसाहियं। मणपज्जवणाणावरणे विसेसाहियं। ओहिणाणावरणे विसेसाहियं। सुदणाणावरणे विसेसाहियं। मदिणाणावरणे विसेसाहियं। ओहिदंसणावरणे विसेसाहियं। अचक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं। चक्खुदंसणावरणे विसेसाहियं। उच्च-णीचागोदेसु संखेज्जगुणं। सादासादेसु विसेसाहियं। वेउव्वियसरीरे असंखेज्जगुणं। देवगईए संखेज्जगुणं। मणुस-तिरिक्खाउआणं असंखेज्जगुणं। णिरयगईए

अधिक है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। औदारिकशरीरमें अनन्तगुणा है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिमें संख्यातगुणा है। यशकीर्ति व अयशकीर्तिमें समान होकर विशेष अधिक है। मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें संख्यातगुणा है। भयमें विशेष अधिक है। हास्य व शोकमें विशेष अधिक है। रति व अरतिमें विशेष अधिक है। अन्यतर वेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। ऊंच व नीच गोत्रमें संख्यातगुणा है। साता व असाता वेदनीयमें विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। देवगतिमें संख्यातगुणा है। मनुष्य व तिर्यंच आयुका प्रक्रमद्रव्य असंख्यातगुणा है। नरकगतिका असंख्यातगुणा है। देव व नारक

१ ताप्रतौ 'अण्णदरम्हि विसे०, वेदे माणसंजलणाए' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'लाहंतराइए विसेसाहियं' इत्येतद् वाक्यं नास्ति।

असंखेज्जगुणं। देव-णिरयाउआणं असंखेज्जगुणं। आहारसरीरस्स पक्कमदव्वमसंखेज्जगुणं। एवं पयडिपक्कमो समत्तो।

ठिदिपक्कमे पयदं— सव्वत्थोवं चरिमाए ट्ठिदीए पक्कमिदपदेसग्गं। पढमट्ठिदीए पक्कमिदपदेसग्गमसंखेज्जगुणं। अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पक्कमिदपदेसग्गमसंखेज्जगुणं। अपढमाए पदेसग्गं विसेसाहियं। अचरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं। सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं। कुदो एदमप्पाबहुगं? ठिदीसु पक्कमिददव्वावेक्खत्तादो। तं जहा— जहण्णियाए ट्ठिदीए बहुअं पदेसग्गं पक्कमदि। बिदियाए विसेसहीणं। एवं विसेसहीणं होदूण गच्छदि जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, तत्थ दुगुणहीणं[1]। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति। एत्थ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो। णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि। एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं। एवं ठिदिपक्कमो समत्तो।

अणुभागपक्कमे पयदं—जहण्णियाए वग्गणाए बहुअं पदेसग्गं पक्कमदि। बिदियाए विसेसहीणमणंतभाएण। एवमणंताणि फद्दयाणि गंतूण दुगुणहीणं पक्कमदि। एवं णेयव्वं

आयुका असंख्यातगुणा है। आहारशरीरका प्रक्रमद्रव्य असंख्यातगुणा है। इस प्रकार प्रकृतिप्रक्रम समाप्त हुआ।

स्थितिप्रक्रम प्रकृत है—चरम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है। प्रथम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है। अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है। अप्रथम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र विशेष अधिक है। अचरम स्थितिमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र विशेष अधिक है। सब स्थितियोंमें प्रक्रमित प्रदेशाग्र विशेष अधिक है।

शंका—यह अल्पबहुत्व क्यों है?

समाधान—कारण कि वह स्थितियोंमें प्रक्रमको प्राप्त हुए द्रव्यकी अपेक्षा करता है। यथा— जघन्य स्थितिमें बहुत प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। द्वितीय स्थितिमें विशेषहीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार विशेषहीन होकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक जाता है। वहांकी स्थितिमें दुगुणा हीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये।

यहां एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग मात्र हैं। नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं। एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर उनसे असंख्यातगुणा है। इस प्रकार स्थितिप्रक्रम समाप्त हुआ।

अनुभागप्रक्रम प्रकृत है—जघन्य वर्गणामें बहुत प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। द्वितीय वर्गणामें अनन्तवें भाग रूप विशेष हीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार अनन्त स्पर्द्धक जाकर दुगुणा हीन प्रदेशाग्र प्रक्रान्त होता है। इस प्रकार उत्कृष्ट वर्गणा तक ले जाना चाहिये।

१ ताप्रतौ 'दुगुहीणं' इति पाठः।

जाव उक्कस्सवग्गणे त्ति । एयगुणहाणिट्ठाणंतरे फद्दयाणि थोवाणि । णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि अणंतगुणाणि ।

एत्थ अप्पाबहुअं वुच्चदे । तं जहा—सव्वत्थोवमुक्कस्सियाए वग्गणाए पक्कमिददव्वं । जहण्णियाए वग्गणाए अणंतगुणं । अजहण्ण-अणुक्कस्सियासु वग्गणासु पक्कमिददव्वमणंतगुणं । अजहण्णियासु विसेसाहियं । अणुक्कस्सियासु विसेसाहियं । सव्वासु विसेसाहियं । संपहि ट्ठिदीसु पक्कमिदअणुभागस्स अप्पाबहुअं उच्चदे—सव्वत्थोवो जहण्णियाए ट्ठिदीए पक्कमिदअणुभागो । अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु अणुभागो अणंतगुणो । अचरिमासु ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । चरिमाए ट्ठिदीए अणुभागो अणंतगुणो । अपढमासु ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । सव्वासु ट्ठिदीसु अणुभागो विसेसाहिओ । एसो णिक्खेवाइरियउवएसो ।

एवं पक्कमे त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

एकगुणहानिस्थानान्तरमें स्पर्द्धक स्तोक हैं । नानागुणहानिस्थानान्तर [में स्पर्धक] अनन्तगुणे हैं ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट वर्गणामें प्रक्रमप्राप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । जघन्य वर्गणामें अनन्तगुणा है । अजघन्य-अनुत्कृष्ट वर्गणाओंमें प्रक्रमप्राप्त द्रव्य अनन्तगुणा है । अजघन्य वर्गणाओंमें विशेष अधिक है । अनुत्कृष्ट वर्गणाओंमें विशेष अधिक है । सब वर्गणाओंमें विशेष अधिक है ।

अब स्थितियोंमें प्रक्रमप्राप्त अनुभागके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं—जघन्य स्थितिमें प्रक्रमप्राप्त अनुभाग सबसे स्तोक है । अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रक्रमप्राप्त अनुभाग अनन्तगुणा है । अचरम स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । चरम स्थितिमें अनुभाग अनन्तगुणा है । अप्रथम स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । सब स्थितियोंमें अनुभाग विशेष अधिक है । यह निक्षेपाचार्यका उपदेश है ।

इस प्रकार प्रक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



६

उवक्कमाणियोगद्दारं

सयलिंदविंदवंदियमहिणंदियभव्व-पउमवणसंडं ।
अहिणंदणजिणणाहं णमिऊण उवक्कमं वोच्छं ॥१॥

एत्थ उवक्कमस्स ताव णिक्खेवो उच्चदे । तं जहा—णामउवक्कमो, ठवणउवक्कमो, दव्वउवक्कमो, खेत्तउवक्कमो, कालउवक्कमो, भावउवक्कमो चेदि छव्विहो उवक्कमो। णाम-ट्ठवणं गदं । दव्वउवक्कमो दुविहो आगम-णोआगमदव्वोवक्कमभेएण । उवक्कम-अणियोगद्दारजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वोवक्कमो। णोआगमदव्वोवक्कमो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण । जाणुग-भवियं गदं । तव्वदिरित्तदव्वोवक्कमो दुविहो—कम्मोवक्कमो णोकम्मोवक्कमो चेदि । कम्मोवक्कमो अट्ठविहो । णोकम्मोवक्कमो तिविहो सचित्त-अचित्त-मिस्सभेएण[2] । खेत्तोवक्कमो[3] जहा उड्ढलोगो उवक्कंतो, गामो उवक्कंतो, णयरमुवक्कंतं इच्चेवमादी । कालोवक्कमो जहा वसंतो उवक्कंतो, हेमंतो उवक्कंतो इच्चेवमादी । भावोवक्कमो दुविहो आगम-णोआगमभावोवक्कमभेएण । उवक्कमअणियोगद्दारजाणगो

समस्त इन्द्रसमूहोंसे वन्दित और भव्य जीवों रूपी कमल-वनखण्डको अभिनन्दित करनेवाले अभिनन्दन जिनेन्द्रको नमस्कार करके उपक्रम अनुयोगद्वारका कथन करते हैं ॥१॥

यहां पहिले उपक्रमका निक्षेप कहते हैं । वह इस प्रकार है—नामउपक्रम, स्थापनाउपक्रम, द्रव्यउपक्रम, क्षेत्रउपक्रम, कालउपक्रम और भावउपक्रम, इस तरह उपक्रम छह प्रकारका है । नाम व स्थापना उपक्रम अवगत हैं । द्रव्यउपक्रम आगम और नोआगम द्रव्यउपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उपक्रमअनुयोगद्वारका ज्ञायक, उपयोग रहित जीव आगमद्रव्योपक्रम कहलाता है । नोआगमद्रव्योपक्रम ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्योपक्रम अवगत हैं । तद्व्यतिरिक्त द्रव्योपक्रम दो प्रकारका है— कर्मोपक्रम और नोकर्मोपक्रम । कर्मोपक्रम आठ प्रकारका है । नोकर्मोपक्रम सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है ।

क्षेत्र-उपक्रम— जैसे ऊर्ध्वलोक उपक्रान्त हुआ, ग्राम उपक्रान्त हुआ व नगर उपक्रान्त हुआ इत्यादि । कालउपक्रम जैसे— वसन्त उपक्रान्त हुआ व हेमन्त उपक्रान्त हुआ इत्यादि । भाव-उपक्रम आगम और नोआगम भाव-उपक्रमके भेदसे दो प्रकारका है । उपक्रम-अनुयोगद्वारका ज्ञायक

१ प्रत्योरुभयोरेव 'उवक्कमणियोगद्दारं' इति पाठः । से किं तं उवक्कमे ? छव्विहे पण्णत्ते । तं जहा—णामोवक्कमे ठवणोवक्कमे दव्वोवक्कमे खेत्तोवक्कमे कालोवक्कमे भावोवक्कमे । नाम-ठवणाओ गयाओ । से किं तं दव्वोवक्कमे ? दव्वोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा— आगमओ अ नोआगमओ अ । जाव जाणगसरीर-भवियसरीर-वइरित्ते दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते । तं जहा—सचित्ते अचित्ते मीसए । अणु. ६०. ३ से किं तं खेत्तोवक्कमे ? जण्णं हल-कुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति, से तं खेत्तोवक्कमे । अणु. ६७.

उवजुत्तो आगमभावोवक्कमो– जहा पाहुडमुवक्कंतं, पुव्वं वत्थू वा उवक्कंतं । ओदइयादि-भावोवक्कमो णोआगमभावोवक्कमो णाम । एत्थ एदेसु उवक्कमेसु केण पयदं ? कम्मोवक्कमेण पयदं । जो सो कम्मोवक्कमो सो चउव्विहो— बंधणउवक्कमो उदीरणउवक्कमो उवसामणउवक्कमो विपरिणामउवक्कमो चेदि । पक्कम-उवक्कमाणं को भेदो ? पयडि-ट्ठिदि-अणुभागेसु ढुक्कमाणपदेसग्गपरूवणं[2] पक्कमो कुणइ, उवक्कमो पुण बंधविदियसमयप्पहुडि संतसरूवेण ट्ठिदकम्मपोग्गलाणं वावारं परूवेदि । तेण अत्थि विसेसो । जो सो बंधणउवक्कमो सो चउव्विहो— पयडिबंधणउवक्कमो, ठिदिबंधण-उवक्कमो, अणुभागबंधणउवक्कमो, पदेसबंधणउवक्कमो चेदि । जीवपदेसेहि खीर-णीरं व अण्णोण्णाणुगयपयडीणं बंधक्कमपरूवणं पयडिबंधणउवक्कमो णाम । तो संत-पयडीणमेगसमयादि जाव सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ त्ति कम्मभावेणावट्ठाणकाल-परूवणं ट्ठिदिबंधणउवक्कमो णाम । तासिं चेव संतपयडीणमणुभागस्स जीवेण सह एयत्तं गयस्स फद्दय-वग्ग-वग्गणा-ट्ठाणाविभागपडिच्छेदादिपरूवणा अणुभागबंधणउवक्कमो णाम । तासिं चेव पयडीणं खविद-गुणिदकम्मंसिय-तग्घोलमाणे अस्सिदूण संचिद-

उपयोग युक्त जीव आगमभाव-उपक्रम कहलता है । जैसे– प्राभृत उपक्रान्त हुआ, पूर्व उपक्रान्त हुआ अथवा वस्तु उपक्रान्त हुई । औदयिक आदि भावोंके उपक्रमको नोआगमभावोपक्रम कहते हैं ।

शंका— इन उपक्रमोंमें यहां कौनसा उपक्रम प्रकृत है ?

समाधान— यहां कर्मोपक्रम प्रकृत है ।

जो वह कर्मोपक्रम है वह चार प्रकारका है— बन्धन-उपक्रम, उदीरणा-उपक्रम, उपशामना-उपक्रम और विपरिणाम उपक्रम ।

शंका— प्रक्रम और उपक्रममें क्या भेद है ?

समाधान— प्रक्रम अनुयोगद्वार प्रकृति, स्थिति और अनुभागमें आनेवाले प्रदेशाग्रकी प्ररूपणा करता है; परन्तु उपक्रम अनुयोगद्वार बन्धके द्वितीय समयसे लेकर सत्त्वस्वरूपसे स्थित कर्म-पुद्गलोंके व्यापारकी प्ररूपणा करता है । इसलिये उन दोनोंमें विशेषता है ।

जो वह बन्धन-उपक्रम है वह चार प्रकारका है– प्रकृतिबन्धन-उपक्रम, स्थितिबन्धन-उपक्रम, अनुभागबन्धन-उपक्रम और प्रदेशबन्धन-उपक्रम । दूधके साथ पानीके समान जीवप्रदेशोंके साथ परस्परमें अनुगत (एकरूपताको प्राप्त) प्रकृतियोंके बन्धके क्रमकी प्ररूपणा करनेको प्रकृतिबन्धन-उपक्रम कहते हैं । अनन्तर उन सत्त्वरूप प्रकृतियोंके एक समयसे लेकर सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम काल तक कर्मस्वरूपसे रहनेके कालकी प्ररूपणाको स्थितिबन्धन-उपक्रम कहते हैं । उन्हीं सत्त्वप्रकृतियोंके जीवके साथ एकताको प्राप्त हुए अनुभाग सम्बन्धी स्पर्द्धक, वर्ग, वर्गणा, स्थान और अविभागप्रतिच्छेद आदिकी प्ररूपणाका नाम अनुभागबन्धन-उपक्रम है । उन्हीं प्रकृतियोंके क्षपितकर्मांशिक, गुणितकर्मांशिक, क्षपितघोलमान और गुणितघोलमान जीवों-

१ काप्रतौ 'दु:कमाण' इति पाठः । २ काप्रतौ 'परूवण-', ताप्रतौ 'परूवणा (णं)' इति पाठः । ३ ताप्रतौ '[तो] संतपयडीण' इति पाठः ।

उक्कस्साणुक्कस्सपदेसपरूवणा पदेसबंधणउवक्कमो णाम। एत्थ एदेसिं चदुण्णमुवक्कमाणं जहा संतकम्मपयडिपाहुडे परूविदं तहा परूवेयव्वं। जहा महाबंधे परूविदं तहा परूवणा एत्थ किण्ण कीरदे? ण, तस्स पढमसमयबंधम्मि चेव वावारादो। ण च तमेत्थ वोत्तुं जुत्तं, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो। एवं बंधणउवक्कमो समत्तो।

उदीरणा चउव्विहा—पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसउदीरणा चेदि। तत्थ पयडिउदीरणा दुविहा—मूलपयडिउदीरणा उत्तरपयडिउदीरणा चेदि। तत्थ मूलपयडिउदीरणं वत्तइस्सामो। तं जहा—का उदीरणा णाम? अपक्कपाचनमुदीरणा। आवलियाए बाहिरट्ठिदिमादिं कादूण उवरिमाणं ठिदीणं बंधावलियवदिक्कंतपदेसग्गमसंखेज्जलोगपडिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागेण वा ओकड्डिदूण उदयावलियाए देदि[1] सा उदीरणा[2]। मूलपयडिउदीरणा दुविहा—एगेगपयडिउदीरणा पयडिट्ठाणउदीरणा चेदि।

का आश्रय करके संचयको प्राप्त हुए उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट प्रदेशकी प्ररूपणाको प्रदेशबन्धन-उपक्रम कहा जाता है। इन चार उपक्रमोंकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मप्रकृतिप्राभृतमें की गई है उसी प्रकार यहां भी करनी चाहिये।

शंका—जैसी महाबन्धमें प्ररूपणा की गई है वैसी प्ररूपणा यहां क्यों नहीं की जाती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि उसका व्यापार प्रथम समय सम्बन्धी बन्धमें ही है। और उसका यहां कथन करना योग्य नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है। इस प्रकार बन्धन-उपक्रम समाप्त हुआ।

उदीरणा चार प्रकारकी है—प्रकृतिउदीरणा, स्थितिउदीरणा, अनुभागउदीरणा, और प्रदेशउदीरणा। उनमें प्रकृतिउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है—

शंका—उदीरणा किसे कहते हैं?

समाधान—नहीं पके हुए कर्मोंके पकानेका नाम उदीरणा है। आवलीसे बाहिरकी स्थितिको लेकर आगेकी स्थितियोंके बन्धावली अतिक्रान्त प्रदेशाग्रको असंख्यात लोक प्रतिभागसे अथवा पल्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अपकर्षण करके उदयावलीमें देना, यह उदीरणा कहलाती है।

मूलप्रकृति उदीरणा दो प्रकारकी है—एक-एकप्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा।

---

१ काप्रतौ 'उदयावलियाए आदि' इति पाठः। २ तत्थ उदओ णाम कम्माणं जहाकालजणिदो फलविवागो कम्मोदयो उदयो त्ति भणिदं होइ। उदीरणा पुण अपरिपत्तकालाणं चेव कम्माणमुवायविसेसेण परिपाचणं, अपक्कपरिपाचनमुदीरणेति वचनात्। वुत्तं च—कालेण उवायेण य पच्चंति जहा वणप्फइफलाइं। तह कालेण तवेण य पच्चंति कयाणि कमा [म्मा] णि॥ इदि। जयध. अ. प. ७४८. जं करणेणोकड्डिय उदये दिज्जइ उदीरणा एसा। पगइ-ठिइ-अणुभाग-प्पएसमूलुत्तरविभागा॥ क. प्र. ४, १. तत्र यत्परमाण्वात्मकं दलिकं करणेन योगसंज्ञकेन वीर्यविशेषेण कषायसहितेन असहितेन वा उदयावलिकाबहिर्वर्तिनीभ्यः स्थितीभ्योऽपकृष्य उदये दीयते उदयावलिकायां प्रक्षिप्यते एषा उदीरणा (मलय.)।

एत्थ ताव एगेगपयडिउदीरणाए सामित्तं भणिस्सामो। णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव खीणकसाओ त्ति ताव एदे उदीरया। णवरि खीणकसायद्धाए समयाहियावलियसेसाए एदासिं तिण्णं पयडीणं उदीरणा वोच्छिण्णा। मोहणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइओ त्ति उदीरया[1]। णवरि चडमाणसुहुमसांपराइयद्धाए समयाहियावलियसेसाए उदीरणा वोच्छिण्णा। वेयणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति उदीरया। णवरि पमत्तसंजदस्स अप्पमत्ताहिमुहस्स चरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा। आउअस्स मिच्छाइट्ठी मरणकाले चरिमावलियं मोत्तूण सेससव्वकाले उदीरओ। गुणं पुण पडिवज्जमाणो जाव चरिमसमयं ताव उदीरओ। एवं वत्तव्वं जाव पमत्तसंजदो त्ति। उवरि उदीरणा आउअस्स णत्थि। कुदो? साभावियादो। णामा-गोदाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति उदीरणा[2]। णवरि सजोगिकेवलिचरिमसमए उदीरणा वोच्छिण्णा। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो— वेयणीय-मोहणीयाणमुदीरओ अणादिओ अपज्जवसिदो,

यहां पहले एक-एक-प्रकृतिउदीरणाके स्वामित्वका कथन करते हैं— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय इन तीन कर्मोंके मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय पर्यन्त, ये जीव उदीरक हैं। विशेष इतना है कि क्षीणकषायके कालमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर इन तीनों प्रकृतियोंकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। मोहनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक तक उदीरक हैं। विशेष इतना है कि चढ़ते समय सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। वेदनीय कर्मके मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक उदीरक हैं। विशेष इतना है कि अप्रमत्त गुणस्थानके अभिमुख हुए प्रमत्तसंयत जीवके अन्तिम समयमें उसकी उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। मरणकालमें अन्तिम आवलीको छोड़कर शेष सब कालमें आयुका उदीरक मिथ्यादृष्टि जीव होता है। परन्तु अन्य गुणस्थानको प्राप्त होनेवाला जीव उस गुणस्थानके अन्तिम समय तक उदीरक होता है। इस प्रकार प्रमत्तसंयत तक कहना चाहिये, क्योंकि, उसके आगे आयुकी उदीरणा नहीं है। इसका कारण स्वभाव है। नाम व गोत्र कर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक है। विशेष इतना है कि सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदीरणा व्युच्छिन्न हो जाती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— वेदनीय और मोहनीयका उदीरक जीव अनादि-अपर्यवसित,

---

[1] घाईणं छउमत्था उदीरगा रागिणो य मोहस्स। क. प्र. ४, ३. घातिप्रकृतीना ज्ञानावरण-दर्शनावरणान्तरायरूपाणां सर्वेऽपि छद्मस्थाः क्षीणमोहपर्यवसाना उदीरकाः। मोहनीयस्य तु रागिणः सरागाः सूक्ष्मसम्परायपर्यवसाना उदीरकाः (मलय. टीका)। [2] तइयाऊण पमत्ता जोगंता उ त्ति दोण्हं च॥ क. प्र. ४, ४. तृतीयस्य वेदनीयस्य आयुषश्च प्रमत्ताः प्रमत्तगुणस्थानकपर्यन्ताः सर्वेऽप्युदीरकाः। केवलमायुषः पर्यन्तावलिकाया नोदीरका भवन्ति। तथा द्वयोर्नाम-गोत्रयोर्योग्यन्ताः सयोगिकेवलिपर्यवसानाः सर्वेऽप्युदीरकाः (मलय. टीका)।

अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो सो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उदीरेदि, अप्पमत्त-उवसंतकसायाणं हेट्ठा पदिदूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो अप्पमत्तगुणं गयाणं समयाहियावलियं[1] सुहुमसांपराइयचरिमसमयअपत्ताणं[2] च जहाकमेण वेयणीय-मोहणीयाणमंतोमुहुत्तकालपमाणउदीरणुवलंभादो। उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं, अप्पमत्त-उवसंतकसाएसु हेट्ठा पदिदूण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं परिभमिय जहाकमेण सग-सगगुणं गंतूण उदीरणावोच्छेदे कदे उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलमेत्तकालुवलभादो।

आउअस्स जहण्णएण एगो वा दो वा समया। अप्पमत्तो पमत्तो होदूण जहण्णेण एगसमयं चेव आउअस्स उदीरओ होदूण बिदियसमयए आउअस्स अणुदीरओ होदि। उदयावलियमेत्तट्ठिदिविसेसो त्ति जे आइरिया भणंति तेसिमहिप्पाएण उदीरणकालो जहण्णओ एगसमयमेत्तो। जे पुण दोण्णिसमए जहण्णेण उदेरिदि त्ति भणति तेसिमहिप्पाएण बे समया त्ति परूविदं। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। कुदो? उदयावलियब्भंतरे पविट्ठट्ठिदीणं उदीरणाभावादो। सेसाणं कम्माणमणादिओ

अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है। जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करता है। इसका कारण यह है कि अप्रमत्त और उपशान्तकषाय गुणस्थानसे नीचे गिरकर और सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त काल तक वहां रहकर फिरसे अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवोंके, तथा एक समय अधिक आवली स्वरूप सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्त समयको न प्राप्त हुए अर्थात् सूक्ष्मसाम्परायिकके कालमें एक समय अधिक आवलीके अवशिष्ट रहनेके पूर्व समयवर्ती जीवोंके, यथाक्रमसे वेदनीय और मोहनीय कर्मकी अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण उदीरणा पायी जाती है। उत्कर्षसे दोनों कर्मोंकी उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक उदीरणा करता है, क्योंकि, अप्रमत्त और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंसे नीचे गिरकर व उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक परिभ्रमण करके यथाक्रमसे अपने अपने गुणस्थानको प्राप्त होकर वहां उदीरणाकी व्युच्छित्ति करनेपर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण काल पाया जाता है।

आयु कर्मकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक अथवा दो समय है। कारण कि अप्रमत्त जीव प्रमत्त हो जघन्यसे एक समय ही आयुका उदीरक होकर द्वितीय समयमें आयुका अनुदीरक होता है। जो आचार्य उदयावली मात्र स्थितिविशेषकी प्ररूपणा करते हैं उनके अभिप्रायसे उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय मात्र होता है। किन्तु जो आचार्य 'जघन्यसे दो समय उदीरणा करता है' ऐसा कहते हैं उनके अभिप्रायसे दो समय मात्र जघन्य कालकी प्ररूपणा की गई है। आयुका उदीरणाकाल उत्कर्षसे एक आवली हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि, उदयावलीके भीतर प्रविष्ट स्थितियोंकी उदीरणा सम्भव नहीं है। शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-अपर्यवसित

---

१ काप्रतौ 'समयाहियावलिया' ताप्रतौ 'समयाहियावलिया (य)' इति पाठः। २ प्रत्योरुभयोरेव 'समयअप्पमत्ताणं' इति पाठः।

अपज्जवसिदो । खवगसेडिमणारुहणमहाबाणमेम भंगो । अणादिओ सपज्जवसिदो, खवगसेडिमारुहिय विणासिदउदीरणाणमेसेव भंगो । एवं कालो समत्तो ।

एगजीवेण अंतरेण पयदं– वेयणीय-मोहणीयउदीरणाणमंतरं जहण्णेण एगो समओ। कुदो ? अप्पमत्त-आवलियसेससुहुमउवसामयगुणेसु एगसमयमच्छिय बिदियसमए मदाणं तदुवलंभादो। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। कुदो ? अप्पमत्तगुणमुवसंतकसायगुणं च पडिवज्जिय सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पमत्तगुणे सकसायगुणे च पडिवण्णे[1] तदुवलंभादो । आउअस्स उदीरणंतरं जहण्णेण आवलिया । कुदो ? सव्वेसु भवेसु आवलियमेत्तसेसेसु आउअस्स उदीरणाभावादो । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? अप्पमत्तादिउवरिमगुणट्ठाणेसु सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो पमत्तगुणं पडिवण्णस्स तदुवलंभादो । सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं, खीणकसायगुणट्ठाणम्हि उदीरणाए णट्ठाए पुणो उदीरणाऽपादुब्भावादो[2] । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचए अट्ठपदं—जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारादो । एदेण अट्ठपदेण आउअ-वेयणीयाणं सव्वे जीवा णियमा उदीरया अणुदीरया च । सेसाणं कम्माणं सव्वे जीवा णियमा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरओ च,

जीव होता है । यह भंग क्षपकश्रेणिपर न चढनेवाले जीवोंके सम्भव है । तथा इन्हीं शेष कर्मोंका उदीरक अनादि-सपर्यवसित जीव भी होता है । किन्तु क्षपकश्रेणिपर चढकर उदीरणाको नष्ट करनेवालोंके यही भङ्ग होता है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर प्रकृत है—वेदनीय और मोहनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि, अप्रमत्त और आवली प्रमाण शेष सूक्ष्मसाम्पराय उपशामक इन दोनों गुणस्थानोंमें क्रमसे एक समय रहकर द्वितीय समयमें मरणको प्राप्त हुए जीवोंके उक्त अन्तरकाल पाया जाता है । उत्कर्षसे वह अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्त गुणस्थान और उपशान्तकषाय गुणस्थानको प्राप्त होकर और वहां सर्वोत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर प्रमत्त गुणस्थान और सकषाय (सूक्ष्मसाम्पराय) गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वह पाया जाता है । आयुकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे आवली काल प्रमाण है, क्योंकि, सब भवोंके आवली मात्र शेष रहनेपर आयुकी उदीरणाका अभाव होता है । उत्कर्षसे वह अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, क्योंकि, अप्रमत्तादिक उपरिम गुणस्थानोंमें सर्वोत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर पश्चात् प्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके वह पाया जाता है । शेष पांच कर्मोंकी उदीरणाका अन्तर नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषाय गुणस्थान (बारहवें और तेरहवें) में उदीरणाके नष्ट होनेपर फिर उदीरणाका प्रादुर्भाव नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयमें अर्थपद— जो जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे यहां प्रकृत हैं, क्योंकि, अवेदकोंमें उसका व्यवहार नहीं है । इस अर्थपदसे आयु और वेदनीय कर्मोंके सब जीव नियमसे उदीरक हैं और अनुदीरक भी हैं । शेष कर्मोंके सब जीव नियमसे उदीरक,

[1] ताप्रतौ 'पमत्तगुणे च पडिवण्णे' इति पाठः । [2] ताप्रतौ 'पादुब्भावा [भावा-] दो' इति पाठः ।

सिया उदीरया च अणुदीरया च । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो— सव्वेसिं कम्माणं उदीणा केवचिरं कालादो होदि ? णाणा-जीवे पडुच्च सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

अंतरं णत्थि । अप्पाबहुअं पयदं । आउअस्स उदीरया थोवा । वेयणीयस्स उदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? चरिमावलियाए[1] संचिदअणंतजीवमेत्तेण । मोहणीयस्स उदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अप्पमत्त-अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमसांप-राइयजीवमेत्तेण । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणमुदीरया विसेसाहिया । केत्तिय-मेत्तेण ? उवसंत-खीणकसायमेत्तेण । णामा-गोदाणमुदीरया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सजोगिकेवलिमेत्तेण ।

णिरयगईए णेरइएसु सव्वेसिं पि कम्माणमुदीरया तुल्ला, णिरंतरं तत्थ मरंताण-मभावादो । कदाचि आउअस्स उदीरया थोवा, सेसकम्माणं सरिसा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? चरिमावलियाए संचिदजीवमेत्तेण । एवं सव्वासिं गदीणं वत्तव्वं । णवरि तिरिक्खेसु सरिसा त्ति ण वत्तव्वं । मणुस्सेसु ओघं । एवमप्पाबहुअं समत्तं ।

कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक व बहुत अनुदीरक होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— सब कर्मोकी उदीरणा कितने काल तक होती है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा होती है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है। अल्पबहुत्व प्रकृत है— आयु कर्मके उदीरक स्तोक हैं। वेदनीयके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं ? अन्तिम आवलीमें संचित अनन्त जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं। मोहनीय कर्मके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं ? अप्रमत्त, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं ? उपशान्तकषाय और क्षीणकषाय जीवोंके प्रमाणसे अधिक हैं। नाम व गोत्रके उदीरक विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं ? सयोगकेवलियोंके प्रमाणसे अधिक हैं।

नरकगतिमें नारकियोंमें सभी कर्मोंके उदीरक तुल्य हैं, क्योंकि, वहां निरन्तर मरनेवाले जीवोंका अभाव है। कदाचित् वहां आयु कर्मके उदीरक स्तोक हैं और शेष कर्मोंके उदीरक समान होकर आयु कर्मके उदीरकोंकी अपेक्षा विशेष अधिक होते हैं ? कितने मात्रसे विशेष अधिक होते हैं ? अन्तिम आवलीमें संचित जीवोंके प्रमाणसे वे विशेष अधिक होते हैं। इसी प्रकार सब गतियोंमें अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि तिर्यंचोंमें 'सदृश होते हैं' ऐसा नहीं कहना चाहिये। मनुष्योंकी प्ररूपणा ओघके समान है। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

---

१ काप्रतौ 'चरिमावलिये', ताप्रतौ 'चरिमावलिय' इति पाठः।

भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढिउदीरणा च णत्थि, एगेगपयडिअधियारादो। एवमेगेगपयडिउदीरणा समत्ता।

संपहि पयडिट्ठाणसमुक्कित्तणं कस्सामो। अट्ठविह-सत्तविह-छव्विह-पंचविह-दुविह-उदीरणा त्ति पंचपयडिट्ठाणाणि उदीरणाए होंति। तं जहा— सव्वाओ पयडीओ उदीरंतस्स अट्ठविहउदीरणा होदि। आउएण विणा सत्तविहउदीरणा होइ। आउअ-वेयणीहि विणा अप्पमत्तादिसु छव्विहउदीरणा होदि। मोहाउअ-वेयणीयकम्मेहि विणा खीणकसायम्हि उवसंतकसाए च पंचविहउदीरणा होदि। णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-मोहाउअ-अंतराइएहि विणा सजोगकेवलिम्हि दोण्णमुदीरणा होदि। एवं ट्ठाणसमुक्कित्तणा समत्ता।

सामित्तं—अट्ठण्णमुदीरओ को होदि ? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं ण होदि उदयावलियपविट्ठं। सत्तण्णमुदरओ को होदि ? अण्णदरो पमत्तो, जस्स आउअं उदयावलियं पविट्ठं। छण्णमुदीरओ को होदि ? अप्पमत्तो सकसाओ। पंचण्णमुदीरओ को होदि ? छदुमत्थो वीयराओ आवलियचरिमसमयस्स हेट्ठा। दोण्णमुदीरओ को होदि ? उप्पण्णणाण-दंसणहरो सजोगिकेवली[१]। एवं सामित्तं समत्तं।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदीरणा नहीं है, क्योंकि, यहां एक एक प्रकृतिका अधिकार है। इस प्रकार एक-एकप्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई।

अब प्रकृतिस्थानोंका समुत्कीर्तन करते हैं— आठ कर्मोंकी, सात कर्मोंकी, छह कर्मोंकी, पांच कर्मोंकी और दो कर्मोंकी उदीरणा इस प्रकार उदीरणाके पांच प्रकृतिस्थान हैं। यथा— सब प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेवालेके आठ प्रकृतिक उदीरणा होती है। आयुके विना सात प्रकृतिक उदीरणा होती है। आयु और वेदनीयके विना अप्रमत्त आदि गुणस्थानोंमें छह प्रकृतिक उदीरणा होती है। मोहनीय, आयु और वेदनीय कर्मोंके विना क्षीणकषाय और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमे पांच प्रकृतिक उदीरणा होती है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु और अन्तरायके विना सयोगकेवली गुणस्थानमे दो प्रकृतिक उदीरणा होती है। इस प्रकार स्थानसमुत्कीर्तना समाप्त हुई।

स्वामित्व— आठ कर्मोंका उदीरक कौन होता है ? उनका उदीरक अन्यतर प्रमत्त जीव होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट नहीं है। सात कर्मोंका उदीरक कौन होता है ? अन्यतर प्रमत्त जीव उनका उदीरक होता है, जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है। छहका उदीरक कौन होता है ? अप्रमत्त सकषाय जीव उनका उदीरक होता है। पांचका उदीरक कौन होता है ? उनका उदीरक छद्मस्थ वीतराग जीव होता है, मात्र वह क्षीणमोहके कालमें एक आवली चरम समय शेष रहनेके पूर्व उनकी उदीरणा करता है। दोका उदीरक कौन होता है ? उत्पन्न हुए ज्ञान व दर्शनका धारक सयोगकेवली उनका उदीरक होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

१ घाईणं छउमत्था उदीरगा रागिणो य मोहस्स। तइयाऊण पमत्ता जोगंता उत्ति दोण्हं च॥ क० प्र० ४-४.

एयजीवेण कालो—अट्ठण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व समए, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। सत्तण्णमुदीरओ [जहण्णेण] एक्कं व दो व समए, पमत्ते उदयावलियपविट्ठआउए बिदियसमए तदियसमए वा अप्पमत्तगुणं गदे वेदणीयउदीरणाए णट्ठाए एग-दोसमयसत्तउदीरणाकालुवलंभादो। उक्कस्सेण आवलिया। छण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व[1] समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। पंचण्णमुदीरओ जहण्णेण एक्कं व दो व समए उदीरेदि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। दोण्णमुदीरगो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। एवं कालो समत्तो।

एगजीवेण अंतरं— अट्ठण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण[2] एगावलिया, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सत्तण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियूणं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। छण्णमुदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। एवं पंचण्णमुदीरयाणं पि अंतरं वत्तव्वं। दोण्णमुदीरयाणं णत्थि अंतरं। कुदो? अंतरिदे पुणो दोण्णमुदीरणाए पादुब्भावाभावादो[3]। एवमंतरं समत्तं।

एक जीवकी अपेक्षा काल—आठ कर्मोंका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय तथा उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम काल तक होता है। सात कर्मोंका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय होता है, क्योंकि प्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीवके आयु कर्मके उदयावलीमें प्रविष्ट होनेपर जब वह द्वितीय समयमें अथवा तृतीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होता है तब चूंकि वेदनीयकी उदीरणा नष्ट हो जाती है, अतः उसके एक या दो समय प्रमाण सातकी उदीरणाका काल पाया जाता है। [तात्पर्य यह है कि जिस प्रमत्तसंयतके आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट हो गया उसके सात कर्मकी उदीरणा होती है। किन्तु उसके एक समय बाद या दो समय बाद अप्रमत्त संयत गुणस्थानको प्राप्त हो जानेपर प्रमत्तसंयतके सात कर्मकी उदीरणाका जघन्य काल एक या दो समय देखा जाता है।] सातकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे आवली प्रमाण है। छहका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उदीरणा करता है। पांचका उदीरक जघन्यसे एक व दो समय उनकी उदीरणा करता है, उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक उनकी उदीरणा करता है। दोका उदीरक जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल तक उनकी उदीरणा करता है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— आठ कर्मोंकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक आवली व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। सातकी उदीरणाका अन्तर जघन्यतः आवलीसे हीन क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। छहकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इसी प्रकार पांच कर्मोंके उदीरकोंका भी अन्तर कहना चाहिये। दोके उदीरकोंका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, अन्तरको प्राप्त होनेपर फिर दोकी उदीरणाके प्रादुर्भावका अभाव है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

---

१ काप्रतौ 'एवं दो', ताप्रतौ 'एवं (गं) दो' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अट्ठण्णमुदीरणंतरं, जहण्णेण' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'पादुब्भावादो' इति पाठः।

णाणाजीवेहि भंगविचओ—जे जं पयडिट्ठाणमुदीरेंति तेसु पयदं। अट्ठण्णं सत्तण्णं छण्णं दोण्णं ट्ठाणाणं णियमा सव्वे जीवा उदीरया। सिया एदे च पंचविहउदीरओ च, सिया एदे च पंचविहउदीरया च। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो— पंचण्णमुदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसाणमुदीरयाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

अंतरं— पंचण्णमुदीरयाण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

अप्पाबहुअं—पंचण्णमुदीरया थोवा। दोण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। छण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। सत्तण्णमुदीरया अणंतगुणा। अट्ठण्णमुदीरया संखेज्जगुणा। कुदो? एगावलियसंचिदअट्ठण्णमुदीरयाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

भुजगारे अट्ठपदं— जाओ एण्हिं पयडीओ उदीरेदि तत्तो अणंतरओसक्काविदे समए अप्पदरियाओ उदीरेदि त्ति एसो भुजगारो। अणंतरविदिक्कंतसमए बहुदरियाओ उदीरेदि त्ति एसा अप्पदरउदीरणा। दोसु वि समएसु तत्तिया चेव पयडीओ उदीरेंतस्स[1]

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— जो जीव जिस प्रकृतिस्थानकी उदीरणा करते हैं वे प्रकृत हैं। आठ, सात, छह और दो प्रकृतिक स्थानोंके नियमसे सब जीव उदीरक होते हैं। कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पांचका एक जीव उदीरक होता है। कदाचित् ये नाना जीव उदीरक होते हैं और पांचके भी नाना जीव उदीरक होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— पांच कर्मोंके उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। शेष कर्मोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अन्तर—पांच कर्मोंके उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। शेष कर्मोंके उदीरकोंका अन्तर नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व— पांचके उदीरक जीव स्तोक हैं। दोके उदीरक संख्यातगुणे हैं। छहके उदीरक संख्यातगुणे हैं। सातके उदीरक अनन्तगुणे हैं। आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सातके उदीरकोंसे एक आवलीमें संचित हुए आठके उदीरक संख्यातगुणे पाये जाते हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

भुजाकारके विषयमें अर्थपद— इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उससे अनन्तर पिछले समयमें उनसे थोड़ी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह भुजाकार उदीरणा है। इस समय जितनी प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है उनसे अनन्तर वीते हुए समयमें बहुतर प्रकृतियोंकी उदीरणा करता है, यह अल्पतर उदीरणा है। दोनों ही समयोंमें उतनी मात्र प्रकृतियोंकी ही उदीरणा करनेवालेके अवस्थित उदीरणा होती है। अनुदीरणासे उदीरणा करनेवालेके

१ ताप्रतौ 'उदीरतस्स' इति पाठः।

अवट्ठिदउदीरणा। अणुदीरणाओ उदीरेंतस्स[1] अवत्तव्वउदीरणा[2]। एदेण अट्ठपदेण उवरिमअहियारा वत्तव्वा।

सामित्तं— भुजगारउदीरओ, अप्पदरउदीरओ अवट्ठिदउदीरओ च को होदि? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी सम्माइट्ठी वा। अवत्तव्वउदीरया[3] णत्थि। एवं सामित्तं समत्तं[4]।

एयजीवेण कालो—भुजगार-अप्पदरउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। तं जहा—उवसंतकसाए सुहुमसांपराइए जादे छ उदीरेंतस्स एगो भुजगार-समओ। पुणो बिदियसमए कालं कादूण देवेसुप्पण्णस्स पढमसमए अट्ठ उदीरेंतस्स बिदिओ भुजगारसमओ। एवं भुजगारस्स बे समया। पमत्तसंजदचरिमसमए आउए उदयावलियं पविट्ठे सत्तउदीरेंतस्स एगो अप्पदरसमओ। तदो बिदियसमए अप्पमत्तगुणे पडिवण्णे वेदणीएण विणा छ उदीरेंतस्स बिदिओ अप्पदरसमओ। एवमप्पदरउदीरणाए वि उक्कस्सेण बे चेव समया। अवट्ठिदउदीरणाए कालो[5] जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियाए आवलियाए ऊणाणि, देवेसुप्पण्णपढमसमओ मरणा-वलिया च। एवं भुजगारकालो समत्तो।

भुजगारउदीरणाए अंतरं जहण्णेण एक्को वा दो वा समया। कुदो? पंचविह-

अवक्तव्य उदीरणा होती है। इस अर्थपदके अनुसार आगेके अधिकारोंका कथन करना चाहिये।

स्वामित्व—भुजाकार उदीरक, अल्पतर उदीरक और अवस्थित उदीरक कौन होता है? अन्यतर मिथ्यादृष्टि अथवा सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक होता है। अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है। वह इस प्रकारसे— उपशान्तकषाय जीवके सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छह प्रकृतियोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका एक समय प्राप्त होता है। पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुए उक्त जीवके प्रथम समयमें आठ कर्मोंकी उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका द्वितीय समय प्राप्त होता है। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट काल दो समय है। प्रमत्तसंयत गुणस्थानके अन्तिम समयमें आयुके उदया-वलीमें प्रविष्ट होनेपर सात कर्मोंकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका एक समय काल होता है। पश्चात् द्वितीय समयमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होनेपर वेदनीयके बिना छहकी उदीरणा करनेवालेके अल्पतर उदीरणाका द्वितीय समय पाया जाता है। इस प्रकार अल्पतर उदीरणाके भी उत्कर्षसे दो ही समय हैं। अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है। यहां एक समय और एक आवलीसे देवोंमें उत्पन्न होनेका प्रथम समय और मरणावली ली गई है। इस प्रकार भुजाकार-काल समाप्त हुआ।

भुजाकार उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक व दो समय है, क्योंकि, पांच कर्मोंका उदीरक

१ ताप्रतौ 'उदीरंतस्स' इति पाठः। २ प्रत्योरुभयोरेव 'अवत्तव्वत्तउदीरणा' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अवट्ठिद (अवत्तव्व) उदीरया' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'समत्तं' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते। ५ काप्रतौ 'काले' इति पाठः।

उदीरओ उवसंतकसाओ हेट्ठा ओदरिय सुहुमसांपराइयो होदूण छव्विहउदीरगो जादो, बिदियसमए भुजगारउदीरणा अवट्ठिदउदीरणाए अंतरिदा, तदियसमए कालं कादूण देवेसुप्पज्जिय अट्ठ उदीरयमाणो भुजगारं गदो, एवमेगसमयअंतरदंसणादो। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि। तं जहा— तेत्तीससागरोवमेसु उप्पण्णपढमसमए भुजगारं कादूण समऊणतेत्तीससागरोवमाणि अवट्ठिद-अप्पदरउदीरणाए अंतरिय मणुस्सेसु उप्पण्णपढमसमए कयभुजगारस्स समऊणतेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्सभुजगारंतरं होदि। एवमप्पदरउदीरणाए वि वत्तव्वं। कुदो? आवलियकालेण देवेसुप्पज्जिहदि त्ति पुव्वं चेव अप्पदरं काऊण अंतरिय देवेसुप्पज्जिय आवलियूणतेत्तीससागरोवमाणि गमिय अप्पदरे कदे तदुवलंभादो। अधवा अप्पदरस्स उक्कस्सं अंतरं[1] तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तेण सादिरेयाणि। अवट्ठिदउदीरणाए जहण्णेण अंतरमेगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एवं भुजगारंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि[2] भंगविचओ। वेदएसु पयदं— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि, अवत्तव्वं णत्थि। एवमोघो समत्तो।

सेसासु गदीसु जाणिदूण वत्तव्वं। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

उपशान्तकषाय जीव नीचे उतर कर सूक्ष्मसाम्परायिक होकर छह कर्मोंका उदीरक हुआ, द्वितीय समयमें भुजाकार उदीरणा अवस्थित उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हुई, तृतीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हो आठ कर्मोंकी उदीरणा करता हुआ भुजाकार उदीरणाको प्राप्त हुआ, इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका एक समय अन्तर देखा जाता है। उत्कर्षसे एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण अन्तर होता है। वह इस प्रकारसे— तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करके एक समय कम तेतीस सागरोपम तक अवस्थित या अल्पतर उदीरणासे अन्तरको प्राप्त हो मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भुजाकार उदीरणाको करनेपर एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण भुजाकार उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर होता है। इसी प्रकार अल्पतर उदीरणाके विषयमें भी कहना चाहिये, क्योंकि, आवली प्रमाण कालके बाद देवोंमें उत्पन्न होगा, इस प्रकार पूर्वमें ही अल्पतर उदीरणा करके अन्तरको प्राप्त हो देवोंमें उत्पन्न होकर आवलीसे कम तेतीस सागरोपमोंको बिताकर अल्पतर उदीरणा करनेपर उक्त अन्तर पाया जाता है। अथवा, अल्पतर उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है। अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है। इस प्रकार भुजाकार उदीरणाका अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय। वेदक प्रकृत हैं— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं, अवक्तव्य उदीरक नहीं हैं। इस प्रकार ओघ समाप्त हुआ।

शेष गति आदिकोंके विषयमें जानकर कथन करना चाहिये। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

१ काप्रतौ 'अप्प० उक्क० अंतरिय', ताप्रतौ 'अप्प० उक्क० अंतरं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'णाणाजीवेण' इति पाठः।

भागाभागो, परिमाणं, खेत्तं, पोसणं, कालो, अंतरं, भावो च जाणिदूण णेदव्वो। अप्पाबहुअं—भुजगारउदीरया थोवा। अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो [विसेसो]? संखेज्जमाणुसजीवमेत्तो। अवट्ठिदउदीरया[1] असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया (?)। एवं मणुसगदीए वि अप्पाबहुअं वत्तव्वं। सेसासु गदीसु भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

पदणिक्खेवो— उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो पंचविहउदीरओ उवसंतकसाओ मदो, तस्स पढमसमयदेवस्स अट्ठ उदीरयमाणस्स उक्कस्सिया वड्ढी। एदस्स चेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो अट्ठण्णमुदीरगो पमत्तो अप्पमत्तो जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। पंचउदीरएण दोसु उदीरिदासु उक्कस्सहाणी किण्ण परूविदा? ण, बहुपयडीहिंतो बहुहाणीए इहग्गहणादो। अधवा एसो वि संभवो एत्थ संगहेयव्वो।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि। एवमोघो समत्तो।

भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और भावको जानकर ले जाना चाहिये। अल्पबहुत्व— भुजाकर उदीरक स्तोक हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं।

शंका— विशेष कितना है?

समाधान— वह संख्यात मनुष्य जीवोंके बराबर है।

अल्पतर उदीरकोंसे अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार संख्यात समय है (?)। इसी प्रकार मनुष्य गतिमें भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये। शेष गतियोंमें भुजाकर और अल्पतर उदीरक समान होकर स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

पदनिक्षेप— उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? पांचका उदीरक जो उपशान्तकषाय जीव मृत्युको प्राप्त हुआ है, उसके देव होनेके प्रथम समयमें आठकी उदीरणा करनेपर उत्कृष्ट वृद्धि होती है। इसीके अनन्तर समयमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो आठका उदीरक प्रमत्त जीव अप्रमत्त हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है।

शंका— पांचके उदीरक जीवके द्वारा दोकी उदीरणा करनेपर उसके उत्कृष्ट हानिकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई?

समाधान— नहीं, क्योंकि, यहां बहुत प्रकृतियोंसे बहुत हानिको ग्रहण किया गया है। अथवा यह विकल्प भी चूंकि सम्भव है, अतः उसका भी यहां संग्रह करना चाहिये।

हानि स्तोक है तथा वृद्धि व अवस्थान दोनों ही समान होकर उससे विशेष अधिक हैं। इस प्रकार ओघ समाप्त हुआ।

---

१ काप्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः।

सेसासु गदीसु वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि। एवं पदणिक्खेवो समत्तो।

एत्तो वड्ढिउदीरणा— संखेज्जभागवड्ढी संखेज्जभागहाणी [संखेज्जगुणहाणी] अवट्ठिदउदीरणा चेदि एत्थ चत्तारि चेव पदाणि होंति। सेसं जाणिऊण वत्तव्वं।

एवं मूलपयडिउदीरणा समत्ता।

उत्तरपयडिउदीरणा दुविहा— एगेगपयडिउदीरणा पयडिट्ठाणउदीरणा चेदि। एगेगपयडिउदीरणाए सामित्तं उच्चदे— पंचण्णं णाणावरणीयाणं को उदीरगो ? अण्णदरो छदुमत्थो। आवलियचरिमसमयछदुमत्थो णवरि अणुदीरओ। एवमुवरिमसव्वे छदुमत्था अणुदीरया जाव चरिमसमयछदुमत्थो त्ति। एवं चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइय-णिद्दा-पयलाणं वत्तव्वं, विसेसाभावादो[1]। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं च

मनुष्यगतिके सिवा शेष गतियोंमें वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही समान हैं। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

आगे वृद्धिउदीरणाका कथन करते हैं— संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और अवस्थितउदीरणा, ये चार ही पद यहां होते हैं। शेष कथन जानकर करना चाहिये।

विशेषार्थ— पहले पदनिक्षेपका कथन कर आये हैं। वहां उत्कृष्ट हानिका निर्देश करते समय पांचकी उदीरणा करनेवालेके दोकी उदीरणा करनेपर उत्कृष्ट हानि सम्भव है, उत्कृष्ट हानिके इस विकल्पका भी निर्देश किया है। अब यदि इस विकल्पकी विवक्षा की जाती है तो संख्यातगुणहानिके साथ चार पद सम्भव हैं और यदि इसकी विवक्षा नहीं की जाती है तो संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि और अवस्थित ये तीन पद ही सम्भव हैं।

इस प्रकार मूलप्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई।

उत्तरप्रकृतिउदीरणा दो प्रकारकी है— एक-एकप्रकृतिउदीरणा और प्रकृतिस्थानउदीरणा। इनमेंसे एक एकप्रकृतिउदीरणाके स्वामित्वका कथन करते हैं—

पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंका उदीरक कौन होता है ? उनका उदीरक अन्यतर छद्मस्थ होता है। विशेष इतना है कि छद्मस्थकालके अन्तमें जिसके एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है ऐसा छद्मस्थ जीव उनका उदीरक नहीं होता। इसी प्रकार छद्मस्थकी अन्तिम आवलीके प्रारम्भसे लेकर अन्तिम समय तकके आगेके सब छद्मस्थ जीव अनुदीरक हैं।

इसी प्रकारसे चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, निद्रा और प्रचलाके विषयमें कथन करना चाहिये, क्योंकि, उनमें इनसे कोई विशेषता नहीं है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और

---

१ मोत्तूण खीणरागं इंदियपज्जत्तगा उदीरेंति। णिद्दा-पयला सायासायाई जे पमत्त त्ति ॥ पं. सं. ४, १९. इह कर्मस्तवकारादयः क्षपक-क्षीणमोहयोरपि निद्राद्विकस्योदयमिच्छन्ति, उदये च सत्यवश्यमुदीरणा। ततस्तन्मतेनोक्तं क्षीणरागमन्तावलिकामात्रकालभाविनं मुक्त्वेति। ये पुनः सत्कर्माभिधग्रन्थकारादयस्ते क्षपक-क्षीणमोहान् व्यतिरिच्य शेषाणामेव निद्राद्विकस्योदयमिच्छन्ति। तथा च तद्ग्रन्थः—'णिद्दादुगस्स उदओ खीण-

उदीरओ को होदि ? अण्णदरो इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तो। एदमादिं कादूण एदासिमुदीरणाए ताव पाओग्गो होदि जाव पमत्तसंजदो त्ति। णवरि पमत्तसंजदस्स उत्तरसरीरविउव्वणाभिमुहस्स चरिमावलियप्पहुडि उवरि जाव आहारसरीरमुट्ठविय मूलसरीरं पविसदि ताव अणुदीरगो। थीणगिद्धितियस्स अप्पमत्तसंजदा च देव-णेरइया च आहारसरीरया च उत्तरसरीरं विउव्विदतिरिक्ख-मणुस्सा च असंखेज्जवासाउआ च अणुदीरया[1]। सादासादाणमुदीरणाए[2] मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तो त्ति पाओग्गो[3]।

मिच्छत्तस्स मिच्छाइट्ठी चेव उदीरगो जाव सम्मत्ताहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठि त्ति। णवरि उवसमसम्मत्तं पडिवज्जमाणमिच्छाइट्ठिस्स मिच्छत्तपढमट्ठिदीए आवलियसेसाए णत्थि उदीरणा। सम्मामिच्छत्तस्स सम्मामिच्छाइट्ठी जाव चरिमसमओ त्ति ताव उदीरगो। सम्मत्तस्स असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति तावउदीरया। णवरि सम्मत्तं खवेंतुवसामेंताणं[4] सम्मत्तट्ठिदीए उदयावलियपविट्ठाए णत्थि

स्त्यानगृद्धि, इनका उदीरक कौन होता है ? इन्द्रिय पर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके द्वितीय समयमें रहने वाला अन्यतर जीव उनका उदीरक होता है। इसको आदि लेकर प्रमत्तसंयत गुणस्थान तक कोई भी जीव इन प्रकृतियोंकी उदीरणाके योग्य होता है। विशेषता इतनी है कि उत्तर शरीरकी विक्रियाके अभिमुख हुए प्रमत्तसंयतको अन्तिम आवलीसे लेकर आगे जब तक आहारकशरीर उत्थित हो करके मूल शरीरमें प्रविष्ट नहीं होता तब तक वह इनका अनुदीरक है। अप्रमत्तसंयत, देव, नारकी, आहारकशरीरी, उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त तिर्यञ्च व मनुष्य, तथा असंख्यातवर्षायुष्क ये सब उक्त स्त्यानगृद्धि आदि तीन प्रकृतियोंके अनुदीरक हैं। मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्त गुणस्थानके अभिमुख हुआ अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयत तक साता व असाता वेदनीयकी उदीरणाके योग्य होता है।

सम्यक्त्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि तक मिथ्यादृष्टि जीव ही मिथ्यात्व प्रकृतिका उदीरक होता है। विशेष इतना है कि उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वकी प्रथम स्थितिमें एक आवलीके शेष रहनेपर उदीरणा नहीं होती। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव अपने अन्तिम समय तक सम्यग्मिथ्यात्वका उदीरक होता है। असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक सम्यक्त्व प्रकृतिके उदीरक होते हैं। विशेष इतना है कि सम्यक्त्व प्रकृतिका क्षय अथवा उपशम करनेवाले जीवोंके सम्यक्त्वकी स्थितिके उदयावलीमें प्रविष्ट होनेपर उसकी उदीरणा सम्भव नहीं है।

खवगे परिवज्ज।' तन्मतेनोदीरणापि निद्राद्विकस्य क्षपक-क्षीणमोहान् व्यतिरिच्य शेषाणामेव वेदितव्या। तथा चोक्तं कर्मप्रकृतौ— इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तगाए पाउग्गा। णिद्दा-पयलाणं खीणराग-खवगे परिचज्ज॥ [४-१८] (मलयगिरि टीका)।

१ निद्दानिद्दाईण वि असखवासा य मणुय-तिरिया य। वेउव्वाहारतणू वज्जित्ता अप्पमत्ते य॥ क. प्र. ४, १९. २ ताप्रतौ '-मुदीरया (णा) ए' इति पाठः। ३ वेयणियाण पमत्ता ×××॥ क. प्र. ४, २०. ४ काप्रतौ 'खइयेंतुवसामेंताणं' इति पाठः।

उदीरणा[1]। अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वा उदीरगो। अपच्च-क्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठिचरिमसमओ त्ति ताव उदीरया। पच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदस्स चरिमसमओ त्ति ताव उदीरया[2]। णवुंसयवेदस्स उदीरओ को होदि? सव्वो णवुंसओ। णवरि खवओ उवसामओ वा णवुंसयवेदपढमट्ठिदीए उदयावलियमेत्तसेसाए अणुदीरगो णवुंसयवेदस्स, अवसेसो सव्वो णवुंसओ उदीरगो चेव। जहा णवुंसयवेदस्स तहा इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं पि वत्तव्वं। हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव अपुव्व-करणचरिमसमयं ति ताव उदीरगो। णवरि साद-हस्स-रदीणं पढमसमयदेवमादिं कादूण जाव अंतोमुहुत्तदेवो त्ति ताव णियमा उदीरणा, उवरि भज्जा। असाद-अरदि-सोगाणं पढमसमयणेरइयमादिं कादूण जाव अंतोमुहुत्तणेरइओ त्ति ताव णियमा उदीरणा[3]। तिण्णं संजलणाणं मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव अणियट्टिअद्धाए सग-सगबंध-ज्झवसाणाणं चरिमसमओ त्ति ताव उदीरणा। लोहसंजलणाए मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव समयाहियावलियचरिमसमयसकसाओ त्ति ताव उदीरणा।

णिरयाउअस्स[4] सव्वम्हि णेरइयम्हि उदीरणा। णवरि आवलियचरिमसमय-

अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव उदीरक होता है। अप्रत्याख्यानचतुष्कके मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टिके अन्तिम समय तकके जीव उदीरक होते हैं। प्रत्याख्यानचतुष्कके मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानके अन्तिम समय तकके जीव उदीरक होते हैं। नपुंसकवेदका उदीरक कौन होता है? उसके उदीरक सभी नपुंसक जीव होते हैं। विशेष इतना है कि क्षपक और उपशामक नपुंसक जीव नपुंसकवेदकी प्रथम स्थितिके उदयावली मात्र शेष रहनेपर नपुंसकवेदके अनुदीरक होते हैं। शेष सब नपुंसक जीव उसके उदीरक ही होते हैं। जिस प्रकारसे नपुंसकवेदके उदीरकोंका कथन किया गया है उसी प्रकारसे स्त्री और पुरुष वेदोंके भी उदीरकोंका कथन करना चाहिये। हास्य, रति, अरति, शोक, भय व जुगुप्सा; इन प्रकृतियोंका उदीरक मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके अन्तिम समय तक रहनेवाला जीव होता है। विशेष इतना है कि देवके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त तक सातावेदनीय, हास्य और रति इनकी उदीरणा नियमसे होती है। आगे वह भाज्य है, अर्थात् आगे वह होती भी है और नहीं भी होती। तथा नारकीके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त तक असाता वेदनीय, अरति और शोककी उदीरणा नियमसे होती है। तीन संज्वलन कषायोंकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणकालमें अपने-अपने बन्धाध्यवसानोंके अन्तिम समय तक होती है। संज्वलनलोभकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अन्तिम समयवर्ती सकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र कालके शेष रहने तक होती है।

नारकायुकी उदीरणा सब नारकियोंमें होती है। विशेष इतना है कि जिस नारक जीवके

---

१ क. प्र. ४, ६. २ × × × ते ते बंधंतगा कसायाणं। क. प्र. ४, २०. ३ हास-रई-सायाणं अंतमुहुत्तं तु आइमं देवा। इयराणं नेरइया उड्ढं परियत्तणविहीए॥ पं. सं. ४, २१. ४ काप्रतौ 'णिरयाउआउअस्स,' ताप्रतौ 'णिरयाउ [आउ] अस्स' इति पाठः।

तब्भवत्थणेरइयमादिं कादूण जाव चरिमसमयतब्भवत्थो त्ति ताव अणुदीरओ। जहा णिरयाउअस्स तहा सेसाउआणं पि परूवणा कायव्वा। णवरि तिरिक्ख-मणुस-देवाउआणं जहाकमेण तिरिक्ख-मणुस-देवा चेव उदीरया। मणुसाउअस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदस्स मरणकाले चरिमावलियं मोत्तूण अण्णत्थ उदीरणा।

णिरयगइणामाए सव्वो णेरइओ उदीरओ। तिरिक्खगइणामाए सव्वो तिरिक्खजोणिओ उदीरओ। मणुसगइणामाए अजोइं मोत्तूण सेसो सव्वो मणुसो मणुसिणी वा उदीरओ। देवगदिणामाए सव्वो देवो सव्वदेवी वा उदीरया। एइंदियजादिणामाए सव्वो एइंदियो, बीइंदियजादिणामाए सव्वो बीइंदियो, तीइंदियजादिणामाए सव्वो तीइंदियो, चउरिंदियजादिणामाए सव्वो चउरिंदियो, पंचिंदियजादिणामाए सव्वो पंचिंदियो उदीरओ। णवरि पंचिंदियजादिणामाए अजोगिम्हि णत्थि उदीरणा। ओरालियसरीरणामाए उदीरगो अण्णदरो [जो] ओरालियसरीरस्स णिव्वत्तओ। वेउव्वियसरीरणामाए उदीरओ अण्णदरो जो वेउव्वियसरीरस्स[1] णिव्वत्तओ। आहारसरीरणामाए उदीरगो अण्णदरो जो आहारसरीरस्स णिव्वत्तओ। तेजा-कम्मइयसरीराणमुदीरओ अण्णदरो जो सजोगो। जहा सरीराणं तहा तेसिमंगोवंगणामाणं वत्तव्वं। एवं

अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ होनेमें आवली मात्र काल शेष रहा है उससे लेकर अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ नारक तकके उसकी उदीरणा नहीं होती। जैसे नारकायुकी उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही शेष तीन आयु कर्मोंकी भी उदीरणाकी प्ररूपणा करनी चाहिये। विशेष इतना है कि तिर्यंच, मनुष्य और देव आयुओंके उदीरक यथाक्रमसे तिर्यंच, मनुष्य एवं देव ही होते हैं। मनुष्यायुकी मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत गुणस्थान तक उदीरणा होती है। मात्र मरणकालमें अन्तिम आवलीको छोड़कर अन्य कालमें ही उदीरणा होती है।

नरकगति नामकर्मके सभी नारकी उदीरक होते हैं। तिर्यंचगति नामकर्मके सभी तिर्यंच योनिवाले जीव उदीरक होते हैं। मनुष्यगति नामकर्मके उदीरक अयोगी जिनको छोड़कर शेष सब मनुष्य और मनुष्यनियां होती हैं। देवगति नामकर्मके उदीरक सब देव और सभी देवियां हैं। एकेन्द्रियजाति नामकर्मके सब एकेन्द्रिय जीव, द्वीन्द्रियजाति नामकर्मके सब द्वीन्द्रिय जीव, त्रीन्द्रियजाति नामकर्मके सब त्रीन्द्रिय जीव, चतुरिन्द्रियजाति नामकर्मके सब चतुरिन्द्रिय जीव, तथा पंचेन्द्रियजाति नामकर्मके सब पंचेन्द्रिय जीव उदीरक होते हैं। विशेष इतना है कि पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उदीरणा आयोगी गुणस्थानमें नहीं है। औदारिकशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि औदारिकशरीरका निर्वतक है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि वैक्रियिकशरीरका निर्वतक है। आहारशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि आहारशरीरका निर्वतक है। तैजस और कार्मण शरीरोंका उदीरक अन्यतर जीव होता है जो कि योगसे सहित है। जैसे शरीरोंकी उदीरणाका कथन किया गया है वैसे ही उनके आंगोपांग नामकर्मोंकी उदीरणाका भी कथन करना

१ काप्रतौ 'वेउव्वियसरीरणामस्स', ताप्रतौ 'वेउव्वियसरीरस्स णामस्स' इति पाठः।

छसंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणाणं पि वत्तव्वं। सेसाणं संघडणणामाणं उदीरगो णिव्वत्तओ। तं जहा– वेउव्वियसरीरस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा। एवं तदंगोवंगस्स। आहारदुगस्स पमत्तसंजदम्मि चेव उदीरणा। वज्जणारायण-संघडण-णाराइणसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति उदीरणा। अद्धणारायणसंघडण-खीलियसंघडण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति उदीरणा। पंचबंधण-पंचसंघादाणं पंचसरीरभंगो। वण्ण-गंध-रस-फासाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति उदीरणा।

णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए पढमसमयणेरइओ दुसमयणेरइओ वा मिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वा उदीरओ। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए तिरिक्खो[2] पढम-समयतब्भवत्थो बिदियसमयतब्भवत्थो वा सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वा, पढमसमय-दुसमय-तिसमयतब्भवत्थमिच्छाइट्ठी वा उदीरओ। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-णामाए पढमसमय दुसमयतब्भवत्थो सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा उदीरओ[3]। देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए पढमसमयतब्भवत्थो दुसमयतब्भवत्थो

चहिये। इसी प्रकारसे छह संस्थानों और वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननकी उदीरणाका भी कथन करना चाहिये। शेष संहनन नामकर्मोंका उदीरक उनका निर्वर्तक होता है। यथा—वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है। इसी प्रकार वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी भी उदीरणा जानना चाहिये। आहारद्विककी उदीरणा प्रमत्तसंयतमें ही होती है। वज्रनाराच-संहनन और नाराचसंहननकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तक होती है। अर्धनाराचसंहनन, कीलितसंहनन और असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक होती है। पांच बन्धन और पांच संघातोंकी उदीरणाकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है। वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक होती है।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती नारक अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती नारक मिथ्यादृष्टि या असंयतसम्यग्दृष्टि होता है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ तिर्यंच सासादन-सम्यग्दृष्टि या असंयतसम्यग्दृष्टि, अथवा प्रथम समय, द्वितीय समय और तृतीय समयवर्ती तद्-भवस्थ मिथ्यादृष्टि होता है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समय अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि होता है। देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा प्रथम और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि अथवा असंयत-

१ प्रत्योरुभयोरेव 'संघडणाणं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'तिरिक्ख' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'सासण सम्माइट्ठी असंजदसम्मामिच्छाइट्ठी वा उदीरओ', ताप्रतौ 'सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा पढमसमयदुसमयतिसमयतब्भवत्थमिच्छाइट्ठी वा उदीरओ' इति पाठः।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वा उदीरओ।

अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिणणामाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। उवघादणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिचरिमसमओ त्ति [उदीरणा]। णवरि आहारओ चेव उदीरेदि, णाणाहारओ। परघादणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरेदि। [1]उस्सासणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ[2]। आदावणामाए बादरपुढविजीवो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ। उज्जोवणामाए एइंदियो अणेइंदियो वा बादरो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ[3]। पसत्थविहायोगदिणामाए पंचिंदियो पज्जत्तो सण्णी असण्णी वा मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरगो। एवमप्पसत्थविहायोगइणामाए वि वत्तव्वं। णवरि सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सव्वो तसकाइयो सजोगी उदीरेदि[4]।

सम्यग्दृष्टि होता है।

अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण, इन नामकर्मोंकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समय तक होती है। उपघात नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि उसकी उदीरणा आहारक ही करता है, अनाहारक नहीं करता। परघात नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव ही उसकी उदीरणा करता है। उच्छ्वास नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव ही उसका उदीरक होता है। आतप नामकर्मका उदीरक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ बादर पृथिवीकायिक जीव ही होता है। उद्योत नामकर्मका उदीरक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ ही एकेन्द्रिय अथवा द्वीन्द्रिय आदि बादर जीव होता है। प्रशस्तविहायोगति नामकर्मका उदीरक पंचेन्द्रिय पर्याप्त संज्ञी और असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होता है। इसी प्रकार अप्रशस्तविहायोगति नामकर्मकी उदीरणाका भी कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए सब त्रसकायिक सयोगकेवली तक उसकी उदीरणा करते हैं।

---

१ ताप्रतावतः प्राक्—उदीरओ [आदावणामाए बादरपुढविजीवो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरओ] इत्येतावाननयं पाठ उपलभ्यते कोष्ठकान्तर्गतः। २ उस्सासस्स सराण य पज्जत्ता आणपाण-भासासु। सव्वण्णूणुस्सासो भासा वि य जा न रुज्झति ॥ क. प्र. ४, १५. पं. सं. ४,१६. ३ बायरपुढवी आयावस्स य वज्जित्तु सुहुमसुहुमतसे। उज्जोयस्स य तिरिए (ओ) उत्तरदेहो य देव-जई ॥ क. प्र. ४, १३. पज्जत्त-बायरे च्चिय आयवउद्दीरगो भोमो ॥ पुढवी-आउ-वणस्सइ-बायर-पज्जत्त उत्तरतणू य। विगल-पणिदियतिरिया उज्जोवुद्दीरगा भणिया ॥ पं० सं० ४, १३–१४. ४ सगला सुगति-सराणं पज्जत्तासंखवास-देवा य। इयराणं नेरइया नर-तिरि सुसरस्स विगला य ॥ पं. सं. ४, १५.

तसणामाए तसकाइयमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। बादरणामाए बादरमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। पज्जत्तणामाए पज्जत्तमिच्छाइट्ठिप्पहुडि[1] जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। पत्तेयसरीरणामाए पत्तेयसरीरमिच्छाइठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि आहारओ चेव उदीरओ, णाणाहारओ। थावरणामाए थावरो मिच्छाइट्ठी उदीरओ। सुहुमणामाए सुहुमेइंदियो उदीरओ। अपज्जत्तणामाए अपज्जत्तो मिच्छाइट्ठी उदीरओ। साहारणसरीरणामाए अण्णदरो साहारणकाइयो आहारओ चेव उदीरओ।

जसकित्तिणामाए बीइंदियो तीइंदियो चउरिंदियो पंचिंदियो वा पज्जत्तो चेव उदीरओ, एइंदियो वि बादरो पज्जत्तो तेउकाइय-वाउकाइयवदिरित्तो उदीरेदि, संजदासंजदा संजदा[2] च णियमा जसगित्तीए उदीरया जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति[3]। जदा पग्गहेण पग्गहिदो तदा अजसगित्तिवेदगो वि जसगित्तिं वेदयदि, तव्वदिरित्तो दो वि वेदयदि। पग्गहो णाम संजमो संजमासंजमो च। अजसगित्तिणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा। सुभगादेज्जाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि गब्भोवक्कंतियसण्णि-असण्णिणो अण्णदरा

त्रस नामकर्मकी उदीरणा त्रसकायिक मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। बादर नामकर्मकी उदीरणा बादर मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। पर्याप्त नामकर्मकी उदीरणा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे संयुक्त मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। प्रत्येकशरीर नामकर्मकी उदीरणा प्रत्येकशरीर मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि आहारक जीव ही उसका उदीरक होता है, अनाहारक नहीं होता। स्थावर नामकर्मका स्थावर मिथ्यादृष्टि उदीरक है। सूक्ष्म नामकर्मका सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव उदीरक है। अपर्याप्त नामकर्मका अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे संयुक्त मिथ्यादृष्टि उदीरक है। साधारणशरीर नामकर्मका उदीरक अन्यतर साधारणकायिक आहारक जीव ही होता है।

यशकीर्ति नामकर्मका उदीरक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक ही होता है; तेजकायिक व वायुकायिकको छोड़कर एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त जीव भी उसकी उदीरणा करता है; तथा संयतासंयत और सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक संयत जीव भी नियमसे यशकीर्तिके उदीरक हैं। जब प्रग्रहसे प्रगृहीत अर्थात् संयमको स्वीकार करता है तब अयशकीर्तिका वेदक भी यशकीर्तिका वेदक होता है, शेष जीव दोनोंका वेदन करते हैं। प्रग्रहका अर्थ संयम और संयमासंयम है। अशयकीर्ति नामकर्मकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है। सुभग और आदेयकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि अन्यतर गर्भोपकान्त संज्ञी व असंज्ञी

१ ताप्रतौ 'पज्जत्तणामाए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि' इति पाठः। २ काप्रतौ 'संजदासंजदा संजदो', ताप्रतौ 'संजदासंजदो संजदो' इति पाठः। ३ नेरइया सुहुमतसा वज्जिय सुहुमा य तह अपज्जत्ता। जसकित्तिउदीरगाइज्ज-सुभगनामाण सण्णि सुरा॥ पं० सं० ४, १७.

णियमा देवा देवीओ संजदासंजदा[1] संजदा च उदीरेंति। दूभग-अणादेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा। सुस्सर-दुस्सराणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि बेइंदियो तेइंदियो चउरिंदियो पंचिंदियो वा भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरेदि। तित्थयरणामाए तित्थयरो उप्पण्ण-केवलणाणो सजोगी चेव उदीरगो।

उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि मणुस्सो वा मणुस्सिणी वा सिया उदीरेदि, देवो देवी वा संजदो वा णियमा उदीरेंति, संजदासंजदो सिया उदीरेदि। णीचागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदस्स उदीरणा। णवरि देवेसु णत्थि उदीरणा, तिरिक्ख-णेरइएसु णियमा उदीरणा, मणुसेसु सिया उदीरणा[2]। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उदीरओ अणादिओ अपज्ज-वसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो। एवं सेसचत्तारिणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिण-पंचंतराइ-याणं दोहि भंगेहि कालपरूवणा कायव्वा। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुदीरणाए

जीव उसकी उदीरणा करते हैं; तथा देव व देवियां, संयतासंयत एवं संयत जीव नियमसे उसकी उदीरणा करते हैं। दुभग व अनादेयकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है। सुस्वर और दुस्वरकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होकर ही उनकी उदीरणा करता है। तीर्थंकर नामकर्मका उदीरक जिसके केवलज्ञान उत्पन्न हो चुका है ऐसा सयोगी तीर्थंकर ही होता है।

उच्चगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि मनुष्य और मनुष्यनी उसकी कदाचित् उदीरणा करते हैं, देव-देवी तथा संयत जीव उसकी उदीरणा नियमसे करते हैं, तथा संयतासंयत जीव कदाचित् उदीरणा करते हैं। नीचगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक होती है। विशेष इतना है कि देवोंमें उसकी उदीरणा सम्भव नहीं है, तिर्यंचों व नारकियोंमें उसकी उदीरणा नियमसे तथा मनुष्योंमें कदाचित् होती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— आभिनिबोधिकज्ञानावरणीयका उदीरक अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित जीव है। इसी प्रकारसे शेष चार ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियों (ध्रुवोदयी) के उदीरणाकालकी प्ररूपणा इन दो भंगोंसे करनी चाहिये। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है,

१ देवो सुभगाए (इ) जाण गब्भवक्कंतिओ य'''। क. प्र. ४, १६. २ उच्चं चिय जइ अमरा केई मणुया व नीयमेवण्णे। चउगइया दुभगाई तित्थयरो केवली तित्थं ॥ पं. सं. ४, १८.

कालो जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? अद्धुवोदयादो । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं णिद्दा-पयलाणं पि वत्तव्वं । सादस्स जहण्णएण एयसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा । असादस्स जहण्णएण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि । कुदो ? सत्तमपुढविपवेसादो पुव्वं पच्छा च असादस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालमुदीरणुवलंभादो ।

हस्स-रदीणं कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छमासा । अरदि-सोगाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि । मिच्छत्तस्स तिण्णि भंगा— जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सम्मत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण उक्कस्सेण वि अंतोमुहुत्तं । सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णगो उदीरणकालो तुल्लो । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सउदीरणकालो विसेसाहिओ । अणंताणुबंधिकोधस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं माण-माय-लोभाणं पि वत्तव्वं । जहा अणंताणुबंधीणं तहा अपच्चक्खाण-चउक्क-पच्चक्खाणचउक्काणं पि वत्तव्वं । कोहसंजलणाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं माण-माया-लोभसंजलणाणं वत्तव्वं । भय-दुगुंछाणं जहण्णेण एयसमओ,

क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । उनकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इसी प्रकारसे निद्रा और प्रचला इन दो प्रकृतियोंके उदीरणाकाल कथन करना चाहिये । सातावेदनीयकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है । असातावेदनीयकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि, सातवीं पृथिवीमें प्रवेश करनेसे पूर्व और पश्चात् अन्तर्मुहूर्त मात्र काल तक असातावेदनीयकी उदीरणा पायी जाती है ।

हास्य व रतिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है । अरति और शोकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । मिथ्यात्वके उदीरणाकालकी प्ररूपणामें तीन भंग हैं— उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है । सम्यक्त्व प्रकृतिका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे आवलीसे कम छ्यासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यग्मिथ्यात्व-का काल जघन्यसे और उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्य-ग्मिथ्यात्व,इन तीनों प्रकृतियोंका जघन्य उदीरणाकाल समान है । सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट उदीरणा-काल उससे विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । इसी प्रकारसे अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके भी उदीरणाकालका कथन करना चाहिये । जैसे अनन्तानुबन्धी कषायोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही अप्रत्याख्यानचतुष्क और प्रत्याख्यानचतुष्कके भी उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये । संज्वलन क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इसी प्रकार संज्वलन मान, माया और लोभके उदीरणाकालका कथन करना चाहिये । भय और जुगुप्साका

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कधं भय-दुगुंछाणमुदीरणकालो एगसमओ ? अपुव्वकरणचरिमसमयम्मि पढमसमयवेदगो होदूण से काले अणियट्टिगुणं गदस्स उदीरणवोच्छेददंसणादो । णवुंसयवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जपोग्गलपरियट्टं । इत्थिवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

णिरयाउअस्स जहण्णेण दसवाससहस्साणि आवलियाए ऊणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियाए ऊणाणि । एवं देवाउअस्स वि वत्तव्वं । मणुसाउअस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि आवलियाए ऊणाणि । तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियाए ऊणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियाए ऊणाणि ।

णिरयगदिणामाए उदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण दसवाससहस्साणि, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि । एवं देवगदीए वि वत्तव्वं । तिरिक्खगदिणामाए मणुसगदिणामाए च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण परिवाडीए अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं तिण्ण पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । अजोगिवज्जा मणुसगदीए

उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

शंका—भय और जुगुप्साका उदीरणाकाल एक समय कैसे है ?

समाधान—कारण कि अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उनका एक समयके लिये वेदक होकर अनन्तर समयमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानको प्राप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंकी उदीरणाकी व्युच्छित्ति देखी जाती है ।

नपुंसकवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्त्रीवेदका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । पुरुषवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

नारकायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक आवली कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । इसी प्रकार देवायुके उदीरणाकालका भी कथन करना चाहिये । मनुष्यायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है । तिर्यंच आयुका उदीरणाकाल जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

नरकगति नामकर्मकी उदीरणा कितने काल होती है ? उसकी उदीरणा जघन्यसे दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है । इसी प्रकारसे देवगतिके भी उदीरणाकालका कथन करना चाहिये । तिर्यंचगति नामकर्म और मनुष्यगति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल तथा पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । अयोगकेवलीको छोड़कर शेष (सब मनुष्य व मनुष्यनी) मनुष्यगति नामकर्मके उदीरक हैं ।

उदीरया । एइंदियजादिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्ज-पोग्गलपरियट्टं । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादीए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । पचिंदियजादिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं। ओरालियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ। कुदो ? उत्तरसरीरं विउव्विय मूलसरीरं पविसिय एगसमयमोरालियसरीरमुदीरिय बिदिय-समए कालं कादूण विग्गहं गदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्सेसु एगसमयमुत्तर-सरीरं विउव्विदूण बिदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारसरीरणामाए[1] जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? आहारसरीर-मुट्ठावेंतस्स अपज्जत्तद्धाए मरणाभावादो । जहा तिण्णं सरीराणं तहा तेसिं अंगोवंगाणं पि वत्तव्वं । णवरि ओरालियसरीरंगोवंगणामस्स उक्कस्सेण[2] तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्व-कोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । जहा पंचण्णं सरीराणं तहा तेसिं बंधण-संघादाणं परूवणा कायव्वा ।

समचउरससंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ । कुदो ? अणप्पिदसंठाणेण उत्तर-

---

एकेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है । पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक हजार सागरोपम प्रमाण है । औदारिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर मूल शरीरमें प्रविष्ट होकर एक समय औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेके पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर जो विग्रहको प्राप्त हुआ है उसके उपर्युक्त काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, तिर्यंचों या मनुष्यों-में एक समय उत्तर शरीरकी विक्रिया करके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । आहारशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है, क्योंकि, आहारशरीरको उत्पन्न करनेवाले जीवका अपर्याप्तकालमें मरण सम्भव नहीं है । जैसे इन तीन शरीरोंके उदीरणा-कालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके आंगोपांगोंके भी उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि औदारिकशरीरांगोपांगका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । जैसे पांच शरीरोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके बन्धन और संघातोंके उदीरणाकालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि,

---

१ प्रत्योरुभयोरेव '-णामाणं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'उक्कस्स-', ताप्रतौ 'उक्कस्से०' इति पाठः ।

सरीरं विउव्विय अप्पिदसंठाणमूलसरीरं पविट्ठबिदियसमए कालं कादूण संठाणंतरं गदस्स एगसमयकालुवलंभादो । उक्कस्सेण तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं । सेसाणं संठाणाण हुंड-संठाणवज्जाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं, पंचिंदियतिरिक्ख-मणुस्से मोत्तूण अण्णत्थ सेससंठाणाणं संभवाभावादो । हुंडसंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? विग्गहगदीए विणा हिंडमाणएइंदिय-विगलिंदिएसु संठाणंतराभावादो । अणंतकालो किण्ण परूविदो ? ण, विग्गहगदीए[1] वट्टमाणाणं संठाणुदयाभावादो । तत्थ संठाणाभावे जीवाभावो किण्ण होदि ? ण, आणुपुव्वि-णिव्वत्तिदसंठाणे अवट्ठियस्स जीवस्स अभावविरोहादो । वज्जरिसहवइरणारायणसरीर-संघडणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरादो मूलसरीरं गंतूण अप्पिदसंघडणेण[2] एगसमयं परिणमिय बिदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । सेसाणं संघडणाणं पंचण्णं पि जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं ।

अविवक्षित संस्थानके साथ उत्तर शरीरकी विक्रिया करके विवक्षित संस्थानवाले मूल शरीरमें प्रविष्ट होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर संस्थानान्तरको प्राप्त हुए जीवके एक समय मात्र काल पाया जाता है । उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है। हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष चार संस्थानोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व मात्र है, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंचों और मनुष्योंको छोड़कर अन्यत्र शेष संस्थानोंकी सम्भावना नहीं है । हुण्डकसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है, क्योंकि, विग्रहगतिके विना परिभ्रमण करनेवाले एकेद्रियों व विकलेन्द्रियोंमें अन्य संस्थानकी सम्भावना नहीं है ।

शंका— अनन्त कालकी प्ररूपणा क्यों नहीं की ?

समाधान— नहीं, क्योंकि विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके संस्थानका उदय सम्भव नहीं है ।

शंका—विग्रहगतिमें संस्थानके अभावमें जीवका अभाव क्यों नहीं हो जाता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि वहां आनुपूर्वीके द्वारा रचे गये संस्थानमें अवस्थित जीवके अभावका विरोध है ।

वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहनन नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरसे मूल शरीरको प्राप्त होकर विवक्षित संहननसे एक समय परिणत होकर द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है । उसका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । शेष पांचों ही संहननोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

---

१ ताप्रतौ 'विग्गहगदीसु' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'संघादणेण' इति पाठः ।

णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एवं मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं[1] वत्तव्वं। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया। उवघादणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। परघादणामाए जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरं विउव्विय पज्जत्तयदबिदियसमए मुदस्स एगसमओ लब्भदे। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। जहा परघादणामाए परूविदं तहा उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं परूवेयव्वं।

आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बावीसवस्ससहस्साणि देसूणाणि, सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयस्स आदावुदयाभावादो। उज्जोवणामाए[2] जहण्णेण एयसमयो, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि। थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साधारणाणं जहण्णगो उदीरणकालो अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सओ थावरणामाए असंखेज्जपोग्गलपरियट्टा, बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बेसागरोवमसहस्साणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, पत्तेय-साहारणाणं

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। इसी प्रकार मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंके उदीरणाकालका कथन करना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है। उपघात नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। परघात नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर पर्याप्त होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके एक समय काल पाया जाता है। उसका उदीरणाकाल उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। जैसे परघात नामकर्मके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये।

आतप नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष प्रमाण है, क्योंकि, शरीरपर्याप्तिसे अपर्याप्त जीवके आतप नामकर्मका उदय सम्भव नहीं है। उद्योत नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तीन पल्य प्रमाण है। त्रस नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है। स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक और साधारण नामकर्मोंका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। उत्कृष्ट उदीरणाकाल स्थावर नामकर्मका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका दो हजार सागरोपम, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रत्येक व

---

१ उभयोरेव प्रत्योः 'मणुसगइ-देवगइणामाणं' इति पाठः। २ उभयोरेव प्रत्योः 'उज्जोवणामाणं' इति पाठः।

अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। जसगित्ति-सुभगादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ उत्तरविउव्वणाए कालं करेंतस्स, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं[1]। अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अजसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, दूभग-अणादेज्जाणं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। कधमेगसमओ? अजसकित्तिमुदीरयमाणो संजदो जादो, ताधे जसगित्ती उदयमागदा[2], पुणो अंतोमुहुत्तेण सासणं गदो, तत्थ अजसगित्तीए उदीरणबिदियसमए मुदो, तस्स एगसमओ लब्भइ। उत्तरविउव्वणाए वि लब्भदे। एवं दूभग-अणादेज्जाणं पि वत्तव्वं, परियट्टमाणउदयत्तादो।

तित्थयरणामाए जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। णीचागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उच्चागोदादो णीचागोदं गंतूण तत्थ एगसमयमच्छिय बिदियसमए उच्चागोदे उदयमागदे एगसमओ लब्भदे। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। उच्चागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरं विउव्विय[3] एगसमएण मुदस्स तदुवलंभादो। एवं णीचागोदस्स वि। उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं। एवमोघाणुगमो

साधारण नामकर्मोंका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंका उदीरणाकाल उत्तर विक्रियासे मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवके जघन्यसे एक समय मात्र है, उत्कर्षसे वह सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेय नामकर्मोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह अयशकीर्तिका असंख्यात लोक तथा दुर्भग व अनादेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

शंका— इनका जघन्य उदीरणाकाल एक समय मात्र कैसे है।

समाधान—अयशकीर्तिकी उदीरणा करनेवाला जीव संयत हो गया, उस समय उसके यशकीर्तिका उदय हुआ, फिर वह अन्तर्मुहूर्तमें सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुआ, वहां अयशकीर्तिकी उदीरणाके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुआ, उसके अयशकीर्तिका उदीरणाकाल एक समय पाया जाता है। यह काल उत्तर विक्रियासे भी पाया जाता है। इसी प्रकार दुर्भग व अनादेय नामकर्मोंके भी एक समयरूप उदीरणाकालका कथन करना चाहिये, क्योंकि, ये परिवर्तमान उदयवाली प्रकृतियां हैं।

तीर्थंकर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है। नीचगोत्रका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उच्चगोत्रसे नीचगोत्रको प्राप्त होकर और वहां एक समय रहकर द्वितीय समयमें उच्चगोत्रका उदय होनेपर एक समय उदीरणाकाल पाया जाता है। उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। उच्चगोत्रका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया करके एक समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है। नीचगोत्रका भी जघन्य काल एक समय मात्र इसी प्रकारसे घटित किया जा सकता है। उच्चगोत्रका उत्कृष्ट काल सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्, का-ताप्रत्योः 'एगसमओ उक्क० उत्तरविउव्वणाए कालं करेंतस्स सागरोवम-' इति पाठः। २ प्रत्योरुभयोरेव 'उदयमागदो' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'विउव्विद' इति पाठः।

समत्तो । आदेसो जाणियूण वत्तव्वो । एवं कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं— पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणमुदीरणाए अंतरं णत्थि, धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयलाणमंतरं जहण्णमुक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादियाणि अंतोमुहुत्तेण । सादस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । सादस्स गदियाणुवादेण जहण्णमंतरमंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं चेव । असादस्स जहण्णमंतरमेगसमओ, उक्कस्सं छम्मासा । मणुसगदीए असादस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । मिच्छत्तस्स जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं बेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं उवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं । अणंताणुबंधीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं बेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अपच्चक्खाणकसायाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पुव्वकोडी देसूणा । एवं चेव पच्चक्खाणावरणीयचदुक्कस्स वत्तव्वं । कोह-माण-मायासंजलणाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पि अंतो-

है । इस प्रकार ओघानुगम समाप्त हुआ । आदेशका कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय; इनकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता, क्योंकि ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा और प्रचलाकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । निद्रानिद्रा, प्रचला-प्रचला और स्त्यानगृद्धिका वह अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । गतिके अनुवादसे सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त ही है । असातावेदनीयका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट छह मास प्रमाण है । मनुष्यगतिमें असाताकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

मिथ्यात्वका जघन्य उदीरणा-अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका वह अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम काल प्रमाण है । अप्रत्याख्यान कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है । इसी प्रकार ही प्रत्याख्याना-वरणीयचतुष्कके अन्तरका कथन करना चाहिये । संज्वलन क्रोध, मान और मायाका जघन्य

मुहुत्तं । लोहसंजलणाए[1] जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं अंतोमुहुत्तं । जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं वत्तव्वं । जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं वत्तव्वं । भय-दुगुंछाण-मंतरं जहण्णं एगसमओ, उक्कस्सं अंतोमुहुत्तं । कधं एगसमओ ? चरिमसमयणियट्टि-भयवेदगो[2] से काले अणियट्टिगुणं पविट्ठो अवेदगो जादो, तदो से काले मदो देवो जादो भयं चेव वेदेदि, एवं भयवेदगस्स एगसमयमंतरं । एवं दुगुंछाए । पुरिसवेदस्स[3] उदीर-णंतरं जहण्णं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सं णवुंसयवेदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, इत्थिवेदस्स असं-खेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

देव-णिरयाउआणमुदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गल-परियट्टा । तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण अन्तरमावलिया, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । एवं मणुस्साउअस्स वि । णवरि उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । संज्वलन लोभका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । जिस प्रकार साता वेदनीयके अन्तरकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे हास्य व रतिके अन्तरकी प्ररूपणा करनी चाहिये । जिस प्रकार असाता-वेदनीयके अन्तरका कथन किया है उसी प्रकारसे अरति और शोकके अन्तरका कथन करना चाहिये । भय और जुगुप्साका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

शंका— उनकी उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय कैसे है ?

समाधान— भयका वेदक अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण अनन्तर समयमें अनिवृत्ति-करण गुणस्थानमें प्रविष्ट होकर उसका अवेदक हुआ । पश्चात् अनन्तर समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ । वह उस समय भयका ही वेदन करता है । इस प्रकारसे भयका वेदन करनेवाले उक्त जीवके एक समय अन्तर पाया जाता है । इसी प्रकार जुगुप्साके भी उपर्युक्त एक समय मात्र अन्तरका कथन करना चाहिये ।

पुरुषवेदकी उदीरणाका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । स्त्री और नपुंसक वेदोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । उत्कृष्ट अन्तर नपुंसक-वेदका सागरोपमशतपृथक्त्व और स्त्रीवेदका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

देव व नारक आयुओंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है । तिर्यंच आयुका अन्तर जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे सागरोपमशत-पृथक्त्व प्रमाण है । इसी प्रकारसे मनुष्यायुके भी अन्तरका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'लोहसंजलणाणं' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'अणियट्टिभयवेदगो' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'पुरिसवेदयस्स' इति पाठः ।

चदुण्णं पि गदीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण तिरिक्खगइणामाए साग-रोवमसदपुधत्तं, सेसाणं गईणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । ओरालिय-वेउव्वियसरीराण-मुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण ओरालियसरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि, वेउव्वियसरीरस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अहारसरीरस्स जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । अण्णदरस्स संठाणस्स जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । णवरि हुंडसंठाणस्स तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं । एइंदियजादीए जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । सेसाणं जादीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं असं-खेज्जा पोग्गलपरियट्टा । तिण्णमंगोवंगाणं सग-सगसरीराणं व जहण्णुक्कस्संतरं वत्तव्वं । णवरि ओरालियअंगोवंगस्स वेउव्वियभंगो । पंचसरीरबंधण-संघादाणं पंचसरीरभंगो । छण्णं संघडणाणं जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि साहियाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । मणुसगइपाओग्गाणु-पुव्विणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं दुसमऊणं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

चारों गतियोंका उक्त अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है । उत्कर्षसे वह तिर्यंचगतिका साग-रोपमशतपृथक्त्व और शेष गतियोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । औदारिक और वैक्रियिक शरीरोंका उदीरणा-अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे वह औदारिकशरीरका अन्त-र्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम और वैक्रियिकशरीका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । आहारकशरीरका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । अन्यतर संस्थानका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । विशेष इतना है कि हुण्डकसंस्थानका उत्कृष्ट अन्तर साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है । एकेन्द्रिय जातिका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है । शेष जातियोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । तीन अंगोपांग नामकर्मोंके जघन्य व उत्कृष्ट अन्तरका कथन अपने अपने शरीरोंके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि औदारिक अंगोपांगके अन्तरकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है। पांच शरीरबन्धनों और पांच संघातोंके अन्तरकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है । छह संहननोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है ।

देवगति और नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका अन्तर जघन्यसे तीन समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका अन्तर जघन्यसे दो समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे

उवघादणामाए उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्ण समया। परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणमुदीरणंतरं जहण्णमंतोमुहुत्तं, केवलिसमुग्घादं पडुच्च पंचसमया। उक्कस्सेण परघादुस्सासाणमंतोमुहुत्तं, पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। आदावुज्जोवाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालं[1]। तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणं उदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण थावरणामाए तसट्ठिदी[2], सुहुमणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, बादरणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, अपज्जत्तणामाए तसपज्जत्तट्ठिदी। पत्तेयसाहारणाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण पत्तेयसरीरणामाए णिगोदट्ठिदी, साहारणसरीरणामाए असंखेज्जा लोगा। जसगित्ति-अजसगित्ति-सुभग-दूभग-आदेज्ज-अणादेज्जाणमंतरं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण जसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, सुभग-आदेज्जाणं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्जाणं सागरोवमसदपुधत्तं। तित्थयरणामाए णत्थि अंतरं। उच्चाणीचागोदाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण णीचा-

---

असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। उपघात नामकर्मकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है। परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंकी उदीरणाका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त मात्र है, केवलिसमुद्घातकी अपेक्षा वह पांच समय प्रमाण है। उत्कर्षसे वह परघात व उच्छ्वासका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियों, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। आतप व उद्योतका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है। त्रस नामकर्मका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त और पर्याप्त नामकर्मोंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उत्कर्षसे वह स्थावर नामकर्मका त्रसस्थिति (साधिक दो हजार सागरोपम), सूक्ष्म नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, बादर नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा अपर्याप्त नामकर्मका त्रस पर्याप्तकी स्थिति प्रमाण है। प्रत्येक और साधारणका अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे वह प्रत्येकशरीर नामकर्मका निगोदस्थिति प्रमाण तथा साधारणशरीर नामकर्मका असंख्यात लोक प्रमाण है। यशकीर्ति, अयशकीर्ति, सुभग, दुर्भग, आदेय और अनादेयका अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे वह यशकीर्तिका असंख्यात लोक, सुभग व आदेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; तथा अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयका सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है। ऊंच व नीच गोत्रोंका अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे नीच गोत्रकी उदीरणाका वह अन्तर सागरोपम-

---

१ प्रत्योरुभयोरेव 'अणंता लोगा' इति पाठः। २ काप्रतिपाठोऽयम्। ता-मप्रत्योः 'तस्स ट्ठिदी' इति पाठः।

गोदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, उच्चागोदस्स उदीरणंतरमुक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे। तत्थ अट्ठपदं— जेसिं कम्ममत्थि तेसु पयदं, अकम्मेहि[1] अव्ववहारो। एदेण अट्ठपदेण पंचण्णं णाणावरणीयाणं सिया सव्वे जीवा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरयो च, सिया उदीरया च अणुदीरया च। एवं तिण्णि भंगा। चदुदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिरा-थिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं णाणावरणभंगो। णिद्दादीणं पंचण्णं पि उदीरया च अणुदीरया च णियमा अत्थि। णिरयगइ-देवगईसु णिद्दा-पयलाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। सव्वे जीवा सादस्स असादस्स च णियमा उदीरया च अणुदीरया च। णेरइएसु सादस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया[2] च उदीरगो च, अणुदीरया च उदीरया च। णेरइयवज्जा जे पमत्ता[3] तसा ते सादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरगो च, उदीरया च अणुदीरया च। णेरइया असादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरओ च, उदीरया च अणुदीरया च। णेरइयवज्जा सेसा जे पमत्ता[3] तसा ते

शतपृथक्त्व तथा ऊंच गोत्रकी उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं। उसमें अर्थपद—जिन जीवोंके कर्मका अस्तित्व है वे प्रकृत हैं, कर्मरहित जीवोंसे व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदसे पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके कदाचित् सब जीव उदीरक, कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी, इस प्रकारसे तीन भंग हैं। चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इन कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। निद्रा आदि पांचोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक हैं। नरकगति और देवगतिमें निद्रा और प्रचलाके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, कदाचित् बहुत अनुदीरक व एक उदीरक, तथा कदाचित् बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं। साता व असाता वेदनीयके नियमसे सब जीव उदीरक और अनुदीरक हैं। नारक जीवोंमें सातावेदनीयके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, [कदाचित्] अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा [कदाचित्] अनुदीरक बहुत और उदीरक भी बहुत होते हैं। नारकियोंको छोड़कर जो प्रमत्त (प्रमाद युक्त) त्रस जीव हैं वे सातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत व अनुदीरक भी बहुत होते हैं। नारकी जीव असातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत व अनुदीरक भी बहुत होते हैं। नारकियोंको छोड़कर शेष जो प्रमत्त (प्रमाद

१ काप्रतौ 'अकमेहि' इति पाठः। २ काप्रतौ 'अणुदीरया च अणुदीरया' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'पम-(त्त) त्ता' इति पाठः।

असादस्स सिया अणुदीरया, अणुदीरया[1] च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया[2] च।

सम्मामिच्छत्तस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च। एवमेत्थ तिण्णि भंगा वत्तव्वा। सेससत्तावीसमोहपयडीणं णियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि। एवं सव्वेसिमाउआणं। णवरि देव-णिरयाउआणं[3] अणुदीरया भयणिज्जा। णामस्स परियत्तमाणपयडीणमाहारसरीर-आणुपुव्वितियवज्जाणं सव्वजीवा णियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि। आहार-आणुपुव्वितियाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च। एवं तिण्णि भंगा। उच्चा-णीचागोदाणं णियमा उदीरया च अणुदीरया च। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो वुच्चदे-- आहारसरीर-आणुपुव्वितिय-सम्मामिच्छत्तं मोत्तूण सेससव्वकम्माणं उदीरया सव्वद्धं। आहारसरीरस्स उदीरआ[4] जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

सहित) त्रस जीव हैं वे असातावेदनीयके कदाचित् बहुत अनुदीरक, बहुत अनुदीरक व एक उदीरक, तथा बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यात्वके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं। इस प्रकारसे यहां तीन भंगोंको कहना चाहिये। शेष सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी हैं। इसी प्रकार सब आयुओंके विषयमें कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि देवायु और नारकायुके अनुदीरक भजनीय हैं। आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंको छोड़कर नामकर्मकी शेष परिवर्तमान प्रकृतियोंके सब जीव नियमसे उदीरक और अनुदीरक भी हैं। आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं। इस प्रकारसे तीन भंग हैं। ऊंच व नीच गोत्रोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है— आहारकशरीर, तीन आनुपूर्वी और सम्यग्मिथ्यात्वको छोड़कर शेष सब कर्मोंके उदीरक सब काल रहते हैं। आहारकशरीरके उदीरक जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल रहते हैं। तीन आनुपूर्वियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहते हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके उदीरक जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक रहते हैं। नाना जीवोंकी

१ काप्रतौ 'अणुदीरआ' इति पाठः। २ काप्रतौ 'उदीरिया' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'देवणिरयाउआ' इति पाठः। ४ काप्रतौ 'उदीरअ', ताप्रतौ 'उदीरओ' इति पाठः।

णाणाजीवेहि सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णओ उदीरणकालो थोवो, तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं, तस्सेव उक्कस्सओ उदीरणकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छत्तस्स उदीरणाए णाणाजीवेहि उक्कस्सओ विरहकालो असंखेज्जगुणो। एवं णाणाजीवेहि कालो समत्तो।

णाणाजीवेहि अंतरं वुच्चदे— सम्मामिच्छत्तस्स अंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। आहारसरीरस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि। आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण चउवीसमुहुत्ता। सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

सण्णियासो दुविहो— सत्थाणसण्णियासो परत्थाणसण्णियासो चेदि। सत्थाणसण्णियासे पयदं— मदिणाणावरणमुदीरेंतो सेसणाणावरणीयाणि णियमा उदीरेदि। एवं पुध पुध सेसपयडीणं वत्तव्वं। चक्खुदंसणावरणीयमुदीरेंतो अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणीयाणं[1] णियमा उदीरओ। सेसपंचण्णं पयडीणं सिया उदीरओ। एवमचक्खुदंसणावरणीय-ओहिदंसणावरणीय-केवलदंसणावरणीयाणं वत्तव्वं। णिद्दमुदीरेंतो हेट्ठिमाणं चदुण्णं पयडीणं णियमा उदीरओ, सेसाणमुवरिमाणं णियमा अणुदीरओ। एवं पयलाए णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं पुध पुध वत्तव्वं।

अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य उदीरणाकाल स्तोक है। उसीका द्रव्य असंख्यातगुणा है। उसीका उत्कृष्ट उदीरणाकाल असंख्यातगुणा है। नाना जीवोंकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणाका उत्कृष्ट विरहकाल असंख्यातगुणा है। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरका कथन किया जाता है— सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। आहारकशरीरकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष प्रमाण है। तीन आनुपूर्वियोंकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चौबीस मुहूर्त प्रमाण है। शेष कर्मोंकी उदीरणाका अन्तरकाल सम्भव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

संनिकर्ष दो प्रकार है— स्वस्थान संनिकर्ष और परस्थान संनिकर्ष। यहां स्वस्थान संनिकर्ष प्रकृत है— मतिज्ञानावरणीयकी उदीरणा करनेवाला शेष ज्ञानावरणीयोंकी नियमसे उदीरणा करता है। इसी प्रकार पृथक् पृथक् शेष चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके आश्रयसे संनिकर्षका कथन करना चाहिये। चक्षुदर्शनावरणीयकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणका नियमसे उदीरक होता है। शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके आश्रयसे संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये। निद्राकी उदीरणा करनेवाला पिछली चार प्रकृतियोंका नियमसे उदीरक और शेष आगेकी प्रकृतियोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धि प्रकृतियोंका आश्रय करके अलग अलग संनिकर्षका कथन करना चाहिये।

१ प्रत्योरुभयोरेव 'दंसणावरणीयं' इति पाठः।

सादमुदीरेंतो असादस्स अणुदीरओ, असादमुदीरेंतो सादस्स अणुदीरओ। मिच्छत्तं उदीरेंतो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमणुदीरओ, अणंताणुबंधिस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, संजोजिदअणंताणुबंधीणमावलियामेत्तकालमुदीरणाभावादो। जदि उदीरओ कोह-माण-माया-लोहाणं सिया उदीरगो। अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकसायाणं णियमा उदीरओ। एदेसिं बारसण्हं कसायाणं एक्केक्कं पडुच्च सिया उदीरगो। तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स वेदस्स हस्स-रदि-अरदि-सोगजुगलेसु एक्कदरस्स जुगलस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

सम्मत्तमुदीरेंतो मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अणंताणुबंधीणं च णियमा अणुदीरगो, अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ अट्ठण्णं कसायाणं सिया उदीरओ। संजलणस्स णियमा उदीरओ, तस्सेव चदुण्णं कसायाणं सिया उदीरगो। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

सम्मामिच्छत्तमुदीरेंतो सम्मत्त-मिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं णियमा अणुदीरगो।

सातावेदनीयकी उदीरणा करनेवाला असाताका अनुदीरक और असाताकी उदीरणा करनेवाला साताका अनुदीरक होता है। मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक तथा अनन्तानुबन्धीका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, अनन्तानुबन्धी कषायोंका संयोग हो जानेपर संयोगके समयसे लेकर आवली मात्र काल तक उदीरणा सम्भव नहीं है। यदि उनका उदीरक होता है तो क्रोध, मान, माया और लोभका कदाचित् उदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान व संज्वलन कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। फिर भी इन बारह कषायोंमें एक एककी अपेक्षा कर कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेद, हास्य, रति, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक होता है। परन्तु तीन वेदोंमेंसे किसी एक वेदका एवं हास्य-रति, और अरति-शोक इन युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। वह भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व व अनन्तानुबन्धियोंका नियमसे अनुदीरक होता है। परन्तु अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यान कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। यदि वह उनका उदीरक है तो आठ कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। संज्वलनका नियमसे उदीरक होता है। किन्तु वह उसीकी (संज्वलन) चार कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होता है, किन्तु इन्हीं तीनों वेदोंमेंसे किसी एक वेदका नियमसे उदीरक होता है। हास्य, रति, अरति और शोकका वह कदाचित् उदीरक होता है; किन्तु इन दोनों युगलोंसेसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय व जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है।

सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कषायोंका

अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकसायाणं णियमा उदीरओ, तेसिं बारसण्णं पयडीणं सिया उदीरओ। तिण्ण वेदाणं [सिया] उदीरओ, तिण्णं वेदाणं एक्कदरस्स णियमा उदीरगो। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

अणंताणुबंधिकोधमुदीरेंतो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमणुदीरओ। मिच्छत्तस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, उदयावलियं पविट्ठमिच्छत्तपढमट्ठिदिमिच्छाइट्ठिस्स सासणस्स च उदयाभावादो। अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणाणं तिण्णं कोहाणं णियमा उदीरओ, सेसाणं बारसण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरगो, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ। दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवमणताणुबंधिमाण-माया-लोहाणं वत्तव्वं। णवरि माणे उदीरिज्ज-माणे चदुण्णं माणाणं, मायाए उदीरिज्जमाणाए चदुण्णं मायाणं, लोभे उदीरिज्ज-माणे चदुण्णं लोभाणं णियमा उदीरणा होदि त्ति वत्तव्वं।

अपच्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरेंतो तिविहं दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि।

नियमसे अनुदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। किन्तु इनकी बारह प्रकृतियोंका वह कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य, रति, अरति व शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदी-रक होता है। भय व जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है।

अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक होता है। वह मिथ्यात्वका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, उदया-वलीमें प्रविष्ट हुए मिथ्यात्वकी प्रथम स्थिति युक्त मिथ्यादृष्टिके और सासादनसम्यग्दृष्टिके उसका उदय सम्भव नहीं है। वह अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन इन तीन क्रोध कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। शेष बारह कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके आश्रयसे कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि मानकी उदीरणाके समय चार मान कषायोंकी, मायाकी उदीरणाके समय चार माया कषायोंकी, और लोभकी उदी-रणाके समय चार लोभ कषायोंकी नियमसे उदीरणा होती है; ऐसा कहना चाहिये।

अप्रत्याख्यान कषायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित्

---

१ काप्रतौ 'संजुलण' इति पाठः।

अणंताणुबंधिकोधस्स सिया उदीरओ, अणंताणुबंधिसेसकसायाणं णियमा अणुदीरगो। पच्चक्खाणकोधस्स संजलणकोधस्स णियमा उदीरओ। सेसाणं णवण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवं सेसतिण्णं कसायाणं।

पच्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरेंतो तिविहं दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि। अणंताणुबंधिं पि सिया उदीरेदि, जदि उदीरेदि तो कोधं णियमा उदीरेदि, सेसतिविहअणंताणुबंधीणं णियमा अणुदीरओ। अपच्चक्खाणकसायस्स सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो णियमा कोधमुदीरेदि, तस्सेव सेसकसायाणमणुदीरओ। पच्चक्खाणस्स सेसतिण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। कोधसंजलणस्स णियमा उदीरओ, सेससंजलणाणमणुदीरगो[2]। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवं सेसपच्चक्खाणकसायाणं वत्तव्वं।

उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धी क्रोधका कदाचित् उदीरक होता है, शेष अनन्तानुबन्धी मान आदि कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। प्रत्याख्यान क्रोध और संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन मान, माया एवं लोभ इन शेष नौ कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे अप्रत्याख्यान मान आदि शेष तीन कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

प्रत्याख्यान कषायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित् उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धीकी भी कदाचित् उदीरणा करता है। यदि उसकी उदीरणा करता है तो क्रोधकी नियमसे उदीरणा करता है। शेष तीन प्रकार अनन्तानुबन्धी कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। वह अप्रत्याख्यान कषायका कदाचित् उदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे क्रोधकी उदीरणा करता है, उसीका शेष कषायोंका वह अनुदीरक होता है। प्रत्याख्यानकी शेष तीन कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होकर वह शेष संज्वलन कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे मान आदि शेष प्रत्याख्यान कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

---

१ उभयोरेव प्रत्योः 'अणंताणुबंधिविसेस-' इति पाठः। २ उभयोरेव प्रत्योः 'सेससजलणाणमुदीरगो' इति पाठः।

कोधसंजलणमुदीरेंतो तिविहदंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि । अणंताणुबंधि-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो एदेसिं कोधाण णियमा उदीरओ, सेसबारसण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ । तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स वि सिया उदीरगो । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरगो, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स [वि] सिया उदीरओ[1], भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवं सेसतिण्णं कसायाणं संजलणाणं वत्तव्वं ।

पुरिसवेदमुदीरेंतो दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि । अणताणुबंधि-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ । संजलणाए णियमा उदीरओ । उदीरेंतो वि सोलसण्हं कसायाणं पि सिया उदीरओ । इत्थि-णवुंसयवेदाणं णियमा अणुदीरओ । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणं पि सिया उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवमित्थि-णवुंसयवेदाणं पि वत्तव्वं ।

हस्समुदीरेंतो रदीए णियमा उदीरओ । अरदि-सोगाणं णियमा अणुदीरओ । दंसणतिय-सोलसकसाय-तिण्णिवेद-भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । रदिमुदीरेंतो हस्सस्स[2] णियमा उदीरओ । सेसं हस्सभंगो । अरदिमुदीरेंतो सोगस्स णियमा उदीरओ । हस्स-

संज्वलन क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता है । अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान कषायोंका वह कदाचित् उदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो इनके क्रोधोंका नियमसे उदीरक होता हुआ शेष बारह कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उन तीनोंमेंसे किसी एक वेदका भी कदाचित् उदीरक होता है । हास्य-रति व अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलोंमेंसे किसी एकका भी कदाचित् उदीरक होता है । भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकार मान आदि शेष तीन संज्वलन कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये ।

पुरुषवेदकी उदीरणा करनेवाला तीन दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता है । अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है । संज्वलनका नियमसे उदीरक होता है । उदीरणा करता हुआ भी वह सोलह कषायोंका भी कदाचित् उदीरक होता है । स्त्री और नपुंसक वेदोंका वह नियमसे अनुदीरक है । हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होता हुआ दोनों युगलोंका भी कदाचित् उदीरक होता है । भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकार स्त्री और नपुंसक वेदोंके आश्रयसे भी प्ररूपणा करना चाहिये ।

हास्यकी उदीरणा करनेवाला रतिका नियमसे उदीरक होता है । अरति और शोकका नियमसे अनुदीरक होता है । तीन दर्शनमोहनीय, सोलह कषाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । रतिकी उदीरणा करनेवाला हास्यका नियमसे उदीरक होता है । शेष कथन हास्यके समान है । अरतिकी उदीरणा करनेवाला शोकका नियमसे उदीरक होता है । हास्य व

१ प्रत्योरुभयोरेव 'णियमा उदीरओ' इति पाठः । २ काप्रतौ 'हस्स', ताप्रतौ 'हस्सं' इति पाठः ।

रदीणमणुदीरओ। सेसं रदिभंगो। सोगमुदीरेंतो अरदीए णियमा उदीरओ। सेसमरदिभंगो। भयमुदीरेंतो सेससत्तावीसमोहणीयपयडीणं सिया उदीरओ। एवं दुगुंछाए।

णिरयाउअमुदीरेंतो सेसआउआणं णियमा अणुदीरओ। एवं सेसआउआणं वत्तव्वं।

णिरयगइमुदीरेंतो णियमा सेसगईणमणुदीरओ। एवं सेसतिण्णं गईणं वत्तव्वं। एइंदियजादिमुदीरेंतो सेसजादीणं णियमा अणुदीरओ। एवं चदुण्णं जादीणं वत्तव्वं। ओरालियसरीरमुदीरेंतो वेउव्वियसरीर-आहारसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ। वेउव्वियसरीरमुदीरेंतो ओरालिय-आहारसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ। आहारसरीरमुदीरेंतो ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ।

अण्णदरसंठाणमुदीरेंतो सेससंठाणाणं णियमा अणुदीरओ। एवं छण्णं संघडणाणं वत्तव्वं। एवं चेवाणुपुव्वी-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुभग दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्तीण वत्तव्वं। तिण्णमंगोवंगाणं तिसरीरभंगो। वण्ण-गंध-रस-फासाणं सगभेदेसु अण्णदरमुदीरेंतो सेसाणं सिया

रतिका अनुदीरक होता है। शेष कथन रतिके समान है। शोककी उदीरणा करनेवाला अरतिका नियमसे उदीरक होता है। शेष कथन अरतिके समान है। भयकी उदीरणा करनेवाला शेष सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार जुगुप्साके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

नारक आयुकी उदीरणा करनेवाला शेष आयु कर्मोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष आयु कर्मोंका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये।

नरकगतिकी उदीरणा करनेवाला नियमसे शेष गतियोंका अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष तीन गतियोंका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये। एकेन्द्रिय जातिकी उदीरणा करनेवाला शेष जातियोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष चार जातियोंका आश्रय करके प्ररूपणा करना चाहिये। औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला वैक्रियिकशरीर और आहारक शरीरका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस और कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला औदारिक और आहारक शरीरोंका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस व कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है। आहारकशरीरकी उदीरणा करनेवाला औदारिक और वैक्रिय शरीरोंका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस व कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है।

अन्यतर संस्थानकी उदीरणा करनेवाला शेष संस्थानोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार छह संहननोंके आश्रयसे कथन करना चाहिये। इसी प्रकारसे ही आनुपूर्वी, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये। तीन अंगोपांगोंकी प्ररूपणा तीन शरीरोंके समान है। वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्शके अपने भेदोंमेंसे

उदीरओ, विरोहाभावादो। आदावमुदीरेंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ, उज्जोवमुदीरेंतो आदावस्स णियमा अणुदीरओ। णिरयगइ-मणुसगईओ वेदंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ। देवगइं वेदंतो मूलसरीरेण उज्जोवस्स अणुदीरओ। आदावस्स पुढविजीवो चेव उदीरगो, ण अण्णो।

उच्चागोदमुदीरेंतो णीचागोदस्स णियमा अणुदीरगो। एवं णीचागोदस्स। सेसं जाणिगूण वत्तव्वं। एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो। परत्थाणसण्णियासो जाणिगूण वत्तव्वो। एवं सण्णियासो समत्तो।

अप्पाबहुअं दुविहं— सत्थाणप्पाबहुअं परत्थाणप्पाबहुअं चेदि। सत्थाणे पयदं— पंचविहस्स णाणावरणस्स तुल्ला उदीरया। थीणगिद्धीए उदीरया[1] थोवा। णिद्दाणिद्दाए उदीरया संखेज्जगुणा, पयलापयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, णिद्दाए उदीरया संखेज्ज-गुणा, पयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, सेसचदुण्णं दंसणावरणीयाणमुदीरया तुल्ला संखेज्जगुणा।

सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। णिरयगईए सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया असंखेज्जगुणा। सेसेसु तसेसु असादस्स उदीरया

किसी एककी उदीरणा करनेवाला शेष भेदोंका कदाचित् उदीरक होता है, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है। आतपकी उदीरणा करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक और उद्योतकी उदीरणा करनेवाला आतपका नियमसे अनुदीरक होता है। नरकगति व मनुष्यगतिका वेदन करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक होता है। देवगतिका वेदन करनेवाला मूल शरीरसे उद्योतका अनुदीरक होता है। आतपका उदीरक पृथिवीकायिक जीव ही होता है, अन्य नहीं होता।

उच्चगोत्रकी उदीरणा करनेवाला नीचगोत्रका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार नीचगोत्रके आश्रयसे कहना चाहिये। शेष कथन जानकर करना चाहिये। इस प्रकार स्वस्थान संनिकर्ष समाप्त हुआ।

परस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है— स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व। इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है—पांच प्रकार ज्ञानावरणकी उदीरणा करनेवाले परस्परमें समान हैं। स्त्यान-गृद्धिके उदीरक जीव स्तोक हैं, उनसे निद्रानिद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाप्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे निद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे शेष चार दर्शनावरणीय प्रकृतियोंके उदीरक परस्परमें तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं।

सातावेदनीयके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। नरकगतिमें साताके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं। शेष त्रस जीवोंमें

१. काप्रतौ 'उदीरए' इति पाठः।

थोवा। सादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। एइंदिएसु सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। उवरि उवदेसं लहिय वत्तव्वं। परत्थाणप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं। एवमप्पाबहुअं समत्तं। भुजगार-पदणिक्खेवो वड्ढीयो णत्थि, एगेगपयडिविवक्खत्तादो।

एत्तो उदीरणट्ठाणपरूवणा कीरदे— णाणावरणीयस्स उदीरणाए एक्कं चेव ट्ठाणं। एत्थ [सामित्तं] णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुअं च परूवेयव्वं। णाणावरणीयस्स ट्ठाणपरूवणा समत्ता। दंसणावरणीयस्स दुवे ट्ठाणाणि चदुण्णमुदीरणा पंचण्णमुदीरणा चेदि। एदेसिं ट्ठाणाणं सामित्तं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरमप्पाबहुअं च कायव्वं। एवं दंसणावरणस्स ट्ठाणउदीरणा समत्ता।

वेयणीयस्स णत्थि ट्ठाणउदीरणा। मोहणीयस्स ट्ठाणउदीरणाए अत्थि एक्किस्से पवेसओ, दोण्णं पवेसओ, तिण्णं पवेसओ णत्थि, चदुण्णं पवेसओ अत्थि। एत्तो पाए णिरंतरं जाव दसण्णं पवेसओ त्ति वत्तव्वं[1]। एक्किस्से पवेसयस्स चत्तारि भंगा। तं जहा— कोधसंजलणस्स उदएण एगो भंगो, माणसंजलणस्स उदएण बिदियो भंगो, मायासंजलणस्स उदएण तिण्णि भंगा, लोभस्स उदएण चत्तारि भंगा। दोण्णं पवेसयस्स बारस भंगा। चदुण्णं पवेसयस्स चदुवीसभंगा। पंचण्णं पवेसयस्स चत्तारि चउवीसभंगा।

असाताके उदीरक स्तोक और साताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। एकेन्द्रिय जीवोंमें साताके उदीरक स्तोक और असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। आगे उपदेशको प्राप्तकर कथन करना चाहिये। परस्थान अल्पबहुत्वको जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि अनुयोगद्वार यहां नहीं हैं; क्योंकि, एक एक प्रकृतिकी विवक्षा है।

आगे यहां उदीरणास्थानोंकी प्ररूपणा की जाती है— ज्ञानावरणीयकी उदीरणाका एक ही स्थान है। यहां स्वामित्व, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। ज्ञानावरणीयकी स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

दर्शनावरणीयके दो स्थान हैं— चारकी उदीरणाका एक स्थान और पांचकी उदीरणाका एक। इन स्थानोंके स्वामित्व, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इस प्रकार दर्शनावरणकी स्थानउदीरणा समाप्त हुई।

वेदनीयकी स्थानउदीरणा नहीं है। मोहनीयकी स्थानउदीरणामें एक प्रकृतिका प्रवेशक (उदीरक) है, दो प्रकृतियोंका प्रवेशक है, तीन प्रकृतियोंका प्रवेशक नहीं है, चार प्रकृतियोंका प्रवेशक है। चार प्रकृतियोंके प्रवेशकको आदि करके दस प्रकृतियोंके प्रवेशक तक इन स्थानोंका प्रवेशक निरन्तर है। इनमें एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग हैं। वे इस प्रकार हैं— संज्वलन क्रोधके उदयकी अपेक्षा एक भंग, संज्वलन मानके उदयकी अपेक्षा द्वितीय भंग, संज्वलन मायाके उदयकी अपेक्षा तृतीय भंग, और संज्वलन लोभके उदयकी अपेक्षा चतुर्थ भंग। दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह भंग होते हैं। चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके चौबीस भंग होते हैं। पांच प्रकृतियोंके

---

१ जयध. (चू. सू.) अ. प. ७२६.

छण्णं पवेसयस्स सत्त चउवीस भंगा। सत्तण्णं पवेसयस्स दस चउवीस भंगा। अट्ठण्णं पवेसयस्स एक्कारस चउवीस भंगा। णवण्णं पवेसयस्स छ चदुवीस भंगा। दसण्णं पवेसयस्स एक्को चउवीस भंगा। एदेसिं भंगाणं पमाणपरूवणट्ठमेसा गाहा वुच्चदे। तं जहा—

एक्क य छक्केक्कारस दस सत्त चदुक्कमेक्कयं चेव।
दोसु य बारस भंगा एक्कम्हि य होंति चत्तारि[1] ॥ १ ॥

एवं ट्ठाणसमुक्कित्तणा समत्ता। सामित्तपरूवणाए इमाओ वे सुत्तगाहाओ। तं जहा—

सत्तादि दसुक्कस्सं मिच्छे सण-मिस्सए णउक्कस्सं[2]।
छादी य णवुक्कस्सं[2] अविरदसम्मत्तमादिस्स ॥ २ ॥
पंचादि अट्ठणिहणा विरदाविरदे उदीरणट्ठाणा।
एगादी तियरहिदा सत्तुक्कस्सा य विरदस्स[3] ॥ ३ ॥

प्रवेशकके चार चौबीस (२४×४) भंग होते हैं। छह प्रकृतियोंके प्रवेशकके सात चौबीस (२४×७) भंग होते हैं। सात प्रकृतियोंके प्रवेशकके दस चौबीस (२४×१०) भंग होते हैं। आठ प्रकृतियोंके प्रवेशकके ग्यारह चौबीस (२४×११) भंग होते हैं। नौ प्रकृतियोंके प्रवेशकके छह चौबीस (२४×६) भंग होते हैं। दस प्रकृतियोंके प्रवेशकके एक चौबीस (२४×१) भंग होते हैं। इन भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये यह गाथा कही जाती है। वह इस प्रकार है—

दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके क्रमसे एक, छह, ग्यारह, दस, सात, चार और एक [इतनी शलाकाओंसे युक्त चौबीस] भंग; दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह, तथा एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग होते हैं ॥ १ ॥

इस प्रकार स्थानसमुत्कीर्तना समाप्त हुई। स्वामित्वकी प्ररूपणामें ये दो सूत्रगाथायें हैं। यथा—

सातको आदि लेकर उत्कर्षसे दस (७, ८, ९, १०) प्रकृतियों तकके चार स्थान मिथ्यात्व गुणस्थानमें होते हैं, अर्थात् इन चार स्थानोंका स्वामी मिथ्यादृष्टि है। सातको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ प्रकृतियों तकके तीन (७, ८, ९,) स्थान सासादन और मिश्र गुणस्थानमें होते हैं। छह प्रकृतियोंको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ तकके चार (६, ७, ८, ९) स्थान अविरतसम्यग्दृष्टिके होते हैं। पांचको आदि लेकर आठ प्रकृतियों तकके चार (५, ६, ७, ८) उदीरणास्थान विरताविरत (देशविरत) गुणस्थानमें होते हैं। एकको आदि लेकर उत्कर्षसे त्रिप्रकृतिक स्थानसे रहित सात प्रकृतियों तकके छह (१, २, ४, ५, ६, ७) उदीरणास्थान संयत जीवके होते हैं ॥ २–३ ॥

विशेषार्थ— यहां सात प्रकृतियोंको आदि लेकर दस प्रकृतियों तकके जो चार उदीरणा-

१ एक्कग-च्छेक्के[छक्के]क्कारस दस सत्त चउक्क एक्कगं चेव। दोसु च बारस भंगा एक्कम्हि य होंति चत्तारि ॥ जयध. अ. प. ७५८. एक्क य छक्केयार दस-सग-चदुरेक्कयं अपुणरुत्ता। एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्मि ॥ गो. क. ४८८. २ ताप्रतौ 'ण उक्कस्सं' इति पाठः। ३ जयध. अ. प. ७५९. दस-णव-णवादि चउ-तिय-तिट्ठाण णवट्ठ-सग-सगादि चऊ। ठाणा छादि तियं च य चदुवीसगदा अपुव्वो त्ति ॥ गो. क. ४८९.

एदासु दोसु गाहासु भामिदासु मोहणीयसामित्तं समप्पदि । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो— एक्किस्से पवेसओ केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । दोण्णं पवेसओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । चदुण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । पंचण्णं पवेसयस्स जहण्णेण

स्थान मिथ्यादृष्टिके बतलाये गये हैं वे इस प्रकारसे सम्भव हैं— मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धिचतुष्कमेंसे एक, अप्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, प्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, संज्वलनचतुष्कमेंसे एक, तीन वेदोंमेंसे कोई एक, हास्य रति और अरति-शोकमेंसे एक युगल, तथा भय व जुगुप्सा; इन दस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें पाया जाता है । इन दस प्रकृतियोंमें भय व जुगुप्सामेंसे किसी एकके बिना नौ प्रकृतियोंका स्थान होता है, भय व जुगुप्सा इन दोनोंके बिना आठ प्रकृतियोंका स्थान होता है; तथा भय, जुगुप्सा व कोई एक अनन्तानुबन्धी कषाय इन तीन प्रकृतियोंके बिना सातका स्थान होता है । ये तीन स्थान भी मिथ्यादृष्टिके ही सम्भव हैं । उपर्युक्त दस प्रकृतियोंके स्थानमेंसे एक अनन्तानुबन्धी कषायको कम करके मिथ्यात्व प्रकृतिके स्थानमें सम्यग्मिथ्यात्वके ग्रहण करनेपर नौ प्रकृतियोंका स्थान होता है । इसमें भय व जुगुप्सामेंसे एकके बिना आठका, तथा दोनोंके बिना सातका स्थान होता है । ये तीन उदीरणास्थान सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही सम्भव हैं । इन तीनों स्थानोंमेंसे सम्यग्मिथ्यात्वको कम करके अनन्तानुबन्धी कषायको जोड़ देनेपर भी जो नौ, आठ व सात प्रकृतियोंके तीन उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी सासादनसम्यग्दृष्टि होता है । सम्यक्त्व प्रकृति, एक अप्रत्याख्यान कषाय, एक प्रत्याख्यान कषाय, एक संज्वलन कषाय, एक वेद, हास्यादिमेंसे एक युगल तथा भय व जुगुप्सा प्रकृतिको ग्रहण कर नौका; भय व जुगुप्सामेंसे एकके बिना आठका, इन दोनोंके ही बिना सातका, तथा उपशमसम्यग्दृष्टि एवं क्षायिकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षा सम्यक्त्व प्रकृतिको भी छोड़कर छहका; ये चार उदीरणास्थान अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पाये जाते हैं । अविरतसम्यग्दृष्टिके इन चार उदीरणास्थानोंमेंसे एक अप्रत्याख्यान कषायको कम कर देनेपर जो आठ, सात, छह और पांच प्रकृतियोंके चार उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी संयतासंयत होता है । इसके उक्त चारों स्थानोंमेंसे एक प्रत्याख्यान कषायको कम कर देनेपर जो सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके चार उदीरणास्थान होते हैं वे प्रमत्त, अप्रमत्त और अपूर्वकरण इन तीन गुणस्थानोंमें पाये जाते हैं । संज्वलनचतुष्कमेंसे एक और तीन वेदोंमेंसे एक इन दो प्रकृतियोंका स्थान, तथा एक मात्र अन्यतर संज्वलन प्रकृतिका स्थान, ये दो स्थान अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें प्राप्त होते हैं । तीन प्रकृतियोंके स्थानकी सम्भावना ही नहीं है । तथा सूक्ष्म लोभकी अपेक्षा एक प्रकृतिक स्थान सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें भी होता है, इतना यहां विशेष जानना चाहिये ।

इन दो गाथाओंकी प्ररूपणा करनेपर मोहनीय कर्मका स्वामित्व समाप्त होता है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है । दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है । चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका

एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सत्तण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अट्ठण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। णवण्णं[1] दसण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवमेगजीवेण कालो समत्तो।

एगजीवेण अंतरं— दसण्णं पवेसयस्स अंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि। णवण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। अट्ठण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। सत्तण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। जहा छण्णं तहा पंचण्णं। चदुण्णं पवेसयस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं। एवं दोण्णमेक्किस्से पवेसयस्स वत्तव्वं। एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— दसण्णं णवण्णं अट्ठण्णं सत्तण्णं छण्णं पंचण्णं चदुण्णं पवेसया जीवा णियमा अत्थि। दोण्णमेक्किस्से पवेसया जीवा भजिदव्वा। एवं णाणा-

काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। नौ और दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है। नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है। आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। जैसे छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल है वैसे ही पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर काल है। चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अर्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इसी प्रकारसे दो प्रकृतियोंके और एक प्रकृतिके उदीरकके अन्तरकालका कथन करना चाहिये। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव नियमसे हैं। दो और एक प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव भजनीय हैं।

१ ताप्रतौ 'एवं णवण्णं' इति पाठः।

जीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो— एक्किस्से दोण्णं च पवेसया जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसट्ठाणप्पवेसयाणं कालो सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

णाणाजीवेहि अंतरं— एक्किस्से दोण्णं च पवेसंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

सण्णियासो— एक्किस्से पवेसओ वेण्हमप्पवेसओ,[1]। एवं सेसाणं वत्तव्वं। एवं सव्वट्ठाणाणं परूवणा कायव्वा[2]। एवं सण्णियासो समत्तो।

[अप्पा बहुअं-]सव्वत्थोवा एक्किस्से पवेसया। दोण्णं पवेसया संखेज्जगुणा। चदुण्णं पवेसया संखेज्जगुणा। पंचण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। छण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। सत्तण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। दसण्णं पवेसया अणंतगुणा। णवण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा।

आदेसेण णिरयगदीए सव्वत्थोवा छण्णं पवेसया। सत्तण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— एक व दो प्रकृतियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं। शेष स्थानोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

नना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर— एक और दो प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास तक होता है। शेष प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

संनिकर्ष— एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक नहीं होता है। इसी प्रकारसे चार, पांच आदि शेष प्रकृतिक स्थानोंको कहना चाहिये। इस प्रकार सब स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व—एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं। उनसे दो प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे चार प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक अनन्तगुणे हैं। उनसे नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं।

आदेशकी अपेक्षा नरकगतिमें छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं।

१ उभयोरेव प्रत्योः 'वण्हं पवेसओ' इति पाठः। २ सण्णियासो। एत्तो सण्णियासो कायव्वो त्ति अहियारसंभालणवक्कमेदं। एक्किस्से पवेसगो दोण्हमप्पवेसगो। कुदो? परोप्परविरुद्धसहावत्तादो। चउण्हं पंचण्हं छण्हं सत्तण्हं अट्ठण्ह णवण्हं दसण्हं च अपवेसगो त्ति एदमत्थदो लब्भदे, एक्किस्से पवेसगस्स सेसासेसट्ठाणाणमपवेसयभावस्स देसामासयभावेणेदस्स पयट्टत्तादो। एवं सेसाणं। सुगमं। उच्चारणाहिप्पाएण सण्णियासो णत्थि त्ति, तत्थ सत्तारसण्हमेवाणिओगद्दाराणं परूवणादो। जयध. अ. प. १७६३–६४.

दसण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा । णवण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । एवं सव्वणेरइय-देव-भवणादि जाव सहस्सारे त्ति ।

तिरिक्खेसु पंचपवेसया थोवा । छप्पवेसया असंखेज्जगुणा । उवरि ओघं । एवं पंचिंदियतिरिक्खतियस्स । णवरि दसपवेसया असंखेज्जगुणा । पंचिंदियतिरिक्ख-मणुस-अपज्जत्तएसु दसपवेसया थोवा, णवपवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेसया संखेज्जगुणा । मणुस्सेसु एक्किस्से पवेसया थोवा, दोण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, [चदुण्णं पवेसया संखेज्जगुणा,] पंचण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, छण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, सत्तण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, दसण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा, णवण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । एवं [मणुस] पज्जत्त-मणुसिणीसु । णवरि जम्हि असंखेज्जगुणं तम्हि संखेज्जगुणं कायव्वं । आणदादि जाव णवगेवज्ज त्ति दसण्णं पवेसया थोवा, छप्पवेसया संखेज्जगुणा, णवपवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेसया संखेज्जगुणा, सत्तपवेसया संखेज्जगुणा । एवमणुद्दिसादि जाव सव्वट्ठे त्ति । णवरि दसपवेसया णत्थि ।

आउअस्स ट्ठाणदीरणा णत्थि । णिरयगईए णामस्स[1] एक्कवीस पंचवीस सत्तावीस

नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे सब नारक, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार स्वर्ग तकके देवोंके विषयमें अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

तिर्यंचोंमें पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक हैं । छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । आगे ओघके समान कथन करना चाहिये । इसी प्रकारसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि तीनके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, नौके उदीरक संख्यातगुणे तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । मनुष्योंमें एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, दोके उदीरक संख्यातगुणे, [चारके उदीरक संख्यातगुणे,] पांचके उदीरक संख्यातगुणे, छहके उदीरक संख्यातगुणे, सातके उदीरक संख्यातगुणे, दसके उदीरक असंख्यातगुणे नौके उदीरक संख्यातगुणे, तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंके विषयमें कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि जहां मनुष्योंमें असंख्यातगुणा कहा गया है वहां इनमें संख्यातगुणा कहना चाहिये । आनत स्वर्गको आदि लेकर नौ ग्रैवेयक पर्यंत देवोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, छहके उदीरक संख्यातगुणे, नौके उदीरक संख्यातगुणे, आठके उदीरक संख्यातगुणे और सातके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमान तक कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां दसके उदीरक नहीं हैं ।

आयु कर्मकी स्थानउदीरणा नहीं है । नरकगतिमें नामकर्मके इकीस, पचीस, सत्ताईस,

---

१ काप्रतौ 'णिरयगईणामस्स' इति पाठः ।

अट्ठावीस एगुणतीसं ति पंच उदीरणट्ठाणाणि होंति |२१|२५|२७|२८|२९| । तत्थ इगिवीस-पयडिउदीरणट्ठाणं वुच्चदे । तं जहा— णिरयगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दूभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिणाणि त्ति एदाओ पयडीओ घेत्तूण एक्कवीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ठाणस्स को सामी ? विग्गहगदीए वट्टमाणो णेरइया सम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा । एदस्स कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समया ।

आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर-हुंडसंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-उवघाद-पत्तेय-सरीरेसु पुव्वुत्तपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीसाए उदीरणट्ठाणं होदि । तं कस्स ? सरीर-गहिदणेरइयस्स । तं केवचिरं कालादो होदि ? सरीरगहिदपढमसमयमादिं कादूण जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति, अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं होदि ।

परघाद-अप्पसत्थ[1]विहायगदीसु पुव्विल्लपणुवीसपयडीसु पक्खित्तासु सत्तावीसपयडीण-मुदीरणट्ठाणं होदि । तं केवचिरं कालादो होदि ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमय-मादिं कादूण जाव आणपाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति । एसो वि कालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो ।

अट्ठाईस और उनतीस प्रकृतियोंके पांच (२१, २५, २७, २८, २९) उदीरणास्थान होते हैं । उनमें इकीस प्रकृतियोंके उदीरणास्थानकी प्ररूपणा करते हैं । यथा—नरकगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति और निर्माण ; इन प्रकृतियोंको ग्रहण कर इकीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है ।

शंका— इस स्थानका स्वामी कौन है ?

समाधान—विग्रहगतिमें वर्तमान सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नारक जीव उक्त स्थानका स्वामी है ।

इसका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके वैक्रियिकशरीर, हुण्डकसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन पांच प्रकृतियोंको मिला देनेपर पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह किसके होता है ? वह जिसने शरीर ग्रहण कर लिया है ऐसे नारक जीवके होता है । वह कितने काल तक होता है ? शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयको आदि करके शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है । अभिप्राय यह कि वह अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है ।

पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें परघात और अप्रशस्त विहायोगति इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह कितने काल रहता है ? वह शरीर-पर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि लेकर आनप्राण पर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है । यह भी काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

---

१ काप्रतौ 'परघादपसत्थ-', ताप्रतौ 'परघाद- [अ-] पसत्थ-' इति पाठः ।

पुव्विल्लसत्तावीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसपयडीणं उदीरणट्ठाणं होदि। तं केवचिरं कालादो होदि? आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव भासापज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति। एसो वि कालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो।

पुव्विल्लअट्ठावीसपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते एगुणतीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि। एदस्स अद्धाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयमादिं कादूण जाव अप्पप्पणो आउट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति। तस्स कालो जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीसं सागरोवमाणि।

तिरिक्खगदीए एक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कत्तीसं ति णव उदीरणट्ठाणाणि। तत्थ एइंदियाणमेक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीसं ति पंच उदीरणट्ठाणाणि। आदावुज्जोवाणमणुदएण एइंदियस्स सत्तावीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्ठाणाणि। आदावुज्जोवुदएण सहिदएइंदियस्स पणुवीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्ठाणाणि। तत्थ आदावुज्जोवुदयविरहिदएइंदियस्स भण्णमाणे तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-थावर-बादर-सुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं दूभगं अणादेज्जं जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणमेदाहि एक्कवीसपयडीहि एग-

---

पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह कितने काल तक रहता है? आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके भाषापर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक रहता है। यह भी काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है।

पूर्वोक्त अट्ठाईस प्रकृतियोंमें दुस्वरके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। इसका अध्वान भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके अपनी अपनी आयुःस्थितिके अन्तिम समय तक है। उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है।

तिर्यग्गतिमें इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृतियोंके नौ उदीरणास्थान हैं। उनमें एकेन्द्रिय जीवोंके इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस और सत्ताईस प्रकृतियोंके पांच उदीरणास्थान सम्भव हैं। उनमेंसे आतप व उद्योतके उदयसे रहित एकेन्द्रिय जीवके सत्ताईसके बिना चार उदीरणास्थान होते हैं। आतप व उद्योतके उदयसे सहित एकेन्द्रिय जीवके पच्चीस प्रकृति रूप स्थानके बिना चार उदीरणास्थान होते हैं। उनमें आतप व उद्योतके उदयसे रहित एकेन्द्रिय जीवके उक्त चार स्थानोंका कथन करनेपर तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, स्थावर, बादर व सूक्ष्ममेंसे एक, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण, इन इक्कीस

मुदीरणाट्ठाणं होदि । तं कत्थ ? विग्गहगदीए वट्टमाणएइंदियम्मि होदि । तं केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया । पुव्विल्लएक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेय-साहारणसरीराणमेक्कदरे पक्खित्ते चउवीसाए उदीरणट्ठाणं होदि। तं कत्थ ? गहिदसरीरपढमसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्मि अद्धाणे[1] । तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । पुणो अपज्जत्तमवणिय सेसचउवीसपयडीसु परघादे पक्खित्ते पंचवीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि । तं कत्थ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणपाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति । तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । तस्सेव आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्विल्लपंचवीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते छव्वीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि । तं कस्स ? आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स । तं केवचिरं ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबावीसवस्ससहस्साणि ।

आदावुज्जोवुदयसहिदएइंदियस्स वुच्चदे— एक्कवीस-चउवीसउदीरणट्ठाणाणं पुव्वं [व] परूवणा कायव्वा । पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-आदावुज्जोवाणमेक्कदरे च

प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है । वह कहांपर होता है ? वह विग्रहगतिमें वर्तमान एकेन्द्रिय जीवके होता है । वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे तीन समय तक होता है ।

पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, हुण्डसंस्थान, उपघात तथा प्रत्येक व साधारण शरीरमेंसे एक, इन चार प्रकृतियोंको मिला देनेपर चौबीस प्रकृतिक उदीरणास्थान होता है । वह कहांपर होता ? वह शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक, इस अध्वानमें होता है । वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्य व उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है ?

फिर इनमेंसे अपर्याप्तको कम करके शेप चौबीस प्रकृतियोंमें परघातको मिला देनेपर पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह कहांपर होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके आनप्राणपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है । वह कितने काल तक होता है ? वह जघन्य व उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त एकेन्द्रिय जीवकी पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है । वह किसके होता है ? वह आन-प्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए एकेन्द्रिय जीवके होता है । वह कितने काल होता है । वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्ष तक होता है ।

अब आतप व उद्योतके उदयसे सहित एकेन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं— इक्कीस और चौबीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये । पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवकी पूर्वोक्त चौबीस प्रकृतियोंमें परघात और आतप-उद्योतमेंसे

१ काप्रतौ 'अद्धाणं' इति पाठः ।

पुव्विल्लचदुवीसपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीसट्ठाणमुल्लंघिय छव्वीसपयडिट्ठाणमुप्पज्जदि। तं कस्स? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स। तं केवचिरं? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। तस्सेव आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स छव्वीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते सत्तावीस-पयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि।

विगलिंदियाणं सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कत्तीसं ति छउदीरणट्ठाणाणि। उज्जोवउदयविरहिदविगलिंदियाणं पंच उदीरणट्ठाणाणि, एक्कत्तीस-उदीरणट्ठाणाभावादो। उज्जोवुदयसंजुत्तविगिलिंदियस्स वि पंचेवुदीरणट्ठाणाणि, परघा-दुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीणमक्कमपवेसेण अट्ठावीसट्ठाणाणुप्पत्तीदो।

उज्जोवुदयविरहिदबेइंदियस्स ताव उच्चदे। तं जहा— [तिरिक्खगइ-] बेइंदिय-जादि तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गंध-रस - फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ-दूभग-अणादेज्ज जस-अजसगित्तीण-मेक्कदरं णिमिणणामं च एदासिमेक्कवीसपयडीणमेगं ट्ठाणं। तं कस्स? बेइंदियस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स। तं केवचिरं? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एदासु एक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण गहिदसरीरपढमसमए ओरालियसरीर-

किसी एकके मिलानेपर पच्चीस प्रकृतिक स्थानका उल्लंघन करके छब्बीस प्रकृतियोंका स्थान उत्पन्न होता है। वह किसके होता है? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है। वह कितने काल तक रहता है? वह जघन्य और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक रहता है। आन-प्राणपर्याप्ति-से पर्याप्त हुए उक्त जीवकी छब्बीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है।

विकलेन्द्रिय जीवोंके सामान्यसे इक्कीस, छब्बीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृति रूप ये छह उदीरणास्थान होते हैं। परन्तु उद्योतके उदयसे रहित विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उनके इकतीस प्रकृति रूप उदीरणास्थान नहीं होता। उद्योतके उदयसे संयुक्त विकलेन्द्रियके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि उनके परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगति इन तीन प्रकृतियोंका युगपत् प्रवेश होनेसे अट्ठाईस प्रकृतियों-का स्थान उत्पन्न नहीं होता।

उद्योतके उदयसे रहित द्वीन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं। यथा— [तिर्य-ग्गति,] द्वीन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है। वह किसके होता है? वह विग्रहगतिमें वर्तमान द्वीन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल तक रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय रहता है। इन इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीर,

हुंडसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। तं कस्स? बेइंदियस्स सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयदस्स[१]। तं केव-चिरं? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु अपज्जत्त-मवणिय परघाद-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाण-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसट्ठाणं होदि। भासा-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि।

संपहि उज्जोवुदयसंजुत्तबेइंदियस्स भण्णमाणे एक्कवीस-छव्वीसाओ जधा पुव्वं वुत्ताओ तधा वत्तव्वाओ। पुणो छव्वीसाए उवरि परघादुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स दुस्सरे पक्खित्ते एक्कतीसाए ट्ठाणं होदि। एदस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबारसवासाणि। एवं तेइंदिय-चउरिंदियाणं पि वत्तव्वं। णवरि तीसेक्कत्तीसाणं कालो जहाकमेण एगुणवण्णरादिं-दियाणि छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा।

हुण्डकसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतिक स्थान होता है। वह किसके होता है? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त न हुए द्वीन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल रहता है? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त रहता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्तके साथ परघात और अप्रशस्त विहायोगतिको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें दुस्वरको मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है।

अब उद्योतके उदयसे संयुक्त द्वीन्द्रिय जीवके स्थानोंका कथन करते समय इक्कीस और छब्बीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा जैसे पहिले की गई है वैसे ही करना चाहिये। पुनः छब्बीस प्रकृति रूप स्थानके ऊपर परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगति इन तीन प्रकृतियोंको मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके एक उच्छ्वास प्रकृतिके मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवके दुस्वर प्रकृतिके मिला देनेपर इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। इसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम बारह वर्ष प्रमाण है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके भी स्थानोंका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि तीस और इकतीस प्रकृति रूप स्थानोंका काल यथाक्रमसे अन्तर्मुहूर्त कम उनंचास रात्रि-दिवस और अन्त-र्मुहूर्त कम छह मास प्रमाण है।

---

१ काप्रतौ 'पज्जत्तयदस्स', ताप्रतौ '[अ-] पज्जत्तयदस्स' इति पाठः।

पंचिंदियतिरिक्खस्स सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-एक्कत्तीस त्ति छउदीरणट्ठाणाणि। उज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स पंच उदीरणट्ठाणाणि। कुदो? तत्थ एक्कत्तीसाए उदयाभावादो। उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स वि पंचेवुदीरणट्ठाणाणि। कुदो? तत्थ अट्ठावीसट्ठाणाभावादो। उज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स भण्णमाणे तत्थ इदमेक्कवीसट्ठाणं[1]— तिरिक्खगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च, एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कं चेव ट्ठाणं। सरीरे गहिदे आणुपुव्वीमवणिय ओरालियसरीरं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेक्कदरं उवघादं पत्तेयसरीरमिदि छसु पयडीसु पक्खित्तासु[2] छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादे[3] दोण्णं विहायगदीणमेक्कदरे च पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। एदिस्से तीसाए कालो जहण्णेण अंतो-

पंचेन्द्रिय तिर्यंचके सामान्यसे इक्कीस, छव्वीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृति रूप छह उदीरणास्थान होते हैं। उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके पांच उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उसके इकतीस प्रकृतिरूप उदीरणास्थानकी सम्भावना नहीं है। उद्योतके उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, वहां अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थानकी सम्भावना नहीं है। उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके स्थानोंकी प्ररूपणा करते समय उनमें इक्कीस प्रकृति रूप स्थान यह है— तिर्यग्गति, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग और दुर्भगमेंसे एक, आदेय व अनादेयमेंसे एक, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक ही स्थान होता है। शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, छह संस्थानोंमेसे एक, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहननोंमेंसे एक, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छव्वीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी उन छव्वीस प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्तके साथ परघात और दो विहायोगतियोंमेंसे एक, इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंका स्थान होता है। उक्त जीवके आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उक्त प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उपयुक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एकका मिला देनेपर तीस प्रकृतियोंका स्थान

१ काप्रतौ 'इदमेक्कवीसट्ठाणाणं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'पक्खित्ता' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'परघाद' इति पाठः।

मुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिपलिदोवमाणि ।

उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स एक्कवीस-छव्वीसउदीरणट्ठाणाणि पुव्वं व वत्तव्वाणि । पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघादुज्जोवेसु पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरे च पविट्ठेसु एगूणतीसाए ट्ठाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे पविट्ठे एक्कत्तीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिपलिदोवमाणि ।

मणुस्साणं सामण्णेण वीसेक्कवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-एक्कत्तीस इदि णव उदीरणट्ठाणाणि । सामण्णमणुस्सा विसेसमणुस्सा विसेसविसेसमणुस्सा चेदि तिविहा मणुस्सा होंति । तत्थ सामण्णमणुस्साणं वुच्चदे । तं जहा— मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुहासुह सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं चेदि एदासिं पयडीणमेक्कमुदीरणट्ठाणं । गहिदसरीरस्स[1] मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीमवणेदूण ओरालिय-

होता है । तीस प्रकृति रूप इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

उद्योतके उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचके इकीस और छब्बीस प्रकृति रूप स्थानोंका कथन पहिलेके समान ही करना चाहिये । पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी उक्त छब्बीस प्रकृतियोंमें परघात, उद्योत और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे एक, इन तीन प्रकृतियोंके प्रविष्ट होनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उनमें एक उच्छ्वासके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है । भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके उपर्युक्त प्रकृतियोंमें प्रविष्ट होनेपर इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है । इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

मनुष्योंके सामान्यसे बीस, इकीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस; ये नौ उदीरणास्थान होते हैं । सामान्य मनुष्य, विशेष मनुष्य और विशेषविशेष मनुष्य इस प्रकारसे मनुष्योंके तीन भेद हैं । उनमें सामान्य मनुष्योंके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग व दुर्भगमेंसे एक, आदेय व अनादेयमेंसे एक, यशकीर्ति व अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म, इन प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है । शरीरके ग्रहण कर लेनेपर मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, छह संस्थानोंमेंसे एक, औदारिक-

१ ताप्रतौ 'गहिदस्स सरीरस्स' इति पाठः ।

सरीरं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेक्कदरं उवघाद-पत्तेयसरीरं च घेत्तूण पक्खित्ते छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादं पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि।

संपहि आहारसरीरोदइल्लाणं विसेसमणुस्साणं भण्णमाणे तेसिं पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीसं चेदि चत्तारिउदीरणट्ठाणाणि। मणुसगइ-पंचिंदियजादि-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-आहारसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस - फास-अगुरुअल-हुअ-उवघाद-तस - बादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज - जसगित्ति-णिमिणं चेदि एदासिं पणुवीसपयडीणमेक्कमुदीरणट्ठाणं। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि।

विसेसविसेसमणुस्साणं वीस-एक्कवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-

शरीरांगोपांग, छह संहननोंमें एक, उपघात और प्रत्येकशरीर इन प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेसे छब्बीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर अपर्याप्तको कम करके परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे एक, इन दो प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतिरूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है।

अब आहारशरीरके उदयसे संयुक्त विशेष मनुष्योंके उदीरणास्थानोंका कथन करनेपर उनके पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस प्रकृति रूप चार उदीरणास्थान होते हैं। मनुष्य-गति, पंचेन्द्रिय जाति, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, आहारकशरीरांगो-पांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण नामकर्म; इन पच्चीस प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उपर्युक्त प्रकृतियोंमें परघात और प्रशस्तविहायोगतिके मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके मिला देनेसे उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है।

विशेषविशेष मनुष्योंके बीस, इक्कीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और

१ काप्रतौ 'जादि-तेजा' इति पाठः।

एक्कत्तीसं चेदि अट्ठ उदीरणट्ठाणाणि । तं जहा— मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि एदासिं वीसण्णं पयडीणमेगं चेव ट्ठाणं । तं कस्स ? पदर-लोगपूरणगदसजोगिकेवलिस्स । जदि तित्थयरो तो तित्थयरेण सह एक्कवीसाए ट्ठाणं होदि । कवाडं गदस्स ओरालियसरीरं समचउरससंठाणं, तित्थयरुदयरहियाणं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं, ओरालियसरीरंगोवंगं वज्जरिसहसंघडणं उवघादं पत्तेयसरीरं च वीसाए एक्कवीसाए वा पक्खित्ते छव्वीसाए सत्तवीसाए वा ट्ठाणं होदि । दंडं गदस्स परघादं पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण छव्वीसाए सत्तवीसाए च पक्खित्ते अट्ठवीसाए एगुणतीसाए वा ट्ठाणं होदि । णवरि तित्थयराणं पसत्थविहायगदी एक्का चेव उदेदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए तीसाए च ट्ठाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरे पविट्ठे तीसाए एक्कतीसाए वा ट्ठाणं होदि । णवरि तित्थयराणं दुस्सर-अप्पसत्थविहायगदीणमुदओ णत्थि ।

संपहि एक्कत्तीसंपयडीणं णामणिद्देसो कीरदे । तं जहा— मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-

---

इकतीस, ये आठ उदीरणास्थान होते हैं । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण; इन बीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है। वह किसके होता है ? वह प्रतर व लोकपूरण समुद्घातगत सयोगकेवलीके होता है । वह यदि तीर्थंकर होता है तो तीर्थंकर प्रकृतिके साथ इकीस प्रकृति रूप स्थान होता है । कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवलीके औदारिकशरीर, [यदि वह तीर्थंकर है तो] समचतुरस्रसंस्थान, तीर्थंकर प्रकृतिके उदयसे रहित केवलियोंके छह संस्थानोंमेंसे कोई एक, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको बीस अथवा इकीस प्रकृति रूप स्थानमें मिला देनेपर छव्वीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है । दण्डसमुद्घातको प्राप्त केवलीकी अपेक्षा परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे किसी एकको ग्रहण कर छव्वीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थानोंमें मिला देनेसे अट्ठाईस अथवा उनतीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं । विशेष इतना है कि तीर्थंकरोंके एक प्रशस्त विहायोगतिका ही उदय होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त दो स्थानोंमें एक उच्छ्वास प्रकृतिको मिला देनेसे क्रमशः उनतीस और तीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं । भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर व दुस्वरमेंसे किसी एकके प्रविष्ट होनेपर तीस अथवा इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है । विशेष इतना है कि तीर्थंकरोंके दुस्वर और अप्रस्त विहायोगतिका उदय नहीं होता ।

अब इकतीस प्रकृतियोंके नामोंका निर्देश किया जाता है । यथा— मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभ-

वण्ण - गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद - परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर - सुहासुह - सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति - णिमिण-तित्थयरं चेदि एदाओ एक्कत्तीसपयडीओ तित्थयरो उदीरेदि । एदस्स कालो जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण गब्भादिअट्ठवस्सेहि ऊणा पुव्वकोडी । सेसाणं ट्ठाणाणं कालो[1] जाणिदूण वत्तव्वो ।

देवगदीए एक्कवीस-पंचवीस-सत्तावीस[2]अट्ठावीस-एगुणतीसउदीरणट्ठाणाणि होंति । तत्थ एक्कवीसाए पयडिपरूवणं कस्सामो । तं जहा—देवगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय सरीर - वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस - बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि । एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । सरीरे गहिदे आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु पणुवीसाए ट्ठाणं होदि । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पविट्ठे अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पविट्ठे एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ट्ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तूणदसवस्ससहस्साणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीसं सागरोव-

संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और तीर्थंकर; इन इकतीस प्रकृतियोंकी उदीरणा तीर्थंकर करते हैं । इसका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षतः गर्भसे लेकर आठ वर्षोंसे हीन एक पूर्वकोटि प्रमाण है । शेष स्थानोंके कालका कथन जानकर करना चाहिये ।

देवगतिमें इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस; ये पांच उदीरणास्थान होते हैं । उनमें इक्कीस प्रकृति रूप स्थानकी प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— देवगति, पंचेन्द्रिय-जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण । इस स्थानका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है । शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वीको कम करके वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन पांच प्रकृतियोंको मिलानेपर पच्चीस प्रकृति रूप स्थान होता है । शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर परघात और प्रशस्त विहायोगति, इन दो प्रकृतियोंको उपर्युक्त प्रकृतियोंमें मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वास प्रकृतिके प्रविष्ट होनेसे अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है । भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके प्रविष्ट होनेसे उनतीस प्रकृतिरूप स्थान होता है । इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । इन स्थानोंका एक जीवकी अपेक्षा

१ काप्रतौ 'सेसाणं कालो' इति पाठः । २ काप्रतौ 'सत्तावीस' इति पाठः ।

समाणि। एदेसिं ट्ठाणाणमेयजीवेण अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरमप्पाबहुअं च जाणिदूण वत्तव्वं। गोदस्स णत्थि ट्ठाणउदीरणा। अंतराइयस्स एक्कं चेव ट्ठाणं। एवं ट्ठाणपरूवणा समत्ता।

एत्तो भुजगारुदीरणा वुच्चदे। तं जहा— दंसणावरणीयस्स अत्थि भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरणाओ, अवत्तव्वउदीरणा णत्थि। एवं परूवणा समत्ता।

एत्थ सामित्तं— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं को उदीरगो? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी सम्माइट्ठी वा। एवं सामित्तं समत्तं।

कालो— भुजगार-अप्पदराणं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अवट्ठिदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं कालो समत्तो।

अंतरं— एयजीवेण भुजगार-अप्पदराणमंतरं जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिद-उदीरणंतरं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ[1]। एवमंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे। तं जहा— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

कालो— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। गोत्र कर्मकी स्थानउदीरणा सम्भव नहीं है। अन्तराय कर्मका एक ही स्थान है। इस प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां भुजाकारउदीरणाका कथन करते हैं। यथा— दर्शनावरणीय कर्मकी भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणायें हैं; अवक्तव्य उदीरणा नहीं है। इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां स्वामित्व— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका उदीरक कौन है? अन्यतर मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

काल— भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्य और उत्कर्षसे एक समय मात्र है। अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अन्तर— एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

काल— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

[1] ताप्रतौ 'भुजगारअप्पदराणमंतरं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ' इति पाठः।

अंतरं— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

अप्पाबहुअं— भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्ज-गुणा। एवमप्पाबहुगं समत्तं।

मोहणीयस्स सामित्तं वुच्चदे— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणमुदीरओ को होदि? अण्णदरो सम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा। अवत्तव्वउदीरओ को होदि? मणुसो वा मणुसिणी वा देवो वा सम्माइट्ठी। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो— भुजगारउदीरओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि समया। कुदो? वेद-कसाय-भय-दुगुंछासु कमेण उदिण्णासु चदुण्णं समयाणमुवलंभादो। अधवा सेडीदो परिवदमाणस्स हस्स-रदीहि सह एक्को, भएण एक्को, दुगुंछाए एक्को, कालगदस्स एक्को, एवं चत्तारि समया। अप्पदरस्स जहण्णमेगसमओ, उक्कस्सं तिण्णि समया। अवट्ठिदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं कालो समत्तो।

एयजीवेण अंतरं— भुजगारस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवमप्पदर-अवट्ठिदाणं। अवत्तव्वं जहण्णमंतोमुहुत्तं, उक्कस्समुवड्ढपोग्गलपरियट्टं। एवमंतरं समत्तं।

अन्तर— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका अन्तर नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व— भुजाकार और अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य होकर स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

मोहनीय कर्मके स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका उदीरक कौन होता है? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि उनका उदीरक होता है। अवक्तव्य उदीरक कौन होता है? सम्यग्दृष्टि मनुष्य, मनुष्यनी और देव उसका उदीरक होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल— भुजाकार उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय है, क्योंकि वेद, कषाय, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंकी क्रमसे उदीरणा होनेपर चार समय पाये जाते हैं। अथवा श्रेणिसे नीचे गिरते हुए जीवके हास्य व रतिके साथ एक समय, भयके साथ एक समय, जुगुप्साके साथ एक समय, तथा कालको प्राप्त हुएका एक समय; इस प्रकार चार समय पाये जाते हैं। अल्पतरका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय है। अवस्थितका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— भुजाकारका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। इसी प्रकार अल्पतर और अवस्थित उदीरणाका अन्तर है। अवक्तव्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। सिया एदे च अवत्तव्वउदीरओ च, सिया एदे च अवत्तव्वउदीरया च, धुवसहिया तिण्णि[1]। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

कालो— अवत्तव्वउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जा समया। सेसाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो। अंतरं— अवत्तव्वउदीरयंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

अप्पाबहुअं— अवत्तव्वउदीरया थोवा। भुजगारउदीरया अणंतगुणा। अप्पदर-उदीरया विसेसाहिया खवगसेडिं पडुच्च। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवमप्पा-बहुअं समत्तं।

पदणिक्खेवो— उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो उवसामओ एगपयडिउदीरओ मदो देवो जादो, ताधे अट्ठ उदीरेदि, तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। तस्सेव उक्कस्समवट्ठाणं। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो मिच्छाइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जिहिदि, संपहि भय-दुगुंछाणं वेदगो, से काले पढमसमयसंजदो जादो भय-दुगुंछाणमवेदगो, तस्स मिच्छत्त-

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक एक, कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक बहुत, इस प्रकार इन दो भंगोंमें ध्रुवभंगको मिलानेपर तीन भंग होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग-विचय समाप्त हुआ।

काल— अवक्तव्यउदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय प्रमाण है। शेष उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अन्तर— अवक्तव्यउदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष प्रमाण है। शेष उदीरकोंका अन्तर सम्भव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व— अवक्तव्यउदीरक स्तोक हैं। उनसे भुजाकारउदीरक अनन्तगुणे हैं। उनसे क्षपकश्रेणिकी अपेक्षा अल्पतरउदीरक विशेष अधिक हैं। अर्थात् क्षपकश्रेणिमें मोहनीयका अल्प-तर पद ही होता है, भुजाकार पद नहीं होता; इस अपेक्षासे भुजाकार उदीरकोंसे अल्पतर उदीरक विशेष अधिक कहे गये हैं। इनसे अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

पदनिक्षेप— उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो उपशामक एक प्रकृतिका उदीरक होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ है, तब वह आठकी उदीरणा करता है, उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसीके [अनन्तर समयमें] उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो मिथ्यादृष्टि अनन्तर समयमें संयमको प्राप्त होगा वह अभी भय व जुगुप्साका वेदक है, अनन्तर समयमें वह प्रथमसमयवर्ती संयत होकर उनका अवेदक हो जाता है, उस मिथ्यात्वसे

---

१ भुज० अप्प० अवट्ठि० उदीर० णिय० अत्थि। सिया एदे च अवत्तव्वओ च सिया एदे च अवत्तव्वगा च भंगा तिण्णि ३। जयध. अ. पं. ७६७.

पच्छायदस्स पढमसमयसंजदस्स उक्कस्सिया हाणी । एवं सामित्तं समत्तं ।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहियं । जहण्णिया वड्ढी जहण्णिया हाणी जहण्णमवट्ठाणं च एया पयडी । सेसं चिंतिय वत्तव्वं । एवं पदणिक्खेवो समत्तो ।

एत्तो वड्ढिउदीरणा— अत्थि संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढिउदीरओ, एदेसिं चेव हाणीओ अवट्ठाणमवत्तव्वं च ।

अवत्तव्वउदीरया थोवा । संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढि-उदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । एवं णामकम्मस्स वि जाणिऊण वत्तव्वं । पयडिउदीरणा समत्ता ।

ठिदिउदीरणा[1] दुविहा— मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा उत्तरपयडिट्ठिदिउदीरणा चेदि । मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा दुविहा— जहण्णिया उक्कस्सिया चेदि । तत्थ उक्कस्सिया ठिदि-उदीरणा णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि ऊणाओ[2] । एवं णामा-गोदाणं । णवरि वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ

आये हुए प्रथम समयवर्ती संयतके उत्कृष्ट हानि होती है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

हानि स्तोक है, उससे वृद्धि और अवस्थान दोनों समान होकर विशेष अधिक हैं । जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान एक प्रकृति स्वरूप हैं । शेष प्ररूपणा विचार कर करना चाहिये । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

यहां वृद्धिउदीरणा— संख्यातभागवृद्धिउदीरक और संख्यातगुणवृद्धिउदीरक हैं । इनकी ही हानियोंके उदीरक अर्थात् संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि उदीरक, अवस्थानउदीरक तथा अवक्तव्यउदीरक हैं ।

अवक्तव्यउदीरक स्तोक हैं । उनसे संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यात-गुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । उनसे संख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं । उनसे संख्यातभागहानिउदीरक विशेष अधिक हैं । अवस्थितउदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे नामकर्मकी भी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये । प्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई ।

स्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है—मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणा । मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है—जघन्य और उत्कृष्ट । उनमें ज्ञानावरणीय, दर्शनावर-णीय, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । इसी प्रकार नाम और गोत्र कर्मकी भी स्थितिउदीरणा समझना चाहिये ।

---

१ संपत्तिए य उदए पओगओ दिस्सए उईरणा सा । सेची(ढी)का-ठिइहि ता जाहि तो तासिगा एसा ।। क. प्र. ४,२९. तथा चाह— या स्थितिरकालप्राप्तापि सती प्रयोगत उदीरणाप्रयोगेण संप्राप्त्युदए पूर्वोक्तस्वरूपे प्रक्षिप्ता सती दृश्यते केवल-चक्षुषा सा स्थित्युदीरणा (मलयगिरि) । २ तत्रोदए सति यासा प्रकृतीनामुत्कृष्टो बन्धः सम्भवति तासामुत्कर्षत आवलिकाद्विकहीना सर्वाप्युत्कृष्टा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या । क. प्र. ४,२९ (मलय.) ।

बेहि आवलियाहि ऊणाओ। उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा मोहणीयस्स[1] सत्तरिसागरोवम-कोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ। आउअस्स उक्कस्सिया ठिदिउदीरणा तेत्तीसं सागरोवमाणि एगावलियाए ऊणाणि। एवमुक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा समत्ता।

जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा— णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणा एगा ट्ठिदी। सा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयखीणकसायस्स। मोहणीयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा एगा ट्ठिदी। सा कस्स? समयाहियावलियचरिम-समयसुहुमसांपराइयखवगस्स। वेदणीयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणा। णामा-गोदाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा अंतोमुहुत्तमेत्ता समयूणावलियाए ऊणा, अजोगिअद्धा चरिमफाली च होदि त्ति भणिदं होदि। आउअस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा एगा ट्ठिदी। तं कत्थ? मरणकाले समयाहियावलियसेसे। एवं मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा समत्ता।

उत्तरपयडीसु उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेयणीय-पंचण्णमंतराइयाणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि

विशेषता यह है कि उनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन बीस कोडाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। मोहनीय कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरो-पम प्रमाण है। आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवलीसे रहित तेतीस सागरोपम प्रमाण है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थितिउदीरणा— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा एक स्थिति मात्र है। वह किसके होती है? वह जिसके अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके होती है। मोहनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा एक स्थिति मात्र है। वह किसके होती है? वह जिस जीवके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-साम्परायिक क्षपक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसके होती है। वेदनीयकी जघन्य स्थितिउदीरणा सागरोपमके पल्योपमका असंख्यातवां भाग हीन तीन बटे सात भाग($\frac{3}{7}$) प्रमाण होती है। नाम और गोत्रकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक समय कम आवलीसे हीन अन्तर्मुहूर्त मात्र होती है। अभिप्राय यह कि वह अयोगकेवलीके काल और अन्तिम फालि रूप होती है।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक स्थिति मात्र है। वह कहांपर होती है? वह मरण-समयमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर होती है। इस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा समाप्त हुई।

उत्तर प्रकृतियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय और पांच अन्त-रायकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियों (बन्धावली और उदयावली) से कम तीस कोड़ाकोड़ि

१ ताप्रतौ 'ट्ठिदिउदीरणा। मोहणीयस्स' इति पाठः।

ऊणाओ। सादस्स तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ[1]।

मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ अंतोमुहुत्तूणाओ। सोलसण्णं कसायाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ। णवणोकसायाणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ[2]। णिरय-देवाउआणं उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा तेत्तीससागरोवमाणि आवलिऊणाणि। तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियूणाणि।

णिरयगइ-तिरिक्खगइ एइंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-हुंडसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुभ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिण-णीचागोदाणमुक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ। मणुसगइ-पंचसंठाण-पंचसंघडण-पसत्थविहायगइ-थिरादि-

सागरोपम प्रमाण है। साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियों (बन्धावली, संक्रमणावली और उदयावली) से हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियांसे हीन सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा अन्तमुहूर्त कम सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। सोलह कपायोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमप्रमाण है। नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियोंसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है।

नारकआयु और देवाउकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। तिर्यगायु और मनुष्यायुकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा एक आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है।

नरकगति, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, हुण्डकसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगति व तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। मनुष्यगति, पांच संस्थान, पांच संहनन, प्रशस्त विहायो-

१ येषां तु कर्मणां मनुजगति-सातावेदनीय···एकोनत्रिंशत्संख्याकानामुदए सति संक्रमेणोत्कृष्टा स्थितिः, तेषामावलिकात्रिकहीना सर्वा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या, केवलं तानि कर्माणि वेदयमानानां वेदितव्या। क. प्र. (मलय) ४,३२। २ ओघेण मिच्छ० उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ। सम्म० सम्मामि०······। जयध. अ. प. ७१३।

छक्क-उच्चागोदाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ। देवगदि-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-देव-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहरणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा वीसं कोडाकोडिसागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणाणि। आहारदुगस्स अंतोकोडाकोडिसागरोवमाणि उदीरणा। तित्थयरस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एवमुक्कस्सओ अद्धाच्छेदो समत्तो।

जहण्णए पयदं— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सम्मत्त-तिण्णिवेद-चत्तारिसंजलण[1]-चत्तारिआउअ-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा एगा ट्ठिदी[2]। थीणगिद्धितिय-सादासाद-बारसकसाय-छण्णोकसाय[3]-एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-तिरिक्ख-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-दूभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा चत्तारि सत्त भागा बे सत्त भागा पलिदोवमस्स[4] असंखेज्जदिभागेण ऊणया। मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-

गति, स्थिर आदि छह और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा तीन आवलियोंसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। देवगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, देवगति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर; इनकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा अन्तर्मुहूर्त कम बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। आहारद्विककी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। इस प्रकार उत्कृष्ट अद्धाच्छेद समाप्त हुआ।

जघन्य अद्धाच्छेद प्रकृत है— पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, तीन वेद, चार संज्वलन, चार आयु और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक स्थिति मात्र है। स्त्यानगृद्धि आदि तीन, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, छह नोकषाय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय जाति, पांच संहनन, तिर्यग्गति, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक सागरोपमके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सात भागोंमेंसे तीन, चार और दो भाग ($\frac{3}{7}$, $\frac{4}{7}$, $\frac{2}{7}$) प्रमाण है। अर्थात् दर्शनावरण व वेदनीयकी प्रकृतियोंकी एक सागरके पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम तीन बटे सात भाग प्रमाण, मोहनीयकी उत्तर प्रकृतियोंकी एक सागरके पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम चार बटे सात भाग प्रमाण तथा नामकर्म और गोत्र कर्मकी उत्तर प्रकृतियोंकी एक सागरके पल्यका असंख्यातवां भाग कम दो बटे सात भाग प्रमाण जघन्य स्थितिउदीरणा होती है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर,

१ ताप्रतौ 'चत्तारिकसायसंजलण—' इति पाठः। २ ओघेण मिच्छ० सम्म० चदुसंजल० तिण्णिवेद जह० ट्ठिदिउदी० एया ट्ठिदी समयाहियावलियट्ठिदी। जयध. अ. प. ७९३. ३ बारसक० छण्णोक० जह० ट्ठिदिउदी० सागरोवमस्स चत्तारि सत्त भागा पलिदो० असंखे० भागेणूणा। जयध. अ. प. ७९३. ४ मतिपाठोऽयम्। उभयोरेव प्रत्योः 'सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा पलिदोवम०' इति पाठः।

छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास- अगुरुअलहुअ-उव-घाद-परघाद-उस्सास- दोविहायगइ-तस - बादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदाणं जहण्णिया ठिदि-उदीरणा अंतोमुहुत्तं । सा कत्थ ? सजोगिचरिमसमए । वेउव्वियछक्कस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा सागरोवमसहस्स-वेसत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया । णवरि वेउव्वियसरीरस्स सागरोवमस्स बे सत्त भागा देसूणा । उव्वेलणं पडुच्च सम्मा-मिच्छत्तस्स जहण्णिया ठिदिउदीरणा सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणयं[1] । सा पुण उव्वेल्लमाणेण सम्मामिच्छत्तपाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मं कादूण सम्मामिच्छत्ते पडिवण्णे तस्स चरिमसमए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा । आहारदुगस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा अंतोकोडाकोडी । एवं जहण्णट्ठिदिअद्धाछेदो समत्तो ।

एत्तो सामित्तं— पंचणाणावरणीयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण आवलियादिक्कंतो एइंदिओ वा पंचिंदियो वा पज्जत्तो वा अपज्जत्तो वा । जदि अपज्जत्तो जाव आवलियतब्भवत्थो त्ति उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो । अपज्जत्तो त्ति वुत्ते कस्स गहणं ? णेरइओ वा बादरपत्तेयसरीरएइंदिओ गब्भोवक्कंतिओ णवुंसओ वा

छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, दो विहायोगतियां, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर और उच्चगोत्र; इनकी जघन्य स्थितिउदीरणा अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाण है । वह कहांपर होती है ? वह सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें होती है । वैक्रियिकशरीर आदि छह प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक हजार सागरोपमोंके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन दो भागप्रमाण है । विशेष इतना है कि वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थितिउदीरणा एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे कुछ कम दो भाग प्रमाण है । उद्वेलनाकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिउदीरणा पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण है । परन्तु वह जघन्य स्थितिउदीरणा उद्वेलनाको करनेवाले जीवके सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानके योग्य जघन्य स्थितिसत्त्वको करके सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेपर उसके अन्तिम समयमें होती है । आहारद्विककी जघन्य स्थिति-उदीरणा अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । इस प्रकार जघन्य स्थितिअद्धाच्छेद समाप्त हुआ ।

यहां स्वामित्व— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर जिसने आवली मात्र कालको विताया है ऐसा एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय, पर्याप्त व अपर्याप्त जीव उसका उदीरक होता । यदि अपर्याप्त है तो वह आवली कालवर्ती तद्भवस्थ होने तक उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है ।

शंका— 'अपर्याप्त' कहनेपर किसका ग्रहण किया गया है ?

समाधान— नारक, बादर प्रत्येकशरीर एकेन्द्रिय और गर्भोपक्रान्तिक नपुंसकका ग्रहण

---

१ सम्मामि० जह० ट्ठिदिउदी० सागरोवमपुधत्तं । जयध. अ. प. ७९३.

घेत्तव्वो। जहा णाणावरणीयस्स परूविदं तहा चत्तारिदंसणावरणीय-असादावेदणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-णिमिण-हुंडसंठाण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं च वत्तव्वं।

सादस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो असादस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधेदूण पडिभग्गो संतो सादं बंधमाणो आवलियूणमसादुक्कस्सट्ठिदिं पडिच्छिय संकमणावलियकालं गमिय उदयावलियबाहिरसव्वट्ठिदीओ ओकड्डिय उदए णिसिंचमाणो। एवं हस्स-रदि-पुरिस-इत्थिवेदाणं। थीणगिद्धितिय-णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधियूण पडिभग्गो संतो पंचण्णमेक्कदरपयडीए पवेसओ उदयावलिय-बाहिरसव्वट्ठिदीओ बंधावलियादिक्कंताओ ओकड्डियूण उदए संछुहमाणो। थीणगिद्धि-तियस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ[1] णियमा पज्जत्तओ। सम्मत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो मिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिं बंधियूण अंतोमुहुत्तेण पडिभग्गो चेव सम्मत्तं पडिवण्णो तस्स बिदियसमयसम्माइट्ठिस्स। सम्मामिच्छत्तस्स सो चेव सम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी जादो, तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा[2]।

करना चाहिये।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार चार दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, अरति शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, निर्माण, हुण्डकसंस्थान, नीचगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये।

साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर प्रतिभग्न होकर साता वेदनीयको बांधता हुआ एक आवलीसे हीन असाता-की उत्कृष्ट स्थितिको सातारूप संक्रान्त कर व संक्रमणावलीकालको बिताकर उदयावलीके बाहर-की सब स्थितियोंका अपकर्षण करके उदयमें देता है वह साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकार हास्य, रति, पुरुष और स्त्री वेदके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। स्त्यान-गृद्धि आदिक तीन, निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर प्रतिभग्न होता हुआ उक्त पांच प्रकृतियोंमेंसे किसी एकका उदीरक होकर बन्धा-वलीसे अतिक्रान्त उदयावलीके बाहिरकी सब स्थितियोंका अपकर्षण कर उदयमें दे रहा है वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। स्त्यानगृद्धि आदि तीनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक नियमसे पर्याप्तक जीव होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर अन्तर्मुहूर्तमें प्रतिभग्न होकर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है उसके सम्यग्दृष्टि होनेके द्वितीय समयमें सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा होती है। वही सम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि हो गया, तब उसके सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा होती है।

१ काप्रतौ 'ट्ठिदिउदीरणा णियमा', ताप्रतौ 'ट्ठिदि उदीरणा (ओ)' इति पाठः। २ तथा सप्ततिसागरोपम-कोटीकोटीप्रमाणा मिथ्यात्वस्य स्थितिर्मिथ्यादृष्टिना सता बद्धा। ततोऽन्तर्मुहूर्तं कालं यावन्मिथ्यात्वमनुभूय सम्यक्त्वं प्रतिपद्यते। ततः सम्यक्त्वे सम्यग्मिथ्यात्वे चान्तर्मुहूर्तोनां मिथ्यात्वस्थितिं सकलामपि संक्रमयति।

चदुण्णमाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो अप्पप्पणो उक्कस्साउट्ठिदीसु उववण्णो पढमसमयतब्भवत्थो सो उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरओ। णिरयगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदीए उदीरओ को होदि ? जो उक्कस्सट्ठिदिं बंधियूण णिरयगदीए उववण्णो जहण्णेण पंचमाए पुढवीए उक्कस्सेण सत्तमाए पुढवीए पढमसमयतब्भवत्थो दुसमयतब्भवत्थो तिसमयतब्भवत्थो चदुसमयतब्भवत्थो वि एवं[1] जाव आवलियतब्भवत्थो त्ति उक्कस्सट्ठिदीए उदीरओ[2]। तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरओ को होदि ? णियमा अपज्जत्तओ देवगइपच्छायदएइंदियो वा देव-णिरयगदिपच्छायदगब्भोवक्कंतियतिरिक्खजोणिणवुंसयवेदो वा। एवमेइंदियजादीए। णवरि देवपच्छायदएइंदियस्सेव। पंचिंदियजादीए णाणावरणभंगो। णवरि एइंदिओ त्ति ण वत्तव्वं।

चार आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुस्थितिमें उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ है वह उस उस आयुकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उसकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर नरकगतिमें उत्पन्न हुआ है, वह जघन्यसे पांचवीं और उत्कर्षसे सातवीं पृथिवीमें तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें, द्वितीय समयमें, तृतीय समयमें, चतुर्थ समयमें; इस प्रकार तद्भवस्थ होनेके आवली मात्र काल तक नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? नियमसे देवगतिसे लौटकर आया हुआ एकेन्द्रिय अपर्याप्त, अथवा देवगति व नरकगतिसे लौटकर आया हुआ गर्भोपक्रान्तिक तिर्यंचयोनिवाला नपुंसकवेदी जीव तिर्यग्गतिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे एकेन्द्रिय जाति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामीका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि देव पर्यायसे पीछे आये हुए एकेन्द्रिय जीवके ही इसकी उदीरणा सम्भव है। पंचेन्द्रिय जातिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके स्वामीका कथन ज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि यहां 'एकेन्द्रिय' यह नहीं कहना चाहिये। मनुष्यगति

संक्रमावलिकायां चातीतायामुदीरणायोग्या, तत्र संक्रमावलिकातिक्रमेऽपि सान्तर्मुहूर्तोनैव। ततः सम्यक्त्वमनुभवतः सम्यक्त्वस्यान्तर्मुहूर्तोना सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या। ततः कश्चित् सम्यक्त्वेऽप्यन्तर्मुहूर्तं स्थित्वा सम्यग्मिथ्यात्वं प्रतिपद्यते। ततः सम्यग्मिथ्यात्वमनुभवतः सम्यग्मिथ्यात्वस्यान्तर्मुहूर्तद्विकोना सप्ततिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति। क. प्र. (मलय.) ४. ३२.

१ ताप्रतौ 'वि। एवं' इति पाठः। २ अद्धाच्छेओ सामित्तं पि य ठिइसंकमे जहा नवर (रि)। तव्वेइसु निरयगईए वा वि तिसु हि (हे)ट्ठिमखिईसु॥ क. प्र. ४, ३२. नरकगतेः, अपिशब्दान्नरकानुपूर्व्याश्च तिर्यक्पंचेन्द्रियो मनुष्यो वोत्कृष्टां स्थितिं बद्ध्वा उत्कृष्टस्थितिबन्धानन्तरं चान्तर्मुहूर्ते व्यतिक्रान्ते सति तिसृष्वधस्तनपृथिवीषु मध्येऽन्यतरस्यां पृथिव्यां समुत्पन्नः, तस्य प्रथमसमये नरकगतेरन्तर्मुहूर्तहीना सर्वापि स्थितिर्विंशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा उदीरणायोग्या भवति।........अधस्तनपृथिवीत्रयग्रहणे किं प्रयोजनमिति चेदुच्यते– इह नरकगत्यादीनामुत्कृष्टां स्थितिं बन्धन्नवश्यं कृष्णलेश्यापरिणामोपेतो भवति। कृष्णलेश्यापरिणामोपेतश्च कालं कृत्वा नरकेषूत्पद्यमानो जघन्यकृष्णलेश्यापरिणामः पंचमपृथिव्यामुत्पद्यते, मध्यमकृष्णलेश्यापरिणामः षष्ठपृथिव्याम्, उत्कृष्टकृष्णलेश्यापरिणामः सप्तमपृथिव्यामित्यधस्तनपृथिवीत्रयग्रहणम्। (मलय. टीका)
३ काप्रतौ 'देवा' इति पाटः।

मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो मणुस्सो णिरयगइणामाए उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो संतो मणुसगदिं बंधदि तस्स आवलियादिक्कंतस्स पडिच्छिदणिरयगदिउक्कस्सट्ठिदिस्स मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा। देवगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? मणुस्सो वा तिरिक्खो वा णिरयगदिसंजुत्तमुक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो संतो ताधे चेव जो देवगदिं बंधिदूण अंतोमुहुत्तेण देवो[2] जादो तस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स[3]।

जहा तिरिक्खगइणामाए तहा ओरालियसरीरणामाए। वेउव्वियसरीरस्स णिरयगइभंगो। अहारसरीरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि ? आहारसरीरस्स[4] तप्पाओग्गउक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिओ पढमसमयआहारसरीरओ[5]। ओरालियसरीर-

---

नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो मनुष्य नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर उससे भ्रष्ट होता हुआ मनुष्यगतिको बांधता है उसके नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिका मनुष्यगतिरूपसे संक्रमण होनेपर एक आवली कालके पश्चात् मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है। देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? मनुष्य और तिर्यंच होता है, जो नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर भ्रष्ट होता हुआ उसी समयमें देवगतिको बांधकर अन्तर्मुहूर्तमें देव हो जाता है उसके देव होनेके प्रथम समयमें देवगतिकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा होती है।

जिस प्रकार तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाके स्वामीकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार औदारिकशरीरकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? आहारशरीरका उदीरक तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके सत्त्ववाला प्रथम समयवर्ती आहारक-

---

१ ताप्रतौ -उक्कस्सट्ठिदिमणुस- इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। उभयोरेव प्रत्योः 'अंतोमुहुत्तूण देवो' इति पाठः। ३ देवगति-देव-मणुयाणुपुव्वी आयाव-विगल-सुहुमतिगे। अंतोमुहुत्तभग्गा तावइगूणं तदुक्कस्सं॥ क. प्र. ४, ३३. देवगति त्ति— देवगति-देवानुपूर्वी-मनुष्यानुपूर्वीणामातपस्य विकलत्रिकस्य द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रियजातिरूपस्य सूक्ष्मत्रिकस्य च सूक्ष्म-साधारणापर्याप्तकलक्षणस्य (१०) स्व-स्वोदये वर्तमाना अन्तर्मुहूर्तभग्ना उत्कृष्टस्थितिबन्धाध्यवसायादनन्तरमन्तर्मुहूर्तं कालं यावत् परिभ्रष्टाः सन्तस्तावदूनामन्तर्मुहूर्तोना तदुत्कृष्टां देवगत्यादीनामुत्कृष्टां स्थितिमुदीरयन्ति। इयमत्र भावना— कश्चित्तथाविधपरिणामविशेषभावतो नरकगतेरुत्कृष्टां स्थितिं विंशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणां बध्वा ततः शुभपरिणामविशेषभावतो देवगतेरुत्कृष्टां स्थितिं दशसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणां बद्धुमारभते। ततस्तस्यां देवगतिस्थितौ बध्यमानायामावलिकाया उपरि बन्धावलिकाहीनामावलिकात उपरितनीं सर्वामपि नरकगतिस्थितिं संक्रमयति। ततो देवगतेरपि विंशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा स्थितिरावलिकामात्रहीना जाता। देवगतिं च बध्नन् जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तं कालं यावद् बध्नाति। बन्धानन्तरं च कालं कृत्वाऽनन्तरसमये देवो जातः। ततस्तस्य देवत्वमनुभवतो देवगतेरन्तर्मुहूर्तोना विंशतिसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणा उत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति। (मलय. टीका). ४ उभयोरेव प्रत्योः 'आहारसरीरदुगस्स' इति पाठः।

५ ताप्रतौ 'आहारसरीर (?)।' इति पाठः।'''तथाहारकसप्तकमप्रमत्तेन सता तद्योग्योत्कृष्टसंक्लेशेनोत्कृष्टस्थितिकं बद्धम्, तत्कालोत्कृष्टस्थितिक (स्व) मूलप्रकृत्यभिन्नप्रकृत्यन्तरदलिकं च तत्र संक्रामितम्,

अंगोवंगणामाए उकस्सट्ठिदिउदीरओ को होदि? देवो णेरइओ वा उकस्सट्ठिदिं बंधिदूण तिरिक्खजोणिगब्भोवक्कंतियणवुंसए उववण्णो तस्स जाव आवलियतब्भवत्थस्से त्ति ओरालियंगोवंगणामाए उकस्सिया ट्ठिदिउदीरणा। जहा वेउव्वियआहारसरीराणं तहा तेसिमंगोवंगणामाणं। जहा पंचण्णं सरीरणं तहा पंचबंधण-संघादाणं पि परूवणा कायव्वा।

पंचसंठाणेसु जस्स जस्स इच्छिज्जदि तस्स तस्स संठाणस्स वेदगो उकस्सियं ठिदिं कादूण आवलियादिक्कंतमुदीरेदि। जहा ओरालियसरीरअंगोवंगणामाए तहा असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाए वत्तव्वं। सेसाणं पंचण्णं संघडणाणं जहा पचण्णं संठाणाणं कदं तहा कायव्वं। जहा णिरयगई तहा णिरयाणुपुव्वीए। जहा तिरिक्खगई तहा तिरिक्खाणुपुव्वीए। जहा देवगई तहा देवाणुपुव्वीए मणुसाणुपुव्वीए च[1]।

जहा धुवउदीरयाणं पयडीणं तहा उवघादणामाए परघादणामाए उस्सासणामाए च। उकस्सियं ट्ठिदिं बंधिदूण अमरंतो चेव आवलियादिक्कंतमुदीरेदि त्ति वत्तव्वं। एव-

शरीरी होता है। औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है? उसका उदीरक देव अथवा नारक जीव होता है, जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर तिर्यंच योनिवाले गर्भोपक्रान्तिक नपुंसकमें उत्पन्न हुआ है उसके उक्त भवमें स्थित होनेके आवली मात्र कालके भीतर औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है। जिस प्रकार वैक्रियिक और आहारकशरीर सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे उनके आंगोपांग नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये। जैसे पांच शरीरोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही पांच बन्धन और पांच संघात नामकर्मोंके सम्बन्धमें भी प्ररूपणा करना चाहिये।

पांच संस्थानोंमेंसे जिस जिसकी विवक्षा हो उस संस्थानका वेदक जीव उत्कृष्ट स्थितिको करके आवली मात्र कालको बिताकर उसका उदीरक होता है। जैसे औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन किया गया है वैसे ही असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये। शेष पांच संहननोंका कथन पांच संस्थानोंके समान करना चाहिये। नरकगत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तिर्यग्गत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। देवगत्यानुपूर्वी और मनुष्यगत्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है।

उपघातनामकर्म, परघात नामकर्म और उच्छ्वास नामकर्मकी प्ररूपणा ध्रुवउदीरणावाली प्रकृतियोंके समान है। मात्र उनकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर मरणसे रहित होता हुआ एक आवलीके

ततस्तत्सर्वोत्कृष्टान्तःसागरोपमकोटीकोटीस्थितिकं जातम्। बन्धानन्तरं चान्तर्मुहूर्तमतिक्रम्याहारकसरीरमारभते। तच्चारभमाणो लब्ध्युपजीवनेनौत्सुक्यभावतः प्रमादभाग्भवति। ततस्तस्य प्रमत्तस्य सत आहारकसरीरमुत्पादयत आहारकसरीरसप्तकस्यान्तर्मुहूर्तोनोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या। अत्र प्रमत्तस्य सत आहारकसरीरारम्भकत्वादुत्कृष्टस्थित्युदीरणास्वामी प्रमत्तसंयत एवं वेदितव्यः। क. प्र. (मलय.) ४, ३३. १ देवगति-देव-मणुयाणुपुव्वी आयाव-विगल-सुहुमतिगे। अंतोमुहुत्तभग्गा तावयगूणं तदुकस्सं॥ क. प्र. ४, ३३.

सुज्जोवणामाए। णवरि उत्तरविउव्विददेवस्स। आदावस्स देवपच्छायदपुढविकाइयस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स तप्पाओग्गमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेमाणस्स[1]। पसत्थापसत्थविहायगइणामाए उस्सासभंगो[2]। णवरि एदासिं पयडीणं जो वेदओ तत्थ वत्तव्वं।

तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरणामाणं जहा धुवउदीरणापयडीणं परूविदं तहा परूवेयव्वं। थावरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा [कस्स] होदि? जो देवो उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधिदूण मदो एइंदिएसु उववण्णो तस्स जाव आवलियतब्भवत्थो त्ति ताव उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा। सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं उक्कस्सट्ठिदिमुदीरओ को होदि? जो वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधिदूण पडिभग्गो संतो अप्पिदपयडीओ बंधिय उक्कस्सियं पडिच्छिय अंतोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरेसुप्पण्णपढमसमयतब्भवत्थो उक्कस्सट्ठिदिउदीरगो। एवं बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियणामाणं पि वत्तव्वं।

बाद उसकी उदीरणा करता है, ऐसा कहना चाहिये। इसी प्रकारसे उद्योत नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि उसकी उदीरणा उत्तर विक्रियायुक्त देवके होती है। आतप नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा देव पर्यायसे पीछे आये हुए पृथिवीकायिक जीवके शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होकर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करते समय होती है। प्रशस्त और अप्रशस्त विहायोगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा उच्छ्वास नामकर्मके समान है। विशेषता इतनी है कि इन प्रकृतियोंका जो जीव वेदक है उसके कहना चाहिये।

त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर नामकर्मों सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा जैसे ध्रुव-उदीरणावाली प्रकृतियोंकी की गई है वैसे करना चाहिये। स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा किसके होती है? जो देव उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर मरणको प्राप्त हो एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके आवली मात्र कालवर्ती तद्भवस्थ रहने तक उसकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है। सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है? जो जीव बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिको बांधकर प्रतिभग्न होता हुआ विवक्षित प्रकृतियोंको बांधकर उत्कृष्ट स्थितिको संक्रान्त कर अन्तर्मुहूर्त स्थित रहकर सर्वलघु कालमें सूक्ष्म अपर्याप्त साधारणशरीरवालोंमें उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुआ है वह उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय नामकर्मोंकी भी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये।

---

१ एवमातपादीनामप्यन्तर्मुहूर्तोना उत्कृष्टा स्थितिरुदीरणा भावनीया। नन्तुदयसंक्रमोत्कृष्टस्थितीनां प्रकृतीनामन्तर्मुहूर्तोना उत्कृष्टस्थितिरुदीरणायोग्या भवतु, आतपनाम तु बन्धोत्कृष्टम्, ततस्तस्य बन्धोदयावलिकाद्विकरहितैवोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या प्राप्नोति, कथमुच्यतेऽन्तर्मुहूर्तोनेति? उच्यते— इह देव एवोत्कृष्टे संक्लेशे वर्तमान एकेन्द्रियप्रायोग्याणामातप-स्थावरैकेन्द्रियजातीनामुत्कृष्टां स्थितिं बध्नाति, नान्यः। स च तां बध्वा तत्रैव देवभवेऽन्तर्मुहूर्तं कालं यावदवतिष्ठते। ततः कालं कृत्वा बादरपृथिवीकायिकेषु मध्ये समुत्पद्यते। समुत्पन्नः सन् शरीरपर्याप्त्या पर्याप्त आतपनामोदये वर्तमानस्तदुदीरयति। तत एवं सति तस्यान्तर्मुहूर्तोनैवोत्कृष्टा स्थितिरुदीरणायोग्या भवति (मलय. टीका)। २ काप्रतौ 'उक्कस्सभंगो' इति पाठः।

थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्तीणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो होदूण बंधावलियादिक्कंतं पडिच्छिय संकमणावलियादीदमदुयावलियबाहिरमोकड्डियूण उदए देदि सो उक्कस्सट्ठिदिउदीरओ । अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं जहा धुवउदीरयाणं तहा कायव्वं । णवरि सुस्सर-दुस्सराणमपज्जत्तकाले णत्थि उदीरणा । तित्थयरस्स [उक्कस्सट्ठिदि] उदीरगो को होदि ? जो पढमसमयकेवली तप्पाओग्गुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिओ[1] । उच्चागोदस्स उक्कस्सट्ठिदि-उदीरगो को होदि ? जो णीचागोदस्स उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो संतो[2] उच्चागोदस्सेव वेदओ तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा । एवं उक्कस्ससामित्तं ।

एत्तो जहण्णसामित्तं उच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थो[3] । खीणकसायम्मि णिद्दा-पयलाणमुदीरणा णत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीहि[4] सह जहण्णसामित्तं वत्तव्वं[5] । तिण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्ण-

स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर व उससे प्रतिभग्न होकर बन्धावलीसे अतिक्रान्त स्थितिको संक्रान्त कर संक्रमणावलीके बाद उदयावलीसे बाह्य स्थितिका अपकर्षण कर उदयमें देता है वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है । अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति; इनकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका कथन ध्रुवउदीरणावाली प्रकृतियोंके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि सुस्वर और दुस्वरकी उदीरणा अपर्याप्तकालमें नहीं होती । तीर्थंकर प्रकृतिको उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिसत्त्ववाला प्रथम समयवर्ती केवली तीर्थंकर प्रकृतिका उदीरक होता है । उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो उच्चगोत्रका ही वेदक नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर उससे प्रतिभग्न हुआ है उसके उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा होती है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसा छद्मस्थ जीव उपर्युक्त प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है । क्षीणकषाय गुणस्थानमें निद्रा और प्रचलाकी उदीरणा नहीं है, ऐसा कहनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे उनकी उदीरणाके जघन्य स्वामित्वका कथन निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धि प्रकृतियोंके साथ करना चाहिये । तीन

१ तित्थयरस्स य पल्लासंखिज्जइमे × × × ॥ क. प्र. ४,३४. इह पूर्वं तीर्थकरनाम्नः स्थिति शुभैरध्यवसायैरपवर्त्यापवर्त्य पल्योपमासंख्येयभागमात्रा शेषीकृता । ततोऽनन्तरसमये उपन्नकेवलज्ञानः सन् तामुदीरयति । उदीरयतश्च प्रथमसमये उत्कृष्टोदीरणा । सर्वदेव चैयन्मात्रैव स्थितिरुत्कृष्टा तीर्थकरनाम्न उदीरणाप्रायोग्या प्राप्यते, नाधिकेति । (मलय.). २ ताप्रतौ 'पडिभागे संते' इति पाठः ।

३ छउमत्थखीणरागे चउदस समयाहिगालिगठिईए । क. प्र. ४, ४२. ४ काप्रतौ '-मभिप्पाएण गिद्धीहि', ताप्रतौ 'मभिप्पाएण [थीण-] गिद्धीहि' इति पाठः । ५ इंदियपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तगाए (उ) पाउग्गा ।

ट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो पज्जत्तो हदसमुप्पत्तियकम्मेण सव्वचिरं कालं जहण्ण-ट्ठिदिसंतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण तदो तं चेव जहण्णसंतकम्मं बंधिय पुणो तत्तो उवरिल्ल ट्ठिदिं बंधमाणस्स आवलियमेत्ते काले गदे तिण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणा[1] । सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो बादरएइंदिओ हदसमुप्पत्ति-एण कम्मेण सव्वचिरं जहण्णट्ठिदिसंतादो हेट्ठा बंधिदूण से काले उवरिं बंधिहिदि त्ति तदो मदो सण्णीसु उववण्णो, तत्थ असादं सव्वचिरं बंधियूण सादस्स बंधगो जादो, तस्स सादं बंधमाणस्स गमिदावलियकालस्स सादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा । एव-मसादस्स वि वत्तव्वं । णवरि सण्णीसुप्पण्णो संतो सादं बंधावेयव्वो, तदो सादबंधगद्धाए उक्कस्सियाए गदाए असादं बद्धं, तदो आवलियमधिच्छिदूण जहण्णट्ठिदिमसादस्स उदीरेदि त्ति वत्तव्वं[2] ।

दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो पर्याप्त जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिरकाल (दीर्घ अन्तर्मुहूर्त काल) तक जघन्य स्थितिसत्त्वसे कम बांधकर, पुनः उसी जघन्य स्थितिसत्कर्मको बांधकर, तत्पश्चात् ऊपरकी स्थितिको बांधता हुआ जब आवली मात्र काल बिताता है तब उसके तीन दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है । साता-वेदनीयकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो बादर एकेन्द्रिय जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिरकाल जघन्य स्थितिसत्त्वसे कम बांधकर, अनन्तर कालमें अधिक स्थितिको बांधेगा कि इसी बीचमें मरकर संज्ञी जीवोंमें उत्पन्न हुआ, फिर उनमें सर्वचिरकाल तक असाता वेदनीयको बांधकर साता वेदनीयका बन्धक हुआ है, उसके साताको बांधते हुए आवली मात्र कालके बीतनेपर साता वेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है । इसी प्रकार असाता वेदनीयके विषयमें भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि संज्ञियोंमें उत्पन्न होते हुए उसे साता वेदनीयका बन्ध कराना चाहिये, तत्पश्चात् उत्कृष्ट साताबन्धककालके बीतनेपर जो असाताका बन्धक हुआ है वह आवली मात्र कालको बिताकर असाता वेदनीय सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा करता है, ऐसा कहना चाहिये ?

निद्दा-पयलाणं खीणराग-खवगे परिच्चज्ज ॥ क. प्र. ४, १८. इंदिय त्ति—इन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्ताः सन्तो द्वितीय-समयादारभ्येन्द्रियपर्याप्त्यनन्तरसमयादारभ्येत्यर्थः, निद्रा-प्रचलयोरुदीरणाप्रायोग्या भवन्ति । किं सर्वेऽपि ? नेत्याह—क्षीणरागान् क्षपकांश्च परित्यज्य । उदीरणा हि उदये सति भवति, नान्यथा । न च क्षीणराग-क्षपकयोर्निद्रा-प्रचलोदयः सम्भवति, "निद्दादुगस्स उदओ खीणग-खवगे परिच्चज्ज" इति वचनप्रामाण्यात् । तस्मात् वर्जयित्वा शेषा निद्रा-प्रचलयोरुदीरका वेदितव्याः । (मलय. टीका).

१ थावरजहअसंतेण समं अहि (हा) गं व बंधंतो ॥ गंतूणावलिमित्तं कसायबारसग-भय-दुग(गुं)छाणं । निद्दाय (इ) पच्चगस्स य आयावुज्जोयनामस्स ॥ क. प्र. ४, ३४-३५.

२ भावना त्वियम्— एकेन्द्रियो जघन्यस्थितिसत्कर्मा एकेन्द्रियभवादुद्धृत्य पर्याप्त-संज्ञिपंचेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पन्नः, उत्पत्तिप्रथमसमयादारभ्य च सातवेदनीयमनुभवन् असातवेदनीयं बृहत्तरमन्तर्मुहूर्तकालं यावद् बध्नाति । ततः पुनरपि सातं बद्धुमारभते । ततो बन्धावलिकायाश्चरमसमये पूर्वबद्धस्य सातवेदनीयस्य जघन्या स्थित्युदीरणां करोति । एवमसातवेदनीयस्यापि द्रष्टव्यम् । केवलं सातवेदनीयस्थानेऽसातवेदनीयमुच्चारणीयम् , असातवेदनीयस्थाने सातवेदनीयमिति । क. प्र. (मलय.)४, ३७.

मिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिउदीरगो को होदि ? जो दंसणमोहणीयउवसामगो समयाहियावलियचरिमसमयमिच्छाइट्ठी। सम्मत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणिज्जो[1]। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि ? जो अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छाइट्ठी एइंदियं गंतूण तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि उव्वेल्लिय तदो तसेसु उववण्णो, तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवमट्ठिदिसंतकम्मेण सह सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो तस्स चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स जहण्णया ट्ठिदिउदीरणा[2]। तसेसु चेव उव्वेल्लाविय[3] सम्मामिछत्तं किण्ण णीदो ? ण, एइंदिएसु उव्वेल्लिदसम्मामिच्छत्तट्ठिदिसंतकम्मस्सेव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणसागरो-

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो जीव दर्शनमोहनीयका उपशामक है उसके मिथ्यादृष्टि रहनेके अन्तिम समयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेप रहनेपर मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जिसके दर्शनमोहनीयके क्षीण होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेप रहा है वह उसकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो अट्ठाईस प्रकृतियोंके सत्त्ववाला मिथ्यादृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें जाकर वहां पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कालके द्वारा सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्वकी उद्वेलना करके पश्चात् त्रसोंमें उत्पन्न हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त काल रहकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण स्थितिसत्त्वके साथ सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है; उस अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है।

शंका—त्रस जीवोंमें ही उद्वेलना कराकर सम्यग्मिथ्यात्वको क्यों नहीं प्राप्त कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिसने एकेन्द्रियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वकी उद्वेलना की है उसके ही पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम मात्र स्थितिसत्त्वके शेप रहनेपर

१ मिच्छत्तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स मिच्छाइट्ठिस्स उवसमसम्मत्ताहिमुहस्स समयाहियावलियपढमट्ठिदिउदीरगस्स तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। सम्मत्तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स दंसणमोहक्खवयस्स समयाहियावलियउदीरगस्स। जयध. अ. प. ७९४. समयहिगालिगाए पढमठिइए उ सेसवेलाए। मिच्छत्ते वेएसु य संजलणासु वि य सम्मत्ते (चे)॥ क. प्र. ४, ३०.

२ सम्मामिच्छत्तजहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स ? अण्णदरो जो मिच्छाइट्ठी वेदगपाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिओ सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो अंतोमुहुत्तं विगट्ठं सम्मामिच्छत्तद्धमणुपालिय चरिमसमयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। जयध. अ. प. ७९४. पल्लासंखियभागूणुदही एगिंदियागए मिस्से। क. प्र. ४,४०. पल्योपमासंख्येयभागेन न्यूनं यदेकं सागरोपमं तावन्मात्रसम्यग्मिथ्यात्वस्थितिसत्कर्मा एकेन्द्रियभवादुद्धृत्य संज्ञिपंचेन्द्रियमध्ये समायातः। तस्य यतः समयादारभ्यान्तर्मुहूर्तानन्तरं सम्यग्मिथ्यात्वस्योदीरणाऽपगमिष्यति तस्मिन् समये सम्यग्मिथ्यात्वप्रतिपन्नस्य चरमसमये सम्यग्मिथ्यात्वस्य जघन्या स्थित्युदीरणा। एकेन्द्रियसत्कजघन्यस्थितिसत्कर्मणश्च सकाशादधो वर्तमानं सम्यग्मिथ्यात्वमुदीरणायोग्यं न भवति, तावन्मात्रस्थितिके तस्मिन्नवश्यं मिथ्यात्वोदयसम्भवतस्तदुद्वलनसम्भवात् (मलय.)। ३ उभयोरेव प्रत्योः 'वेउव्वेल्लाविय' इति पाठः।

वममेत्तट्ठिदिसंतकम्मे सेसे सम्मामिच्छत्तग्गहणपाओग्गस्सुवलंभादो[1]। जो पुण तसेसु एइंदियट्ठिदिसंतसमं सम्मामिच्छत्तं कुणइ सो पुव्वमेव सागरोवमपुधत्ते सेसे चेव तदपाओग्गो होदि।

बारसण्णं कसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि? जो बादरेइंदियो पज्जत्तो सव्वविसुद्धो हदसमुप्पत्तियकमेण जहण्णट्ठिदिसंतकम्मस्स हेट्ठा सव्वचिरं बंधिऊण से काले समट्ठिदिं वा उवरिं वा बंधिय तदो आवलियमुवरिं गदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा बारसण्णं कसायाणं होदि[2]। कोधसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स होदि? खवओ वा उवसामओ वा जो कोधवेदओ से काले उदय-उदीरणाओ वोच्छिज्जिहिंति त्ति तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। माणसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? खवगो वा उवसामगो वा जो माणवेदओ से काले उदय-उदीरणाओ वोच्छिज्जिहिंति त्ति तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा। मायासंजलणाए जहण्णट्ठिदिउदीरया वि[3] एवं चेव वत्तव्वा। लोभसंजलणस्स जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि? समयाहियावलियचरिमसमयसकसाओ[4]।

सम्यग्मिथ्यात्वके ग्रहणकी योग्यता पायी जाती है। परन्तु जो त्रस जीवोंमें एकेन्द्रियके स्थितिसत्त्वके बराबर सम्यग्मिथ्यात्वके स्थितिसत्त्वको करता है वह पहिले ही सागरोपमपृथक्त्व प्रमाण स्थितिके शेष रहनेपर ही उसके ग्रहणके अयोग्य हो जाता है।

बारह कषायोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? जो बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त सर्वविशुद्ध जीव हतसमुत्पत्तिक क्रमसे जघन्य स्थितिसत्त्वके नीचे सर्वचिर काल तक बांधकर अनन्तर समयमें समान स्थिति अथवा अधिक स्थितिको बांधकर उससे आगे एक आवली मात्र काल ऊपर गया है उसके बारह कषायोंकी जघन्य स्थितिउदीरणा होती है। संज्वलनक्रोधकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? जो क्षपक अथवा उपशामक क्रोधवेदक जीव अनन्तर कालमें उदय व उदीरणाकी व्युच्छित्ति करेगा उसके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। संज्वलनमानकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? जो क्षपक अथवा उपशामक मानवेदक जीव अनन्तर कालमें उदय व उदीरणाकी व्युच्छित्ति करेगा उसके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। इसी प्रकारसे संज्वलनमायाकी जघन्य स्थितिके उदीरकोंका भी कथन करना चाहिये। संज्वलनलोभकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? जिसके अन्तिम समयवर्ती सकषाय रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है वह उसकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। हास्य व रति सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी

१ प्रत्योरुभयोरेव -'पाओग्गाणुवलंभादो' इति पाठः। २ बारसक० जह० ट्ठिदिउदी० कस्स? अण्णद० बादरेइंदियस्स हदसमुप्पत्तियस्स जावदि सक्कं ताव संतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण समट्ठिदि वा बंधिदूण संतकम्मं वोलेदूण या आवलियादीदस्स। जयध. अ. प. ७९४. ३ ताप्रतौ 'उदीरया त्ति' इति पाठः। ४ चदुसंज० जह० ट्ठिदिउदीर० कस्स? अण्णद० उवसामगस्स वा खवगस्स वा अप्पप्पणो कसाएहिं सेढिमारूढस्स समयाहियावलियउदी० तस्स जह०। जयध. अ. प. ७९४.

हस्स-रदीणं सादभंगो। अरदि-सोगाणमसादभंगो। भय-दुगंछाणं बारसकसायभंगो। तिण्णं वेदाणं कोधसंजलणस्स भंगो। णवरि जस्स जस्स वेदस्स इच्छिज्जदि तस्स तस्स वेदस्सुदएण खवगुवसामगसेडीयो चढाविय समयाहियावलियचरिमसमयसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा वत्तव्वा।

आउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयतब्भवत्थस्स। णिरयगइणामाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स? जो असण्णिपंचिंदियो तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिओ तप्पाओग्गुकस्सियाए ट्ठिदीए पढमपुढविणेरइएसु उववण्णो तस्स चरिमसमयणेरइयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। तिरिक्खगइणामाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स? जो तेउकाइयो वा वाउकाइयो वा हदसमुप्पत्तिकम्मेण सव्वचिरं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मस्स हेट्ठा बंधिदूण सण्णिपंचिंदियतिरिक्खेसुववण्णो, उप्पण्णपढमसमए चेव मणुसगइबंधगो जादो, पुणो तं सव्वचिरं बंधिऊण तदो तिरिक्खगई बद्धा[1] तस्सावलियकालं बंधमाणस्स तिरिक्खगईए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा[2]। तेउकाइय-वाउकाइयपच्छायदो तिरिक्खगई

उदीरणाका कथन सातावेदनीयके समान है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन असातावेदनीयके समान है। भय व जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन बारह कषायोंके समान करना चाहिये। तीन वेदोंकी प्ररूपणा संज्वलनक्रोधके समान है। विशेष इतना है कि जो जो वेद अभीष्ट हो उस उस वेदके उदयसे क्षपक अथवा उपशम श्रेणिपर चढ़ाकर अन्तिम समयवर्ती सवेद रहनेमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये।

आयु कर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ होनेमें जिसके एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके आयु कर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। नरकगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति उदीरणा किसके होती है? जो तत्प्रायोग्य जघन्य स्थिति-सत्कर्मवाला असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके साथ प्रथम पृथिवीके नारक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है उस अन्तिम समयवर्ती नारक जीवके उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? जो तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिर काल तक जघन्य स्थितिसत्त्वके नीचे बांधकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंमें उत्पन्न हुआ है तथा उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही मनुष्यगतिका बन्धक हुआ है, पश्चात् सर्वचिर काल तक उसे बांधकर जिसने तिर्यंचगतिका बन्ध किया है, आवली मात्र काल तक बांधनेवाले उसके तिर्यंचगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। तेजकायिक और वायुकायिक

१ काप्रतौ 'बद्धो' इति पाठः। २ तथा तेजस्कायिको वायुकायिको वा बादरः सर्वजघन्यस्थितिसत्कर्मा पर्याप्त-संज्ञि-तिर्यक्पंचेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पन्नः। ततो बृहत्तरमन्तर्मुहूर्तं कालं यावन्मनुजगतिं बध्नाति। तद्बन्धानन्तरं च तिर्यग्गतिं बद्धुमारभते। ततो बन्धावलिकायाश्चरमसमये तस्यास्तिर्यग्गतेर्जघन्यां स्थित्युदीरणां करोति। क. प्र. (मलय.) ४, ३७.

चेव अंतोमुहुत्तं बंधदि त्ति भणंतबंधसामित्तेण[1] णेदस्स विरोहो, तत्थ णियमाभावादो। मणुसगईए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स। जहा णिरयगईए तहा देवगईए वत्तव्वं[2]। णवरि तप्पाओग्गेण जहण्णट्ठिदिसंतकम्मेण असण्णिपंचिंदियो तप्पाओग्गउक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिएसु देवेसु उप्पादेदव्वो। चदुजादिणामाणं बादरेइंदियं सव्वविसुद्धपरिणामेण कयजहण्णट्ठिदिसंतकम्मं सग-सगजादिसुप्पादिय पडिवक्खबंध-गद्धाओ वोलाविय अप्पिदजादिं बंधमाणस्स पढमावलियचरिमसमए जहण्णट्ठिदिउदीरणा वत्तव्वा। पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं जहण्णट्ठिदिउदीरगो को होदि? चरिमसमयसजोगिकेवली। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि? जो एइंदियो वेउव्वियसरीरस्स तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिओ विउव्विदुत्तरसरीरो तस्स[4] चरिमसमए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा[5]। आहारसरीरस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा

जीवोंमेंसे पीछे आया हुआ जीव अन्तर्मुहूर्त काल तक तिर्यचगतिको ही बांधता है, इस प्रकारकी प्ररूपणा करनेवाले बन्धस्वामित्वके साथ इसका कोई विरोध नहीं है, क्योंकि, वहां ऐसा नियम नहीं है। मनुष्यगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? उसकी उदीरणा अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है। जैसे नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कही गई है वैसे ही देवगति सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्वके साथ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट आयुस्थितिसत्त्ववाले देवोंमें उत्पन्न कराना चाहिये। सर्वविशुद्ध परिणामके द्वारा किये गये जघन्य स्थितिसत्त्वसे संयुक्त बादर एकेन्द्रियको उस उस जातिवाले जीवोंमें उत्पन्न कराकर प्रतिपक्ष जातियोंके बन्धककालको बिताकर विवक्षित जाति नामकर्मको बांधनेवाले उस उस जीवके प्रथम आवलीके अन्तिम समयमें एकेन्द्रिय आदि चार जाति नामकर्मोकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कहना चाहिये। पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर इनकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवली जीव उनकी जघन्य स्थितिका उदीरक होता है। वैक्रियिकशरीर सम्बन्धी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है? वैक्रियिकशरीरके तत्प्रायोग्य स्थितिसत्त्ववाले जिस एकेन्द्रिय जीवने उत्तर शरीरकी विक्रिया की है उसके उत्तर शरीरकी विक्रियाके अन्तिम समयमें वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। आहारकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा

१ तिरिक्खगइ-ओरालियदुग-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइयाणं तेउ-वाउकाइय-सत्तमपुढवीणेरइएहितो आगंतूण पंचिंदियतिरिक्ख-तप्पज्जत्त-जोणिणीसु उप्पण्णाणं सणक्कुमारादि-देव-णेरइएहिंतो तिरिक्खेसुप्पण्णाणं च णिरंतरबंधदंसणादो। प. खं. पु. ८, पृ. १२१. २ अमणागयस्स चिरठिइ अंते (ते) सुर-नरयगइ-उवंगाणं। अणुपुव्वीतिसमइगे नराण एगिंदियागयगे॥ क. प्र. ४, ३८. ३ उभयोरेव प्रत्योः 'जहण्णओट्टिदि' इति पाठः। ४ उभयोरेव प्रत्योः 'विउव्विदुत्तरसरीरोत्तरस्स' इति पाठः। ५ एतदुक्तं भवति— बादरवायुकायिकः पल्योपमासंख्येयभागहीनसागरोपमद्वि-सप्तभागप्रमाणवैक्रियिक-षट्कजघन्यस्थितिसत्कर्मा बहुशो वैक्रियमारब्ध चरमे वैक्रियारम्भे चरमसमये वर्तमानो जघन्यां स्थित्युदीरणां करोति। अनन्तरसमये च वैक्रियिकषट्कमेकेन्द्रियसत्कजघन्यसत्कर्मापेक्षया स्तोकतरमिति कृत्वा उदीरणा-योग्यं न भवति, किन्तूद्वलनायोग्यम्। क. प्र. (मलय.) ४, ४०.

कस्स ? जो आहारसरीरस्स तप्पाओग्गेण जहण्णेण ट्ठिदिसंतकम्मेण आहारसरीरमुट्ठावेंतस्स सव्वमहंतीए उत्तरविउव्वणद्धाए चरिमसमए होदि । कस्स पुण जहण्णट्ठिदिसंतकम्मं वुच्चदे ? जो चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण पच्छा दंसणमोहणीयं खवेदूण देवेसु तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णो तत्तो चुदो मणुस्सेसु संजमं पुव्वकोडिकालमणुपालेऊण तदो पुव्वकोडीए अंतोमुहुत्तावसेसाए आहारएण उत्तरं विउव्विदो सव्वमहंतीए वि-उव्वणद्धाए चरिमसमये जहण्णट्ठिदिसंतकम्मं[1] । जधा आहारसरीरस्स तधा तदंगोवंगस्स वि वत्तव्वं । जहा ओरालियसरीरस्स तहा तदंगोवंगस्स सजोगिचरिमसमए वत्तव्वं । वे-उव्वियअंगोवंगस्स णिरयगदिभंगो । जहा पचण्णं सरीराणं तहा तेसिं बंधण-संघादाणं परू-वेयव्वं । छसंठाण-वज्जरिसहसंघडणाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । पंचण्णं संघडणाणं भण्णमाणे एइंदिएसु तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिं कादूण सण्णीसु अप्पिद-संघडणेणुप्पादिय अवेदिज्जमाणसंघडणाणि सव्वचिरं बंधाविय तदो जं वेदेदि तं पच्छा

किसके होती है ? जो जीव आहारशरीरके तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्वके साथ आहारक-शरीरको उत्पन्न कर रहा है उसके सबसे महान् उत्तर विक्रियाकालके अन्तिम समयमें उसकी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है ।

शंका— जघन्य स्थितिसत्त्व किस जीवके होता है ?

समाधान— जो जीव चार वार कषायोंको उपशमा कर पश्चात् दर्शनमोहनीयका क्षय करके तेतीस सागरोपम स्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, तत्पश्चात् वहांसे च्युत होकर मनुष्योंमें पूर्वकोटि काल तक संयमका पालन करके पूर्वकोटिमें अन्तर्मुहूर्तके शेष रहनेपर जो आहारकशरीरके साथ उत्तर विक्रियाको प्राप्त हुआ है, उसके सबसे महान् विक्रियाकालके अन्तिम समयमें उसका जघन्य स्थितिसत्त्व होता है ।

जिस प्रकार आहारकशरीर सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे उसके अंगोपांगकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । जैसे औदारिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा कही गई है वैसे ही उसके अंगोपांगकी जघन्य स्थिति-उदीरणा सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें कहनी चाहिये । वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी प्ररूपणा नरकगतिके समान करना चाहिये । पांच शरीरों सम्बन्धी बन्धनों और संघातोंकी प्ररूपणा उन पांच शरीरोंके ही समान करना चाहिये । छह संस्थानों और वज्रर्षभसंहनन सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? उनकी जघन्य स्थिति उदीरणा अन्तिम समयवर्ती संयोगकेवलीके होती है । पांच संहननोंकी प्ररूपणा करते समय एकेन्द्रिय जीवोंमें तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिको करके संज्ञी जीवोंमें विवक्षित संहननके साथ उत्पन्न कराकर उदयमें न आनेवाले संहननोंको सर्वचिर काल तक बंधाकर पश्चात् जिस संहननका वेदन करता है उसे पीछे बंधाना चाहिये, उसके प्रथम

१ चउरुवसमेत्त पेज्जं पच्छा मिच्छं खवेत्तु तेत्तीसा । उक्कोससंजमद्धा अंते सुतणू-उवंगाणं ॥ क. प्र. ४, ४१.

वंधावेयव्वं, पढमसमयपबद्धस्स आवलियकाले गदे तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा[1]। वण्ण-गंध-रस-फासाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स। णिरयाणुपुव्वीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? असण्णिपच्छायदस्स तप्पाओग्गजहण्णट्ठिदिसंतकम्मस्स दुसमयणेरइयस्स। मणुस्साणुपुव्वीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स? जो बादरेइंदिओ हदसमुप्पत्तियकम्मेण सव्वचिरं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मादो [हेट्ठा] बंधिदूण से काले संतकम्मस्स उवरि बंधिहिदि त्ति मणुस्सो जादो तस्स दुसमयमणुसस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा[2]। जहा देवगदिणामाए जहण्णसामित्तं परूविदं तहा देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए परूवेयव्वं। णवरि देवेसुप्पण्णबिदियसमए जहण्णसामित्तं वत्तव्वं। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीजहण्णट्ठिदिउदीरणाए को सामी? जो तेउकाइयो वाउकाइयो वा सव्वविसुद्धो सव्वजहण्णेण ट्ठिदिसंतकम्मेण मदो सण्णितिरिक्खजोणिएसु विग्गहगदीए उववण्णो तस्स बिदियसमयतब्भवत्थस्स। अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर-थिराथिर - सुहासुह-

समयमें बांधनेके पश्चात् आवली मात्र कालके बीतनेपर उसके विवक्षित संहनन सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है। नरकगत्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? वह असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आये हुए ऐसे तत्प्रायोग्य जघन्य स्थितिसत्त्व युक्त द्वितीय समयवर्ती नारक जीवके होती है। मनुष्यगत्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है? जो बादर एकेन्द्रिय जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ सर्वचिरकाल तक जघन्य स्थितिसत्त्वसे कमको बांधकर अनन्तर कालमें उक्त स्थितिसत्त्वके ऊपर बांधेगा कि इस बीचमें जो मनुष्य हुआ है उसके मनुष्य भवके द्वितीय समयमें जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। जिस प्रकार देवगति नामकर्मके जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि देवोंमें उत्पन्न होनेके द्वितीय समयमें जघन्य स्वामित्व कहना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाका स्वामी कौन है? जो सर्वविशुद्ध तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव सर्वजघन्य स्थितिसत्त्वके साथ मरकर विग्रहगति द्वारा संज्ञी तिर्यंचयोनि जीवोंमें उत्पन्न हुआ है उसके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा होती है। अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर,

१ वेयणिया (य) नोकसाया सम्मत्त-संघडणपंच-नीयाणं। तिरियदुग-अयस-दूभगणाइज्जाणं च संनिगए॥ क. प्र. ४,३७. संहननपंचकस्य तु मध्ये वेद्यमानं संहननं मुक्त्वा शेषसंहननानां प्रत्येकं बन्धकालोऽतिदीर्घो वक्तव्यः। ततो वेद्यमानसंहननस्य बन्धे बन्धावलिकाचरमसमये जघन्या स्थित्युदीरणा। (मलय.). २ एकेन्द्रियः सर्वजघन्यमनुष्यानुपूर्वीस्थितिसत्कर्मा एकेन्द्रियभवादुद्धृत्य मनुष्येषु मध्ये उत्पद्यमानोऽपान्तरालगतो वर्तमानो मनुष्यानुपूर्व्यास्तृतीयसमये जघन्यस्थित्युदीरणास्वामी भवति। क. प्र. (मलय.) ४, ३८.

सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-णिमिणणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि ? चरिमसमयसजोगी[1]। आदावणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरओ को होदि ? जो बादरपुढविजीवो पज्जत्तओ हदसमुप्पत्तिएण सव्वचिरं हेट्ठा बंधियूण तदो उवरिं वा समट्ठिदियं वा बंधिय आवलियादिक्कंतस्स[2] आदावणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा। उज्जोवणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स ? जो बादरेइंदिओ पज्जत्तयदो हदसमुप्पत्तिय-कम्मेण सव्वचिरं हेट्ठदो बंधिय पुणो उवरि समट्ठिदियं वा बंधिय आवलियादिक्कंतस्स[1]। थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणणामकम्माणं जहण्णट्ठिदिउदीरणाए एइंदियस्स[3] सामित्तं वत्तव्वं। दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्तीणमेइंदियस्स हदसमुप्पत्तियकम्मेण पंचिंदिएसुप्पाइय पडिवक्खबंधगद्धाओ गालिय तदो आवलियादीदस्स वत्तव्वं। णीचागोदस्स तिरिक्खगइ-भंगो। उच्चागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स[4]। गदीसु

अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर और निर्माण; इन नाम-कर्मोंकी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? उनका उदीरक अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवली होता है। आतप नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिका उदीरक कौन होता है ? जो बादर पृथिवी-कायिक पर्याप्त जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मसे सर्वोचिर काल तक कमको बांधकर पश्चात् उससे अधिक अथवा समान स्थितिको बांधकर आवली मात्र कालको बिताता है उसके आतप नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। उद्योत नामकर्म सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा किसके होती है ? जो बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव हतसमुत्पत्तिक कर्मसे सर्वचिर काल कमको बांधकर, फिर उससे अधिक अथवा समान स्थितिको बांधकर आवली मात्र कालको बिताता है उसके उद्योत सम्बन्धी जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी उदीरणाका स्वामित्व एकेन्द्रिय जीवके कहना चाहिए। दुभग, अनादेय और अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी उदीरणाके स्वामित्वका कथन ऐसे एकेन्द्रिय जीवके करना चाहिये जिसने हतसमुत्पत्तिक कर्मके साथ पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धककालोंको गलाकर पश्चात् आवली मात्र कालको बिताया है। नीच गोत्र सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान करना चाहिये। उच्चगोत्र सम्बन्धी जघन्य स्थिति-उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोग-केवलीके होती है। गतियोंमें जानकर जघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस

१ सेसाणुदीरणंते भिण्णमुहुत्तो ठिईकालो ॥ क. प्र. ४, ४२. शेषाणां च प्रकृतीनां मनुजगति-पंचेन्द्रियजाति-प्रथमसंहननौदारिकसमक-संस्थानषट्कोपघात-पराघातोच्छ्वास-प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगति-त्रस-बादर-पर्याप्त-प्रत्येक-सुभग-सुस्वरादेय-यशःकीर्ति-तीर्थकरोच्चैर्गोत्र-दुःस्वरलक्षणानां द्वात्रिंशत्प्रकृतीनां पूर्वोक्तानां च नामध्रुवो-दीरणानां त्रयस्त्रिंशत्प्रकृतीनां सर्वसंख्यया पंचषष्टिसंख्यानां सयोगिकेवलिचरमसमये जघन्या स्थित्युदीरणा। तस्याश्च जघन्यायाः कालो भिन्नमुहूर्तोऽन्तर्मुहूर्तमित्यर्थः। (मलय.). २ ताप्रतौ 'आवलियादिक्कं[तो-]तस्स' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'उदीरणा एइंदियस्स', ताप्रतौ 'उदीरणा० एइंदियस्स' इति पाठः। ४ काप्रतौ '[illegible]' इति पाठः।

जाणिदूण णेदव्वं। एवं जहण्णट्ठिदिउदीरणा समत्ता।

एयजीवेण कालो— पंचणाणावरणीयस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। जहा णाणावरणीयस्स तहा सव्वासिं धुवउदयपयडीणं[1] वत्तव्वं। दंसणावरणपंचयस्स उक्कस्स-अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। णवरि उक्कस्सस्स[2] एगावलिया, उक्कस्सट्ठिदिबंधकाले णिद्दादिपंचयस्स उदयाभावादो। सादस्स उक्कस्सट्ठिदि-उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं वत्तव्वं। असादस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं वत्तव्वं।

सोलसकसाय-भय-दुगुंछाणमुक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदीणमुदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सम्मत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ।

प्रकार जघन्य स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई।

एक जीवकी अपेक्षा काल— पांच ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल तक होती है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनस्वरूप अनन्त काल है। जैसे ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन किया गया है वैसे ही सब ध्रुवोदयी प्रकृतियोंकी भी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन करना चाहिये। पांच दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। विशेष इतना है कि इनकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल एक आवली प्रमाण है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिबन्धके कालमें निद्रा आदि पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उदय सम्भव नहीं है। सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। जिस प्रकार साताकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका कथन किया है उसी प्रकार हास्य और रति प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालका कथन करना चाहिये। असातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम है। जैसे असातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही अरति और शोककी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये।

सोलह कषाय, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थितियोंकी उदीरणा काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका

१ ताप्रतौ 'धुवउत्तरपयडीणं' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'उक्कस्स०' इति पाठः।

अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। णवुंसयवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। इत्थिवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं। पुरिसवेदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं।

चदुण्हमाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो णिरय-देवाउआणं जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि आवलियूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियआवलियाए ऊणाणि। तिरिक्खाउअस्स अणुकस्सट्ठिदिउदीरणाकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियूणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियआवलियाए ऊणाणि। मणुस्साउअस्स अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणाकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियावलियाए ऊणाणि।

काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम छ्यासठ सागरोपम है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली प्रमाण है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। पुरुषवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है।

चार आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। नारकायु और देवायुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यतः एक आवलीसे कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षतः एक समय अधिक आवलीसे हीन तेत्तीस सागरोपम है। तिर्यंचआयुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम है। मनुष्यआयुकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम प्रमाण है।

णिरयगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एग-समओ, उक्कस्सेण आवलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि। तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सट्ठिदि-उदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो[1] जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। मणुसगदिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि[2] ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। देवगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्स-ट्ठिदिउदीरणा जहण्णेण दसवाससहस्साणि समयूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि।

एइंदियजादिणामाए तिरिक्खगइभंगो। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियणामाणं उक्कस्स-ट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समऊणं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि। पंचिंदियजादिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणुक्कस्सट्ठिदि उदीरणकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं वा, उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सं

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली मात्र काल तक होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है। तिर्यंचगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली तक होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली काल तक होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण काल तक होती है। देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा जघन्यसे एक समय कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है।

एकेन्द्रियजाति नामकर्मकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष है। पचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे

१ ताप्रतौ '-उदीरणाकालो' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो' इति पाठः।

पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं ।

ओरालियसरीरणामाए उकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमयो, उकस्सेण एगावलिया। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उकस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरणामाए उकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उकस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उकस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारसरीरणामाए उकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुकस्सेण एगसमओ । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं । ओरालियसरीरअंगोवंगणामाए उकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उकस्सेण एगावलिया । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उकस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि । वेउव्विय-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं वेउव्विय-आहारसरीरणामाणं भंगो । पंचबंधण-पंचसंघादणामाणं पंचसरीरभंगो ।

पंचण्णं संठाणाणं उकस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उकस्सेण एगावलिया । अणुकस्सट्ठिदिउदीरणकालो समचउरससंठाणस्स[1] जहण्णेण एगसमओ, उकस्सेण तेवट्ठिसागरोवम-सदं सादिरेयं । सेसाणं चदुण्णं संठाणाणं जहण्णेण एगसमओ,

क्षुद्रभवग्रहण अथवा अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक एक हजार सागरोपम है ।

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । औदारिकशरीरांगोपांग नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्योपम मात्र है । वैक्रियिक और आहारक शरीरांगोपांग नामकर्मोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा वैक्रियिक और आहारक शरीरनामकर्मोंके समान है । पांच बंधन और पांच संघात नामकर्मोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है ।

पांच संस्थान नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उनमें समचतुरस्रसंस्थानकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपमप्रमाण है । शेष चार संस्थानोंकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

१ ताप्रतौ 'अणुक० ट्ठिदिउदीरणकालो[क्क] । समचउरससंठाणस्स' इति पाठः ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं । हुंडसंठाणस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । छण्णं संघडणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण सादिरेयाणि । सेसाणं पंचण्णं संघडणाणमणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं ।

तिण्णमाणुपुव्वीणामाणमुक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । णवरि मणुस्स-देवाणुपुव्वीणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कसेण तिण्णि समया ।

उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-तस-पत्तेयसरीर-दुभग-अणादेज्ज-दुस्सरणामाणं णीचागोदस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ; दुभग-अणादेज्ज-

हुण्डकसंस्थानकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । छह संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है। इनमें वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम मात्र है । शेष पांच संहननोंकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । विशेष इतना है कि मनुष्यानुपूर्वी और देवानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय है ।

उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, प्रत्येकशरीर, दुर्भग, अनादेय और दुस्वर नामकर्मोंकी तथा नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा काल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि इनमें दुर्भग, अनादेय व नीचगोत्रको छोड़कर शेष प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी

१ ताप्रतौ 'णीचागोदवज्जएण' इति पाठः ।

णीचागोदवज्जाणमुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेदूण तदो अणुक्कस्समेगसमयमुदीरिय कालगदस्स विग्गह-गदस्स च, दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुण उत्तरविउव्विदस्स तदुवलंभादो। णवरि तसणामाए अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण उवघादणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, परघाद-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं च तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, उज्जोवणामाए देसूणतिण्णिपलिदोवमाणि, तसणामाए बे सागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि, पत्तेय-सरीरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णु-क्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बावीसवाससहस्साणि देसूणाणि। सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं जहण्णकालो अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, साहारणसरीरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो।

पसत्थविहायगइ-जसगित्ति-सुभगादेज्जणामाणमुच्चागोदस्स य एदेसिं कम्माणमु-क्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया। अणुक्कस्सट्ठिदि उदीरणकालो पसत्थविहायगइ-जसगित्ति-सुभगादेज्जाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण

उदीरणा करके तत्पश्चात् उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी एक समय उदीरणा करके कालको प्राप्त होकर विग्रहको प्राप्त हुए जीवके उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका उपर्युक्त एक समय मात्र काल पाया जाता है; तथा दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका वह एक समय रूप काल उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त हुए जीवके पाया जाता है। विशेष इतना है कि त्रस नामकर्मकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है। उत्कर्षसे अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल उपघात नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग; परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वरका कुछ कम तेतीस सागरोपम; उद्योत नामकर्मका कुछ कम तीन पल्योपम, त्रस नामकर्मका साधिक दो हजार सागरोपम, प्रत्येकशरीर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग; तथा दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है। उनमें अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल आतप नामकर्मका जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष प्रमाण है; सूक्ष्म, अपर्याप्त व साधारण नामकर्मोकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है। उत्कर्षसे वह सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा साधारणशरीर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग है।

प्रशस्त विहायोगति, यशकीर्ति, सुभग व आदेय नामकर्मोकी तथा उच्चगोत्र इन कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है। अनुत्कृष्ट स्थितिउदीरणाका काल प्रशस्त विहायोगति, यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंका जघन्यसे

पसत्थविहायगईए तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, जसगित्ति-सुभगादेज्जाणं सागरोवमसदपुधत्तं । उच्चागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

थावरणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । बादर-पज्जत्तणामाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[1] । उक्कस्सेण बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, पज्जत्तणामाए बेसागरोवमसहस्साणि । थिर-सुभाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलिया[2] । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । तित्थयरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । एवमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो समत्तो ।

जहण्णट्ठिदिउदीरणकालो वुच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादासाद-सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-चदुसंजलणाणि तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-

---

एक समय है । उत्कर्षसे वह प्रशस्त विहायोगतिका कुछ कम तेतीस सागरोपम तथा यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंका सागरोपमशतपृथक्त्व मात्र है । उच्चगोत्रकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है ।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । बादर और पर्याप्त नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । तथा उत्कर्षसे वह बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण और पर्याप्त नामकर्मका दो हजार सगरोपम है । स्थिर और शुभ नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली प्रमाण है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल है । तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कपसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका काल समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थिति-उदीरणाके कालकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व,

---

१ 'अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं' इत्येतावानयं पाठ उभयोरेव प्रत्योरनुपलभ्यमानो मप्रतितोऽत्र योजितः । २ प्रत्योरुभयोरेव 'आवलियाए' इति पाठः ।

सोग-चत्तारिगदि-पंचजादि-पंचसरीर-तिण्णिअंगोवंग-पंचसरीरबंधण-पंचसंघाद-छसंठाण-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-चत्तारिआणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिरादि-छजुगल-तित्थयर-णिमिण-उच्च-णीचागोद-पंचंतराइयाणं चदुण्णमाउआणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ।

अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-अगुरुअलहुअ-णिमिणणामपयडीणं अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो वा। सादासादाणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण सादस्स छम्मासा, असादस्स तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि।

मिच्छत्तस्स अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्ज-वसिदोत्ति तिण्णि भंगा। तत्थ जो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। चउसंजलणाणमजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण हस्स-रदीणं छम्मासा, अरदि-सोगाणं तेत्तीसं सागरो-वमाणि सादिरेयाणि। इत्थिवेदस्स अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ,

चार संज्वलन, तीन वेद, हास्य, रति, अरति, शोक, चार गतियां, पांच जातियां, पांच शरीर, तीन अंगोपांग, पांच शरीरबन्धन, पांच संघात, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर आदि छह युगल, तीर्थंकर, निर्माण, उच्चगोत्र, नीचगोत्र और पांच अन्तराय तथा चार आयु कर्म; इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्पसे एक समय है।

अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरुलघु और निर्माण नाम-कर्मका अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित है। साता व असाता वेदनीयकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है। उत्कर्पसे वह सातावेदनीयका छह मास और असातावेदनीयका अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोप प्रमाण है।

मिथ्यात्वकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाके कालके अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित, ये तीन भंग हैं। इनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है। चार संज्वलन कषायोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। हास्य, रति, अरति और शोककी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है। उत्कर्पसे वह हास्य व रतिका छह मास तथा अरति व शोकका साधिक तेतीस सागरोपमप्रमाण है। स्त्रीवेदकी अजघन्य स्थिति-

उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । णवुंसयवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । सम्मत्तस्स अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि समयाहियावलियूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

णिरयाउअस्स जहण्णेण दसवाससहस्साणि समयाहियावलियूणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियावलियूणाणि[1] । देआउअस्स णिरयाउअभंगो । मणुसाउअस्स अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियावलियूणाणि[2] । तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समयाहियावलियूणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि समयाहियावलियूणाणि ।

णिरय-देवगइणामाणमजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि । तिरिक्ख-मणुसगइणामाणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण जहाकमेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण-

---

उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । उक्त काल पुरुषवेदका जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व मात्र है । नपुंसकवेदका उक्त काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन छयासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यग्मिथ्यात्वकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है ।

नारकायुकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अधिक आवलीसे हीन दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है । देवायुकी उक्त प्ररूपणा नारकआयुके समान है । मनुष्यआयुकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम प्रमाण है । तिर्यंचआयुकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यतः एक समय अधिक आवलीसे हीन क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन तीन पल्योपम प्रमाण है ।

नरकगति और देवगति नामकर्मोंकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे दस हजार वर्ष और उत्कर्षतः तेतीस सागरोपम प्रमाण है तिर्यंचगति और मनुगति नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तथा पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । एकेन्द्रियजाति

---

१ ताप्रतौ 'समयाहियावलिऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'समयाहियावलियूणाणितिण्णि पलिदोवमाणि' इति पाठः ।

ब्भहियाणि। एइंदियजादिणामाए अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादीणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णवरि पंचिंदियजादिणामाए संखेज्जाणि सागरोवमाणि।

ओरालियसरीरणामाए अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। आहारसरीरणामाए जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। तिण्णमंगोवंगाणमणुक्कस्सभंगो। पंचसंघाद-पंचबंधणाणं पि[1] सग-सगसरीरभंगो। समचउरससंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं। हुंडसंठाणणामाए जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। सेसाणं संठाणाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं। वज्जरिसहवइरणारायण-णामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहि-याणि। सेसाणं संघडणाणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण

नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है। विशेष इतना है कि पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी उक्त उदीरणाका काल उत्कर्षसे संख्यात सागरोपम प्रमाण है।

औदारिकशरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है। आहार-शरीर नामकर्मकी अजघन्य स्थिति उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। तीन आंगोपांग नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति उदीरणाका काल उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके कालके समान है। पांच संघातों और पांच बन्धनोंकी भी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल अपने अपने शरीरनामकर्मके समान है। समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है। हुण्डक-संस्थान नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। शेष संस्थानोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है। वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन नामकर्मकी अज-घन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। शेष संहननोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय

[1] मप्रतिपाठोऽयम्। काप्रतौ 'पंचसंघादपंचसंघडणाणं पि', ताप्रतौ 'पंचसंघाद-पंचसंघडणाणं पि (पंचबंधण-पंचसंघादाणं पि)' इति पाठः।

पुव्वकोडिपुधत्तं ।

णिरयगइ-देवगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो[1] जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए वत्तव्वं । णवरि उक्कस्सेण तिण्णि समया । उवघादणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । परघादणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं परघादभंगो । तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि । थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीराणं अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण थावरणामाए असंखेज्जा लोगा, बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बे-सागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, पत्तेय-साहारणाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । जसकित्ति-सुभगादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं । अजसगित्ति-दुभग-अणादेज्जणामाणं[2] जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण अजसगित्तीए

और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाके कालकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार है । विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट काल तीन समय प्रमाण है । उपघात नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है । परघात नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर; इनकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाकी प्ररूपणा परघात नामकर्मके समान है । त्रस नामकर्मकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है । स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उत्कर्षसे स्थावर नामकर्मका असंख्यात लोक, बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका साधिक दो हजार सागरोपम, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रत्येक व साधारण शरीरनामकर्मोंका उपर्युक्त काल अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है । अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेय नामकर्मोंकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक

१ काप्रतौ 'णामाणं ज० कालो', ताप्रतौ 'णामाणं कालो' इति पाठः । २ प्रत्योरुभयोरेव '-णामाए' इति पाठः ।

असंखेज्जा लोगा, सेसाणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तित्थयरणामाए जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। णीचागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। उच्चागोदस्स जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं वा, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं।

दंसणावरणीयपंचयस्स जहण्ण-अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। बारसकसाय-भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणकालो अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। आदावुज्जोवाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अजहण्णट्ठिदिउदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण[1] आदावणामाए बावीसं वाससहस्साणि देसूणाणि, उज्जोवणामाए तिण्णि पलिदोवमसाणि देसूणाणि। एवं जहण्णट्ठिदिउदीरणा समत्ता।

अंतराणुगमेण उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं उच्चदे। तं जहा— पंचण्णं णाणावरणीयाणं छण्णं दंसणावरणीयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं

समय है। उक्त काल उत्कर्षसे अयशकीर्तिका असंख्यात लोक तथा शेष दोका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। तीर्थंकर नामकर्मकी अजघन्य स्थितिकी उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है। नीचगोत्रकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। उच्चगोत्रकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अथवा अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है।

निद्रा आदिक पांच दर्शनावरणप्रकृतियोंकी जघन्य व अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। बारह कषाय, भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल और अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। आतप व उद्योतकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उनकी अजघन्य स्थिति-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है। उक्त काल उत्कर्षसे आतप नामकर्मका कुछ कम बाईस हजार वर्ष तथा उद्योत नामकर्मका कुछ कम तीन पल्योपम प्रमाण है। इस प्रकार जघन्य स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई।

अन्तरानुगमके द्वारा उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरका कथन करते हैं। यथा— पांच ज्ञानावरण और छह दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तरकाल कितना है? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। स्त्यानगृद्धि आदि तीन दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका

---

[1] ताप्रतौ [उक्क०-] इति पाठः।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदि-उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। सादा-सादवेदणीयाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एग-समओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि छम्मासा।

मिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठि-सागरोवमाणि देसूणाणि। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं च, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। चदुण्णं संजलणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जह-ण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अणंताणुबंधिचउक्कस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदि-उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोमाणि देसूणाणि। अट्ठकसायाण-मुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है। साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काल है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे सातावेदनीयका साधिक तेतीस सागरोपम तथा असातावेदनीयका छह मास प्रमाण होता है।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे कुछ कम दो छयासठ सागरोपम प्रमाण होता है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे अर्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्पसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। चार संज्वलन कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे कुछ कम दो छयासठ सागरोपम प्रमाण होता है। आठ कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर

अणुकस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। अरदि-सोग-भय-दुगुंछ-णवुंसयवेदाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंत-कालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा अंतोमुहुत्तं, णवुंसयवेदस्स सागरोवमसदपुधत्तं। इत्थिवेद-पुरिसवेद-हस्स-रदीण-मुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णवरि हस्स-रदीणं तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि।

मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगावलिया। उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं, मणुस्साउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णिरयाउअस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाणि मासपुधत्तेण-ब्भहियाणि, मासपुधत्तादो हेट्ठा उक्कस्सणिरयाउअस्स[1] बंधाभावादो; उक्कस्सेण अणंतकालम-संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुकस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण

जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र होता है। अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अरति व शोकका छह मास तथा भय और जुगुप्साका अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। नपुंसकवेदकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका यह अन्तर उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है। स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य व रतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। विशेष इतना है कि उक्त अन्तर हास्य और रतिका उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है।

मनुष्य व तिर्यंच आयुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक तीन पल्योपम और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक आवली मात्र होता है। उत्कर्षसे वह तिर्यंच आयुका सागरोपमशतपृथक्त्व और मनुष्यायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। नारकायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे मासपृथक्त्वसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है, क्योंकि [ऐसे जीवके तिर्यंच होनेपर] मासपृथक्त्वसे नीचे उत्कृष्ट नारकायुका बन्ध सम्भव नहीं है। उक्त-अन्तर उसका उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्तकाल प्रमाण होता है। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे वह एकेन्द्रियकी स्थितिके

१ काप्रतौ 'णिरयाउअजीवस्स', ताप्रतौ 'णिरयाउअ [जीव] स्स' इति पाठः।

एइंदियट्ठिदी। देवाउअस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

णिरयगइ-तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, णिरयगईए सत्तारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि वा जहण्णंतरं। उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण जहाकमेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा सागरोवमसदपुधत्तं। देवगइ-णामाए उक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। मणुसगइणामाए उक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एइंदिय-बीइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दस-वाससहस्साणि सादिरेयाणि अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णवरि एइंदियजादिणामाए अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं बेसागरोवम-सहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। पंचिंदियजादिणामाए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं

बराबर होता है। देवायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है।

नरकगति और तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है। अथवा, नरकगतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका जघन्य अन्तर साधिक सत्तरह सागरोपम प्रमाण होता है। उक्त दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्तकाल और सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है। देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्तकाल मात्र होता है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतु-रिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय जातिनामकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण होता है। पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्त-

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण दोण्णं पि पमाणमणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

ओरालियसरीरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि । वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । आहारसरीरस्स उक्कस्स-अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । तेजा-कम्मइयसरीराणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । जहा सरीरणामाणं तहा तेसिमंगोवंग-बंधण-संघादाणं पि वत्तव्वं । णवरि ओरालियअंगोवंगअणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं कम्मइयसरीर-एइंदियट्ठिदी ।

छण्णं संठाणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ । णवरि हुंडसंठाणस्स

मुहूर्त है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है । उत्कर्षसे उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा इन दोनोंके ही अन्तरका प्रमाण असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल है ।

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काल मात्र होता है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । जैसे शरीरनामकर्मोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंके अन्तरकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके आंगोपांग, बन्धन और संघात नामकर्मोंकी भी उक्त दोनों उदीरणाओंके अन्तरकी प्ररूपणा करनी चाहिए । विशेष इतना है कि औदारिकशरीर आंगोपांगकी अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर कार्मणशरीर अर्थात् कर्मणकाययोगके दो समय अधिक एकेन्द्रियकी कायस्थिति प्रमाण होता है ।

छह संस्थानोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है । विशेष इतना है कि हुण्डकसंस्थानका उक्त अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है । उत्कर्षसे छहों

अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं सागरोवमसदं सादिरेयं । छण्णं संघडणाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ । णवरि असंपत्तसेवट्टसंघडणस्स दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि । उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा-पोग्गलपरियट्टा ।

वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुहपंचय-णिमिण-णीचागोदंतराइयाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-सुह-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणंतराइय-उवघाद-परघाद-उस्सासाणमंतोमुहुत्तं, अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सर-तसाणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, उज्जोव-बादरणामाणमसंखेज्जा लोगा, पज्जत्तस्स अंतोमुहुत्तं, पत्तेयसरीरस्स अड्ढाइज्जा पोग्गलपरियट्टा, दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं सागरोवमसदपुधत्तं ।

तिण्णमाणुपुव्वीणं जहा गदिणामाणं तहा वत्तव्वं । णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणु-

---

संस्थानोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर साधिक सौ सागरोपम प्रमाण होता है। छह संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है। विशेष इतना है कि असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है। उत्कर्षसे छहों संहननोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है।

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभादिक पांच, निर्माण, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है। उत्कर्षसे वह वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, शुभ, सुस्वर, आदेय, निर्माण, अन्तराय, उपघात, परघात और उच्छ्वासका अन्तर्मुहूर्त मात्र; अप्रशस्तविहायोगति, दुस्वर और त्रसका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; उद्योत और बादर नामकर्मोंका असंख्यात लोक, पर्याप्तका अन्तर्मुहूर्त, प्रत्येकशरीरका अढ़ाई पुद्गलपरिवर्तन; तथा दुर्भग अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रका सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है।

तीन आनुपूर्वियोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरका कथन गतिनामकर्मोंके समान करना चाहिये। विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी अनुत्कृष्ट

पुव्वीए अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि त्ति वत्तव्वं। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णमंतोमुहुत्तं, उक्कस्सट्ठिदिं बंधिदूण पडिभग्गो होदूण मणुस्सेसुप्पज्जिय मणुस्साणुपुव्वीए उक्कस्सट्ठिदिं वेदिय तदो अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं समाणिय गब्भे चेव उक्कस्ससंकिलेसं गंतूण पुणो तदुक्कस्सट्ठिदिं कादूण मणुस्सेसुप्पणस्स तदुवलंभादो। णेदमसिद्धं, सत्तमाए पुढवीए उप्पज्जंतस्स मणुस्सेसुप्पत्तिं पडि विरोहाभावदो। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं दुसमऊणं[1] उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। णवरि आदावस्स दसवस्ससहस्साणि सादिरेयाणि। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। णवरि साहारणसरीरस्स एगसमओ। उक्कस्सेण आदाव-साहारणसरीराणं जहाकमेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा असंखेज्जा लोगा,

---

स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे तीन समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र होता है, तथा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है, ऐसा कहना चाहिये। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर और प्रतिभग्न होकर मनुष्योंमें उत्पन्न हो मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी उत्कृष्ट स्थितिका वेदन करके तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा पर्याप्तिको पूर्ण कर गर्भमें ही उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर फिरसे उसकी उत्कृष्ट स्थितिको करके मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवके उपर्युक्त अन्तर पाया जाता है। यह असिद्ध भी नहीं, क्योंकि, जो जीव सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाला है उसके मनुष्योंमें उत्पन्न होनेका कोई विरोध नहीं है। उसका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे दो समय कम क्षुद्रभवग्रकण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है।

आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। विशेष इतना है कि आतप नामकर्मका वह अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष प्रमाण होता है। उन सबकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। उनकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। विशेष इतना है कि साधारणशरीर नामकर्मकी अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका वह अन्तर एक समय मात्र होता है। उत्कर्षसे वह अन्तर आतप और साधारणशरीर नामकर्मका यथाक्रमसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन और असंख्यात लोक, सूक्ष्म नामकर्मका अंगुलके

---

१ काप्रतौ 'दुसमऊणाणं', ताप्रतौ 'दुसमउ [णा] णं'।

सुहुमस्स अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, अपज्जत्तस्स सागरोवमसहस्सं सादिरेगं। थावरस्स एइंदियभंगो। जहा पंचण्णं संठाणाणं तहा पसत्थविहायगइ-उच्चागोद-सुहपंचयाणं[1]। णवरि उच्चागोदउक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। तित्थयरस्स उक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। एवमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणंतरं समत्तं।

जहण्णए पयदं — पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-आहारसरीर-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। णिद्दा-पयलाणं पि जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि त्ति एत्थ ण परूविदं। कुदो? एदस्साइरियस्स उवदेसेण खीणकसायम्हि जहण्णट्ठिदिउदीरणाभावादो। एसिं[2] णामपयडीणं सजोगिचरिमसमए जहण्णट्ठिदिउदीरणा तासिं पि अंतरं णत्थि। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा।

मिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। सम्मत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं णत्थि। उवसामगं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

असंख्यातवें भाग, तथा अपर्याप्त नामकर्मका साधिक एक हजार सागरोपम प्रमाण होता है। स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा एकेन्द्रियजाति नामकर्मके समान है। जैसे पांच संस्थानोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही प्रशस्त विहायोगति, उच्चगोत्र तथा शुभ आदि पांच प्रकृतियोंके भी उक्त अन्तरकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका वह अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाओंका अन्तर नहीं होता। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणाका अन्तर समाप्त हुआ।

जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर अधिकारप्राप्त है — पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, आहारशरीर, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। निद्रा और प्रचलाकी भी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता, यह यहां नहीं कहा गया है; क्योंकि, इन आचार्यके उपदेशसे क्षीणकषाय गुणस्थानमें इन दोनोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा नहीं होती। जिन नाम प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें होती है उनकी भी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। निद्रा आदि पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है।

मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता। परन्तु उपशामककी अपेक्षा उसका उक्त अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है। इन तीनों ही प्रकृतियों-

१ ताप्रतौ 'सुह-पंचंतराइयाणं' इति पाठः। २ काप्रतौ 'एदासिं' इति पाठः।

उक्कस्सेण तिण्णं पि जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरमुवड्ढपोग्गलपरियट्टं । बारसण्णं कसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा । सादा-साद-हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं[1] जहण्णेण पलिदोवमस असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । भय-दुगुंछाणं बारसकसायभंगो । तिण्णं वेदाणं चदुण्णं सजलणाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं ।

देव-णिरयाउआणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समऊणं । उक्कस्सेण मणुस्साउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, तिरिक्खाउअस्स सागरोवमसदपुधत्तं ।

तिण्णं गइणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । मणुसगईए णत्थि अंतरं, सजोगिचरिमसमए जहण्णट्ठिदिउदीरण-दंसणादो । वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । तिण्णं सरीराणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णुक्कस्सेण णत्थि अंतरं । एवं दोण्णमंगोवंगणामाणं । वेउव्वियसरीरअंगोवंगस्स

की जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर उत्कर्पसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण और उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा बारह कषायोंके समान है। तीन वेदों और चार संज्वलन कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है।

देवायु और नारकायुकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। मनुष्यायु और तिर्यंचआयुकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है। उत्कर्षसे उक्त अन्तर मनुष्यायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण तथा तिर्यंचआयुका सागरोपम शतपृथक्त्व प्रमाण होता है।

तीन गतिनामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण तथा उत्कर्षसे वह अनन्त काल प्रमाण होता है। मनुष्यगति नामककर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, जघन्य स्थितिकी उदीरणा सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें देखी जाती है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है। तीन शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा अन्तर जघन्य व उत्कर्षसे होता ही नहीं है। इसी प्रकारसे दो आंगोपांग नामकर्मोंके उक्त अन्तरका कथन करना चाहिए। वैक्रियिक-

१ ताप्रतौ 'हस्स-रदि-सोगाणं' इति पाठः ।

देवगइभंगो । पंचसरीरबंधण-संघादाणं पंचसरीरभंगो। एइंदियजादिणामाए जहण्णट्ठिदि-उदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-जादिणामाणं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । पंचिंदियजादिणामाए णत्थि अंतरं । छसंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणं च णत्थि अंतरं । पंचण्णं संघडणाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं ।

णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणंतरं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अणंतकालं । आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालं । एवमुज्जोवणामाए । थावर-सुहुम-साहारणाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा । दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-अपज्जत्त-णीचागोदाणमसादभंगो । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो— जहण्णपदभंगविचओ उक्कस्सपदभंगविचओ

शरीरांगोपांगकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर देवगतिके समान है । पांच शरीरबन्धन और पांच शरीरसंघात नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा पांच शरीरनामकर्मोंके समान है । एकेन्द्रिय जातिनामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण होता है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है । पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर नहीं होता । छह संस्थानों और वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता है । पांच संहनन नामकर्मोंकी जघन्य स्थितिकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है ।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । आतप नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । इसी प्रकार उद्योत नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर भी समझना चाहिये । स्थावर, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है । दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, अपर्याप्त और नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकारका है— जघन्यपदभंगविचय और उत्कृष्टपद-

चेदि । तत्थ अट्ठपदं– जे उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरया ते अणुक्कस्सियाए अणुदीरया, जे अणुक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरया ते उक्कस्सियाए अणुदीरया । जे जं पयडिमुदीरेंति तेसु पयदं । अणुदीरएसु अव्ववहारो । एदमेत्थ अट्ठपदं कादूण उवरिमपरूवणा कायव्वा– पंचण्णं णाणावरणीयाणं उक्कस्सट्ठिदीए सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च । एवमणुक्कस्सियाए । णवरि तप्पडिलोमेण तिण्णि भंगा वत्तव्वा । एवं सेससव्वकम्माणं पि वत्तव्वं । णवरि सम्मामिच्छत्त-आहारदुग-आणुपुव्वीतिगाणं पादेक्कमट्ठभंगा । उक्कस्साणुक्कस्सट्ठिदिउदीरयाणं सव्वभंगसमासो सोलस १६ । एवमुक्कस्सओ णाणाजीवभंगविचओ समत्तो ।

जहण्णपदभंगविचए ताव अट्ठपदं वुच्चदे– जे जहण्णियाए उदीरया ते अजहण्णिआए ट्ठिदीए णियमा अणुदीरया, जे अजहण्णियाए उदीरया जीवा ते जहण्णियाए ट्ठिदीए णियमा अणुदीरया । एदेण अट्ठपदेण जहण्णपदभंगविचओ उच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादासदवेदणीय-दोदंसणमोहणीय-चदुसंजलण-सत्त-णोकसाय-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जेसिं णामाणं तसा जहण्णं करेंति तेसिं च कम्माणं जहण्णपदभंगविचए छच्चेव भंगा होंति । तं जहा– एदेसिं कम्माणं जहण्णट्ठिदीए सिया

भंगविचय। उनमें अर्थपद— जो जीव उत्कृष्ट स्थितिके उदीरक हैं वे अनुत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं, जो जीव अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरक होते हैं वे उत्कृष्ट स्थितिके अनुदीरक होते हैं। जो जिस प्रकृतिकी उदीरणा करते हैं वे प्रकृत हैं। अनुदीरक जीवोंका व्यवहार नहीं है। यहां इस अर्थपदको करके आगेकी प्ररूपणा करते हैं— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और एक जीव उदीरक होता है, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व बहुत जीव उदीरक होते हैं। इसी प्रकारसे उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके विषयमें भी प्ररूपणा करनी चाहिये। विशेष इतना है कि उनके विपरीत क्रमसे तीन भंगोंका कथन करना चाहिये। इसी प्रकारसे शेष दर्शनावरणादि सब कर्मोंके सम्बन्धमें प्रकृत प्ररूपणा करनी चाहिये। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्व, आहारद्विक और तीन आनुपूर्वियोंमेंसे प्रत्येकके आठ भंग कहना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट स्थितिके उदीरकोंके सब भंगोंका जोड़ सोलह (१६) होता है। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट भंगविचय समाप्त हुआ।

जघन्यपदभंगविचयके विषयमें पहिले अर्थपदका कथन करते हैं— जो जीव जघन्य स्थितिके उदीरक होते हैं वे अजघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं, तथा जो जीव अजघन्य स्थितिके उदीरक हैं वे जघन्य स्थितिके नियमसे अनुदीरक होते हैं। इस अर्थपदके अनुसार जघन्यपदभंगविचयका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, दो दर्शनमोहनीय, चार संज्वलन कषाय, सात नोकषाय, नीच व ऊंच गोत्र, पांच अन्तराय तथा जिन नामकर्मप्रकृतियोंका त्रस जीव जघन्य करते हैं उन नामकर्मप्रकृतियोंके भी जघन्यपदभंगविषयक छह ही भंग होतेहैं। वे इस प्रकारसे— इन कर्मोंकी जघन्य स्थितिके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत

सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। एवं तिण्णि भंगा ३। अजहण्णस्स वि तिण्णि चेव भंगा लब्भंति ३। एदेसिं समासो छभंगा होंति ६। पंचदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्खाउ-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणणामाणं जहण्णट्ठिदीए णियमा उदीरया अणुदीरया च अत्थि। मणुसगइ-देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणाए सोलस-सोलस भंगा। मणुस-देव-णिरयआउआणं च जहण्णट्ठिदिउदीरयाणं छ भंगा होंति। सम्मामिच्छत्त-आहारसरीराणं सोलस भंगा। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो अंतरं च णाणाजीवेहि भंगविचयादो साहेदूण वत्तव्वं। एवं कालंतरपरूवणा समत्ता।

सण्णियासो वुच्चदे—मदिणाणावरणीयस्स उक्कस्सट्ठिदिमुदीरेंतो सुदणाणावरणीय-ट्ठिदीए किमुदीरओ अणुदीरओ? णियमा उदीरओ। जदि उदीरओ किमुक्कस्सियाए ट्ठिदीए उदीरओ आहो अणुक्कस्सियाए? उक्कस्सियाए अणुक्कस्सियाए वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणा। एवं सेसतिण्णिणाणावरणीय-चउदंसणावरणीयाणं वा। पंचदंसणावरणीयाणं असादस्स च अणु-

जीव अनुदीरक और एक जीव उदीरक होता है, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत जीव उदीरक भी होते हैं। इस प्रकार तीन (३) भंग हुए। अजघन्य स्थितिके भी तीन (३) ही भंग प्राप्त होते हैं। इनके जोड़से छह (६) भंग होते हैं। पांच दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यंचआयु, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मोंकी जघन्य स्थितिके नियमसे बहुत जीव उदीरक और अनुदीरक भी होते हैं। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य स्थिति-उदीरणाके सोलह-सोलह भंग होते हैं। मनुष्यायु, देवायु और नारकायुकी जघन्य स्थितिके उदीरकोंके छह भंग होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्व और आहारकशरीरके सोलह भंग होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरकी प्ररूपणा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयसे सिद्ध करके करनी चाहिये। इस प्रकार काल और अन्तरकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है— मतिज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला जीव श्रुतज्ञानावरणीयकी स्थितिका क्या उदीरक होता है या अनुदीरक? वह नियमसे उसका उदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह क्या उत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है या अनुत्कृष्ट स्थितिका? वह उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उसके उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कम उत्कृष्ट स्थितिको आदि करके उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। इसी प्रकार शेष तीन ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके विषयमें कहना चाहिये। वह पांच दर्शनावरण और असाता वेदनीयका अनुदीरक और उदीरक भी होता है। यदि उनका उदीरक

दीरओ उदीरओ वा। जदि उदीरओ उक्कस्सियाए अणुक्कस्सियाए वा ट्ठिदीए उदीरओ। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणा। सादस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव संखेज्जगुणहीणा। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं णियमा अणुदीरओ। मिच्छत्तस्स णियमा उदीरओ[1], तं तु समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणा। सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरगो। जदि उदीरगो तं तु समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण हीणा त्ति। णवरि कसायवज्जाणं समऊणमादिं करिय पलिदोवमस्स असंखेज्जभागहीण-वीसं-सागरोवमकोडाकोडीओ त्ति। इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदीणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सट्ठिदिमुदीरेदि अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडीओ त्ति। णिरयाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरगो। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा चउट्ठाणपदिदा। मणुस-तिरिक्खाउआणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि

होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उसके उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि लेकर उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। सातावेदनीयका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर संख्यातगुणी हीन तक होती है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका वह नियमसे अनुदीरक होता है। मिथ्यात्वका नियमसे उदीरक होता है। वह उत्कृष्ट स्थितिसे एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, नपुंसक वेद, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह उनकी उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम तक होती है। विशेष इतना है कि कषायोंको छोड़कर शेष प्रकृतियोंकी एक समय कम स्थितिको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम तक स्थिति होती है। स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य व रतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम स्थितिको आदि लेकर अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक अनुत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करता है। नारकआयुका वह कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति चतुःस्थानपतित होती है। मनुष्यायु व तिर्यंचआयुका कदाचित् उदीरक और कदाचित्

१ प्रयोरुभयोरेव 'उदीरया' इति पाठः।

उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा असंखेज्जगुणहीणा। देवाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा सादिरेयअट्ठारससागरोवममादिं कादूण जाव समयाहियावलिया त्ति। णिरयगइणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। जदि अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोसागरोवमसहस्सस्स। मणुसगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव संखेज्जगुणहीणा। तिरिक्खगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतो-कोडाकोडि त्ति। देवगदिणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तूणमादिं कादूण जाव अंतोसागरोवम-सहस्सस्स। एइंदिय-पंचिंदियजादिणामाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा[1] समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[2] त्ति। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादीणं णियमा अणु-

अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे असंख्यातगुणी हीन अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। देवायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे साधिक अठारह सागरोपमको आदि लेकर एक समय अधिक आवली मात्र तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। नरकगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो वह अनुत्कृष्ट उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर हजार सागरोपमके भीतर तक होती है। मनुष्यगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उसके नियमसे अनुत्कृष्ट स्थिति होती है। यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर संख्यात-गुणी हीन तक होती है। तिर्यग्गति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक होती है। देवगति नामकर्मका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त कमको आदि लेकर हजार सागरोपमके भीतर तक होती है। एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जातिनामकर्मोंका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यह अनुत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्टकी अपेक्षा एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक होती है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय

१ ताप्रतौ 'अणुक्कस्सा' [वा]' इति पाठः। २ ताप्रतौ '-भागा' इति पाठः।

दीरओ। ओरालियसरीरस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। वेउव्वियसरीरणामाए णिरयगइभंगो। तेजा-कम्मइयसरीराणं सुदणाणावरणभंगो। पंच-संठाण-पंचसंघडणाणं सादभंगो। हुंडसंठाणस्स असादभंगो। असंपत्तसेवट्टसंघडणस्स तिरिक्खभंगो। णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीए[1] सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समयूणमादिं कादूण जाव पल्लस्स असंखेज्जदिभागो ऊणो त्ति। एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए। मणुसगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वीणमणुदीरओ। उवघाद-परघाद-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणमसादभंगो। णवरि बादर-पज्जत्ताणं णियमा उदीरओ। उज्जोवणामाए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा[2]। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडीए। आदावस्स अणुदीरओ। पसत्थविहायगदि-थिर-सुभ-सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं सादभंगो। णवरि थिर-

जातिनामकर्मोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। औदारिकशरीरका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। उत्कृष्ट स्थितिकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक होती है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मोंको प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है। पांच संस्थानों और पांच संहननोंकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। हुण्डकसंस्थानकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। नरकगति-प्रायोग्यानुपूर्वीका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्टका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा यह अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक कम होती है। इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-पूर्वीकी प्ररूपणा समझना चाहिये। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका वह अनुदीरक होता है। उपघात, परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर, इनके संनिकर्षकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि वह बादर और पर्याप्तका नियमसे उदीरक होता है। उद्योत नामकर्मका वह कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक होती है। वह आतप नामकर्मका अनुदीरक होता है। प्रशस्त विहायोगति, थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि स्थिर और शुभका वह नियमसे उदीरक होता है। अस्थिर,

१ उभयोरेव प्रत्योः 'णिरयगइदेवाणुपुव्वीए' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'वा' इत्येतपदं नास्ति।

सुभाणं णियमा उदीरओ । अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाणं असादभंगो । णवरि अथिर-असुहाणं णियमा उदीरओ । अगुरुअलहुअ-णिमिणाणं सुदणाणावरणभंगो । अपज्जत्त-सुहुम-साहारणाणमणुदीरओ । वण्ण-गंध-रस-फासाणं सुदणाणावरणभंगो । उच्चागोदस्स सादभंगो । एवमाभिणिबोहियणाणावरणीयस्स णिरोहणं काऊण परूवणा कदा । एवं सव्वासिं धुवबंधपयडीणं कायव्वं ।

एत्तो समासेण कासिं पि पयडीणं सण्णियासं वत्तइस्सामो । तं जहा– णाणावरणीयस्स णियमा उदीरओ । उदीरेंतो वि णियमा अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणं[1] त्ति । एवं सव्वासिं धुवबंधपयडीणं वत्तव्वं । हस्स-रदि-इत्थि-पुरिसवेदाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति । णवुंसयवेद-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा । उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूण-वीसंसागरोवमकोडाकोडीओ त्ति । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि

अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी यह संनिकर्षप्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि अस्थिर और अशुभका नियमसे उदीरक होता है। अगुरुलघु और निर्माणके संनिकर्षकी प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है। अपर्याप्त, सूक्ष्म और साधारणका अनुदीरक होता है। वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शकी यह प्ररूपणा श्रुतज्ञानावरणके समान है। उच्चगोत्रकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। इस प्रकार आभिनिबोधिकज्ञानावरणीयकी विवक्षा करके यह संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है। इसी प्रकारसे सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी विवक्षा करके संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये।

यहां संक्षेपसे कुछ प्रकृतियोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है– [सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिकी उदीरणा करनेवाला] ज्ञानावरणीयका नियमसे उदीरक होता है। उदीरक होकर भी वह उत्कृष्टसे एक समय कमको आदि करके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंके विषयमें कहना चाहिये। हास्य, रति, स्त्रीवेद और पुरुषवेदका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट स्थिति एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक होती है। नपुंसकवेद, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि करके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक होती है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और

१ काप्रतौ 'भागेणूणं' इति पाठः।

उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। उक्कस्सादो अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव पलिदोव-मस्स असंखेज्जदिभागेणूण-चत्तालीसं-सागरोवमकोडाकोडीओ त्ति। णिरयाउअस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा[1] अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तमादिं कादूण जाव समयाहियावलिया त्ति। मणुस-तिरिक्खाउआणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा असंखेज्जगुणहीणट्ठिदीए उदीरओ। देवाउअस्स सिया उदीरओ सिया[2] अणुदीरओ। जदि उदीरओ सादिरेयअट्ठारससागरोवमाणि आदिं कादूण जाव[3] [समया-हियावलिया त्ति। णिरयगइ-देवगइणामाणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा अंतोमुहुत्तमादिं कादूण जाव] सागरोवमसहस्सअंतो। मणुसगदीए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्सा अणुक्कस्सा वा। जदि अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। तिरिक्खगदीए सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ णियमा अणुक्कस्सा समऊणमादिं कादूण जाव अंतोकोडाकोडि त्ति। एवं सेसाओ वि सव्वणामपयडीओ जाणिदूण परूवेयव्वाओ। जहा सादेण सह सण्णियासो कदो तहा इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदीणं परियत्तमाणसुह-

अनुत्कृष्ट दोनों स्थितियोंका उदीरक होता है। उत्कृष्टकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट एक समय कमको आदि लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कम चालीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण तक होती है। नारकायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता हुआ अन्तर्मुहूर्तको आदि लेकर एक समय अधिक आवली मात्र अनुत्कृष्ट स्थिति तकका उदीरक होता है। मनुष्य व तिर्यंच आयुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे असंख्यातगुणी हीन स्थितिका उदीरक होता है। देवायुका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उसका उदीरक होता है तो साधिक अठारह सागरोपमोंको आदि करके एक समय अधिक आवली मात्र स्थिति तकका उदीरक होता है। नरकगति व देवगति नामकर्मोंका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे अन्तर्मुहूर्तको आदि करके हजार सागरोपमोंके भीतर तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। मनुष्यगतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट दोनोंका उदीरक होता है। यदि अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है तो उत्कृष्टसे एक समय कम स्थितिको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। तिर्यंच-गतिका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे एक समय कमको आदि करके अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम तक अनुत्कृष्ट स्थितिका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे शेष सभी नामप्रकृतियोंको जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। जिस प्रकार सातावेदनीयके साथ संनिकर्षकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य

१ ताप्रतौ 'उदीरओ [ण] णियमा' इति पाठः। २ काप्रतौ 'देवाउअस्स उदीरया सिया', ताप्रतौ 'देवा-उअस्स [सिया] उदीरया (ओ) सिया। ३ कोष्ठकस्थोऽयं पाठस्ताप्रतौ नोपलभ्यते।

णामकम्मपयडीणं च सण्णियासो कायव्वो। जहण्णपदसण्णियासो वि चिंतिय वत्तव्वो। एवं सण्णियासो समत्तो।

अप्पाबहुअं उच्चदे— सव्वत्थोवा तित्थयरुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा। मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा। देव-णिरयाउआणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। आहारसरीरस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। जट्ठिदिउदीरणा[1] विसेसाहिया। देवगदीए उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। जट्ठिदिउदीरणा[2] विसेसाहिया। मणुसगदि-उच्चागोद-जसगित्तीणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। एदासि चेव पयडीणं जट्ठिदिउदीरणा[3] विसेसाहिया। णिरयगइ-तिरिक्खगइ-चदुसरीर-अजसगित्ति-णीचागोदाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सादस्स उक्कस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सादस्स जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-पंचंतराइयाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा। एदासिं चेव जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। णवण्णं णोकसायाणमुक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। एदेसिं चेव कम्माणं जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सोलसण्हं कसायाणं उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा सरिसा त्ति[4]। एदेसिं कम्माणं जट्ठिदिउदीरणा विसेसा-

व रति तथा परिवर्तमान शुभ नामकर्म प्रकृतियोंकी मुख्यतासे भी संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये। जघन्य पदविषयक संनिकर्षकी भी विचारकर प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है— तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सबसे स्तोक है। मनुष्यायु और तिर्यंचआयुकी उत्कृष्ट स्थिति उदीरणा असंख्यातगुणी है। देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है। आहारशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है। उससे उसीकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है। उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। मनुष्यगति, उच्चगोत्र और यशकीर्तिकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इन्हीं प्रकृतियोंकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नरकगति, तिर्यंचगति, आहारकको छोड़कर शेष चार शरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है। इनकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है। इन्हींकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इन्हीं कर्मोंकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा सदृश है। इन कर्मोंकी ज-स्थिति-उदीरणा

१ प्रत्योरुभयोरेव 'जहण्णट्ठिदिउदीरणा' इति पाठः। २ काप्रतौ 'ज० ट्ठिदि-', ताप्रतौ 'जहण्णट्ठिदि०' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'जह० ट्ठिदिउदीरणा' इति पाठः। अग्रे त्वत्र काप्रतौ प्रायशः 'ज० ट्ठिदि' तथा ताप्रतौ 'जह० ट्ठिदि०' इत्येवंविधः पाठ उपलभ्यते। ४ काप्रतौ 'सरिसा होंति' इति पाठः।

हिया। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सम्मत्तस्स उकस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। मिच्छत्तस्स उकस्सिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। एवमोघुक्कस्सअप्पाबहुअं समत्तं। एवं गदियादिसु वि उक्कस्सदंडओ कायव्वो।

जहण्णप्पाबहुगं उच्चदे। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुसंजलण-तिण्णिवेद-चत्तारिआउअ-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा थोवा। जट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा। मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। वेउव्विय० जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। अजसगित्ति० विसे०। जट्ठिदि० विसे०। तिरिक्खगदि० जह० ट्ठिदि० विसे०। जट्ठिदि० विसे०। [1]णीचागोदस्स जह० ट्ठिदिउदीरणा विसे०। जट्ठिदि० विसे०। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसे०। असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया।

विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघ उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ। इसी प्रकारसे गति आदि मार्गणाओंमें भी उत्कृष्ट दण्डक करना चाहिये।

जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार संज्वलन, तीन वेद, चार आयु और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है। ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। मनुष्यगति, औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य व रतिकी जघन्य-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा

१ काप्रतौ 'णीचागोदस्स' इत्यादिवाक्यद्वयं नास्ति।

जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। बारसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव। जट्ठिदि० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। जट्ठिदि० विसेसाहिया। देवगदीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा। जट्ठिदि० विसेसाहिया। देवगदिपाओग्गाणु० विसे०। जट्ठिदि० विसेसाहिया। णिरयगइ० विसे०। जट्ठिदि० विसे०। णिरयगइपाओग्गाणु० विसे०। जट्ठिदि० विसे०। आहारदुग० संखेज्जगुणा। जट्ठिदि० विसेसाहिया। एवमोघ-जहण्णप्पाबहुअं समत्तं।

णिरयगईए सम्मत्त-मिच्छत्त-णिरयाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदिउदी० असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। वेउव्वियसरीर-णिरयगईणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदि-

विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है। बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। आहारद्विककी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघ जघन्य अल्प-बहुत्व समाप्त हुआ।

नरकगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और नारकायुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है; ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीर और नरकगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशःकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तैजस और कार्मण शरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेद-

उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पंचणाणावरण-चउदंसणावरण पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णवुंसयवेदस्स[1] जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, तेसिं चेव जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया। णिद्दा-पयलाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। एवं णिरयगइजहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

तिरिक्खगईए सम्मत्त-मिच्छत्त-तिरिक्खाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदिउदी० असंखेज्जगुणा[2]। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। जसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदिउदी० विसेसाहिया। तिरिक्खगइणामाए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। ओरालिय-

नीचकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य व रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, उन्हींकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणादण्डक समाप्त हुआ।

तिर्यंचगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और तिर्यंचआयुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक हैं। यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। औदारिक, तैजस और कार्मण

१ ताप्रतौ 'एवं णवुंसयवेदस्स' इति पाठः। २ काप्रतौ 'संखेज्जगुणा' इति पाठः।

तेजा-कम्मइयसरीराणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पुरिसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णवुंसयवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, एइंदिएसु चेव पडिवक्खबंधगद्धं गालिय जहण्णट्ठिदिउदीरणविहाणादो। पंचिंदियतिरिक्खपडिवक्खबंधगद्धाओ किण्ण गलिदाओ? णवुंसयवेदपाओग्गविसोहीए णवुंसयवेदे बज्झमाणे तट्ठिदीए बहुत्तप्पसंगादो। जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सोलसकसायाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा सरिसा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। कुदो कसायट्ठिदीदो इत्थिवेदट्ठिदीए गलिदपडिवक्खबंधगद्धाए विसेसाहियत्तं? ण, इत्थिवेदो-

---

शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थितिउदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीय जघन्य स्थितिकी-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य व रतिकी जघन्य स्थिति उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति व शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, क्योंकि, एकेन्द्रिय जीवोंमें ही प्रतिपक्षभूत प्रकृतियोंके बन्धककालको गला कर जघन्य स्थितिकी उदीरणाका विधान है।

शंका— पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें प्रतिपक्षभूत प्रकृतियोंके बन्धककाल क्यों नहीं गलते?

समाधान— कारण कि नपुंसकवेदके बन्धयोग्य विशुद्धिके द्वारा नपुंसकवेदके बांधे जानेपर चूंकि उसकी स्थितिके बहुत होनेका प्रसंग आता है, अतएव वे वहां नहीं गलते।

नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणासे उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति उदीरणा समान है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है।

शंका— कषायस्थितिकी अपेक्षा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धककालसे रहित स्त्रीवेदकी स्थिति विशेष अधिक क्यों है?

समाधान— नहीं, क्योंकि स्त्रीवेदके उदय युक्त जीवमें स्त्रीवेदके उदयके समुत्पादनार्थ

दइत्थि मणुस्सायणट्ठं इत्थिवेदविसोहीए इत्थिवेदेण सह बज्झमाणकसायाणमहियट्ठिदीदो पडिवक्खबंधगद्धाओ वि बहुत्तुवलंभादो। जट्ठिदि० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। उच्चागोदस्स जहण्णट्ठिदि-उदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। तिरिक्खेसु णीचागोदस्स चेव उदीरणा होदि त्ति सव्वत्थ परूविदं। एत्थ पुण उच्चागोदस्स वि परूवणा परूविदा, तेण पुव्वा-वरविरोहो त्ति भणिदे— ण, तिरिक्खेसु संजमासंजमं परिवालयंतेसु उच्चागोदत्तुवलंभादो। उच्चागोदे देस-सयलसंजमणिबंधणे संते मिच्छाइट्ठीसु तदभावो त्ति णासंकणिज्जं, तत्थ वि उच्चागोदजणिदसंजमजोगत्तावेक्खाए उच्चागोदत्तं पडि विरोहाभावादो। एवं तिरिक्ख-गदीए जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

तिरिक्खणीसु मिच्छत्त-तिरिक्खाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदिउदी० असंखेज्जगुणा। जसगित्तिए जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। तिरिक्खगइणा-माए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णट्ठिदि-

---

स्त्रीवेदके बन्ध योग्य विशुद्धिके द्वारा स्त्रीवेदके साथ बन्धको प्राप्त होनेवाली कषायोंकी अधिक स्थितिसे प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धककाल भी बहुत पाया जाता है।

स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणासे उसकी ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्य-ग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है।

शंका— तिर्यंचोंमें नीचगोत्रकी ही उदीरणा होती है, ऐसी प्ररूपणा सर्वत्र की गयी है। परन्तु यहां उच्चगोत्रकी भी उनमें प्ररूपणा की गयी है, अतएव इससे पूर्वापर कथनमें विरोध आता है?

समाधान— ऐसा कहनेपर उत्तर देते हैं कि इसमें पूर्वापर विरोध नहीं है, क्योंकि, संयमा-संयमको पालनेवाले तिर्यंचोंमें उच्चगोत्र पाया जाता है।

यदि उच्चगोत्रके कारण देशसंयम और सकलसंयम हैं तो फिर मिथ्यादृष्टियोंमें उसका अभाव होना चाहिये?

समधान— ऐसी आशंका करना योग्य नहीं है, क्योंकि, उनमें भी उच्चगोत्रके निमित्तसे उत्पन्न हुई संयमग्रहणकी योग्यताकी अपेक्षा उच्चगोत्रके होनेमें कोई विरोध नहीं है।

इस प्रकार तिर्यंचगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणादण्डक समाप्त हुआ।

तिर्यंच स्त्रियोंमें मिथ्यात्व और तिर्यंच आयुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। यशःकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशःकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तिर्यंचगति नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है,

उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदि-उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णिया ट्ठिदि-उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। सम्मत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। दंसणावरणपंचयस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठिदि० विसेसाहिया। वेउव्वियसरीरणामाए उच्चागोदस्स च जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी० जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ[1] समत्तो।

ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। औदारिक, तैजस और कार्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीर नामकर्म और उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

---

१ ताप्रतौ 'उदीरणसंकमो दंडओ' इति पाठः।

मणुसगदीए पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-सम्मत्त-मिच्छत्त-चदुसंजलण-तिण्णिवेदाउआणं पंचंतराइयाणं जह० ट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठि० उदी० असंखेज्ज-गुणा। मणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसगित्ति-उच्चागोदाणं जह० ट्ठिदि-उदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। अजसगत्तीए जह० ट्ठिदिउदीरणा असंखेज्ज-गुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णिया ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णिया ट्ठिदि-उदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। बारसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदि-उदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठि० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। दंसणावरणपंचयस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। आहारसरीरणामाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा संखेज्ज-गुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। एवं[1] मणुसगईए जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

मनुष्यगतिमें पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार संज्वलन, तीन वेद और आयु कर्मोंकी तथा पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है; ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। मनुष्यगति, औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर, यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असतावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी मात्र ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। आहारकशरीर नामकर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

१ ताप्रतौ 'एवं' इत्येतत्पदं नास्ति।

देवगईए सम्मत्त-मिच्छत्त-देवाउआणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठि० उदी० असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा असंखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। देवगइ-वेउव्वियसरीरणामाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। उच्चागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। जसकित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० उदी० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया। तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। पुरिसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। णिद्दा-पयलाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया।

देवगतिमें सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और देवायुकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगति और वैक्रियिकशरीर नामकर्मोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। उच्चगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तैजस और कार्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इनकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है,

देवगईए जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

असण्णीसु आउअस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा थोवा, जट्ठिदि० उदी० असंखेज्जगुणा। जसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। तिरिक्खगईए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। णीचागोदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अजसगित्तीए जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। असादस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठिदि० विसेसाहिया[1]। पुरिसवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। हस्स-रदीणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। अरदि-सोगाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। भय-दुगुंछाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। सोलसकसायाणं जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा तत्तिया चेव, जट्ठि० विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसेसाहिया। णवुंसयवेदस्स जहण्णट्ठिदिउदीरणा विसेसाहिया, जट्ठि० विसे-

---

ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। देवगतिमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

असंज्ञी जीवोंमें आयु कर्मकी जघन्य स्थिति-उदीरणा स्तोक है, ज-स्थिति-उदीरणा असंख्यातगुणी है। यशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नीचगोत्रकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। औदारिक, तैजस और कार्मण शरीरोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अयशकीर्तिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असातावेदनीयकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है; ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। हास्य और रतिकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। अरति और शोककी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। सोलह कषायोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा उतनी ही है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। स्त्रीवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक

---

१ ताप्रतौ [ज० ट्ठिदि० विसे०-] इति पाठः।

साहिया। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदीरणा संखेज्जगुणा, जट्ठि० विसेसाहिया। असण्णीसु जहण्णट्ठिदिउदीरणदंडओ समत्तो।

भुजगारउदीरणाए अट्ठपदं— अप्पदराओ ट्ठिदीओ उदीरेदूण अणंतरउवरिमसमए बहुदरासु ठिदीसु उदीरिदासु एसा भुजगारउदीरणा। बहुदराओ ट्ठिदीओ उदीरेदूण अणंतरउवरिमसमए थोवासु उदीरिदासु अप्पदरउदीरणा। जत्तियाओ ट्ठिदीओ एण्हिं उदीरिदाओ अणंतरउवरिमसमए तित्तियासु चेव उदीरिदासु एसा[1] अवट्ठिदउदीरणा। अणुदीरएण उदीरिदे भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरणाहि पुधभूदत्तादो एसा अवत्तव्व-उदीरणा[2]। एदमेत्थ अट्ठपदं। संपहि सामित्तं वुच्चदे। भुजगारउदीरओ को होदि? अण्णदरो। अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरओ को होदि? अण्णदरो। णवरि धुवियाणमवत्तव्वउदीरगो णत्थि[3]। एवं सामित्तपरूवणा गदा।

एयजीवेण कालो— पंचणाणावरणीयस्स भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि समयसहस्साणि। एइंदियस्स अप्पिदणाणावरणीयपयडीए उवरि अणप्पिदसंखेज्जसहस्सपयडिट्ठिदीणं संकमेण संकंत-

है। पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति-उदीरणा संख्यातगुणी है, ज-स्थिति-उदीरणा विशेष अधिक है। असंज्ञियोंमें जघन्य स्थिति-उदीरणा-दण्डक समाप्त हुआ।

भुजाकारउदीरणामें अर्थपद— अल्पतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह भुजाकार उदीरणा होती है। बहुतर स्थितियोंकी उदीरणा करके आगेके अनन्तर समयमें स्तोक स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर अल्पतर उदीरणा होती है। जितनी स्थितियोंकी इस समय उदीरणा की गयी है आगेके अनन्तर समयमें उतनी ही स्थितियोंकी उदीरणा करनेपर यह अवस्थित उदीरणा होती है। अनुदीरकके द्वारा उदीरणा की जानेपर यह अवक्तव्य उदीरणा कही जाती है, क्योंकि, वह भुजाकार, अल्पतर व अवस्थित उदीरणाओंसे भिन्न है। यह यहां अर्थपद हुआ। अब स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है। भुजाकार उदीरणा करनेवाला कौन होता है? अन्यतर जीव भुजाकार उदीरक होता है। अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरक कौन होता है? अन्यतर जीव उनका उदीरक होता है। विशेष इतना है कि ध्रुवोदयी प्रकृतियोंका अवक्तव्य उदीरक नहीं होता। इस प्रकार स्वामित्व प्ररूपणा समाप्त हुई।

एक जीवकी अपेक्षा काल— पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है? वह जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे संख्यात हजार समयों तक होती है। एकेन्द्रियके विवक्षित प्रकृतिस्थितिके आगे अविवक्षित संख्यात हजार प्रकृतिस्थितियोंके संक्रमसे संक्रान्त

१ काप्रतौ 'एसो' इति पाठः। २ करणोदय-संताणं पगइट्ठाणेसु सेसगतिगे य। भूयक्कारप्पयरो अवट्ठिओ तह अवत्तव्वो॥ एगादहिगे पढमो एगाईऊणगम्मि बिइओ उ। तत्तियमेत्तो तइओ पढमे समये अवत्तव्वो॥ क. प्र. ७, ५१–५२ ३ प्रत्योरुभयोरेव 'दुवियाणमवत्तव्वा उदीरगो' इति पाठः।

पयडिमेत्ता ठिदिभुजगारसमया एइंदिएसु[1] लद्धूण पुणो अप्पिदपयडीए[2] अद्धाक्खएण एक्को, संकिलेसक्खएण सव्वासु वड्ढिदासु अण्णेगो, पुणो सण्णिपंचिंदिएसुप्पण्णयस्स विग्गहगदीए असण्णिट्ठिदीए अवरो, गहिदसरीरस्स सण्णिट्ठिदीए अण्णेगो, एवं वड्ढिदट्ठिदीसु[3] कमेणुदीरिज्जमाणासु भुजगारुदीरणाए कालो संखेज्जाणि समयसहस्साणि।

चदुण्णं दंसणावरणीयाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बारस समया। तंजहा— एइंदियस्स अणप्पिदअट्ठपयडीणं जहापरिवाडीए संकमेण अट्ठ भुजगारसमया, पुणो अप्पिदपयडीए अद्धाक्खएण एक्को, संकिलेसक्खएण सव्वासु वड्ढिदासु अण्णेगो, पुणो सण्णीसुप्पण्णस्स विग्गहगदीए अवरो, गहिदसरीरस्स सण्णिट्ठिदीए अण्णेगो; एवं बारस समया। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं[4] भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण णव समया अत्थदो दस समया वा।

सादासाद-मिच्छत्ताणं भुजगारउदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि समया। सोलसण्णं कसायाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण एगूणवीस समया। णवण्णं णोकसायाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अट्ठावीससमया। अत्थदो एगूणवीस समया दीसंति।

हुई प्रकृतियोंके बराबर स्थितिभुजाकार समयोंको एकेन्द्रियोंमें प्राप्त करके पश्चात् विवक्षित प्रकृतिके अद्धाक्षयसे एक, संक्लेशक्षयसे सबके वृद्धिको प्राप्त होनेपर अन्य एक समय, पुनः संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेपर विग्रहगतिमें असंज्ञी स्थितिका अन्य एक समय, शरीरके ग्रहण कर लेनेपर संज्ञी स्थितिका अन्य एक समय, इस प्रकार वृद्धिप्राप्त स्थितियोंकी क्रमसे उदीरणा करनेपर भुजाकार उदीरणाका काल संख्यात हजार समय प्रमाण होता है।

चक्षुदर्शनावरण आदि चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे बारह समय तक होती है। वह इस प्रकारसे— एकेन्द्रियके अविवक्षित आठ प्रकृतियोंके परिपाटी अनुसार संक्रमण द्वारा आठ भुजाकार समय, पुनः विवक्षित प्रकृतिके अद्धाक्षयसे एक समय, संक्लेशक्षयसे सब प्रकृतियोंके वृद्धिगत होनेपर अन्य एक समय, पुनः संज्ञियोंमें उत्पन्न होनेपर विग्रहगतिमें एक, शरीरके ग्रहण कर लेनेपर संज्ञी स्थितिका अन्य एक समय; इस प्रकार उपर्युक्त बारह समय प्राप्त होते हैं। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे नौ समय अथवा अर्थतः दस समय होती है।

साता व असाता वेदनीय तथा मिथ्यात्वकी भुजाकार उदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है। सोलह कषायोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उन्नीस समय होती है। नौ नोकषायोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अट्ठाईस समय होती है। अथवा अर्थतः उसके उन्नीस समय दिखते हैं।

१ काप्रतौ 'समयासु एइंदिएसु', ताप्रतौ 'समया [सु] एइंदिएसु' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणप्पिदपयडीए' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'वड्ढिदेसु ट्ठिदीसु' इति पाठः। ४ काप्रतौ 'दंसाणावरणीय', ताप्रतौ 'दंसणावरणीय(याणं)' इति पाठः।

आउआणं भुजगारउदीरणा णत्थि। णामाणमण्णदरपयडीए भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि समयसहस्साणि। उच्चागोद-णीचागोदाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पंच समया। अत्थदो चत्तारि समया दीसंति। पंचण्णमंतराइयाणं भुजगारउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अट्ठ समया।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीयाणं णामम्हि धुवोदयपयडीणं पंचंतराइयाणं च अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। पंचण्णं दंसणावरणीयाणमप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सादस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासे समऊणे। असादस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सम्मादिट्ठीसु असंजदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेसिं पुव्वुत्तसव्वकम्माणमवट्ठियस्स कालो जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

मिच्छत्तअप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सम्मत्तस्स भुजगारो अवट्ठिदो जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ। अप्पदरउदीरणा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,

---

आयु कर्मोंकी भुजाकार उदीरणा नहीं होती। नाम कर्मकी प्रकृतियोंमें अन्यतर प्रकृतिकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात हजार समय तक होती है। उच्चगोत्र और नीचगोत्रकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पांच समय होती है। अर्थतः उसके चार समय दिखते हैं। पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय होती है।

पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, नामकर्मकी ध्रुवोदयी प्रकृतियों तथा पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छथासठ सागरोपम काल तक होती है। पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक होती है। सातावेदनीयकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम छह मास तक होती है। असाता वेदनीयकी अल्पतर उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंयत सम्यग्दृष्टियोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। पूर्वोक्त इन सब कर्मोंकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है।

मिथ्यात्वकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी भुजाकार और अवस्थित उदीरणाओंका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। उसकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे

उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अवट्ठिदउदीरणाओ णत्थि । अप्पदरउदीरणा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

सोलसण्णं कसायाणं भय-दुगुंछाणं च अप्पदरउदीरणा अवट्ठिदउदीरणा च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं । जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं । णवुंसयवेदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि । अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । इत्थिवेदस्स अप्पदरउदरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण पणवण्णपलिदोवमाणि सादिरेयाणि । अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । पुरिसवेदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोवमाणि सदिरेयाणि । अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कुदो ? एदासु पयडीसु बज्झमाणासु कसायअवट्ठिदबंधस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो । आउआणमप्पदरउदीरणा जहण्णेण सग-सगजहण्णट्ठिदी समयाहियावलियाए ऊणा । णवरि मणुस्साउअस्स एयो[1]समयो । उक्कस्सेण सग-सगउक्कस्सट्ठिदी समयाहियावलियाए हीणा ।

अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम छयासठ सागरोपम प्रमाण है । सम्यग्मिथ्यात्वकी भुजाकार और अवस्थित उदीरणा नहीं होती । उसकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

सोलह कषायोंकी तथा भय व जुगुप्साकी अल्पतर उदीरणा और अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । जिस प्रकार असातावेदनीयकी इन प्रकृत उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार अरति व शोककी उक्त उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा करना चाहिये । जिस प्रकार सातावेदनीयकी उन उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार हास्य व रतिकी भी उन उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा करना चाहिये । नपुंसकवेदकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । स्त्रीवेदकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक पचवन पल्य प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । पुरुषवेदकी अल्पतर उदीरणा काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इसका कारण यह है कि इन प्रकृतियोंके बंधनेपर कषायके अवस्थित बन्धका अन्तर्मुहूर्त मात्र काल पाया जाता है । आयु कर्मोंकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय अधिक आवलीसे हीन अपनी अपनी जघन्य स्थिति है । विशेष इतना है कि मनुष्यायुकी उक्त उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उनकी उपर्युक्त उदीरणाका काल उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण है ।

१ काप्रतौ 'खयो' इति पाटः ।

णिरयगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि। अवट्ठियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण समऊणावलिया। तिरिक्खगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। मणुसगईए अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। देवगईए णिरयगइभंगो। सेसाणं[1] पि णामाणं जाणिदूण णेयव्वं जाव (?)।

णीचागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। उच्चागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवमेयजीवेण कालो समत्तो।

एयजीवेण अंतरं कालादो साधेदूण भाणियव्वं। णाणाजीवेहि भंगविचओ— जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं। अवेदएहि अव्ववहारो। णाणावरणीयपंचयस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। सव्वाओ पयडीओ णाणाजीवेहि एवं जाणि-

नरकगति नामकर्मकी अल्पर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम आवली प्रमाण है। तिर्यग्गति नामकर्मकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। मनुष्यगतिकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्य प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। देवगतिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। शेष नामकर्मोंकी भी उक्त उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये।

नीचगोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। ऊंच गोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम दो छ्यासठ सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा कालसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— जो जीव जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे प्रकृत हैं। अवेदकोंका व्यवहार नहीं है। पांच ज्ञानावरणीयके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। इसी प्रकारसे

१ काप्रतौ 'देवगईए णिरयगई सेसाणं', ताप्रतौ 'देवगईए णिरयगईए सेसाणं' इति पाठः।

दूण भाणिदव्वाओ। णाणाजीवेहि कालो अंतरं च जाणिदूण भाणिदव्वं।

अप्पाबहुगं— सव्वत्थोवा णाणावरणपंचयस्स भुजगारउदीरया जीवा, अवट्ठिदउदीरया संखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। एवं चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं धुवोदयणामपयडीणं च वत्तव्वं। सव्वत्थोवा णिद्दाए भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। एवं सेसचदुण्णं दंसणावरणीयाणं। सादासादाणं णिद्दाभंगो।

मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स[1] सव्वत्थोवा अवट्ठिदउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। सोलसण्हं कसायाणमण्णदरस्स कसायस्स सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। एवं हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं। इत्थि-पुरिसवेदाणं सव्वत्थोवा

सब प्रकृतियोंके विषयमें नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन जानकर करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका कथन भी जानकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्व— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके भुजाकार उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं, उनसे अवस्थित उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय और ध्रुवोदयी नामप्रकृतियोंके विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। निद्रा दर्शनावरणके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, उनसे अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिये। साता व असाता वेदनीयकी प्रकृत अल्पबहुत्वप्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है।

मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक उनसे अनन्तगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सम्यक्त्वके अवस्थित-उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकर उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सोलह कषायोंमें अन्यतर कषायके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर-उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साके विषयमें इस अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। स्त्री और पुरुष वेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं,

---

१ ताप्रतौ 'अवत्तव्वउदीरया, [अप्पदरउदीरया] असंखे० गुणा, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स' इति पाठः।

अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदर-उदीरया संखेज्जगुणा। णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा।

आउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। णिरय-गइणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया[1] असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। मणुसगइणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्व-उदीरया, भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। जहा णवुंसयवेदस्स तहा तिरिक्खगइणामाए। देवगईए णिरयगइभंगो। ओरालियसरीरणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। वेउव्वियसरीरणामाए देवगदिभंगो। संठाण-संघडणाणं ओरालियसरीरभंगो।

णिरयाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्ज-गुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया। एवं मणुस-देवाणु-पुव्वीणं। तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। उवघाद-

भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनन्तगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं।

आयु कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। नरकगति नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। जैसे नपुंसकवेदके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही तिर्यंचगति नामकर्मके विषयमें भी उसे करना चाहिये। देवगतिकी प्रकृत प्ररूपणा नरकगतिके समान है। औदारिकशरीर नामकर्मके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी यह प्ररूपणा देवगतिके समान है। संस्थानों और संहननोंकी यह प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकारसे मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके विषयमें प्रकृत प्ररूपणा करना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं।

१ ताप्रतौ 'सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगार० असंखे० गुणा, अवट्टिद० इति पाठः।

परघाद-उस्सास - आदावुज्जोव - पसत्थापसत्थविहायगदि -तस-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-सुहदुहपंचय-उच्चागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। थावर-णीचागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्ठिद-उदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। सेसअवुत्तपयडीणं पि जाणिऊण भाणियव्वं। एवं भुजगारो समत्तो।

पदणिक्खेवो वुच्चदे— सव्वत्थोवा उक्कस्सिया हाणी। कुदो? उक्कस्सट्ठिदिखंडय-ग्गहणादो। उक्कसिया वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहिया। कुदो? उक्कस्सट्ठिदिखंडयादो ट्ठिदिबंधुक्कस्सवड्ढीए विसेसाहियदंसादो। जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च तिण्णि वि तुल्लाणि, एगट्ठिदिपमाणत्तादो। वड्ढि-उदीरणाए सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च जाणिदूण कायव्वं।

अप्पाबहुअं कीरदे। तं जहा— सव्वत्थोवा णाणावरणीयस्स असंखेज्जगुणहाणि-उदीरया। संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा[1]। अव-

---

उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुह-दुहपंचक (सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और यशकीर्ति) और ऊंच गोत्र; इनके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। स्थावर और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनन्तगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। यहां जिन शेष प्रकृतियोंका उल्लेख नहीं किया गया है उनके विषयमें भी उपर्युक्त अल्पबहुत्वका जानकर कथन करना चाहिये। इस प्रकार भुजाकार समाप्त हुआ।

पदनिक्षेपका कथन करते हैं— उत्कृष्ट हानि सबसे स्तोक है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थिति-काण्डकका ग्रहण है। उत्कृष्ट वृद्धि व अवस्थान विशेष अधिक हैं, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिकाण्डककी अपेक्षा स्थितिबन्धकी उत्कृष्ट वृद्धि विशेष अधिक देखी जाती है। जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान ये तीनों ही समान हैं; क्योंकि, वे एक स्थिति प्रमाण हैं। वृद्धिउदीरणाके स्वामित्व, काल, अन्तर और नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल तथा अन्तरका कथन जानकर करना चाहिये।

अल्पबहुत्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयकी असंख्यात-गुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यात-भागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यात-भागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके

---

१ मप्रतौ 'संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखे० गुणा संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा असंखेज्जभागवड्ढि-उदीरया असंखेज्जगुणा' इति पाठः।

ट्ठिदउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। एवं पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं धुवउदीरणसव्वणामपयडीणं च वत्तव्वं।

णिद्दाए वेदओ ट्ठिदिघादं ण करेदि। णिद्दाए वेदओ ट्ठिदिबंधं बंधदि। असादस्स चउट्ठाणियजवमज्झादो संखेज्जगुणहीणं अंतोकोडाकोडीए हेट्ठदो बंधंतो वि सादस्स तिट्ठाणिय-चदुट्ठाणियाणि [ण] बंधदि, दुट्ठाणियाणि चेव बंधदि। एदं[1] णिद्दाट्ठिदिउदीरण-वड्ढिअप्पाबहुअस्स साहणं भणिदं। अप्पाबहुअं। तं जहा— सव्वत्थोवा णिद्दाए संखेज्जभागवड्ढिउदीरया। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभाग-वड्ढिउदीरया अणतगुणा। अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। एवं पयला-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं पि वत्तव्वं।

सव्वत्थोवा सादस्स संखेज्जगुणहाणिउदीरया। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्ज-गुणा। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा। अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। असाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सादभंगो। णवरि चदुसंजलणाणमसंखेज्जगुणवड्ढि-हाणिउदीरया

उदीरक संख्यातगुणे हैं। इस प्रकार पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय और ध्रुव उदीरणावाली सब नामप्रकृतियोंके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये।

निद्राका वेदक स्थितिघातको नहीं करता है। निद्राका वेदक स्थितिबन्धको बांधता है। वह असातावेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यसे संख्यातगुणे हीन अन्तःकोड़ाकोड़िके नीचे स्थितिबन्ध-को बांधता हुआ भी सातावेदनीयके त्रिस्थानिक व चतुःस्थानिक स्थितिबन्धको [नहीं] बांधता है, किंतु उसके द्विस्थानिकको ही बांधता है। यह निद्राकी स्थिति-उदीरणावृद्धिके अल्पबहुत्वका साधन कहा है। उसका अल्पबहुत्व कहा जाता है। यथा— निद्राके संख्यातभागवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानि-उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकारसे प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिके विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिये।

सातावेदनीयके संख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यात-गुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं। अव-स्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी यह प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि चार संज्वलन कषायोंके असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि-

---

१ ताप्रतौ 'एवं' इति पाठः।

वि अत्थि। ते एत्थ ण विवक्खिया।

मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया। संखेज्जगुणा (?)। संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया। असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। एदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागछेदणएहि ओवट्टिदसम्मत्तपवेसणरासिपमाणं। संखेज्जगुणहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। कुदो? आवलियाए असंखेज्जदिभागच्छेदणएहि ओवट्टिदसम्मत्तपवेसणरासिपमाणत्तादो। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। कुदो? सम्मत्तपवेसणरासिग्गहणादो। संखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया णाम एगसमयपवेसया, संखेज्जभागहाणिउदीरया पुण सव्वो पविट्ठरासी अंतोमुहुत्तस्संतो संखेज्जवारं संखेज्जभागवड्ढिखंडयघादओ, तेण संखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा।

उदीरक भी होते हैं। परन्तु उनकी यहां विवक्षा नहीं की गयी है।

मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थित-उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। सम्यक्त्व प्रकृतिके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यात-भागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। ये पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशि प्रमाण हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशि प्रमाण हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहां सम्यक्त्व-में प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशिका ग्रहण है। संख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। इसका कारण यह है कि अवक्तव्यउदीरक एक समयमें प्रविष्ट होनेवाले जीव हैं, परन्तु संख्यात-भागहानिउदीरक अन्तर्मुहूर्तके भीतर संख्यात वार संख्यातभागवृद्धिकाण्डकोंकी घातक सब प्रविष्ट राशि है। इसीलिये संख्यातभागहानिउदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानि-उदीरक असंख्यातगुणे हैं

इत्थिवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया[1]। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। पुरिसवेदस्स इत्थिवेदभंगो। णवरि असंखेज्जगुणवड्ढिउदीरया वि अत्थि, ते एत्थ ण विवक्खिया। गंथाहिप्पाओ जाणिय वत्तव्वो। णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया। संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा। कुदो? असण्णिपंचिंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियेसु सण्णिपंचिंदियेसु च संखेज्जभागहाणीए संभवुवलंभादो। संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए उदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा।

देव-णिरयाउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया। असंखेज्जभागहाणिउदीरया असंखेज्जगुणा। तिरिक्ख-मणुस्साउआणं चत्तारि पदाणि, तेसिं जाणिय वत्तव्वं। णिरयगईए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा[2]। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्ज-

स्त्रीवेदके असंख्यातगुणहानि उदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदकी यह प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है। विशेष इतना है कि उसके असंख्यातगुणवृद्धिउदीरक भी हैं। किन्तु उनकी विवक्षा यहां नहीं की गयी है। ग्रन्थके अभिप्रायको जानकर कथन करना चाहिये। नपुंसकवेदके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। कारण यह कि असंज्ञी पंचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय तथा संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें संख्यातभागहानिकी सम्भावना पायी जाती है। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। तिर्यंचआयु और मनुष्यायुके चार पद हैं, उनका जानकर कथन करना चाहिये। नरकगतिनामकर्मके संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक

१ काप्रतौ 'असखेज्जगुणहाणि', ताप्रतौ 'असखे० [गुणा] गुणहाणि०' इति पाठः। २ काप्रतौ 'सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया सखेज्जगुणा' इति पाठः।

भागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्ज-गुणा। असंखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा, संखेज्जवासाउअरासीए पाहण्णियादो। देवगदिणामाए णिरयगइभंगो। तिरिक्खगइणामाए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणहाणीए उदीरया। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्ज-गुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। मणुसगदीए सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणिउदीरआ संखेज्ज-गुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्ज-गुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्ज-भागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। ओरालियसरीरस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। [1]संखेज्जगुण-हाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया अणंतगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। वेउव्वियसरीरस्स णिरयगइभंगो। आहारसरीरस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया।

असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहां संख्यातवर्षायुष्क राशिकी प्रधानता है। देवगति नामकर्मकी यह प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तिर्यंचगति नामकर्मके संख्यातगुणहानि उदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यात-गुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थित-उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके असंख्यातगुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुण-वृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। औदारिकशरीरके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक अनन्तगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। आहारशरीरके अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे

१ काप्रतावतः प्राक् 'संखेज्जगुणा' इत्येतदधिकं पदमुपलभ्यते।

असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा[1]। संखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। आहारसरीरअंगोवंगस्स आहारसरीरभंगो। वेउव्वियसरीरअंगोवंगस्स वेउव्वियसरीरभंगो। समचउरससंठाणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणी०। [संखेज्जगुणहाणी०] असंखेज्जगुणा[2]। संखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। णग्गोहपरिमंडलसंठाणस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणिउदीरया। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। एवं सादिय-वामण-कुज्जसंठाणाणं। हुंडसंठाणस्स ओरालियसरीरभंगो। वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स णग्गोहपरि-

हैं। औदारिकशरीरआंगोपांगके असंख्यातगुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्य-उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। आहारशरीरआंगोपांगकी प्ररूपणा आहारशरीरके समान है। वैक्रियिकशरीरआंगोपांगकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है। समचतुरस्रसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार स्वाति, वामन और कुब्जक संस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। हुण्डकसंस्थानकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननकी प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानके समान है। शेष संहननोंकी

१ ताप्रतौ 'असंखे०[गुणा-]' इति पाठः। २ काप्रतौ 'सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणा', ताप्रतौ 'सव्वत्थोवा असंखे० गुणहाणी० असंखे० गुणा ?' इति पाठः।

मंडलसंठाणभंगो । सेसाणं संघडणाणं पि णग्गोहपरिमंडलसंठाणभंगो । णवरि असंखेज्ज-गुणहाणी णत्थि । णिरय-देवाणुपुव्वीणं सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया । संखेज्ज-भागवड्ढीए असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा । हेदुणा उवदेसेण[1] पुण संखेज्जगुणा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउदीरया संखेज्ज-गुणा । अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया । मणुस्साणुपुव्वीए देवाणुपुव्वीभंगो । तिरिक्खाणु-पुव्वीए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्ढीए उदीरया । संखेज्जभागवड्ढीए असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतगुणा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए विसेसाहिया । एदेण बीजपदेण सेसाओ वि पयडीओ जाणिदूण भाणिदव्वाओ । एवं ट्ठिदिउदीरणा समत्ता ।

एत्तो अणुभागुदीरणा दुविधा— मूलपयडिउदीरणा उत्तरपयडिउदीरणा चेदि । तत्थ मूलपयडिउदीरणा जाणिदूण भाणिदव्वा । उत्तरपयडिउदीरणाए पयदं— तत्थ इमाणि चउवीस अणियोगद्दाराणि । तं जहा— सण्णा, सव्वउदीरणा, णोसव्वउदीरणा, उक्कस्सउदीरणा, अणुक्कस्सउदीरणा, जहण्णउदीरणा, अजहण्णउदीरणा, सादिउदीरणा, आणादिउदीरणा, धुवउदीरणा, अद्धुवउदीरणा, एगजीवेण सामित्तं, कालो, अंतरं, णाणाजीवेहि भंगविचओ, भागाभागाणुगमो, परिमाणं, खेत्तं, फोसणं, णाणाजीवेहि कालो,

भी प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानके समान है । विशेष इतना है कि उनके असंख्यातगुण-हानि नहीं है । नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । किन्तु वे हेतुपूर्वक उपदेशसे संख्यातगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यात-गुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक हैं । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके समान है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु-पूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्य-उदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिके उदीरक विशेष अधिक हैं । इस बीजपदसे शेष प्रकृतियोंकी भी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई ।

यहां अनुभागउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है । इनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन जानकर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदीरणा प्रकृत है—उसमें ये चौबीस अनुयोगद्वार हैं । यथा— संज्ञा, सर्वउदीरणा, नोसर्वउदीरणा, उत्कृष्ट-उदीरणा, अनुत्कृष्टउदीरणा, जघन्यउदीरणा, अजघन्यउदीरणा, सादिउदीरणा, अनादिउदीरणा ध्रुव-उदीरणा, अध्रुवउदीरणा, एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, भागाभागानुगम, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन,

[1] काप्रतौ 'होदुणा उवदेसेण', ताप्रतौ 'होदु णा ? उवदेसेण' इति पाठः ।

अंतरं, भावो, अप्पाबहुअं, सण्णियासो चेदि। एदाणि भणिदूण पुणो भुजगारो पद-णिक्खेवो[1] वड्ढी ठाणं च[2] वत्तव्वं। तत्थ ताव सण्णा वुच्चदे। सा दुविहा घादिसण्णा ट्ठाणसण्णा चेदि। तत्थ घादिसण्णा उच्चदे। तं जहा— आभिणिबोहिय-सुदणाणा-वरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। ओहि-मणपज्जव-णाणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। केवल-णाणावरणीयस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा सव्वघादी। अचक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी। चक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कसा सव्वघादी वा देसघादी वा। केवलदंसणावरण-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सव्वघादी। सादासादाउचउक्कस्स सव्वणामपयडीणं उच्चाणीचागोदाणं उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा अघादी सव्वघादि-पडिभागो। मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-बारसकसायाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सव्वघादी। सम्मत्तस्स पंचंतराइयाणं उदीरणा उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी। चदुसंजलण-णव-णोकसायाणमुदीरणा उक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। जेसिं[4] कम्माणमुदीरणाए देसघादित्तं सव्वघादित्तं च संभवदि तेसिं कम्माणं जहण्णिया उदीरणा

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व और संनिकर्ष। इनकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप, वृद्धि और स्थानका कथन करना चाहिये। उनमें पहिले संज्ञाका कथन करते हैं। वह दो प्रकारकी है— घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा। उनमें घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरण और श्रुतज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट अणुभागउदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। अवधिज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती है। चक्षुदर्शनावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। साता व असाता वेदनीय, आयु चार, सब नामप्रकृतियों, तथा ऊंच व नीच गोत्रकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा अघाती है जो सर्वघातीके प्रतिभाग स्वरूप है। मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। सम्यक्त्व व पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट एवं अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती है। चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। जिन कर्मोंकी उदीरणामें देशघातीपना और सर्वघातीपना सम्भव है उन कर्मोंकी जघन्य उदीरणा नियमसे

१ ताप्रतौ 'पुणो पदणिक्खेवो' इति पाठः। २ काप्रतौ 'व' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'चउक्कसव्व' इति पाठः। ४ काप्रतौ 'तेसिं' इति पाठः।

णियमा देसघादी, अजहण्णिया देसघादी वा सव्वघादी वा । जेसिं कम्माणमुक्कस्सिया उदीरणा णियमा देसघादी तेसिं कम्माणं जहण्णिया अजहण्णिया वि उदीरणा णियमा देसघादी । जेसिं कम्माणमुक्कस्समणुक्कस्सं पि सव्वघादी तेसिं जहण्णमजहण्णं पि सव्वघादी । भवोवग्गहियाणमुदीरणा जहण्णा अजहण्णा च णियमा अघादी घादिपडिभागिया ।

एत्तो सामित्ते भण्णमाणे तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्दाराणि । तं जहा— पच्चयपरूवणा विवागपरूवणा ठाणपरूवणा सुहासुहपरूवणा चेदि । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-तिदंसणमोहणीय-सोलसकसायाणमुदीरणा परिणामपच्चइया । को परिणामो ? मिच्छत्तासंजम-कसायादी । णवण्हं[1] णोकसायाणं उदीरणा पुव्वाणुपुव्वीए असंखेज्जदिभागो परिणामपच्चइया, पच्छाणुपुव्वीए असंखेज्जा भागा भवपच्चइया । सादासादवेदणीय-चत्तारिआउअ-चत्तारिगदि-पंचजादीणं च उदीरणा भवपच्चइया । ओरालियसरीरस्स उदीरणा तिरिक्ख-मणुस्साणं[2] भवपच्चइया । वेउव्वियसरीरस्स उदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया । आहारसरीरस्स उदीरणा परिणामपच्चइया । तेजा-कम्मइयसरीराणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्सेसु परिणामपच्चइया । तिण्णमंगोवंगाणं संघाद-बंधणाणं सगसरीरभंगो ।

देशघाती तथा अजघन्य उदीरणा देशघाती और सर्वघाती होती है । जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे देशघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य और अजघन्य भी उदीरणा नियमसे देशघाती होती है । जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट भी उदीरणा सर्वघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य व अजघन्य भी उदीरणा सर्वघाती होती है । भवोपगृहीत (आयु) प्रकृतियोंकी जघन्य व अजघन्य उदीरणा नियमसे अघाती होकर घातिप्रतिभागस्वरूप होती है ।

यहां स्वामित्वके कथनमें ये चार अनुयोगद्वार हैं । यथा— प्रत्ययप्ररूपणा, विपाकप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, तीन दर्शनमोहनीय और सोलह कषाय; इनकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक है ।

शंका—परिणाम किसे कहते हैं ?

समाधान—मिथ्यात्व, असंयम एवं कषाय आदिको परिणाम कहा जाता है ।

पूर्वानुपूर्वीके अनुसार नौ नोकषायोंकी असंख्यातवें भाग प्रमाण उदीरणा परिणामप्रत्ययिक तथा पश्चादानुपूर्वीके अनुसार असंख्यात बहुभाग प्रमाण उदीरणा भवप्रत्ययिक है । साता व असाता वेदनीय, चार आयुकर्म तथा चार गति और पांच जाति नामकर्मोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है । औदारिकशरीरकी उदीरणा तिर्यंचों व मनुष्योंके भवप्रत्ययिक होती है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है । आहारशरीरकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक होती है । तैजस व कार्मण शरीरोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है । तीन आंगोपांग, पांच संघात व पांच बन्धन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरके

१ काप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः, मप्रतौ 'कसायादियाणं णवण्हं' इति पाठः । २ काप्रतौ 'मणुस्स-' इति पाठः ।

समचउरससंठाणस्स उदीरणा मूलसरीरे भवपच्चइया आहारसरीरस्स उत्तरसरीरं विउव्विदतिरिक्ख-मणुस्साणं च सव्वेसिं परिणामपच्चइया। सेसपंचसंठाणाणमुदीरणा भवपच्चइया। छण्णं संघडणाणमुदीरणा भवपच्चइया। वण्ण-गंध-रसणामाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया। सीदुण्ण-णिद्ध-ल्हुक्खाण-मुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चया[1]। कक्खड-गरुआणं उदीरणा एयंतभवपच्चइया[2]। मउअ-लहुआणमुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउव्विदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया। चदुण्णमाणुपुव्वीणमुदीरणा भवपच्चइया। अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुहाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया। उवघादादावुस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-साहारण-पज्जत्तापज्जत्त-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाण-मुदीरणा एयंतभवचइया। परघादुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउव्विदस्स च परिणाम-पच्चइया, अण्णत्थ भवपच्चइया। उज्जोवुदीरणा उत्तरं विउव्विदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया। पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परघादभंगो। णिमिण-तित्थयर-पंचंतराइयाणमुदीरणा परिणामपच्चइया। सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति[3]-उच्चागोदाणमुदीरणा

अनुसार है। समचतुरस्रसंस्थानकी उदीरणा मूल शरीरमें भवप्रत्ययिक होती है, और आहार-शरीरी तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले सभी तिर्यंचों व मनुष्योंके उसकी उदीरणा परि-णामप्रत्ययिक होती है। शेष पांच संस्थानोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। छह संहननोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। वर्ण, गन्ध व रस नामकर्मोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्षकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यंचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है। मृदु और लघु नामकर्मोंकी उदीरणा आहारकशरीरी तथा उत्तरशरीरकी विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्ययिक और शेष जीवोंके भवप्रत्ययिक होती है। चार आनुपूर्वियोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभ प्रकृतियोंकी उदीरणा देवों और नारकियोंके भव-प्रत्ययिक तथा तिर्यंचों और मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। उपघात, आतप, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, साधारण, पर्याप्त, अपर्याप्त, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है। परघातकी उदीरणा आहारशरीरी एवं उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्ययिक तथा अन्यत्र भवप्रत्ययिक होती है। उद्योतकी उदीरणा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले जीवके परिणाम-प्रत्ययिक तथा शेष जीवोंके भवप्रत्ययिक होती है। प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वर-की प्ररूपणा परघातके समान है। निर्माण, तीर्थंकर और पांच अन्तरायकी उदीरणा परिणाम-प्रत्ययिक है। सुभग, आदेय, यशकीर्ति और ऊंच गोत्रकी उदीरणा गुणप्रतिपन्न जीवोंमें परिणाम-

१ काप्रतौ 'परिणामपच्चया ण', ताप्रतौ 'परिणामपच्चया [ण] ।' इति पाठः। २ काप्रतौ 'एदंतभव-' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अजगित्ति' इति पाठः।

गुणपडिवण्णेसु परिणामपच्चइया, अगुणपडिवण्णेसु भवपच्चइया। को पुण गुणो[1] ? संजमो संजमासंजमो वा। एवं पच्चयपरूवणा गदा।

विवागपरूवणागदाए जहा णिबंधो पुव्वं परूविदो तहा एत्थ विवागो वि परूवेयव्वो, भेदाभावादो।

ठाणपरूवणदाए आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्सिया उदीरणा णियमा चउट्ठाणिया। अणुक्कस्सा चउट्ठाणिया तिट्ठाणिया बिट्ठाणिया एयट्ठाणिया वा। सुदणाणावरण-ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरण-चदुसंजलण - णवुंसयवेदाणमाभिणिबोहियणाणावरणभंगो। मणपज्जवणाणावरण-केवलणाणदंसणावरण-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिद्दा-पयला-सादासादवेदणीय - मिच्छत्त-बारसकसाय-छण्णोकसाय-णिरय-देवाउ-णिरय-देवगइ-पंचिंदियजादि - चदुसरीर - वेउव्विय - आहारअंगोवंग - वेउव्विय - आहार - तेजा - कम्मइयपाओग्गबंधण-संघाद-समचउरस-हुंडसंठाण-वण्ण-गंध-रस-सीदुसुण-णिद्ध-लहुक्ख-मउअ-लहुअ - अगुरुअलहुअ - उवघाद-परघाद- उज्जोवुस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ - तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-दुभग-दुस्सर - अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोदाणमुक्कस्सिया उदीरणा चउट्ठाणिया। अणुक्कस्सा चउट्ठाणिया तिट्ठाणिया दुट्ठाणिया वा। चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-सम्मत्त-इत्थि-पुरिस-

प्रत्ययिक और अगुणप्रतिपन्न जीवोंमें भवप्रत्ययिक होती है।

शंका—गुणसे क्या अभिप्राय है ?

समाधान—गुणसे अभिप्राय संयम और संयमासंयमका है।

इस प्रकार प्रत्ययप्ररूपणा समाप्त हुई।

विपाकप्ररूपणाकी विवक्षा होनेपर जैसे पहिले निबन्धकी प्ररूपणा की गयी है वैसे यहां विपाककी भी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

स्थानप्ररूपणामें आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक, द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती है। श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण, चार संज्वलन और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, बारह कषाय, छह नोकषाय, नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, चार शरीर, वैक्रियिक व आहारक आंगोपांग, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीरोंके योग्य बंधन व संघात; समचतुरस्रसंस्थान, हुण्डकसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, मृदु, लघु, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण तथा नीच व ऊंच गोत्र, इनकी उत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक और द्विस्थानिक

१ ताप्रतौ 'गुणगारो' इति पाठः।

वेदाणं पंचंतराइयाणं च उक्कस्सिया उदीरणा दुट्ठाणिया, अणुकस्सिया दुट्ठाणिया एय-ट्ठाणिया वा। चक्खु-अचक्खुदंसणाणमुदओ जस्स वि एगमक्खरमत्थि तस्स णियमा एग-ट्ठाणिया उदीरणा। सम्मामिच्छत्तस्स उकस्सिया अणुकस्सिया वा णियमा दुट्ठाणिया एक्कम्मि ट्ठाणे। तिरिक्ख-मणुस्साउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-चउजादि-ओरालियसरीर-तदंगोवंग-ओरालियसरीरबंधण-संघाद-चउसंठाण-छसंघडण-कक्खड-गरु-आणुपुव्वीचउक्क-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमुकस्सा अणुकस्सा वा उदीरणा दुट्ठाणिया। तित्थयरस्स उक्कस्सा अणुकस्सा चदुट्ठाणिया। एवमुकस्सिया ट्ठाणपरूवणा समत्ता।

जहण्णट्ठाणसमुकित्तणं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वकम्माणं पि अणुकस्सियाए उदीरणाए जं जस्स जहण्णियट्ठाणं अभिवाहरिदं तं चेव जहण्णट्ठाणं उदीरणाए ट्ठाणमभिवाहरियव्वं। अजहण्णाए अणुकस्सभंगो। भवोवग्गाहियाणं दुट्ठाणियपडिभागियं तिट्ठाणपडिभागियं चउट्ठाणपडिभागियं चेदि अभिवाहिरियव्वं। दुट्ठाणिय-तिट्ठाणिय-चउट्ठाणियं ति च ण भाणियव्वं। एवं ठाणपरूवणा समत्ता।

एत्तो सुहासुहपरूवणं वत्तइस्सामो। तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-अट्ठावीसमोहणीय - णिरयाउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ - एइंदिय - बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-पंचसंठाण-पंचसंघडण - अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइ-

---

होती है। चक्षु व अचक्षु दर्शनावरण, सम्यक्त्व, स्त्री व पुरुष वेद तथा पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती है। चक्षु व अक्षु दर्शनावरणका उदय जिसके भी एक अक्षर है उसके नियमसे उनकी एकस्थानिक उदीरणा होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा एक स्थानमें नियमसे द्विस्थानिक होती है। तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, चार जातिनामकर्म, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकशरीरबन्धन, औदारिकशरीर-संघात, चार संस्थान, छह संहनन, कर्कश, गुरु, चार आनुपूर्वी, आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर; इनकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक होती है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थानसमुत्कीर्तनका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— सभी कर्मोंकी अनुत्कृष्ट उदीरणामें जिसका जो जघन्य स्थान कहा गया है वही जघन्य स्थान उदीरणाका स्थान कहना चाहिये। अजघन्य उदीरणाकी प्ररूपणा अनुत्कृष्ट उदीरणाके समान है। भवोपगृहीत प्रकृतियोंके द्विस्थानप्रतिभागिक, त्रिस्थानप्रतिभागिक और चतुःस्थानप्रतिभागिक कहना चाहिये; उनके द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक नहीं कहना चाहिये। इस प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां शुभाशुभप्ररूपणा कहते हैं। वह इस प्रकार है पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, नरकगति, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श, नरक-

तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - उपघाद - अप्पसत्थविहायगदि - थावर - सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोद - पंचंतराइय-पयडीओ असुहाओ । सादावेदणीय-आउतिय-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण- ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस - फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-पसत्थविहायगइ-तस - बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदपयडीओ सुहाओ । एवं सुहासुहपरूवणा समत्ता ।

एत्तो सामित्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्सिया अणुभागउदीरणा कस्स ? सण्णिस्स पज्जत्तयदस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणमाभिणिबोहियणाणावरणभंगो । चक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्सउदीरणा कस्स ? तीइंदियपज्जत्तयस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स[1] । ओहि-केवलदंसणावरणाणं उक्कस्सिया कस्स ? सण्णिपज्जत्तयस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स । णवरि ओहि-णाण-दंसणावरणीयाणं उक्कस्सुदीरणा ओहिलंभेणुज्झियस्स वत्तव्वा । अचक्खुदंसणावर-

गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; ये प्रकृतियां अशुभ हैं। सातावेदनीय, शेष तीन आयु, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग, वज्रर्षभवज्रनाराचसंहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यनुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर और ऊंच गोत्र; ये प्रकृतियां शुभ हैं। इस प्रकार शुभाशुभप्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां स्वामित्वप्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है—आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह संज्ञी, पर्याप्त एवं उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जीवके होती है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। चक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह त्रीन्द्रिय पर्याप्त सर्वसंक्लिष्ट जीवके होती है। अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह संज्ञी पर्याप्त सर्वसंक्लिष्ट जीवके होती है। विशेष इतना है कि अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा अवधिज्ञान और अवधिदर्शनकी प्राप्तिसे रहित जीवके कहना चाहिये। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट

१ × × × चक्खुणो पुण तेइंदिय सव्वपज्जत्ते ॥ क. प्र. ४, ५८.

णीयस्स उक्कस्सिया अणुभागुदीरणा कस्स[1] ? सुहुमस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णलद्धियस्स[2]। सेसपंचण्णं दंसणावरणीयाणं उक्कस्सउदीरणा कस्स ? सण्णिपज्जत्तयस्स मज्झिमपरिणामस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स[3]। सादस्स० कस्स ? देवस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स पज्जत्तस्स। असादस्स णेरइयस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिस्स मज्झिमपरिणामस्स। किं कारणं ? उक्कस्ससंकिलिट्ठो वेदणीयं[4] ण वुज्झदि[5] त्ति।

सम्मत्तस्स कस्स ? सम्माइट्ठिस्स से काले मिच्छत्तं पडिवज्जमाणतप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स। सम्मामिच्छत्तस्स कस्स ? सम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले मिच्छत्तं गच्छंतस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स[6]। मिच्छत्त-सोलसकसायाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स मिच्छाइट्ठिस्स। णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं कस्स ? तेत्तीससागरोवमियणेरइयस्स पज्जत्तयस्स मज्झिमपरिणामस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स। हस्स-रदीणं कस्स ? सहस्सारदेवस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स[7]। इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं कस्स ?

उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य लब्धिवाले सूक्ष्म जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है। शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशसे सहित मध्यम परिणामवाले संज्ञी पर्याप्त जीवके होती है। सातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त देवके होती है। असातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले मध्यम परिणामयुक्त पर्याप्त मिथ्यादृष्टि नारकीके होती है।

शंका—इसका कारण क्या है ?

समाधान—इसका कारण यह है कि उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव वेदनीयके अनुत्कृष्ट अनुभागका अनुभवन नहीं करता है।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अनन्तर समयमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले ऐसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टि जीवके होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अनन्तर समयमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले ऐसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके होती है। मिथ्यात्व व सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि जीवके होती है। नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले नारक पर्याप्त जीवके होती है जो मध्यम परिणामोंसे युक्त होता हुआ तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त है। हास्य व रतिकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुए सहस्रार कल्पवासी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि देवके होती है। स्त्रीवेद

१ काप्रतावतोऽग्रे 'सण्णिपज्जत्तस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स' इत्येतावानयमधिकः पाठोऽस्ति। २ दाणाइ अचक्खूणं जेट्ठा आयम्मि हीणलद्धिस्स। सुहुमस्स × × × ॥ क. प्र. ४, ५८. ३ निद्दाइपंचगस्स य मज्झिमपरिणामसंकिलिट्ठस्स। क. प्र. ४, ५०. ४ प्रत्योरुभयोरेव 'वेदं' इति पाठः। ५ मप्रतिपाठोऽयम्, का-ताप्रत्योः 'रज्झदि' इति पाठः। ६ सम्मत्त-मीसगाणं से काले गहिहिइत्ति मिच्छत्तं। क. प्र. ४, ६१. ७ हास-रईण सहस्सारगस्स पज्जत्तदेवस्स ॥ क. प्र. ४, ६१.

तिरिक्खस्स अट्ठवासाउअस्स अट्ठवस्सजादस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स।

णिरयाउअस्स कस्स ? णेरइअस्स तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स। मणुस-तिरिक्खाउआणं कस्स ? तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तयस्स[1]। देवाउअस्स कस्स ? तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स[2]।

णिरयगइणामाए कस्स ? तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स[3] मज्झिमपरिणामस्स वा। तिरिक्खगइणामाए कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवासाउअस्स अट्ठवस्सजादस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स। मणुसगदिणामाए कस्स ? मणुस्सस्स तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तस्स। देवगदिणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स। ओरालियणामाए उक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? मणुस्सस्स तिपलिदोवमियस्स पज्जत्तस्स। वेउव्वियसरीरणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीससागरोवमियस्स पज्जत्तस्स। आहारसरीरणामाए कस्स ? पज्जत्तस्स आहारसरीरमुट्ठाविदसंजदस्स। तेजा-कम्मइय-सरीराणमुक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स। तिण्णिअंगोवंग-बंधण-

और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्ष प्रमाण आयुवाले अष्टवर्षीय सर्वसंक्लिष्ट तिर्यंच जीवके होती है।

नारकायुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले मिथ्यादृष्टि पर्याप्त नारकी जीवके होती है। मनुष्यायु और तिर्यंचआयुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त जीवके होती है। देवायुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है। वह तेतीस सागरोपमकी आयुवाले पर्याप्त देवके होती है।

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त अथवा मध्यम परिणाम युक्त तेतीस सागरोपमकी आयुवाले पर्याप्त जीवके होती है। तिर्यग्गति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशसे युक्त आठ वर्ष प्रमाण आयुवाले अष्टवर्षीय तिर्यंच जीवके होती है। मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले मनुष्य पर्याप्तके होती है। देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपमकी आयुवाले देव पर्याप्तके होती है। औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले मनुष्य पर्याप्तके होती है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम आयुवाले देव पर्याप्तके होती है। आहारशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरको पूर्ण करनेवाले संयत पर्याप्तके होती है। तैजस और कार्मण शरीरोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है। तीन आंगोपांग, बन्धन और संघात नामकर्मोंकी प्ररूपणा अपने

१ ताप्रतौ 'पज्जत्तयस्स' इत्येतत्पदं नास्ति। २ नियगठिई उक्कोसो पज्जत्तो आउगाणं पि।। क. प्र. ४, ६४. ३ काप्रतौ 'सागरोवमियस्स पज्जत्तस्स उदीरणासंकिलिट्ठस्स' इति पाठः।

संघादणामाणं सरीरभंगो ।

पसत्थवण्ण-गंध-रसाणं कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । अप्पसत्थाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । णिद्ध-उण्हाणं कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । सीद-ल्हुक्खाणं कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । मउअ-लहुआणं कस्स ? आहारसरीरेण पज्जत्तयदस्स संजदस्स[1] । कक्खड-गरुआणं कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवासाउअस्स अट्ठवासाणमंते वट्टमाणस्स[2] ।

णिरयाणुपुव्वीणामाए कस्स ? तेत्तीसंसागरोवमियस्स णेरइयस्स बिसमयतब्भवत्थस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स । मणुसाणुपुव्वीणामाए कस्स ? तिपलिदोवमियस्स मणुस्सस्स बिसमयतब्भवत्थस्स । तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवस्सियस्स बिसमयतब्भवत्थस्स । देवाणुपुव्वीणामाए कस्स ? देवस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स बिसमयतब्भवत्थस्स ।

अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाणमुक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स[3] । उवघादणामाए कस्स ? तेत्तीसं-

अपने शरीरके समान है ।

प्रशस्त वर्ण, गन्ध और रसकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है । उन अप्रशस्त वर्णादिकोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जीवके होती है । स्निग्ध और उष्ण स्पर्शकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । शीत और रूक्षकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेश युक्त जीवके होती है । मृदु और लघुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आहारशरीरसे पर्याप्त हुए संयत जीवके होती है । कर्कश और गुरुकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षकी आयुवाले व आठ वर्षोंके अन्तमें वर्तमान तिर्यंच जीवके होती है ।

नरकानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशसे संयुक्त तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले नारकी जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्यके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षकी आयुवाले तिर्यंच जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । देवानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले देवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है ।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर, निर्माण और ऊंच गोत्रकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगी केवलीके होती है ।

१ ताप्रतौ 'पज्जत्तयदसंजदस्स' इति पाठः । २ कक्खड-गरु-संघयणा-त्थी-पुम-संठाण-तिरियणामाणं । पंचिदिओ तिरिक्खो अट्ठमवासट्ठवासाओ ॥ क. प्र. ४, ६३. ३ जोगंते सेसाणं सुभाणमियराणि चउसु वि

सागरोवमियस्स णेरइयस्स पज्जत्तस्स। परघाद-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीराणं कस्स? संजदस्स आहारसरीरमुट्ठाविदस्स पज्जत्तस्स। आदावणामाए कस्स? बावीसंवस्ससहस्साउअस्स पुढविकाइयपज्जत्तस्स। उज्जोवणामाए कस्स? संजदस्स विउव्विदुत्तरसरीरस्स पज्जत्तिं गयस्स।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणं कस्स? जहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए[1] णिव्वत्तिदूण अंतोमुहुत्तपज्जत्तस्स[2]। एइंदियजादिणामाए कस्स? जहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए णिव्वत्तिय अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स एइंदियस्स। पंचिंदियजादि-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्तणामाणं कस्स? देवस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स[3]। अप्पसत्थविहायगइ-दुब्भग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं कस्स? णेरइयस्स तेत्तीसंसागरोवमियस्स पज्जत्तस्स। अथिर-असुहणामाणं कस्स? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स।

थावरणामाए कस्स? जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स बादरेइंदियस्स

उपघात नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले पर्याप्त नारकीके होती है। परघात, प्रशस्त विहायोगति और प्रत्येकशरीरकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा किसके होती है? वह आहारशरीरको उत्पन्न कर लेनेवाले संयत पर्याप्तके होती है। आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह बाईस हजार वर्षकी आयुवाले पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवके होती है। उद्योत नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले संयत पर्याप्तके होती है।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? उनकी उत्कृष्ट उदीरणा जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे निर्वृत्त होकर अन्तर्मुहूतवर्ती पर्याप्त हुए उन उन जीवोंके होती है। एकेन्द्रियजाति नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे निर्वृत्त हुए अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त एकेन्द्रियके होती है। पंचेन्द्रियजाति, उच्छ्वास, त्रस, बादर और पर्याप्त नामकर्मोकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? उनकी उत्कृष्ट उदीरणा तेतीस सागरोपमकी आयुवाले देवके होती है। अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? उनकी उत्कृष्ट उदीरणा तेतीस सागरोपमकी आयुवाले नारक पर्याप्तके होती है। अस्थिर और अशुभ नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह उत्कृष्ट संक्लेशयुक्त जीवके होती है।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न

गईसु। पज्जत्तुक्कडमिच्छस्सोहीणमणोहिलद्धिस्स॥ क. प्र. ४, ६८. जोगंते त्ति— योगिनः सयोगकेवलिनोऽन्ते सर्वापवर्तनरूपे वर्तमानस्य शेषाणामुक्तव्यतिरिक्तानां शुभप्रकृतीनां तैजससप्तक-मृदु-लघुवर्जशुभवर्णाद्येकादशक-गुरुलघु-स्थिर-शुभ-सुभगादेय-यशःकीर्ति-निर्माणोच्चैर्गोत्रतीर्थकरनाम्नां (२५) पंचविंशतिसंख्यानामुत्कृष्टानुभागोदीरणा भवति। (मलयगिरिटीका). १ ताप्रतौ 'जहण्णपज्जत्तीए' इति पाठः। २ हस्सठिई पज्जत्ता तन्नामा विगलजाइ-सुहुमाणं। क. प्र. ४, ६९. ३ पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्तग-साइ-सुस्सर-गईणं। वेउव्वुस्सासाणं देवो जेट्ठठिइसमत्तो॥ क. प्र. ४, ७०.

अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स[1] उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । सुहुमणामाए कस्स ? जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स अंतोमुहुत्तपज्जत्तयस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । अपज्जत्तणामाए कस्स ? मणुस्सस्स उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए चरिमसमए[2] उक्कस्ससंकिलेसं गदस्स[3] । साहारणसरीरणामाए कस्स ? बादरणिगोदस्स जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए अंतोमुहुत्तं पज्जत्तस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स समचउरससंठाणस्स उक्कस्सिया उदीरणा कस्स ? संजदस्स आहारसरीरस्स अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स । सेसाणं हुंडसंठाणवज्जाणं संठाणाणं पंचण्णं संघडणाणं च उक्कस्सिया कस्स ? तिरिक्खस्स अट्ठवासियस्स अट्ठवासंते वट्टमाणस्स[4] । हुंडसंठाणस्स कस्स ? णेरइयस्स उक्कस्सट्ठिदीए उववण्णअंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स[5] । पढमसंघडणस्स कस्स ? मणुस्स्स तिपलिदोवमियस्स अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयदस्स[6] । अंतराइयपंचयस्स अचक्खुदंसणभंगो । एदाणि सव्वाणि सामित्ताणि अप्पप्पणो संतकम्मेण उक्कस्सेण वा छट्ठाणगुण-

तथा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त बादर एकेन्द्रिय जीवके होती है। सूक्ष्म नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न तथा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त सूक्ष्म जीवके होती है। अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिके चरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए मनुष्यके होती है। साधारणशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए उत्कृष्ट संक्लेश युक्त बादर निगोद जीवके होती है। समचतुरस्रसंस्थानकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए आहारशरीरी संयत जीवके होती है। हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष चार संस्थानोंकी तथा वज्रर्षभनाराचसंहननको छोड़कर शेष पांच संहननोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह आठ वर्षोंके अन्तमें वर्तमान अष्टवर्षीय तिर्यंचके होती है। हुण्डकसंस्थानकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट स्थितिके साथ उत्पन्न होकर अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त हुए नारकीके होती है। प्रथम संहननकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है ? वह तीन पल्योपमकी आयुवाले अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याप्त मनुष्यके होती है। पांच अन्तराय कर्मोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा अचक्षुदर्शनावरणके समान है। ये सब स्वामित्व अपने अपने उत्कृष्ट सत्कर्मके साथ अथवा षट्स्थान-

१ ताप्रतौ 'अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयस्स' इति पाठः । २ काप्रतौ 'समय' इति पाठः । ३ तथाऽपर्याप्तनाम्नो मनुष्योऽपर्याप्तश्चरमसमये वर्तमानः सर्वसंक्लिष्ट उत्कृष्टानुभागोदीरणास्वामी । संज्ञितिर्यक्पंचेन्द्रियादपर्याप्तान्मनुष्योऽपर्याप्तोऽतिसंक्लिष्टतर इति मनुष्यग्रहणम् । क. प्र. (मलय.) ४, ६२. ४ कक्खड-गुरु-संघयणा-त्थीपुम-संठाण-तिरियनामाणं । पंचिंदिओ तिरिक्खो अट्ठमवासट्ठवासाओ ॥ क. प्र. ४, ६३. ५ गइ-हुंडुवघायाणिट्ठखगइ-नीयाण दुहचउक्कस्स । निरउक्कस्स-समत्ते असमत्ताए नरस्संते ॥ क. प्र. ४,६२. गइ त्ति— नैरयिक उत्कृष्टस्थितौ वर्तमानः सर्वाभिः पर्याप्तिभिः पर्याप्तः सर्वोत्कृष्टसंक्लेशयुक्तो नरकगति-हुंडसंस्थानोपघाताप्रशस्तविहायोगति-नीचैर्गोत्राणां 'दुहचउक्कस्स त्ति' दुर्भगचतुष्कस्य दुर्भग-दुःस्वरानादेयायशःकीर्तिरूपस्य सर्वसंख्यया नवानां प्रकृतीनामुत्कृष्टानुभागोदीरणास्वामी । मलय. ६ मणु-ओरालिय-वज्जरिसहाण मणुओ तिपल्लपज्जत्तो । क. प्र. ४, ६४.

हीणेण वा होंति त्ति दट्ठव्वाणि । एवमुक्कस्साणुभागुदीरणा समत्ता ।

जहण्णयं सामित्तं उच्चदे । तं जहा— आभिणिबोहिय-सुदणाणावरणीय-चक्खु-अचक्खुदंसणावरणीयाणं जहण्णिया अणुभागउदीरणा कस्स ? चोद्दसपुव्वियस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? परमोहिस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । मणपज्जवणाणावरणीयस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? विउलमदिस्स समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स[1] । केवलणाण-केवलदंसणावरणीयाणं जहण्णिया कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । णिद्दा-पयलाणं जहण्णिया कस्स ? उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थस्स[2] । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? पमत्तसंजदस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स[3] । सादासादाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? अण्णदरो णेरइयो तिरिक्खो मणुस्सो[4] देवो वा उक्कस्स-मज्झिमजहण्णासु ट्ठिदीसु वट्टमाणो मज्झिमपरिणामो[5] ।

पतित गुणहानिस्वरूप सत्कर्मके साथ होते हैं, ऐसा जानना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट-अनुभाग-उदीरणा समाप्त हुई ।

जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह चौदह पूर्वधारीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह परमावधिज्ञानीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानीके छद्मस्थ अवस्थाके अन्तसमयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? उनकी जघन्य उदीरणा छद्मस्थकालमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रहनेपर होती है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थके होती है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त हुए प्रमत्तसंयतके होती है । साता व असाता वेदनीयकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? जो अन्यतर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अथवा देव उत्कृष्ट, मध्यम या जघन्य स्थितिमें वर्तमान होकर मध्यम परिणामसे युक्त होता है उसके

१ सुयकेवलिणो मइ-सुय-अचक्खु चक्खूणुदीरणा मंदा । विपुल-परमोहिगाणं मणणाणोहीदुगस्सावि ।। क. प्र ४, ६९. २. खवणाए विग्घ-केवल-संजलणाण य सनोकसायाणं । सय-सयउदीरणंते निद्दा-पयलाणमुवसंते ।। क.प्र.७०. क्षपणायोत्थितस्स पंचविधान्तराय-केवलज्ञानावरण-केवलदर्शनावरण-संज्वलनचतुष्टय-नवनोकषायरूपाणां विंशतिप्रकृतीनां स्व-स्वोदीरणापर्यवसाने जघन्यानुभागोदीरणा । तत्र पंचविधान्तराय-केवलज्ञानावरण-केवलदर्शनावरणानां क्षीणकषायस्य × × × स्व-स्वोदीरणापर्यवसाने । तथा निद्रा-प्रचलयोरुपशान्तमोहे जघन्यानुभागोदीरणा लभ्यते । (म. टीका) ३ निद्दानिद्दाईणं पमत्तविरए विसुज्झमाणम्मि । क. प्र. ४, ७१. ४ काप्रतौ 'अण्णदरा णेरइया तिरिक्खमणुस्सो', ताप्रतौ 'अण्णदरणेरइयो तिरिक्खो मणुस्सो' इति पाठः ।

मिच्छत्तस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? मिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स पुव्वुप्पण्णेण सम्मत्तेण से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठिदस्स जहण्णाणुभागउदीरणा[2] । सम्मत्तस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? समयाहियावलियअक्खीणदंसणमोहणिज्जस्स[3] । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स सम्मामिच्छाइट्ठिस्स[4] । अणंताणुबंधीणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? मिच्छाइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स । अपच्चक्खाणावरणचदुक्कस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? सम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स । पच्चक्खाणावरणचदुक्कस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ?

उन दोनों प्रकृतियोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है ।

मिथ्यात्वकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि जीव पूर्वोत्पन्न सम्यक्त्वसे अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे अवस्थित है उसके मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? जिसके दर्शनमोहनीयके अक्षीण रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त करेगा, इस अवस्थामें स्थित है ऐसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है । अनन्तानुबन्धी कषायोंकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे स्थित उस सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि जीवके उनकी जघन्य उदीरणा होती है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? अन्तर कालमें संयमको प्राप्त करेगा, इस प्रकारसे स्थित सर्वविशुद्ध सम्यग्दृष्टि जीवके अप्रत्याख्यानावरणचतुष्की जघन्य उदीरणा होती है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त

१ सेसाण पगइवेई मज्झिमपरिणामपरिणओ होज्जा । क. प्र. ४, ७९. सेसाण त्ति— शेषाणां साता-सातवेदनीय-गतिचतुष्टय- × × × चतुस्त्रिंशत्संख्यानां प्रकृतीनां तत्तत्प्रकृत्युदये वर्तमानाः सर्वेऽपि जीवा-मध्यमपरिणामपरिणता जघन्यानुभागोदीरणास्वामिनो भवन्ति (मलय. टीका) । २ से काले सम्मत्तं ससंजमं गिण्हओ य तेरसगं । क. प्र. ४, ७२. से त्ति— अनन्तरे काले द्वितीये यः सम्यक्त्वं ससंयमं संयमसहितं गृहीष्यति तस्य त्रयोदशानां मिथ्यात्वानन्तानुबन्धिचतुष्टयाप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यानावरणरूपाणां प्रकृतीनां जघन्यानुभागोदीरणा । अयमिह संप्रदायः— योऽनन्तरसमये सम्यक्त्वं संयमसहितं गृहीष्यति तस्य मिथ्यादृष्टे-र्मिथ्यात्वानुबन्धिनां जघन्यानुभागोदीरणा । (म. टीका). ३ वेयगसम्मत्तस्स उ सगखवणोदीरणाचरिमे ॥ क. प्र. ४, ७१. तथा क्षायिकसम्यक्त्वमुत्पादयतो मिथ्यात्व-सम्यग्मिथ्यात्वयोः क्षपितयोर्वेदकसम्यक्त्वस्य क्षायोपशमिकस्य सम्यक्त्वस्य क्षपणकाले चरमोदीरणायां समयाधिकावलिकाशेषायां स्थितौ सत्यां प्रवर्तमानाया जघन्यानुभागोदीरणा भवति । सा च चतुर्गतिकानामन्यतरस्य वदितव्या (म. टीका) । ४ सम्मत्तमेव मीसे × × × ॥ क. प्र. ४, ७२. तथा 'सम्मत्तमेव मीसे' इति यः सम्यग्मिथ्यादृष्टिरनन्तरसमये संयमं प्रतिपत्स्यते तस्य सम्यग्मिथ्यात्वस्य जघन्यानुभागोदीरणा । सम्यग्मिथ्यादृष्टिर्युगपत् सम्यक्त्वं संयमं च न प्रतिपद्यते, तथा विशुद्धेरभावात् , किन्तु केवलं सम्यक्त्वमेवेति कृत्वा तदेव केवलमुक्तम् (म. टीका) ।

संजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति।

कोधसंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? कोधोदएण खवगसेडिमुवट्ठियस्स चरिमसमयकोधवेदयस्स। माणसंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? कोधोदएण माणोदएण वा खवगसेढिमारूढस्स चरिमसमयमाणवेदगस्स। मायासंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? चरिमसमयमायवेदयस्स खवगस्स। लोभसंजलणाए जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स खवयस्स। णवुंसयवेदस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयणवुंसयवेदयखवयस्स[1]। पुरिस-वेदस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयपुरिसवेदखवयस्स। इत्थिवेदस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? समयाहियावलियइत्थिवेदस्स खवयस्स। हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं जहण्णिया उदीरणा कस्स? चरिमसमयअपुव्वकरण-खवगस्स सव्वविसुद्धस्स।

णिरयाउअस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स? दसवस्ससहस्सियाए[2] ट्ठिदीए उव-वण्णस्स णेरइयस्स पढमे वा चरिमे वा अण्णम्हि वा कम्हि वि एगसमए वट्टमाणस्स।

करेगा, इस प्रकारसे स्थित सर्वविशुद्ध संयतासंयतके उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है।

संज्वलनक्रोधकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह क्रोधोदयके साथ क्षपक श्रेणिपर आरूढ़ हुए अन्तिम समयवर्ती क्रोधवेदक जीवके होती है। संज्वलनमानकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह क्रोधके उदयके साथ अथवा मानके उदयके साथ क्षपक श्रेणिपर आरूढ़ हुए अन्तिम समयवर्ती मानवेदकके होती है। संज्वलनमायाकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती मायावेदक क्षपकके होती है। संज्वलन लोभकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? जिसकी सकषाय अवस्थाके अन्तिम समयमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है ऐसे क्षपक जीवके संज्वलनलोभकी जघन्य उदीरणा होती है। नपुंसकवेदकी जघन्य-उदीरणा किसके होती है? जिसके अन्तिम समयवर्ती नपुंसकवेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसे क्षपकके नपुंसकवेदकी जघन्य उदीरणा होती है। पुरुषवेद-की जघन्य उदीरणा किसके होती है? जिसके अन्तिम समयवर्ती पुरुषवेदी होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसे क्षपक जीवके उसकी जघन्य उदीरणा होती है। स्त्रीवेदकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? स्त्रीवेदवेदक क्षपकके उसके वेदनमें एक समय अधिक आवली मात्र कालके शेष रहनेपर स्त्रीवेदकी जघन्य उदीरणा होती है। हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अपूर्व-करण क्षपकके होती है।

नारकयुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिके साथ उत्पन्न हुए नारकीके प्रथम, अन्तिम अथवा अन्य किसी भी एक समयमें वर्तमान रहनेपर होती

१ काप्रतौ 'वेयणीयखवयस्स', ताप्रतौ 'वेदणीयखवयस्स' इति पाठः। २ काप्रतौ 'देवस्स सहस्सियाए', ताप्रतौ 'देवस्स (दसवस्स) सहस्सियाए' इति पाठः।

मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णिया उदीरणा कस्स ? जहण्णियासु अपज्जत्तणिव्वत्तीसु उववण्णस्स पढमे अपढमे वा चरिमे अचरिमे वा समए वट्टमाणस्स मणुस-तिरिक्खस्स। देवाउअस्स जहण्णिया उदीरणा कस्स ? दसवस्ससहस्सियाए ट्ठिदीए उववण्णस्स पढमसमयदेवस्स वा चरिमसमयस्स वा तव्वदिरित्तस्स वा[1]।

णिरयगइणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? णेरइयस्स अण्णदरिस्से पुढवीए वट्टमाणस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा मज्झिमपरिणामस्स। तिरिक्खगदिणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? एइंदिय-बीइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिएसु अण्णदरस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा तिपलिदोवमट्ठिदियस्स अण्णदरस्स वा। मणुसगदिणामाए जहण्णिया उदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स संखेज्जवासाउअस्स असंखेज्जवासाउअस्स पज्जत्तस्स अपज्जत्तस्स वा मणुस्सस्स मज्झिमपरिणामस्स। देवगदिणामाए जहण्णिया उदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स कप्पोपपादियस्स वा अणुत्तरोपपादियस्स वा देवस्स मज्झिमपरिणामस्स। पंचण्णं जादिणामाणं जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स पयडिवेदयस्स।

है। मनुष्यायु और तिर्यंच आयुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तियोंमें उत्पन्न और प्रथम-अप्रथम अथवा चरम-अचरम समयमें वर्तमान मनुष्य और तिर्यंचके होती है। देवायुकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयु-स्थितिके साथ उत्पन्न हुए देवके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें, चरम समयमें अथवा उनसे भिन्न किसी भी समयमें स्थित रहनेपर होती है।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें वर्तमान मध्यम परिणामवाले पर्याप्त अथवा अपर्याप्त नारकीके होती है। तिर्यंचगति नाम-कर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-न्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवोंमें अन्यतर पर्याप्त अथवा अपर्याप्तके तीन पल्योपम प्रमाण स्थितिसे अथवा अन्यतर आयुस्थिति युक्त होते हुए होती है। मनुष्यगति नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर संख्यातवर्षायुष्क अथवा असंख्यातवर्षायुष्क पर्याप्त अथवा अपर्याप्त मध्यम परिणावाले मनुष्यके होती है। देवगति नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर कल्पोपपादिक अथवा अनुत्तरोपपादिक मध्यम परिणामवाले देवके होती है। पांच जातिनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उस उस प्रकृतिके वेदक अन्यतर जीवके होती है।

---

१ आऊण जहन्नठिईसु ॥ क.प्र.४, ७९. तथा चतुर्णामायुषामात्मीयात्मीयजघन्यस्थितौ वर्तमानो जघन्य-मनुभागमुदारयति। तत्र त्रयाणामायुषां संक्लेशादेव जघन्यस्थितिबन्धो भवतीति कृत्वा जघन्यानुभागोऽपि तत्रैव लभ्यते। तथा नारकायुषो विशुद्धिवशाज्जघन्यः स्थितिबन्धः, ततो जघन्यानुभागोऽपि नारकायुषस्तत्रैव लभ्यते। तथा च सति त्रयाणामायुषामतिसंक्लिष्टो जघन्यानुभागोदीरकः नारकायुषस्त्वतिविशुद्ध इति। (म. टीका).

ओरालियसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? सुहुमस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स अविग्गहगदीए उववण्णस्स। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स वा जीवस्स[1] ? जहण्णियाए उत्तरविउव्वणद्धाए पढमसमयआहारयस्स[2] । आहारसरीरणामाए जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? जहण्णियाए आहारविउव्वणद्धाए पढमसमयआहारयस्स[3] । तेजा-कम्मइयाणं जहण्णाणुभागउदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स[4] । ओरालियसरीअंगोवंगणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? बेइंदियस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहारयस्स। वेउव्वियअंगोवंगणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? पढमसमयणेरइयस्स असण्णिपच्छायदस्स पढमसमयआहारयस्स तप्पाओग्गउक्कस्सियाए ट्ठिदीए उववण्णस्स[5] । आहारसरीरअंगोवंगस्स आहारसरीरभंगो। पंचसरीरबंधण-

औदारिकशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे एवं ऋजुगतिसे उत्पन्न हुए सूक्ष्म जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किस जीवके होती है ? वह जघन्य उत्तरविक्रियाकालमें प्रथम समयवर्ती आहारकके होती है। आहारशरीर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य आहारविक्रियाकालमें प्रथम समयवर्ती आहारकके होती है। तैजस और कार्मण शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए अन्यतर जीवके होती है ? औदारिकशरीरआंगोपांग नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न ऐसे द्वीन्द्रिय जीवके आहारक होनेके प्रथम समयमें होती है। वैक्रियिकशरीरआंगोपांग नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आकर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट स्थितिके साथ नरकमें उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती नारकीके आहारक होनेके प्रथम समयमें होती है। आहारकशरीरांगोपांगकी जघन्य उदीरणाकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है। पांच शरीरबन्धनों और

१ ताप्रतौ 'कस्स ? वा जीवस्स ?' इति पाठः। २ पोग्गलविवागियाणं भवाइसमए विसेसमवि च्चाणि। आइतणूणं दोण्णं सुहुमो वाऊ य अप्पाऊ ॥ क. प्र. ४, ७३. × × × तत एतदुक्तं भवति— औदारिकशरीरौदारिकसंघातौदारिकबन्धनचतुष्टयरूपस्यौदारिकषट्कस्याप्यपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियो वायुकायिको वैक्रियिकषट्कस्य च पर्याप्तो बादरो वायुकायिकोऽल्पायुर्जघन्यानुभागोदीरको भवति। (म. टीका) ३ × × × तत आहारकसप्तकस्य यतमाहारकशरीरमुत्पादयतः संक्लिष्टस्याल्पे काले, प्रथमसमय इत्यर्थः, जघन्यानुभागोदीरणा। क. प्र. ४, ७४. (म. टीका). ४ तथा तैजससप्तक-मृदु-लघुवर्जशुभवर्णाद्येकादशकागुरुलघु-स्थिर-शुभ-निर्माणरूपाणां (२०) विंशतिप्रकृतीनां संक्लिष्टोऽपान्तरालगतौ वर्तमानोऽनाहारको मिथ्यादृष्टिर्जघन्यानुभागोदीरणास्वामी वेदितव्यः। क. प्र. ४, ७६. (म. टीका). ५ इयमत्र भावना— द्वीन्द्रियोऽल्पायुरौदारिकांगोपांगनाम्न उदयप्रथमसमये जघन्यमनुभागमुदीरयति। तथाऽसंज्ञिपंचेन्द्रियः पूर्वोद्वलितवैक्रियो वैक्रियांगोपांगं स्तोककालं बद्ध्वा स्वभूमिकानुसारेण चिरस्थितिको नैरयिको जातस्तस्य वैक्रियांगोपांगनाम्न उदयप्रथमसमये वर्तमानस्य जघन्यानुभागोदीरणा। क. प्र. ४, ७४. (म० टीका).

संघादाणं सग-सगसरीरभंगो।

समचउरससंठाणणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स असण्णिस्स। हुंडसंठाणवज्जाणं सेसाणं संठाणाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? पुव्वकोडाउअस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स। हुंडसंठाणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? सुहुमेइंदियस्स उक्कस्सियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स। पढमसंघडणस्स पढमसंठाणस्स भंगो। चदुण्णं संघडणाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? मणुस्सस्स पुव्वकोडाउअस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स[1]। असंपत्तसेवट्टसंघडणस्स जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? बेइंदियस्स बारसवस्साउट्ठिदीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स[2]।

वण्ण-गंध-रसाणमप्पसत्थाणं सीद-ल्हुक्खाणं च[3] जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स। एदासिं चेव पडिवक्खाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स। कक्खड-गरुआणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स? केवलिस्स मंथगदस्स

पांच संघातोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरनामकर्मके समान है।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए असंज्ञी जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है। हुण्डकसंस्थानको छोड़कर शेष संस्थानोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह पूर्वकोटि वर्ष प्रमाण आयुवाले प्रथम समयवर्ती आहारकके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होती है। हुण्डकसंस्थानकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके होती है। प्रथम संहननकी जघन्य अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा प्रथम संस्थानके समान है। चार संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाले मनुष्यके होती है। असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह बारह वर्ष प्रमाण आयुस्थितिके साथ उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक व प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए द्वीन्द्रिय जीवके होती है।

अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस तथा शीत एवं रूक्ष स्पर्शकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है। इनकी ही प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह उत्कृष्ट संक्लेश युक्त जीवके होती है। कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है? वह मंथसमुद्घातगत-

१ असण्णी चउरंसुसभाणप्पाऊ सगचिरट्ठिई सेसे। संघयणाण य मणुओ हुंडुवघायाणमवि सुहुमो।। क. प्र. ४, ७५. २ सेवट्टस्स बिइंदिय बारसवासस्स × × ×।। क. प्र. ४, ७६. ३ काप्रतौ 'सीदुल्हुक्खाणं', ताप्रतौ 'सीदल्ह-ल्हुक्खाणं' इति पाठः।

णियत्तमाणस्स[1]। लहुअ-मउआणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? सण्णिस्स अणाहारयस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स[2]। णिरयाणुपुव्विणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? णेरइयस्स अण्णदरिस्से पुढवीए वट्टमाणस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स दुसमयतब्भवत्थस्स वा। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स तिरिक्खस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स दुसमयतब्भवत्थस्स तिसमयतब्भवत्थस्स वा। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स मणुस्सस्स पढमविग्गहे विदियविग्गहे वा वट्टमाणस्स ? देवाणुपुव्वीणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? अण्णदरस्स दसवस्ससहस्सियस्स वा तेत्तीसंसागरोवमियस्स[3] वा।

अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाए जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स। अथिर-असुहाणं जहण्णाणुभागुदीरणा कस्स ? सजोगिचरिमसमए। उवघादणामाए जह० कस्स ? सुहुमेइंदियस्स उक्कस्सियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स[4]। परघादणामाए जह० कस्स ? सुहुमस्स जहण्णियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए वट्टमाणस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स।

केवलीके उनसे पीछे हटनेकी अवस्थामें होती है। लघु और मृदुकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संज्ञी अनाहारक जीवके होती है। नारकानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें वर्तमान नारकीके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें अथवा उसके द्वितीय समयमें होती है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ, द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ, अथवा तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ अन्यतर तिर्यंच जीवके होती है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह प्रथम विग्रह अथवा द्वितीय विग्रहमें वर्तमान अन्यतर मनुष्यके होती है। देवानुपूर्वी नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयुवाले अथवा तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले अन्यतर देवके होती है।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुए जीवके होती है। अस्थिर और अशुभकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह सयोग केवलीके अन्तिम समयमें होती है। उपघात नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके होती है। परघात नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिमें वर्तमान सूक्ष्म जीवके पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें होती है।

१ वक्खड-गुरुण मंथे (थ) नियत्तमाणस्स केवलिणो ॥ क. प्र. ४, ७८. २ × × × मउय लहुगाणं। सन्निविसुद्धाणाहारगस्स × × × ॥ क. प्र. ४, ७६. ३ अप्रतौ 'सागरोवमेयस्स', काप्रतौ 'सागरोवमाणि', ताप्रतौ 'सागरोवमाणियस्स। ४ हुंडुवघायाणमवि सुहुमो ॥ क. प्र. ४, ७९. तथा सूक्ष्मैकेन्द्रियः सुदीर्घायुःस्थिक आहारकः प्रथमसमये हुंडोपघातनाम्नोर्जघन्यानुभागोदीरकः। म. टीका.

आदावणामाए जह० कस्स ? बादरपुढविजीवस्स जहण्णियाए पज्जत्तीए उववण्णस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमए वट्टमाणस्स। उज्जोवणामाए आदावभंगो[1]। उस्सासणामाए जह० कस्स ? अण्णदरस्स देवस्स णेरइयस्स एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियस्स वा। पसत्थापसत्थविहायगदीणं जह० कस्स ? अण्णदरस्स तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स। तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं जह० कस्स ? एदासिं पयडीणं जो वेदओ सो सव्वो पाओग्गो जहण्णाणुभागउदीरणमुदीरेदुं। पत्तेयसरीरणामाए जह० कस्स? सुहुमस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स पढमसमयआहार-पढमसमयतब्भवत्थस्स। साहारणसरीरणामाए जह० कस्स ? सुहुमस्स पढमसमयआहारयस्स उक्कस्सियाए पज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स। सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्ति-णीचुच्चागोदाणं जह० कस्स ? एदासिं पयडीणं जो वेदओ सो सव्वो पाओग्गो जहण्णियअणुभागउदीरणमुदीरेदुं। तित्थयरणामाए जह० को होदि ? पढमसमयकेवलिप्पहुडि जाव केवलसमुग्घादस्स चरिमसमयअणावज्जिदगो त्ति ताव जहण्णाणुभागउदीरओ[2]। पंचण्णमंतराइयाणं जह० कस्स ? समयाहियावलिय-

आतप नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य पर्याप्तिसे उत्पन्न हुए बादर पृथिवीकायिक जीवके शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें वर्तमान होनेपर होती है। उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा आतप नामकर्मके समान है। उच्छ्वास नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह अन्यतर देव, नारकी अथवा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रियके होती है। प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा किसके होती है ? वह उनके उदयसे संयुक्त अन्यतर जीवके होती है। त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्तकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो जीव इन प्रकृतियोंके वेदक हैं वे सब उनकी जघन्य अनुभागउदीरणा करनेके योग्य होते हैं। प्रत्येकशरीर नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न हुए प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म जीवके होती है। साधारणशरीर नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर प्रथम समयवर्ती आहारक हुए सूक्ष्म जीवके होती है। सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, नीचगोत्र और ऊंचगोत्र; इनकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? जो इन प्रकृतियोंके वेदक हैं वे सब उनकी जघन्य अनुभागउदीरणा करनेके लिये योग्य होते हैं। तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? प्रथम समयवर्ती केवलीसे लेकर केवलसमुद्घातके पूर्व अनावर्जितकरण अवस्थाके अन्तिम समय तक उसकी जघन्य अनुभागउदीरणा होती है। पांच अन्तराय कर्मोंकी जघन्य उदीरणा किसके होती है ? वह छद्मस्थ अवस्थामें एक

१ तथा आतपोद्योतनाम्नोस्तद्योग्यः पृथिवीकायिकः शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः प्रथमसमये वर्तमानः संक्लिष्टो जघन्यानुभागोदीरकः। क. प्र. (म. टीका) ४, ७७. २ प्रतिषु 'अजहण्णाणुभागउदीरओ' इति पाठः। जा नाउज्जियकरणं तित्थगरस्स × × ×। क. प्र. ४, ७८. जत्ति— आयोजिकाकरणं नाम

चरिमसमयछदुमत्थस्स । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्साणुभाग-उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बेसमया । अणुक्कस्स० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरणीयाणं आभिणि-बोहियणाणावरणभंगो । चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणीय-मिच्छत्त-अथिर-असुह-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोद-पंचंतराइयाणं उक्कस्सअणुभागुदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । णवरि अचक्खुदंसण-पंचंतराइयाणमुक्कस्साणुभागउदीरणा जहण्णु-क्कस्सेण[1] एगसमओ । अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । णवरि अचक्खुदंसण-पंचंतराइयाणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समऊणं, उक्कस्सेण

समय अधिक आवली मात्र शेष रह जानेपर होती है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है । उसकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाके कालकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है । चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, मिथ्यात्व, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय प्रमाण है । विशेष इतना है कि अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । विशेष इतना है कि अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे

केवलिसमुद्घातादर्वाग् भवति । तत्राङ् मर्यादायाम् । आ मर्यादया केवलिदृष्ट्या योजनं व्यापारणं आयोजनम् । तच्चातिशुभयोगानामवसेयम् । आयोजनमायोजिका, तस्याः करणं आयोजिकाकरणम् । केचिदावर्जितकरणमाहुः । तत्राय शब्दार्थः— आवर्जितो नाम अभीमुखीकृतः । तथा च लोके वक्तारः— आवर्जितोऽयं मया, संमुखीकृत इत्यर्थः । ततश्च तथा भव्यत्वेनावर्जितस्य मोक्षगमनं प्रत्यभिमुखीकृतस्य करणं शुभयोगव्यापारणं आवर्जितकरणम् । अपरे 'आ उस्सयकरणं' इति पठन्ति । तत्रायं शब्दसंस्कारः— आवश्यककरणमिति । अन्वर्थश्चायं आवश्यकेनावश्यंभावेन करणमावश्यककरणम् । तथाहि— समुद्घातं केचित् कुर्वन्ति, केचिच्च न कुर्वन्ति । इदं त्वावश्यककरणं सर्वेऽपि केवलिनः कुर्वन्तीति । तच्चा-योजिकाकरणमसंख्येयसमयात्मकमन्तर्मुहूर्तप्रमाणम् । × × × तच्चावश्याद्याप्यारभ्यते तावत्तीर्थंकरकेवलिन-स्तीर्थकरनाम्नो जघन्यानुभागोदीरणा । (म. टीका). १ काप्रतौ 'मुक्कस्साणुक्कस्सजहण्णुक्क०', ताप्रतौ 'मुक्कस्सा-णुक्कस्स० (मुक्कस्साणुभागु०) जहण्णुक्कस्स०', इति पाठः ।

असंखेज्जा लोगा। दंसणावरणपंचयस्स उक्क० अणुभागु० जह० एगसमओ, उक्क० बे-समया। अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं।

सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुभाग० जहण्णुक्क० एगसमओ[1]। अणुक्क० जह० अंतोमुहुत्तं। उक्क० सम्मामिच्छ० अंतोमु०, सम्मत्त० छावट्ठिसागरोवमाणि आवलि-यूणाणि[2]। सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसायाणमुक्कस्सअणुभागुदीरणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसमया। अणुक्क० अणुभागउदीरणा साद-हस्स-रदीणं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा। असाद-अरदि-सोगाणं जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। सोलसकसाय-भय-दुगुंछाणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। णवुंसयवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। पुरिसवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। इत्थि-वेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं।

णिरयाउ-देवाउआणमुक्कस्सअणुभागउदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। अणुक्क० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। तिरिक्ख-

असंख्यात लोक प्रमाण है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है।

सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय प्रमाण है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। उत्कर्ष वह सम्यग्मिथ्यात्वका अन्तर्मुहूर्त और सम्यक्त्वका एक आवलीसे कम छ्यासठ सागरोपम प्रमाण है। साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय और नौ नोकषाय; इनके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा कितने काल होती है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है। अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल सातावेदनीय, हास्य व रतिका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे छह मास; असातावेदनीय, अरति और शोकका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम; सोलह कषाय, भय व जुगुप्साका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त; नपुंसकवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; पुरुषवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व; तथा स्त्रीवेदका जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है।

नारकायु व देवायुकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवलीसे

१ ताप्रतौ 'अणुक्क० (भा०)' इति पाठः २ ताप्रतौ 'एगसमओ……।' इति पाठः। ३ सम्मत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागउदीरगो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्साणुभागुदीरगो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। क. पा. (चू. सू.) प्रे. प्र. पृ. ५४३५.

परघाद-आदाव-उज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-[बादर-]सुहुम-पज्जत्ता-पज्जत्त-पत्तेय-साहारण-दुस्सर-अजसकित्तीणमुक्कस्साणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बेसमया। अणुक्क० जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण जच्चिरं पयडि-उदीरणा तच्चिरं कालं। जसगित्ति-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्क० अणुभागु-दीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ। अणुक्कस्सं जच्चिरं पयडिउदीरणा तच्चिरं कालं। तित्थयरणामाए उक्कस्सअणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सा० केवचिरं० ? जह० वासपुधत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। एवमुक्कस्स-अणुभागउदीरणाए कालो समत्तो।

एत्तो जहण्णाणुभागउदीरणकालो वुच्चदे। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणा-वरणीय-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागउदीरणा जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अजहण्णाणु-भागउदीरणा अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा। णिद्दा-पयलाणं जहण्णाणुभागुदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अजहण्णउदीरणाए जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु०। सादासादाणं

व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, [बादर,] सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण, दुस्वर और अयशकीर्तिकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे जितने काल उनकी प्रकृतिउदीरणा होती है उतने काल होती है। यशकीर्ति, सुभग, सुस्वर, आदेय और ऊंच गोत्रकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जितने काल प्रकृतिउदीरणा होती है उतने काल होती है। तीर्थंकर नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उसकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे वर्षपृथक्त्व व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल तक होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका काल समाप्त हुआ।

यहां जघन्य अनुभागउदीरणाका काल कहा जाता है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञाना-वरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय कर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित भी है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। उनकी अजघन्य उदीरणा जघन्य-से एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक होती है। साता व असाता वेदनीयके जघन्य अनु-

जहण्णाणुभागस्स जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारिसमया । अजहण्ण०जह० एगसमओ । उक्क० सादस्स छम्मासा, असादस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि ।

मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जह० केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्ण० मिच्छत्तस्स तिण्णिभंगा । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सम्मत्तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्ठि-सागरोवमाणि समयाहियावलियूणाणि । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं । सोलसण्णं कसायाणं जहण्णाणुभागउदीरणा[1] केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवण्णं णोकसायाणं जहण्णाणुभागु-दीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्ण० हस्स-रदीणं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा । अरदि-सोगाणं जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । भय-दुगुंछाणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवुंसयवेदस्स जह० एयसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । इत्थिवेदस्स जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं ।

भागकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है । उनकी अज-घन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह सातावेदनीयका छह मास और असातावेदनीयका अन्तमुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है ।

मिथ्यात्व, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । मिथ्यात्वकी अजघन्य उदीरणाके विषयमें [अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित व सादि-सपर्यवसित ये] तीन भंग हैं । उनमें जो सादि-सपर्यवसित भंग है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । सम्यक्त्वकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे एक समय अधिक आवलीसे हीन छयासठ सागरोपम काल तक होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी अजघन्य उदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । सोलह कषायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है । नौ नोकषायोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है । अजघन्य उदीरणा हास्य व रतिकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे छह मास, अरति व शोककी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम, भय व जुगुप्साकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त, नपुंसकवेदकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, स्त्रीवेदकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व, तथा पुरुषवेदकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व काल तक होती है ।

१ मप्रतौ 'जहण्णाणुभागउदीरणा अणुभागउदीरणा' इति पाठः ।

आउआणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि-समया। अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० णिरय-देवाउआणं तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि, तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियूणाणि।

चदुण्णं गदीणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि-समया। अजहण्ण० जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण णिरय-देवगईणं तेत्तीसं सागरोव-माणि, मणुसगदीए तिण्णिपलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, तिरिक्खगईए असंखेज्जा लोगा। ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहण्णाणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अजहण्ण० ओरालियसरीरस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो; वेउव्विय० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि; आहारसरीरस्स जहण्णुक्कस्सेण[1] अंतोमुहुत्तं। तेजा-कम्मइयसरीराणं जह-ण्णाणुभागउदीरणा केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० बे समया। अजहण्ण० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तिण्णिअंगोवंग-पंचसरीरबंधण-पंचसरीर-संघादाणं सग-सगसरीरभंगो। णवरि ओरालियअंगोवंग० अजहण्णुक्कस्स० तिण्णि

आयु कर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह नारकायु व देवायुकी एक आवलीसे कम तेतीस सागरोपम, तथा तिर्यंचायु और मनुष्यायुकी एक आवलीसे कम तीन पल्योपम प्रमाण होती है।

चार गति नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह नरकगति व देवगतिकी तेतीस सागरोपम, मनुष्यगतिकी पूर्वकोटि-पृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम, तथा तिर्यंचगतिकी असंख्यात लोक प्रमाण काल तक होती है। औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। अजघन्य अनुभागउदीरणा औदारिकशरीरकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, वैक्रियिकशरीरकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम, तथा आहारशरीरकी जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। तैजस व कार्मण शरीरकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय तक होती है। उनकी अजघन्य अनुभाग उदीरणा जघन्य-से एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होती है। तीन आंगोपांग, पांच शरीरबन्धन और पांच शरीरसंघात प्रकृतियोंकी उक्त उदीरणाकी प्ररूपणा अपने अपने शरीर-के समान है। विशेष इतना है कि औदारिकशरीरआंगोपांगकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका

१ प्रतिषु 'आहारसरीरस्स जह० अणु० (अ. जहण्णुक्क०) केवचिरं ? जह० उक्क० एगसमओ। अजह० जहण्णुक्कस्सेण' इति पाठः।

पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ।

छसंठाण-छसंघडणाणं जहण्णाणुभागुदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्ण० समचउरससंठाणस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बे-छावट्ठिसागरोवमाणि । हुंडसंठाणस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो । वज्जरिसहवइरणारायण० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । सेसाणं संठाणाणं संघडणाणं च जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । काल-णीलय-तित्त-कडुअ-दुग्गंध-सीद-ल्हुक्खाणं जहण्णाणुभागुदीरणा जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्ण० अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा । पसत्थ-वण्ण-गंध-रसाणं[1] णिद्धुण्णाणं च जहण्णाणुभागउदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० बे-समया । अजहण्ण० जह० एगस० उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । मउअ-लहुआणं जहण्णाणुभागुदी० केवचिरं० ? जहण्णु० एगसमओ । अजहण्णअणुभागुदीरणा जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । कक्खड-गरुआणं जहण्णाणु० केवचिरं० ? जहण्णुक्क० एगसमओ । अजहण्णाणुभागउदीरणा अणादिय-अपज्जवसिदा अणादिय-सपज्जवसिदा सादि-सपज्जवसिदा वा । जा सादि-सपज्जवसिदा सा जहण्णुक० अंतोमुहुत्तं ।

उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है ।

छह संस्थानों और छह संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्पसे एक समय होती है । अजघन्य अनुभागउदीरणा समचतुरस्रसंस्थानकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्पसे दो छयासठ सागरोपम, हुण्डकसंस्थानकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्पसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्पसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम, तथा शेष संस्थानों और संहननोंकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्पसे पूर्वकोटिपृथक्त्व काल तक होती है । कृष्ण व नील वर्ण, तिक्त व कटु रस, दुर्गन्ध तथा शीत व रूक्ष स्पर्श नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्पसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । प्रशस्त वर्ण, गन्ध और रस नामकर्मोंकी तथा स्निग्ध व रूक्ष स्पर्श नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे दो समय तक होती है । उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक होती है । मृदु और लघु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्य व उत्कर्पसे एक समय होती है । इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन काल तक होती है । कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल तक होती है ? वह जघन्य व उत्कर्पसे एक समय होती है । उनकी अजघन्य अनुभाग-उदीरणा अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होती है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्य व उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है ।

[1] ताप्रतौ-'रसादीणं' इति पाठः ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणामाणं जहण्णाणुभागउदी० अजहण्णाणुभागु० च केवचिरं० ? जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसमया। णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए तिण्णिसमया। केसिं पि आइरियाणं अहिप्पाएण सव्वासिमाणुपुव्वीणमुक्कस्सकालो तिण्णिसमया, तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए चत्तारिसमया। अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाणं तेजा-कम्मइयभंगो।

अथिर-असुह-उवघाद-परघाद-पत्तेय-साहारणसरीर-आदावुज्जोवणामाणं जहण्णाणुभागुदी० जहण्णुक्क० एगसमओ। अजहण्णाणुभागुदी० अथिर-असुहाणं अणादिया अपज्जवसिदा अणादिया सपज्जवसिदा। उवघादणामाए जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो। परघादणामाए जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि, पत्तेय-साहारणसरीराणं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। आदावणामाए जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० बावीसवाससहस्साणि देसूणाणि। उज्जोवणामाए जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णिपलिदोवमाणि देसूणाणि।

जादिपंचयं[1]-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चा-णीचागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणा जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारिसमया। अजहण्णाणुभागुदी०

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा और अजघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होती है। विशेष इतना है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे तीन समय मात्र है। किन्हीं आचार्योंके अभिप्रायसे सब आनुपूर्वियोंका उत्कृष्ट काल तीन समय और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका चार समय है। अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामकर्मकी इन उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा तैजस व कार्मण शरीरके समान है।

अस्थिर अशुभ, उपघात, परघात, पत्येकशरीर, साधारणशरीर, आतप और उद्योत नाकर्मोंकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होती है। अजघन्य अनुभाग-उदीरणा अस्थिर और अशुभकी अनादि-अपर्यवसित व अनादि-सपर्यवसित, तथा उपघात नामकर्मकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे अंगुलके असख्यातवें भाग, परघात नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम, प्रत्येक व साधारण शरीरकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग, आतप नामकर्मकी जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष, तथा उद्योत नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तीन पल्योपम काल तक होती है।

पांच जातियां, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, ऊंचगोत्र और नीचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय तक

१ ताप्रतौ 'जादिपंचयस्स' इति पाठः।

जह० उस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणं एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। तसणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्क० बेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि। थावर-एइंदियणामाणं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। चदुण्णं जादीणं जह० एगसमओ, उक्क० सगट्ठिदी। बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं जह० एगसमओ; उक्क० बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बेसागरोवमसहस्साणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं। जसगित्ति-सुभग-आदेज्जाणं जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्जाणं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। उच्चागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसदपुधत्तं। णीचागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। तित्थयरणामाए जहण्णाणुभागुदी० केवचिरं०? जह० वासपुधत्तं, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा देसूणचउरासीदिलक्खमेत्तपुव्वाणि वा। अजहण्ण० जहण्णुक्क०[1] अंतोमुहुत्तं। एवमेयजीवेण कालो समत्तो।

एयजीवेण अंतरं। तं जहा[2]— पंचणाणावरणीय-अट्ठदंसणावरणीय-असादावेदणीय-

होती है। अजघन्य अनुभागउदीरणा उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति और सुस्वरकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम काल तक होती है। त्रस नामकर्मकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम काल तक होती है। उक्त अजघन्य उदीरणा स्थावर और एकेन्द्रिय नामकर्मकी जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होती है। चार जाति नामकर्मोंकी वह उदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अपनी स्थिति प्रमाण होती है। बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त व अपर्याप्तकी जघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय होती है। उत्कर्षसे वह बादर नामकर्मकी अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मकी असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मकी दो हजार सागरोपम, तथा अपर्याप्त नामकर्मकी अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। यशकीर्ति, सुभग और आदेयकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व काल तक होती है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक काल तक होती है। ऊंच गोत्रकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व काल तक होती है। नीचगोत्रकी अजघन्य उदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होती है। तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह जघन्यसे वर्षपृथक्त्व तथा उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल अथवा कुछ कम चौरासी लाख मात्र पूर्व तक होती है। इसकी अजघन्य अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, नारकायु,

१ अप्रतौ 'अणुक्क०' इति पाठः। २ अप्रतौ 'अंतरं जहा' इति पाठः।

मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-णिरय-तिरिक्ख-मणुसाउअ-णिरय-तिरिक्ख-मणुसगइ-ओरालियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-पंचसंठाण-छसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-विगलिंदियजादि- उवघाद-अप्पसत्थविहायगइ-अथिर- असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज- णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा[1]। अचक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० खुद्दाभवग्गहणं समऊणं, उक्क० असंखेज्जा लोगा। सादावेदणीय-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-आहार-वेउव्विय-सरीराणं तदंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं समचउरससंठाण-मउअ-लहुग-परघाद-उज्जोव-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-उस्सासणामाणं च उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। णवरि साद-देवाउ-देवगदि-वेउव्वियचउक्क-पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्ताणं तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। तेजा-कम्मइयसरीर-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाणमुक्कस्साणुभागउदीरणाए णत्थि अंतरं।

णिरयाणुपुव्वीए उक्कस्साणुभागुदी० जह० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। तिरिक्खाणुपुव्वीए अट्ठवस्साणि समऊणाणि। मणुस्साणुपुव्वीए तिण्णि पलिदोवमाणि

तिर्यगायु, मनुष्यायु, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकआंगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, पांच संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, विकलेन्द्रिय जाति, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण व उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। सातावेदनीय, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, आहारकशरीर, वैक्रियिकशरीर, उन दोनों शरीरोंके आंगोपांग, बन्धन व संघात नामकर्म, समचतुरस्रसंस्थान, मृदु, लघु, परघात, उद्योत, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और उच्छ्वास नामकर्म; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जन्यसे एक समय व उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन काल तक होता है। विशेष इतना है कि सातावेदनीय, देवायु, देवगति, वैक्रियिकचतुष्क, पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका उपर्युक्त अन्तर उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम काल तक होता है। तैजस व कार्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता।

उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे नारकानुपूर्वीका साधिक तेतीस सागरोपम, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका एक समय कम आठ वर्ष, और मनुष्यानुपूर्वीका साधिक तीन पल्योपम

---

१ मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण बे-छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि। क. पा. (चू. सू.) प्रे. ब. पृ. ५४४८-४९.

सादिरेयाणि । उक्कस्सं तिण्णं पि एइंदियट्ठिदी । देवाणुपुव्वीए जहण्णुक्कस्सेण णत्थि अंतरं । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । अणुक्कस्सस्स पयडिउदीरणंतरभंगो[1] । आदावणामाए उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । थावर-सुहुम-साहारणसरीराणं उक्कस्साणुभागउदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखे० लोगा । अपज्जत्तणामाए उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्टा । एवमोघुक्कस्सं समत्तं ।

जहण्णाणुभागुदीरणंतरं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-णवणोकसाय-चदुसंजलण - सम्मत्त-अप्पसत्थवण्ण[2]-गंध-रस-फास - अथिर-असुभ - पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं णत्थि । णिद्दा-पयला-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-बारसकसायाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णाणुभाग० जह० अंतोमु०, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सादासादाणं जह० उदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा ।

मात्र काल तक होता है । उत्कृष्ट अन्तर इन तीनोंका भी एकेन्द्रियकी स्थिति प्रमाण होता है । देवानुपूर्वीकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे व उत्कर्षसे भी नहीं होता । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा प्रकृतिउदीरणाके अन्तर जैसी है । आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है । स्थावर, सूक्ष्म और साधारण शरीरकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है । अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है । इस प्रकार ओघ उत्कृष्ट समाप्त हुआ ।

जघन्य अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, नौ नोकषाय, चार संज्वलन, सम्यक्त्व, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर, अशुभ और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता । निद्रा, प्रचला, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और बारह कषाय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गल मात्र काल तक होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है । साता व असाता वेदनीयकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है ।

१ एव सेसाणं कम्माणं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तवज्जाणं । णवरि अणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं पयडिअंतर कादव्वं । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुक्कस्साणुभागुदीरणंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । क. पा. (मु. म.) पे. प. पृ. ५४९०-९१. २ अ-काप्रत्योः 'चदुसंजलण-अप्पसत्थ' इति पाठः ।

चदुण्णमाउआणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ। उक्क० तिण्णमाउआण-मसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, तिरिक्खाउअस्स असंखेज्जा लोगा। चदुण्णं गईणं सग-सग-आउअभंगो। ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरंगो-वंगाणं तेसिं बंधण-संघादाणं उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-पत्तेय-साहारणाणं च जहण्णाणु-भागुदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं। उक्क० ओरालियसरीरबंधण-संघाद-उवघाद-परघाद-साहारणसरीराणमसंखेज्जा लोगा, वेउव्वियसरीर-ओरालिय-वेउव्वियसरीरंगोवंग-तब्बंधण-संघाद-पत्तेय०-आदावुज्जोवाणं उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-तब्बंधण-संघादाणं उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। णवरि वेउव्विय-अंगोवंगणामाए जहण्णेण पलिदो० असंखे० भागो, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। हुंडसंठाणस्स ओरालियसरीरभंगो। पंचसंठाण-छसंघडणाणं जहण्णाणुभागउदीरणंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्टा। मउअ-लहुआणं संघडणभंगो।

णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० असंखे० पो० परियट्टा। अधवा, जहण्णाणुभागंतरमेगसमओ, देव-णेरइएसु अणाहार-

चार आयुकर्मोंकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय होता है। उक्त अन्तर उत्कर्षसे तीन आयुकर्मोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन और तिर्यंचआयुका असंख्यात लोक प्रमाण काल तक होता है। चार गतियोंके उक्त अन्तरकी प्ररूपणा अपनी अपनी आयुके समान है। औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर; औदारिक, वैक्रियिक व आहारक आंगोपांग; उनके बन्धन व संघात तथा उपघात, परघात, आतप, उद्योत, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। उक्त अन्तर उत्कर्षसे औदारिक-शरीर, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, उपघात, परघात और साधारणशरीरका असंख्यात लोक मात्र; वैक्रियिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन, वैक्रियकसंघात, प्रत्येकशरीर, आतप और उद्योतका वह अन्तर उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण; तथा आहारकशरीर, आहारकआंगोपांग, आहारकबन्धन और आहारकसंघातका वह अन्तर उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। विशेष इतना है कि वैक्रियिकआंगोपांगका उक्त अन्तर जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र काल तक होता है। हुण्डकसंस्थानके इस अन्तरकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। पांच संस्थानों और छह संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असं-ख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। मृदु और लघुके प्रकृत अन्तरकी प्ररूपणा संहननोंके समान है।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है। अथवा उनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र होता है, क्योंकि, देवों

---

१ अप्रतौ आप्रतौ च 'ताप्रतौ' समये 'परघाद-साधारणसरीराणमसंखेज्जा लोगा' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते।

कालस्स तिसमयपमाणब्भुवगमादो। मणुसाणुपुव्वीए जहण्णाणुभागंतरं जह० एगसमओ अधवा खुद्दाभवग्गहणं दुसमऊणं, उक्क० असंखे० पो० परियट्टा। तिरिक्खाणुपुव्वीए जहण्णाणुभागंतरं जह० एगसमओ अधवा खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं चदुसमऊणं वा, उक्क० असंखेज्जा लोगा। उस्सास-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-जस-अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। दोविहायगइ-तस-सुभगादेज्ज-सरदुग-तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-पसत्थ-वण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तित्थयरस्स जहण्णाणुभागउदीरणंतरं णत्थि। एवमंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्सपदभंगविचओ जहण्णपदभंगविचओ चेदि। उक्कस्सपदभंगविचयस्स अट्ठपदं। तं जहा— जो उक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ सो अणुक्कस्सअणुभागस्स अणुदीरओ, जो अणुक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ सो उक्कस्स-अणुभागस्स अणुदीरओ[2]। जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारो। एदेण अट्ठपदेण पंचण्णं णाणावरणीयपयडीणं उक्कस्साणुभागस्स सिया सव्वे जीवा

व नारकियोंमें अनाहारकालका प्रमाण तीन समय स्वीकार किया गया है। मनुष्यानुपूर्वीकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय अथवा दो समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है, उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है। तिर्यगानुपूर्वीकी जघन्य अनुभाग-उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय मात्र अथवा तीन समय कम या चार समय कम क्षुद्रभव-ग्रहण प्रमाण होता है, उत्कर्षसे वह असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है। उच्छ्वास, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। दो विहायोगतियां, त्रस, सुभग, आदेय, स्वरद्विक, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, उन दोनोंके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, निर्माण और ऊंचगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गल-परिवर्तन मात्र काल तक होता है। तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणा अन्तर नहीं होता। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है— उत्कृष्ट-पद-भंगविचय और जघन्य-पद-भंगविचय। इनमें उत्कृष्ट-पद-भंगविचयका अर्थपद कहा जाता है। यथा— जो उत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है वह अनुत्कृष्ट अनुभागका अनुदीरक होता है। जो अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है वह उत्कृष्ट अनुभागका अनुदीरद होता है। जो जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे प्रकृत हैं, अवेदकोंका व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदके अनुसार पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभागके कदाचित् सब जीव अनुदीरक होते हैं, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व एक जीव

१ ताप्रतौ 'उदीरणा (ओ)' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'उक्कस्सअणुभागस्स उदीरओ णत्थि' इति पाठः।

अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। एवमणुक्कस्सस्स वि पडिलोमेणं[1] तिण्णिभंगा वत्तव्वा। अट्ठविहस्स दंसणावरणीयस्स णाणावरणभंगो। अचक्खुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं च उक्कस्सअणुभागस्स णियमा उदीरया अणुदीरया च[2] अत्थि। सादासादाणं मोहणिज्जस्स सत्तावीसं पयडीणं चउव्विहस्स आउअस्स आहारचउक्कवज्जाणं णामपयडीणं णीचुच्चागोदाणं च जहा णाणावरणस्स छभंगा परूविदा तहा परूवेदव्वा। सम्मामिच्छत्त-आहारचउक्क-तिण्णमाणुपुव्वीणं च सोलस भंगा वत्तव्वा[3]।

जहण्णपदभंगविचए अट्ठपदं जहा उक्कस्सपदभंगविचए कदं तहा कायव्वं। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सत्तावीसमोहणीय-तिण्णिआउ-तिण्णिगदि-जादिचउक्क-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयपयडीणं तब्बंधण-संघाद-अंगोवंगाणं पंचसंठाण-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-आदाव-तस-अगुरुअलहु-पसत्थापसत्थविहायगइ-थिराथिर - सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-सुस्सर-दुस्सर-तित्थयर-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं च जहण्णाणुभागस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया

उदीरक होता है, तथा कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत जीव उदीरक भी होते हैं। इसी प्रकारसे अनुत्कृष्ट अनुभागके सम्बन्धमें भी प्रतिलोम स्वरूपसे इन तीन भंगोको कहना चाहिये। आठ प्रकार दर्शनावरणके भंगविचयकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। अचक्षुदर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियों सम्बन्धी उत्कृष्ट अनुभागके नियमसे बहुत जीव उदीरक और बहुत जीव अनुदीरक भी होते हैं। साता व असाता वेदनीय, मोहनीयकी सत्ताईस प्रकृतियों, चार प्रकार आयुकर्म, आहारकचतुष्कको छोड़कर शेष नामप्रकृतियों तथा नीच व ऊंच गोत्रके विषयमें जैसे ज्ञानावरणके छह भंगोकी प्ररूपणा की गयी है, वैसे ही उनकी प्ररूपणा करना चाहिये। सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकचतुष्क और तीन आनुपूर्वियोंके सोलह भंग कहना चाहिये।

जिस प्रकार उत्कृष्ट-पद-भंगविचयमें अर्थपद बतलाया गया है उसी प्रकार जघन्य-पद-भंगविचयमें भी बतलाना चाहिये। पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सत्ताईस मोहनीयप्रकृतियां, तीन आयु, तीन गति, चार जातियां, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण प्रकृतियां एवं उनके बन्धन, संघात व आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, आतप, त्रस, अगुरुलघु, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, सुस्वर, दुस्वर, तीर्थंकर, निर्माण, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय; इनके जघन्य अनुभागके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक व एक उदीरक, तथा कदाचित् बहुत जीव अनुदीरक और बहुत ही जीव उदीरक भी होते हैं। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिके अजघन्यकी प्ररूपणा

१ अ-काप्रत्योः 'पलिदोवमेण', ताप्रतौ '[पलिदोवमेण]' इति पाठः २ अप्रतौ 'पंचंतराइयस्स उक्कस्स'...... उदीरया च अणुदीरया च' इति पाठः। ३ ओघेण मिच्छ० सोलसक० सम्म० णवणोक० उक्क० अणुभागुदीरणाए सिया सव्वे अणुदीरगा, सिया अणुदीरगा च उदीरगो च, सिया अणुदीरगा च उदीरगा च। एवमणुक्क०। णवरि उदीरगा पुव्वं व वत्तव्वं। सम्मामि० उक्क० अणुक्क० अणुभागुदी० अट्ठभंगा। जयध. प्रे. व. पृ. ५४६७.

च। णवरि तित्थयरस्स अजहण्णं पुव्वं वत्तव्वं[1]। एवमजहण्णस्स वि तिण्णिभंगा वत्तव्वा। णवरि तित्थयरस्स जहण्णं पुव्वं व वत्तव्वं[2]।

सादासाद- तिरिक्खाउ- तिरिक्खगइ-एइंदियजादि- ओरालियसरीर-तब्बंधण-संघाद-हुंडसंठाण-तिरिक्खाणुपुव्वी-उवघाद-परघादुज्जोव-उस्सास-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-जसकित्ति- अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं जहण्णाजहण्णाणुभागस्स उदीरया अणुदीरया च णियमा अत्थि। सम्मामिच्छत्त-तिण्णिआणुपुव्वी-आहारसरीराणं जहण्णाजहण्णाणुभागउदीरणाए सोलस भंगा वत्तव्वा। एवं भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो। तं जहा— पंचणाणावरणीय-अट्ठदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठवीसमोहणीय-णिरयाउ-देवगइ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-जाइचउ-णिरय-तिरिक्खाणुपुव्वी-पंचसंठाण-पंचसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-उवघाद-आदाव- उस्सास -अप्पसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्तापज्जत्त-अथिर-असुह-दूभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-दुस्सर-णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणा केवचिरं०? णाणाजीवे पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। अणुक्कस्सउदीरणा केवचिरं०? सव्वद्धा। णवरि सम्मामिच्छत्तस्स

पहिले करना चाहिये। इस प्रकार अजघन्यके भी तीन भंग कहने चाहिये। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणाविषयक भंगोंका कथन पहिलेके समान करना चाहिये।

साता व असाता वेदनीय, तिर्यंचआयु, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, हुण्डसंस्थान, तिर्यगानुपूर्वी, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र; इनके जघन्य व अजघन्य अनुभागके नियमसे बहुत जीव उदीरक और बहुत अनुदीरक भी होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्व, तीन आनुपूर्वियों और आहारकशरीरकी जघन्य और अजघन्य अनुभाग उदीरणाके विषयमें सोलह भंग कहने चाहिये। इस प्रकार भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, देवगति, नरकगति, तिर्यग्गति, चार जातियां, नरकानुपूर्वी, तिर्यगानुपूर्वी, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, उपघात, आतप, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, दुस्वर और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। इनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह सर्वकाल होती है। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्वकी वह उदीरणा जघन्यसे

१ अ-काप्रत्योः 'अहण्णपुव्वं वत्तव्वं', ताप्रतौ 'अजहण्णं पुव्वं व वत्तव्वं'' इति पाठः। २ अप्रतौ 'जहण्णं पुव्वं वत्तव्वं', काप्रतौ 'जहण्णपुव्वं वत्तव्वं इति पाठः।

जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। णिरयाणुपुव्वीए अणुक्कस्सं पि आवलियाए असंखे० भागो। अचक्खुदंसणावरणीय-एइंदिय-थावर-सुहुम-साहारण-पंचंतराइयाणमुक्कस्साणुक्कस्सअणुभागुदीरणा केवचिरं० ? सव्वद्धा।

मणुस-तिरिक्खाउ-मणुसगइ-देवाउ-पंचसरीर-तिण्णिअंगोवंग-बंधण-संघाद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहु-परघाद-उज्जोव-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोदाणं उक्कस्सअणुभागउदीरणा णाणाजीवेहि जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। अणुक्कस्स० सव्वद्धा। णवरि आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं अणुक्क० उदीरणा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। देव-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं अणुक्कस्साणुभाग० जह० एगसमओ उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एवमुक्कस्सकालो समत्तो।

णाणाजीवेहि जहण्णाणुभागउदीरणकालो। तं जहा— पंचणाणावरणीय-सत्तदंसणावरणीय-सत्तावीसमोहणीयाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। अजहण्णस्स सव्वद्धा। णिद्दा-पयलाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एयसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अजहण्णस्स सव्वद्धा। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणु-

अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। नरकानुपूर्वीकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका भी काल आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। अचक्षुदर्शनावरण, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा कितने काल होती है? वह सर्वकाल होती है।

मनुष्यायु, तिर्यगायु, मनुष्यगति, देवायु, पांच शरीर, तीन आंगोपांग, बन्धन, संघात, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस, व स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर और उच्चगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय तक होती है। उनकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वकाल होती है। विशेष इतना है कि आहारकशरीर, आहारकआंगोपांग, आहारकशरीरबन्धन और आहारकशरीरसंघातकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है। देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट काल समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अनुभागउदीरणाका काल कहा जाता है। यथा— पांच ज्ञानावरण, सात दर्शनावरण और सत्ताईस मोहनीय; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है। इनकी अजघन्य उदीरणाका काल सर्वकाल है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। सम्य-

भागुदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। सादासाद-तिरिक्खाउआणं जहण्णाजहण्णाणुभागउदीरणकालो सव्वद्धा।

णिरय-देव-मणुस्साउ- णिरय- देव-मणुस्सगदि- चउजादि- वेउव्विय- तेजा-कम्मइय-सरीर-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग- वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-णिरय-देव- मणुस्साणुपुव्वी -अगुरुअलहुअ-आदाव- पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। अजहण्णाणुभागुदीरणाए सव्वद्धा। णवरि तिण्णमाणुपुव्वीणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असं० भागो।

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - एइंदियजादि- ओरालियसरीर- तब्बंधण-संघाद-हुंडसंठाण-उवघाद-परघाद-उज्जोव-उस्सास-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त- पत्तेय-साहारणसरीर-जसकित्ति-अजसकित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोद-तित्थयराणं जहण्ण-अजहण्णअणुभागउदीरणकालो सव्वद्धा। णवरि तित्थयरस्स अजहण्णाणुभागउदीरणकालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-तब्बंधण-संघादाणं जहण्णाणुभागउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। अजहण्ण० जहण्णु-

---

मिथ्यात्वकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। साता व असाता वेदनीय और तिर्यंचआयुकी जघन्य व अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है।

नारकायु, देवायु, मनुष्यायु, नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, चार जातियां, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, औदारिक व वैक्रियिक आंगोपांग, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीरके बन्धन और संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, नरकानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, आतप, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, निर्माण और उच्चगोत्र; इनकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। विशेष इतना है तीन आनुपूर्वियोंकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है।

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रियजाति, औदारिकशरीर, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, हुण्डकसंस्थान, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र और तीर्थंकर; इनकी जघन्य व अजघन्य उदीरणाका काल सर्वकाल है। विशेष इतना है कि तीर्थकर प्रकृतिकी अजघन्य अनुभागउदीरणा काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। आहारकशरीर, अहारकशरीरांगोपांग, तथा उसके बन्धन व संघात, इनकी जघन्य अनुभाग-उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। पांच संस्थानों और छह

कस्सेण अंतोमु०। पंचसंठाण-छसंघडणाणं जहण्णाणुभागउदी० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। अजहण्ण० सव्वद्धा। अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अथिर-असुभाणं जहण्णाणुभाग० जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा समया। अजहण्ण० सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

णाणाजीवेहि अंतरं। तं जहा— पंचणाणावरणीय-अट्ठदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठावीसमोहणीय-णिरय-देव-तिरिक्ख-मणुस्साउ-चत्तारिगदि-चत्तारिजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-छसंठाण-छसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास मउअ-लहुअ-चत्तारिआणुपुव्वी-उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। अणुक्क० णत्थि अंतरं। णवरि सम्मामिच्छत्त-आहारचउक्क-तिण्णिआणुपुव्वीणं जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो वासपुधत्तं[1] चउवीसअंतोमुहुत्तं[2]। अचक्खुदंसणावरण० उक्कस्साणुक्कस्स० णत्थि अंतरं।

तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास णिद्धुण्ण-अगुरुअलहुअ-

संहननोंकी जघन्य अनुभागउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर तथा अशुभ; इनकी जघन्य अनुभागउदीरका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात समय मात्र है। इनकी अजघन्य अनुभागउदीरणाका काल सर्वकाल है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— पांच ज्ञानावरण, आठ दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, देवायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार गतियां, चार जातियां, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, अप्रशस्त, वर्ण गन्ध, रस तथा मृदु व लघु स्पर्श चार आनुपूर्वियां, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। उनकी अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता। विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकचतुष्क और तीन आनुपूर्वियोंकी अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय तथा उत्कर्षसे क्रमशः सम्यग्मिथ्यात्वका पल्योपमके असंख्यातवें भाग, आहारचतुष्कका वर्षपृथक्त्व, और तीन आनुपूर्वियोंका चौबीस अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता।

तैजस व कार्मण शरीर, उनके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस तथा स्निग्ध व उष्ण

१ अप्रतौ 'उक्क० पलिदो० असंखे० भागवासपुधत्तं', काप्रतौ 'उक्क० पलि० वासपुधत्तं', ताप्रतौ 'उक्क० पलिदोवमवासपुधत्तं' इति पाठः। २ ओघेण मदिपयडी उक्क० अणुभागुदी० अंतरं जह० एगस०, उक्क० असखेज्जा

थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्साणुभागुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। अणुक्कस्साए णत्थि अंतरं। एवं तित्थयरस्स। णवरि उक्कस्साणु० उदी० उक्कस्सेण वासपुधत्तं। थावर-सुहुमेइंदियजादि-साहारणसरीर-पंचंतराइयाणं उक्कस्साणुक्कस्सअणुभागुदीरणंतरं णत्थि। एवमुक्कस्संतरं समत्तं।

एत्तो जहण्णअणुभागउदीरणंतरं। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीय-सुद-णाणावरणीय-मणपज्जवणाणावरणीय-चक्खुदंसणावरणीयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्साणि[२]। ओहिणाणावरणीय-ओहिदंसणावरणीयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं पि जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्साणि। केवलणाणा-वरणीय-केवलदंसणावरणीय-लोहसंजलण - अप्पसत्थवण्ण-गंध - रस-फास - अथिर-असुह-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा। णिद्दा-पयलाणं जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जवस्साणि। सम्मत्तस्स जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा। इत्थि-णवुंसयवेदाणं जह० एगसमओ, उक्क० संखे० वस्साणि। पुरिसवेद-कोध-माण [-माया]-

---

स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और ऊंच गोत्र; इनकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है। इनकी अनुत्कृष्ट उदीरणाका अन्तर नहीं होता। इसी प्रकारसे तीर्थंकर प्रकृतिके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि उसकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व मात्र होता है। स्थावर, सूक्ष्म, एकेन्द्रियजाति, साधारणशरीर और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणाका अन्तर नहीं होता। इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर समाप्त हुआ।

यहां जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर कहा जाता है। यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। अवधिज्ञानावरण और अवधि-दर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर भी जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, संज्वलनलोभ, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर, अशुभ और पांच अन्तरायकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है। निद्रा और प्रचलाकी जघन्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष मात्र होता है। पुरुषवेद और संज्वलन क्रोध, मान व मायाकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और

लोगा। अणुक्क० णत्थि अंत०। सव्वा० सासणि० अणुक्क० जह० एगस०, उक्क० पलिदो० असं० भागो। जयध. प्रे. क. पृ. ५४८८. २ अ-काप्रत्योः 'जदि' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि' इति पाठः।

संजलणाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० वासं सादिरेयं।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि - मिच्छत्त- सम्मामिच्छत्त- बारसकसाय-छण्णो-कसाय-णिरय- देव-मणुसाउ-णिरयगइ - मणुसगइ-देवगइ- चदुजादि-णिरय-देव-मणुस्साणु-पुव्वी-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण-संघाद-तिण्णिअंगोवंग-पंचसंठाण- छसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फासमउअ-लहुअ-अगुरुअलहुअ[1]-आदाव-पसत्थापसत्थविहायगइ - तस-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोदाणं जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा। कक्खड-गरुआणं जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरा-लियसरीर-तब्बंधण-संघाद-हुंडसंठाण-उवघाद-परघाद-उज्जोव-उस्सास-थावर-सुहुम-बादर-पज्जत्ता-पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर- जसगित्ति- अजसगित्ति -दुभग-अणादेज्ज - णीचुच्चागोद-तित्थयराणं जहण्णाजहण्ण० णत्थि। णवरि तित्थयर[2]० जहण्णाणुभागुदीरणंतरं जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं। एवमंतरं समत्तं।

सण्णियासो दुविहो उक्कस्सपदसण्णियासो जहण्णपदसण्णियासो चेदि। तत्थ[3] उक्कस्सपदसण्णियासो दुविहो सत्थाण-परत्थाणसण्णियासभेदेण। तत्थ सत्थाणे पयदं।

उत्कर्षसे साधिक एक वर्ष मात्र होता है।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व, बारह कषाय, छह नो-कषाय, नारकायु, देवायु, मनुष्यायु, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, चार जातियां, नरकानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर तथा उनके बन्धन और संघात, तीन आंगोपांग, पांच संस्थान, छह संहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व मृदु-लघु स्पर्श, अगुरुलघु, आतप, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, निर्माण और ऊंच गोत्रकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र होता है। कर्कश और गुरुकी उक्त उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्ष-से वर्षपृथक्त्व मात्र होता है। तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर व उसके बन्धन-संघात, हुण्डकसंस्थान, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, स्थावर, सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, दुर्भग, अना-देय, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और तीर्थंकर; इनकी जघन्य व अजघन्य उदीरणाका अन्तर नहीं होता। विशेष इतना है कि तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य अनुभागउदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व मात्र होता है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

संनिकर्ष दो प्रकार है— उत्कृष्टपदसंनिकर्ष और जघन्यपदसंनिकर्ष। उनमें उत्कृष्टपदसंनि-कर्ष स्वस्थानसंनिकर्ष और परस्थानसंनिकर्षके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें स्वस्थानसंनिकर्ष प्रकृत

१ अप्रतौ 'फास मद्दुरअलहुअगुरुअलहु', ताप्रतौ 'फास-अगुरुअलहु-म [हुर] उ-लहुअ', मप्रतौ 'फास-महुअलहुअगुरुअलहुअ' इति पाठः। २ अप्रतौ 'तित्थयराणं', ताप्रतौ 'तित्थयर-' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'जत्थ' इति पाठः।

तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्समुदीरेंतो सुदणाणावरणस्स उक्कस्समणुक्कस्सं वा उदीरेदि । जदि अणुक्कस्सं, छट्ठाणपदिदं । एवमोहिणाणावरणीय-मणपज्जवणाणावरणीय-केवलणाणावरणीयाणं पि वत्तव्वं । सेसचदुण्णं पयडीणं आभिणिबोहियणाणावरणीयभंगो ।

चक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्समुदीरेंतो अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं[1] णियमा अणुक्कस्समुदीरेदि अणंतगुणहीणं । अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो सेसाणं तिण्णं पि णियमा अणंतगुणहीणमुदीरेदि । सेसपंचण्णं दंसणावरणीयाणं णियमा अणुदीरओ । ओहिदंसणावरणस्स उक्कस्साणुभागं उदीरेंतो पंचण्णं दंसणावरणीयाणं उदीरओ । केवलदंसणावरणस्स णियमा, तं तु छट्ठाणपदिदं[2] । सेसाणं दोण्णं दंसणावरणीयाणं णियमा अणुक्कस्साणुभागस्स अणंतगुणहीणस्स उदीरओ । केवलदंसणावरणीयस्स ओहिदंसणावरणभंगो । णिद्दाए उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो दंसणावरणचउक्कस्स णियमा अणंतगुणहीणमुदीरेदि । सेसाणं चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णियमा अणुदीरओ । सेस-

है । यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरणके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी करता है । इसी प्रकार अवधिज्ञानावरण, मन:पर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये । शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी मुख्यतासे संनिकर्षकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है ।

चक्षुदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । अचक्षुदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष तीनों ही प्रकृतियोंके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागकी उदीरणा करता है । वह शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका नियमसे अनुदीरक होता है । अवधिदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका [कदाचित्] उदीरक होता है । केवलदर्शनावरणका नियमसे उदीरक होता हुआ षट्स्थानपतितका उदीरक होता है । शेष दो दर्शनावरण (चक्षुदर्शनावरण व अचक्षुदर्शनावरण) प्रकृतियोंका उदीरक होकर वह नियमसे उनके अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है । केवलदर्शनावरणके संनिकर्षकी प्ररूपणा अवधिदर्शनावरणके समान है । निद्राके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चक्षुदर्शनावरणादि चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागका उदीरक होता है । शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है । प्रचला आदि शेष चार

१ अप्रतौ 'केवलदंसणावरणं', काप्रतौ 'कवलदंसणावरणं', ताप्रतौ 'केवलदंसणावर०' इति पाठः ।
२ ताप्रतौ '-पदिद' इति पाठः ।

चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णिद्दाए भंगो ।

सादावेदणीयमुदीरेंतो असादावेदणीयस्स णियमा अणुदीरओ । एवमसादस्स वि वत्तव्वं । मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो सोलसकसाय-णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ, सिया अणुदीरओ । जदि उदीरओ उक्कस्समणुकस्सं वा उदीरेदि । जदि अणुकस्स० तो[1] छट्ठाणपदिदमुदीरेदि । इत्थि-पुरिसवेदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं[2] । हस्स-रदीणं सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ[3] । जदि उदीरओ णियमा अणुकस्सं[4] णियमा अणंतगुणहीणमुदीरेदि । सोलसण्णं कसायाणं मिच्छत्तभंगो । णवरि कोधे णिरुद्धे माणादीणमुदीरणा णत्थि । एवं माणादीणं पि वत्तव्वं । णवुंसयवेदस्स मिच्छत्तभंगो । णवरि इत्थि-पुरिसवेदाणमुदीरणा णत्थि । अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं मिच्छत्तभंगो । णवरि अरदि-सोगमुदीरेंतो हस्स-रदीणमणुदीरओ । इत्थि-पुरिसवेदाणं मिच्छत्तभंगो । णवरि एगवेदे णिरुद्धे सेसवेदाणमणुदीरओ[5] । हस्स-रदीणमुक्कस्साणुभागमुदीरेंतो जासिं पयडीणमुदीरओ णियमा तासिमणुकस्समुक्कस्सादो अणंतगुणहीण-

दर्शनावरण प्रकृतियोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है ।

सातावेदनीयकी उदीरणा करनेवाला असातावेदनीयका नियमसे अनुदीरक होता है । इसी प्रकार असाताके भी सम्बन्धमें कहना चाहिये ।

मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला सोलह कषाय, नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि वह उदीरक होता है तो उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है । वह यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणाके सम्बन्धमें भी इसी प्रकार कहना चाहिये । हास्य व रतिका कदाचित् उदीरक होता है और कदाचित् अनुदीरक। यदि उदीरक होता है तो वह नियमसे अनुत्कृष्ट और नियमसे अनन्तगुणे हीन अनुभागकी उदीरणा करता है । सोलह कषायोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि क्रोधकी विवक्षा होनेपर मानादिकी उदीरणा नहीं होती । इसी प्रकार मानादिकोंकी विवक्षामें भी कहना चाहिये । नपुंसकवेदके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि नपुंसकवेदके उदीरकके स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उदीरणा नहीं होती है । अरति शोक, भय व जुगुप्साके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि अरति व शोककी उदीरणा करनेवाला हास्य व रतिका अनुदीरक होता है । स्त्री और पुरुष वेदोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । विशेष इतना है कि एक वेदके विवक्षित होनेपर शेष वेदोंका वह अनुदीरक होता है । हास्य व रतिके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला जिन प्रकृतियोंका उदीरक होता है उनके नियमसे उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन

१ ताप्रतौ 'अणुकस्साणुभागमुदीरेंतो' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः '-वेदाण पि चेव वत्तव्वं', ताप्रतौ '-वेदाणं पि चेव (एवं) वत्तव्वं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'हस्स-रदीणं णियमा उदीरओ सिया अणुदीरओ' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'अणुक्कस्मा' इति पाठः । ५ ताप्रतौ '-मणुदीरेदि' इति पाठः ।

मुदीरेदि ।

णिरयगइणामाए उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो हुंडसंठाण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-सीद-ल्हुक्ख-उवघाद-अप्पसत्थविहायगदि - अथिर-असुभ-दूभग-दुस्सर - अणादेज्ज- अजस-गित्तीणमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो तस्स छट्ठाणपदिदस्स उदीरओ । एवं सेसणामपयडीणं पि जाणिदूण वत्तव्वं । दाणंतराइयस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो लाभ-भोग-परिभोग-वीरियंतराइयाणमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो णियमा छट्ठाणपदिदमुदीरेदि । जहा सादासादाणं तहा गोदाउआणं । एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो ।

एत्तो परत्थाणसण्णियासो वुच्चदे । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्साणुभागमुदीरेंतो चउणाणावरणीय-ओहि-केवलदंसणावरणीय-असाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-तिण्णिवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछ-णिरयाउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-पंचसंठाण-चत्तारिसंघडण-णीचागोदाणमण्णासिं च जेसिमसुभाणमुदीरओ तेसिमुक्कस्साणुभागस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ । जदि अणुक्कस्समुदीरेदि तो[1] छट्ठाणपदिदं । आभिणि-

अनुत्कृष्ट अनुभागका उदीरक होता है ।

नरकगति नामकर्मके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला हुण्डकसंस्थान, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व शीत-रूक्ष स्पर्श, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्तिके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो वह उसके षट्स्थानपतितका उदीरक होता है । इसी प्रकारसे शेष नामकर्मकी प्रकृतियोंके सम्बन्धमें भी जानकर कथन करना चाहिये ।

दानान्तरायके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला लाभान्तराय, भोगान्तराय, परिभोगान्तराय और वीर्यान्तरायके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है तो वह नियमसे षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है । जैसे साता व असाता वेदनीयके संनिकर्षकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही दोनों गोत्रों और चारों आयुकर्मोंके संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार स्वस्थानसंनिकर्ष समाप्त हुआ ।

यहां परस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष चार ज्ञानावरणीय, अवधि व केवलदर्शनावरणीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, तीन वेद, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नारकायु, नरकगति, तिर्यग्गति, पांच संस्थान, चार संहनन और नीच गोत्र; इनका तथा अन्य भी जिन अशुभ प्रकृतियोंका उदीरक होता है उनके उत्कृष्ट अनुभागका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है । यदि उनके अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है । आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागकी

---

१ प्रतिषु 'अणुक्कस्समुदीरेंतो' इति पाठः ।

बोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्समणुभागमुदीरेंतो साद-हस्स-रदि-तिण्णिआउअ-मणुस्सगइ-देवगइ-उच्चागोद-पंचंतराइयाणमण्णेसिं च पसत्थपयडीणं जासिमुदीरओ णियमा तासिं[1]-मणुक्कस्समुक्कस्सादो अणंतगुणहीणमुदीरेदि। एवमेदीए दिसाए अण्णेसिं पि कम्माणं परत्थाणसण्णियासो जाणियूण कायव्वो। एवं परत्थाणुक्कस्ससण्णियासो समत्तो।

एत्तो जहण्णओ सत्थाणसण्णियासो। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सुद-केवलणाणावरणीयस्स णियमा जहण्णयमणुभागमुदीरेदि। ओहि-मणपज्जवणाणावरणाणं सिया जहण्णं सिया अजहण्णमुदीरेदि। जदि जहण्णं तो छट्ठाणपदिदमुदीरेदि। सुदणाणावरणीयस्स आभिणिबोहियणाणावरणभंगो। ओहिणाणावरणस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सुद-मदिआवरणाणं सिया जहण्णं सिया अजहण्णं वा उदीरेदि। जदि अजहण्णं णियमा अणंतगुणं। मणपज्जवणाणावरणीयस्स सिया जहण्णं सिया अजहण्णं वा उदीरेदि। जदि अजहण्णं तो छट्ठाणपदिदं। केवलणाणावरणं णियमा जहण्णमुदीरेदि। मणपज्जवणाणावरणस्स ओहिणाणावरणभंगो। केवलणाणावरणस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सेसाणं चदुण्णं पि[2] जहण्णमजहण्णं वा उदीरेदि। [जदि]

उदीरणा करनेवाला सातावेदनीय, हास्य, रति, तीन आयुकर्म, मनुष्यगति, देवगति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनका तथा अन्य भी जिन प्रशस्त प्रकृतियोंका उदीरक होता है वह नियमसे उनके उत्कृष्टकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन अनुत्कृष्ट अनुभागकी उदीरणा करता है। इस प्रकार इसी रीतिसे अन्य कर्मोंके भी परस्थान संनिकर्षको जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार परस्थान उत्कृष्ट संनिकर्ष समाप्त हुआ।

यहां जघन्य स्वस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—आभिनिबोधिकज्ञानावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। वह अवधिज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरणके कदाचित् जघन्य अनुभागका और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। यदि वह इनके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है। श्रुतज्ञानावरणकी विवक्षासे संनिकर्षकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरण और मतिज्ञानावरणके कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। यदि अजघन्यकी उदीरणा करता है तो नियमसे अनन्तगुणे अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। मनःपर्ययज्ञानावरणके कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। यदि उसके अजघन्यकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है। केवलज्ञानावरणके वह नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी विवक्षासे संनिकर्षकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है। केवलज्ञानावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष चारों ही ज्ञानावरण प्रकृतियोंके जघन्य व अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। यदि अजघन्यकी उदीरणा करता है तो वह श्रुतज्ञानावरण व

१ ताप्रतौ 'जेसिमुदीरओ णियमा तेसिं-' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'सेसाणं पि चदुण्णं' इति पाठः।

अजहण्णं तो सुद-मदिआवरणाणं णियमा अणंतगुणमुदीरेदि । ओहि-मणपज्जवणाणा-वरणाणं छट्ठाणपदिदमुदीरेदि ।

चक्खुदंसणावरणस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो[1] अचक्खुदंसणावरण-केवलदंसणावरणाणं णियमा जहण्णमुदीरेदि । ओहिदंसणावरणस्स सिया जहण्णं सिया अजहण्णमुदीरेदि । जदि अजहण्णमुदीरेदि तो छट्ठाणपदिदं । सेसपंचण्णं दंसणावरणीयाणं अणुदीरओ । अचक्खुदंसणावरणीयस्स चक्खुदंसणावरणीयभंगो । ओहिदंसणावरणीयमुदीरेंतो[2] चक्खु-अचक्खुदंसणावरणीयाणं जहण्णमजहण्णं वा उदीरेदि । जदि अजहण्णं तो णियमा अणंतगुणं । केवलदंसणावरणस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो चक्खु-अचक्खु ओहिदंसणा-वरणीयाणं जहण्णमजहण्णं वा उदीरेदि । जदि अजहण्णं तो चक्खु-अचक्खु० अणंतगुणं, ओहिदंसणावरणस्स छट्ठाणपदिदं । आउअ-वेदणिज्ज-गोदाणं णत्थि सत्थाण-सण्णियासो । मोहणिज्ज-णामाणं[3] जाणिदूण णेयव्वं । दाणंतराइयस्स जहण्णाणुभाग-मुदीरेंतो सेसाणं चदुण्णं णियमा जहण्णमुदीरेदि । सेसचदुण्णमंतराइयाणं दाणंतराइय-

मतिज्ञानावरणके नियमसे अनन्तगुणे अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। वह अवधि-ज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरणके षट्स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है।

चक्षुदर्शनावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण और केवल-दर्शनावरणके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। वह अवधिदर्शनावरणके कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। यदि अजघन्यकी उदीरणा करता है तो षट्स्थानपतितकी उदीरणा करता है। शेष निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वह अनुदीरक होता है। अचक्षुदर्शनावरणके संनिकर्षकी प्ररूपणा चक्षुदर्शनावरणके समान है। अवधिदर्शनावरणके अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्श-नावरणके जघन्य व अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। यदि वह अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है तो नियमसे अनन्तगुणे अनुभागकी उदीरणा करता है। केवलदर्शनावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और अवधिदर्शना-वरणके जघन्य व अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। यदि वह उनके अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है तो चक्षुदर्शनावरण व अचक्षुदर्शनावरणके अनन्तगुणे तथा अवधिदर्शना-वरणके षट्स्थानपतित अजघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है।

आयु, वेदनीय और गोत्र कर्मोंके स्वस्थान संनिकर्ष सम्भव नहीं है। मोहनीय और नामकर्मके संनिकर्षको जानकर लेजाना चाहिये। दानान्तरायके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला शेष चार अन्तराय प्रकृतियोंके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। शेष चार अन्तराय प्रकृतियोंकी विवक्षासे संनिकर्षकी प्ररूपणा दानान्तरायके समान है। इस प्रकार

१ अप्रतौ '-वरणस्स जहण्णस्स जहण्णाणु-' इति पाठः। २ अप्रतौ 'वरणीयस्समुदीरेंतो' इति पाठः।
३ अ-काप्रत्योः 'मोहणिज्जमाणाणं' इति पाठः।

भंगो। एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो।

परत्थाणजहण्णाणुभागसण्णियासो। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स जहण्णाणुभागमुदीरेंतो सुद-केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरणीयाणं[1] णियमा जहण्णमुदीरेदि। एदेण कमेण परत्थाणसण्णियासो जाणिदूण णेयव्वो। एवं सण्णियासो समत्तो।

एवं सेसाणि अणियोगद्दाराणि जाणिदूण णेयव्वाणि। अप्पाबहुअं दुविहं जहण्णमुक्कस्सं च। उक्कस्सए पयदं। तं जहा— सव्वतिव्वाणुभागं सादावेदणीयाणं। जसगित्ति-उच्चागोदाणुभागउदीरणा अणंतगुणहीणा। कम्मइय० अणंतगुणहीणा। तेजासरीर० अणंतगुणहीणा। आहारसरीर० अणंतगुणहीणा। वेउव्विय० अणंतगुणहीणा। मिच्छत्त० अणंतगुणहीणा। केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-असाद० उदीरणा अणंतगुणहीणा। अणंताणुबंधीसु अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा[2]। संजलणेसु अण्णदरउदी० अणंतगु० हीणा। पच्चक्खाणावरणेसु अण्णदरउ० अणंतगुणहीणा। अपच्चक्खाणावरणेसु अण्णदरउदी० अणंतगु० हीणा। मदिणाणावरण० अणं० गु० हीणा[3]। सुदणाणाव०

स्वस्थान संनिकर्ष समाप्त हुआ।

परस्थान जघन्य अनुभागके संनिकर्षका कथन करते हैं। यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके जघन्य अनुभागकी उदीरणा करनेवाला श्रुतज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणके नियमसे जघन्य अनुभागकी उदीरणा करता है। इस क्रमसे परस्थान संनिकर्षको जानकर ले जाना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

इसी प्रकारसे शेष अनुयोगद्वारोंको जानकर ले जाना चाहिये। अल्पबहुत्व दो प्रकार है— जघन्य अल्पबहुत्व और उत्कृष्ट अल्पबहुत्व। इनमें उत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है। यथा— सातावेदनीयकी अनुभागउदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है। यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी अनुभागउदीरणा उससे अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। आहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण और असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलन कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधि-

१ ताप्रतौ 'केवलदंसणावरण०-चक्खुदंसणावरणीयाणं' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः।
३ ताप्रतौ 'मदिणाणावरणेसु अण्ण० उ० अणंत० हीणा' इति पाठः।

अणं० गु० हीणा। ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अणं० गु० हीणा। मणपज्जव-णाणाव० अणंतगुणहीणा। णवुंसयवेद० अणंत० हीणा। थीणगिद्धि० अणं० गु० हीणा। अरदि० अणं० गु० हीणा। सोग० अणंतगुणहीणा। भय० अणंतगुणहीणा[1]। दुगुंछा० अणंतगुणहीणा। णिद्दाणिद्दा० अणंतगुणहीणा। पयला-पयला० अणंतगुणहीणा। णिद्दा० अणंतगुणहीणा। पयला० अणंतगुणहीणा। णीचागोद-अजसगित्ति० अणंतगुणहीणा। णिरयगइ० अणंतगुणहीणा। देवगइ० अणंतगुणहीणा। रदि० अणंतगुणहीणा। हस्स० अणंतगुणहीणा। देवाउ० अणं० गु० हीणा। णिरयाउ० अणंतगु० हीणा। मणुसगइ० अणं० गु० हीणा। ओरालिय० अणं० गु० हीणा। मणुस्साउ० अणं० गु० हीणा। तिरिक्खाउ० अणंतगुणहीणा। इत्थिवेद० अणंतगुणहीणा। पुरिसवेद० अणंतगुणहीणा। तिरिक्खगइ० अणंतगुणहीणा। चक्खुदं० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइय० अ० गुणहीणा। भोगंतराइय० अणंतगुणहीणा। परिभोगंतराइय० अणंतगुणहीणा। अचक्खुदं० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अणंतगुणहीणा।

णिरयगईए णेरइएसु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं। केवलणाणावरण० केवलदंसणा-

ज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञाना-वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचला-प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नरक-गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणीहीन है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शना-वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

नरकगतिमें नारकियोंमें सबसे तीव्र अनुभागवाली मिथ्यात्व प्रकृति है। केवलज्ञाना-

[1] ताप्रतौ 'भय० अणंतगुणहीणा' इति नास्तीदं वाक्यम्।

वरण० असादावेदणीय० अणंतगुणहीणा। अणंताणुबंधीसु अण्णदरउदीरणा अणंतगुणहीणा। चदुसंजलणम्मि अण्णदर० अणं० गु० हीणा। पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अणं० गु० हीणा। अपच्च० चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा। मदिणाणावर०[2] अणंतगुण-हीणा। सुदणाणावर० अ० गु० हीणा। मणपज्जवणाणावरण० अ० गु० हीणा। णवुंसयवेद० अ० गु० हीणा। अरदि० अणं० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गु० हीणा। पयला० अ० गुणहीणा। णीचागोद० अजसगित्ति० अ० गु० हीणा। णिरयगइ० अ० गु० हीणा। णिरयाउ० अ० गु० हीणा। सादावेदणी० अ० गु० हीणा। रदि० अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। वेउ० अ० गु० हीणा। ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गुणहीणा। लाहंतराइय० अ० गु० हीणा०। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खुदं० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंत-

वरण, केवलदर्शनावरण और असातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा उससे अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतर प्रकृतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चार संज्वलन कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चार प्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चार अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञाना-वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सातावेदनीयको उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्व-की उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शना-वरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी

१ ताप्रतौ 'असादवेदणी० अणंताणुबंधीसु' इति पाठः। २ ताप्रतावतोऽग्रे वक्ष्यमाणप्रकृतिबोधकपदानां मध्ये 'अणंतगुणहीणा' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते– तच्च प्रायः सदर्भस्यान्त एवैकवारमुपलभ्यते।

गइय० अ० गुणहीणा । सम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

पढमाए पुढवीए सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाणावरण-केवलदंसणाव० अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । अपच्च० चउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा । मदिणाणावरण० अ० गु० हीणा । सुदणाणाव० अ० गु० हीणा । मणपज्जवणाणाव० अ० गु० हीणा । णिद्दा० अ० गु० हीणा । पचला० अ० गु० हीणा । असाद० अणंतगुणहीणा । णवुंसयवेद० अ० गु० हीणा । अरदि० अ० गु० हीणा । सोग० अ० गु० हीणा । भय० अ० गु० हीणा । दुगुंछा० अ० गु० हीणा । णीचागोद० अजसगि० अ० गु० हीणा । णिरयाउ० अ० गु० हीणा । साद० अ० गु० हीणा । रदि० अ० गु० हीणा । हस्स० अ० गु० हीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । वेउव्विय० अ० गु० हीणा । ओहिणाण० ओहिदंसण० अ० गु० हीणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । चक्खु०

उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

प्रथम पृथिवीमें सबसे तीव्र अनुभागवाली मिथ्यात्व प्रकृति है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्त

अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अणंतगुणहीणा।

तिरिक्खगदीए सव्वतिव्वाणुभागं सादवेदणीयउदीरणा। अजसगित्ति-उच्चागोद० अ० गुणहीणा। कम्मइय० अ० गुणहीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। वेउ० अ० गु० हीणा। मिच्छत्त० अ० गु० हीणा। केवलणाण० अ० गु० हीणा। केवलदंसण० अ० गु० हीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्हि अण्णदर० अ० गु० हीणा। संजलणचउक्कम्हि अण्णदर० अ० गु० हीणा। पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। अपच्च० चउक्क० अण्ण० अणंतगुणहीणा। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। सुदआव० अ० गु० हीणा। ओहिणाणाव० ओहिदंसणाव० अ० गु० हीणा। मणपज्जव० अ० गु० हीणा। थीणगिद्धि० अ० गु० हीणा। णिद्दाणिद्दा अ० गु० हीणा। पयलापयला० अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गु० हीणा। पयला० अ० गु० हीणा। रदि० अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। ओरालिय० अ० गु० हीणा। तिरिक्खाउ० अ० गु० हीणा। असाद० अ० गु० हीणा। णवुंसय० अ० गु० हीणा। इत्थिवेद० अ० गु० हीणा। पुरिस० अ० गु० हीणा। अरदि० अ० गुणहीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा० अ० गु० हीणा। णीचागोद० अणंतगुणहीणा। अजसगित्ति अ० गु०

गुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

तिर्यग्गतिमें सबसे तीव्र अनुभागवाली सातावेदनीय प्रकृति है। उससे अयशकीर्ति और ऊंच गोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्त-

हीणा । तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा । चक्खु० अ० गु० हीणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा । दाणंतराइय० अ० गु० हीणा० । लाहंतराइय० अ० गु० हीणा । भोगंतराइय० अ० गु० हीणा । परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा । अचक्खु० अ० गु० हीणा । वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । सम्मत्त० अणंतगुणहीणा ।

मणुस्सेसु सव्वतिव्वाणुभागा सादावेदणीय० । उच्चागोद० जसकित्ति० अणंतगुणहीणा । कम्मइय० अ० गु० हीणा । तेजइय० अ० गु० हीणा । आहार० अ० गु० हीणा । वेउव्वि० अ० गु० हीणा । मिच्छत्त० अ० गु० हीणा । केवलणाण० केवलदंसण० अ० गु० हीणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणहीणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा । पच्चक्खा० चउक्क० अण्ण० अ० गु० हीणा । अपच्च० चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा[1] । मदिआवरण० अ० गु० हीणा । सुदणाणाव० अ० गु० हीणा । ओहिणाणाव० ओहिदं० अ० गु० हीणा । मणपज्जव० अ० गु० हीणा । थीणगिद्धि० अ० गु० हीणा । णिद्दाणिद्दा० अ० गु० हीणा । पचलापचला० अ० गु० हीणा । णिद्दा० अ० गुणहीणा । पचला० अ० गु० हीणा । रदि०

गुणी हीन है । अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है ।

मनुष्योंमें सातावेदनीयकी उदीरणा सबसे तीव्र अनुभागवाली है । उससे उच्चगोत्र व यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । आहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी

१ ताप्रतौ 'अणंतगुणा०' इति पाठः ।

अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। मणुसगइ० अ० गु० हीणा। ओरालिय० अणंतगुणहीणा। मणुसाउ० अणंतगुणहीणा। असाद० अ० गु० हीणा। णवुंसयवे० अ० गु० हीणा। इत्थि० अ० गु० हीणा। पुरिस० अ० गु० हीणा। अरदि० अ० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा० अ० गु० हीणा। णीचागोद० अ० गु० हीणा। अजसकित्ति० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइअ० अ० गु० हीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त- अणंतगुणहीणा।

देवगदीए सव्वतिव्वाणुभागं सादावेदणीयं। उच्चागोद० जसगित्ति० अ० गु० हीणा। मिच्छत्त० अ० गु० हीणा। केवलणाण० अ० गु० हीणा। केवलदंसण० अ० गु० हीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणहीणा। संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। पच्चक्खाणचउक० अण्णद० अ० गु० हीणा। अपच्च० चउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा[1]। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। सुद० अ० गु० हीणा।

हीन है। मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

देवगतिमें सातावेदनीय सबसे तीव्र अनुभागवाली प्रकृति है। उससे उच्चगोत्र व यशःकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्यय-

१ ताप्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः।

मणपज्जव० अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गु० हीणा। पचला० अ० गु० हीणा। देवगइ० अ० गु० हीणा। रदि० अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गुणहीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। वेउव्वि० अ० गु० हीणा। देवाउ० अ० गु० हीणा। असाद० अ० गु० हीणा। इत्थिवेद० अ० गु० हीणा। पुरिस० अ० गु० हीणा। अरदि० अ० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा० अ० गु० हीणा। अजसगित्ति० अ० गु० हीणा। ओहिणाणाव० अ० गु० हीणा। ओहिदंस० अ० गु० हीणा[1]। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइय० अ० गुणहीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अणंतगुणहीणा।

भवणवासियदेवेसु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं। केवलणाण० केवलदंसण० अणंतगुणहीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। संजलणचउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा। पच्चक्खाणचउक्क० अण्णद० अ० गु० हीणा। अपच्च०

ज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्रादर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलादर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

भवनवासी देवोंमें मिथ्यात्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें

१ काप्रतौ 'ओहिणाण० ओहिदंसण० अणंतगुणहीणा' इति पाठः।

चउक्क० अण्णदर० अ० गु० हीणा। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। सुद० अ० गु० हीणा। मणपज्जव० अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गु० हीणा। पयला० अणंतगुणहीणा। साद० अ० गु० हीणा। उच्चागोद० अ० गु० हीणा। जसगित्ति० अ० गु० हीणा। रदि० अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। वेउ० अ० गु० हीणा। देवाउ० अ० गु० हीणा। असाद० अ० गु० हीणा। इत्थि० अ० गु० हीणा। पुरिस० अ० गु० हीणा। अरदि० अ० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा० अ० गु० हीणा। अजस० अ० गु० हीणा। ओहिणाणा० अ० गु० हीणा। ओहिदं० अ० गु० हीणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइय० अ० गु० हीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा। सम्मत्त० अ० गु० हीणा।

एइंदिएसु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं। केवलणाण० केवलदंसण० अ० गु० हीणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गु० हीणा। संजलणचउक्क० अण्ण० अ० गु०

अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है।

एकेन्द्रिय जीवोंमें मिथ्यात्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रत्याख्याना-

हीणा। पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्ण० अ० गु० हीणा। [1]अपच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्ण० अ० गु० हीणा। मदिआवरण० अ० गु० हीणा। चक्खु० अ० गु० हीणा। सुद० अ० गु० हीणा। ओहिणाण० अ० गु० हीणा। ओहिदंस० अ० गु० हीणा। मणपज्जव० अ० गु० हीणा। थीणगिद्धि० अ० गु० हीणा। णिद्दाणिद्दा० अ० गु० हीणा। पचलापचला० अ० गु० हीणा। णिद्दा० अ० गु० हीणा। पचला० अ० गु० हीणा। असाद० अ० गु० हीणा। णवुंसय० अ० गु० हीणा। अरदि० अ० गु० हीणा। सोग० अ० गु० हीणा। भय० अ० गु० हीणा। दुगुंछा० अ० गु० हीणा। णीचागोद० अजसगित्ति० अ० गु० हीणा। तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा। साद० अ० गु० हीणा। जसगित्ति० अ० गु० हीणा। रदि० अ० गु० हीणा। हस्स० अ० गु० हीणा। कम्मइय० अ० गु० हीणा। तेजइय० अ० गु० हीणा। वेउ० अ० गु० हीणा। ओरालिय० अ० गु० हीणा। तिरिक्खाउ० अ० गु० हीणा। दाणंतराइय० अ० गु० हीणा। लाहंतराइय० अ० गु० हीणा। भोगंतराइय० अ० गु० हीणा। परिभोगंतराइय० अ० गु० हीणा। अचक्खु० अ० गु० हीणा।

वरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। नीचगोत्र और अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तैजस शरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी हीन है। इसी

१ अ-काप्रत्योरनुपलभ्यमानं वाक्यमिदं मप्रतितोऽत्र योजितम्। २ अ-आप्रत्योः 'तिरिक्खगइ० अ० गु० हीणा' इत्यधिकः पाठोऽस्ति।

वीरियंतराइय० अ० गु० हीणा । एवं विगलिंदिएसु वि । णवरि पसत्थकम्मंसाणमुवरि कायव्वं । एवमुक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं ।

सव्वमंदाणुभागं लोहसंजलणं । मायसंजलणं अणंतगुणा । माणसंज० अणंतगुणा । कोधसंज० अणंतगुणा । वीरियंतराइय० अणंतगुणा । सम्मत्त० अणंतगुणा । चक्खुदंस० सुदणा० अणंतगुणा । मदि० अणंतगुणा । अचक्खु० अणंतगुणा । ओहिणाण० ओहिदंस० अणंतगुणा । परिभोगंतराइय० अणंतगुणा । भोगंतराइय० अणंतगुणा । लाहंतराइय० अणंतगुणा । दाणंतराइय० अणंतगुणा । पुरिसवे० अणंतगुणा । इत्थि० अ० गुणा । णवुंस० अ० गुणा । मणपज्जव० अ० गुणा । हस्स० अ० गुणा । रदि० अ० गुणा । दुगुंछा० अ० गुणा । भय० अ० गुणा । सोग० अ० गुणा । अरदि० अ० गुणा । केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा । पचला० अ० गुणा । णिद्दा० अ० गुणा । पचलापचला० अणंतगुणा । णिद्दाणिद्दा अ० गुणा । थीणगिद्धि० अ० गुणा । पच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । अपच्च० चउक्क० अण्ण० अ० गुणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गुणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा । मिच्छत्त०

प्रकारसे विकलेन्द्रियोंमें भी प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रशस्त कर्मांशोंका अल्पबहुत्व ऊपर करना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

संज्वलनलोभ सबसे मंद अनुभागवाली प्रकृति है । उससे संज्वलनमायाके जघन्य अनुभागकी उदीरणा अनन्तगुणी है । संज्वलनमानकी उदीरणा अनन्तगुणी है । संज्वलनक्रोधकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सम्यक्त्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । चक्षुदर्शनावरण और श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा

१ अ-काप्रत्योः 'मदि०' इति पाठः ।

अ० गुणा। ओरालिय० अ० गुणा। वेउव्विय० अ० गुणा। तिरिक्खाउ० अ० गुणा। मणुसाउ० अ० गुणा। आहार० अ० गुणा। तेजइय० अ० गुणा। कम्मइय० अ० गुणा। तिरिक्खगइ० अ० गुणा। णिरयगइ० अ० गुणा। मणुसगइ० अ० गुणा। देवगइ० अ० गुणा। णीचागोद० अ० गुणा। अजस० अ० गुणा। असादावेदणीय० अ० गुणा। उच्चागोद० अ० गुणा। जसगित्ति० अ० गुणा। साद० अ० गुणा। णिरयाउ० अ० गुणा। देवाउ० अणंतगुणा।

णिरयगईए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं। चक्खुदं० अ० गुणा[1]। अचक्खु० अ० गुणा। हस्स० अ० गुणा। रदि० अ० गुणा। दुगुंछा० अ० गुणा। भय० अ० गुणा। सोग० अ० गुणा। अरदि० अ० गुणा। णवुंसय० अ० गुणा। संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा। वीरियंतराइय० अ० गुणा। परिभोगंतराइय० अ० गुणा। भोगंतराइय० अ० गुणा। लाहंतराइय० अ० गुणा। दाणंतराइय० अ० गुणा। ओहिणाण-ओहिदंसण० अ० गुणा। मणपज्जव० अ० गुणा। सुदावरण० अ० गुणा। मदिआव० अ० गुणा। अपच्चक्खाण० अण्णदर० अ० गुणा। पच्चक्खा० चउक्क०

अनन्तगुणी है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनुष्यायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अहारकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनुष्यगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है।

नरकगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है। उससे चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा अनन्तगुणी है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है। रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्य-

१ ताप्रतौ 'चक्खु० अण्ण० अणंतगुणा' इति पाठः।

अण्ण० अ० गुणा । केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा । पचला० अणंतगुणा । णिद्दा० अ० गुणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गुणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । मिच्छत्त० अ० गुणा । वेउव्वि० अ० गुणा । तेजइय० अ० गुणा । कम्मइय० अ० गुणा । णिरयगइ० अ० गुणा । अजसगित्ति० अ० गुणा । णीचागोद० अ० गुणा । असाद० अ० गुणा । साद० अ० गुणा । णिरयाउ० अणंतगुणा[1] । एवं दोचाए वि । णवरि वीरियंतराइयस्स परिभोगंतराइयस्स मज्झे सम्मत्तं कायव्वं ।

तिरिक्खगदीए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं । चक्खु० अणंतगुणा । अचक्खु० अ० गुणा । ओहिणाण० ओहिदंसण० अ० गुणा । हस्स० अ० गुणा । रदि० अ० गुणा । दुगुंछा० अ० गुणा । भय० अ० गुणा । सोग० अ० गुणा । अरदि० अ० गुणा । पुरिस० अ० गुणा । इत्थि० अ० गुणा । णवुंसय० अ० गुणा । संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । वीरियंतराइय० अ० गुणा । परिभोगंतराइय० अ० गुणा । भोगंतराइय० अ० गुणा । लाहंतराइय० अ० गुणा । दाणंतराइय० अ० गुणा ।

नरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नरकगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नारकायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है । इसी प्रकार दूसरी पृथिवीमें भी जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सम्यक्त्व प्रकृतिको वीर्यान्तराय और परिभोगान्तरायके मध्यमें करना चाहिए ।

तिर्यंचगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है । चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है । रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है । अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी

१ अ-काप्रत्योः 'णिरयाउ अण्णदर अणंतगुणा', ताप्रतौ 'णिरयाउ० अण्णदर अणंतगुणा' इति पाठः ।

मणपज्जव० अ० गुणा । सुद० अ० गुणा । मदिणाण० अ० गुणा । पच्चक्खाण-चउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा । केवलणाण० केवलदंस० अ० गुणा । पचला० अ० गुणा । णिद्दा० अ० गुणा । पचलापचला० अ० गुणा । णिद्दाणिद्दा० अ० गुणा । थीणगिद्धि० अ० गुणा । अपच्चक्खाणचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा । सम्मामिच्छत्त० अ० गुणा । अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा । मिच्छत्त अ० गुणा । ओरालिय० अ० गुणा । वेउव्वि० अणंतगुणा । तिरिक्खाउ० अ० गुणा । तेज० अ० गुणा । कम्मइय० अ० गुणा । तिरिक्खगइ० अ० गुणा । णीचागोद० अजसगित्ति० अणंतगुणा । असाद० अ० गुणा । जसगित्ति० अ० गुणा । साद० अ० गुण । उच्चागोद० अणंतगुणा[1] ।

मणुस्सेसु ओघं । णवरि तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-णिरआउ-णिरयगइ-देवाउ-देवगईणमुदीरणा णत्थि ।

देवगदीए सम्मत्तिव्वाणुभागं सव्वत्तं । चक्खु० अ० गुणा । सुदावरण० अ० गुणा । मदिआवरण० अ० गुणा । अचक्खु० अ० गुणा० । ओहिणाण० ओहिदंस०

उदीरणा अनन्तगुणी है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है । निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है । स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है । औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है । तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । नीचगोत्र व अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है । सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है । उच्चगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।

मनुष्योंमें जघन्य अनुभागउदीरणाके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि तिर्यगायु, तिर्यग्गति, नारकायु, नारकगति, देवायु और देवगतिकी उदीरणा उनमें सम्भव नहीं है ।

देवगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागवाली है । उससे चक्षुदर्शनावरणकी जघन्य अनुभागउदीरणा अनन्तगुणी है । श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है । हास्यकी उदीरणा अनन्तगुणी है ।

१ ताप्रतौ 'उच्चागोद० अण० अणंतगुणा' इति पाठः ।

अ० गुणा। हस्स० अ० गुणा। रदि० अ० गुणा। दुगुंछा० अ० गुणा। भय० अ० गुणा। सोग० अणंतगुणा। अरदि० अ० गुणा। पुरिस० अ० गुणा। इत्थि० अ० गुणा। संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा। वीरियंतराइय० अ० गुणा। परिभोगंतराइय० अणंतगुणा। भोगंतराइय० अ० गुणा। लाहंतराइय० अ० गुणा। दाणंतराइय० अ० गुणा। मणपज्जव० अ० गुणा। अपच्चक्खाणचउक्क० अण्णदर० अणंतगुणा। पच्चक्खाणचउक्क० अण्णदर० अ० गुणा। केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा। पचला० अ० गुणा। णिद्दा० अ० गुणा। सम्मामिच्छत्त० अ० गुणा। अणंताणुबंधिचउक्कम्मि अण्णदर० अ० गुणा। मिच्छत्त० अ० गुणा। वेउ० अ० गुणा। तेज० अणंतगुणा। कम्मइय० अ० गुणा। देवगइ० अ० गुणा। अजसगित्ति० अ० गुणा। असाद० अ० गुणा। उच्चागोद० जसगित्ति० अ० गुणा। साद० अ० गुणा। देवाउ० अणंतगुणा।

एइंदिएसु सव्वमंदाणुभागं हस्स०। रदि० अ० गुणा। दुगुंछा० अ० गुणा। भय० अ० गुणा। सोग० अ० गुणा। अरदि० अ० गुणा। णवुंस० अ० गुणा।

रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। पुरुषवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। स्त्रीवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। देवगतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। उच्चगोत्र और यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। देवायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है।

एकेन्द्रियोंमें हास्य प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है। उससे रतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। जुगुप्साकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। शोककी उदीरणा अनन्तगुणी है। अरतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नपुंसकवेदकी उदीरणा अनन्तगुणी है।

१ अ-काप्रत्योः 'रदि०' इति पाठः।

संजलणचउक्कम्मि अण्णदर० अणंतगुणा। वीरियंतराइय० अ० गुणा। अचक्खु० अ० गुणा। परिभोगंतराइय० अ० गुणा। भोगंतराइय० अ० गुणा। लाहंतराइय० अणंतगुणा। दाणंतराइय० अ० गुणा। मणपज्जव० अ० गुणा। ओहिणाण० ओहिदंस० अ० गुणा। सुदआवरण० अ० गुणा। चक्खुदं० अ० गुणा। मदिआवर० अ० गुणा। अपच्चक्खाणचउक्क० अण्ण० अ० गुणा। पच्चक्खा० चउक्क० अण्ण० अ० गुणा। अणंताणुबंधिचउक्क० अण्ण० अ० गुणा। जसगित्ति० अ० गुणा। केवलणाण० केवलदंसण० अ० गुणा। मिच्छत्त० अ० गुणा। पचला० अ० गुणा। णिद्दा० अ० गुणा। पचलापचला० अ० गुणा। णिद्दाणिद्दा० अ० गुणा। थीणगिद्धि० अ० गुणा। ओरालिय० अणंतगुणा। वेउव्वि० अ० गुणा। तिरिक्खाउ० अ० गुणा। तेजइय० अ० गुणा। कम्मइय० अ० गुणा। तिरिक्खगइ० अ० गुणा। णीचागोद० अ० गुणा। अजसगित्ति० अ० गुणा। असाद० अ० गुणा। जसगित्ति० अणंतगुणा। साद० अणंतगुणा[1]। एवमणुभागउदीरणाए अप्पाबहुअं समत्तं।

एत्तो भुजगारउदीरणाए अट्ठपदं— अणंतरविदिक्कंते समए अप्पदराणि फद्दयाणि

संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वीर्यान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अचक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। परिभोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। भोगान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। लाभान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। दानान्तरायकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मनःपर्ययज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। श्रुतज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। चक्षुदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मतिज्ञानावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी उदीरणा अनन्तगुणी है। मिथ्यात्वकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। प्रचलाप्रचलाकी उदीरणा अनन्तगुणी है। निद्रानिद्राकी उदीरणा अनन्तगुणी है। स्त्यानगृद्धिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। औदारिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यगायुकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तैजसशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। कार्मणशरीरकी उदीरणा अनन्तगुणी है। तिर्यग्गतिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। नीचगोत्रकी उदीरणा अनन्तगुणी है। अयशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। असातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। यशकीर्तिकी उदीरणा अनन्तगुणी है। सातावेदनीयकी उदीरणा अनन्तगुणी है। इस प्रकार अनुभागउदीरणाका अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

यहां भुजाकार उदीरणाका अर्थपद कहा जाता है— अनन्तर अतीत समयमें अल्पतर

[1] अ-काप्रत्योः 'साद० अण्णदर० अणंतगुणा' इति पाठः।

उदीरेदूण जदि एण्हिं बहुदराणि फद्दयाणि उदीरेदि तो एसा भुजगारउदीरणा । जदि अणंतरविदिक्कंते समए बहुदराणि फद्दयाणि उदीरेदूण एण्हिं थोवाणि उदीरेदि तो एसा अप्पदरउदीरणा । जदि तत्तियाणि तत्तियाणि चेव फद्दयाणि उदीरेदि तो एसा अवट्ठिदउदीरणा । अणुदीरगेण उदीरिदे[1] एसा अवत्तव्वउदीरणा । एदेण अट्ठपदेण सामित्तं भुजगार० अप्पदर० अवट्ठिद० अवत्तव्व० उदीरणाणं वत्तव्वं ।

एयजीवेण कालो वुच्चदे-- पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं च भुजगार-अप्पदरउदीरगाणं कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासादवेयणीय-सोलसकसाय-णवणोकसाय-मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-आउचउक्क-चत्तारिगदि-पंच-जादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-तिण्णिअंगोवंग-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-पाओग्गबंधण-संघाद-छसंठाण-संघडण-कक्खड-गरुअ-लहुअ-उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं भुजगार-अप्पदरउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिदउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क०

स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करके यदि इस समय बहुतर स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करता है तो यह भुजाकार-उदीरणा है । यदि अनन्तर अतीत समयमें बहुतर स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करके इस समय स्तोक स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करता है तो यह अल्पतरउदीरणा है । यदि उतने उतने मात्र ही स्पर्द्धकोंकी उदीरणा करता है तो यह अवस्थितउदीरणा है । यदि पूर्वमें उदीरणा नहीं की है और अब उदीरणा करता है तो यह अवक्तव्यउदीरणा है । इस अर्थपदके अनुसार यहां भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरणाओंके स्वामित्वका कथन करना चाहिये ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं-- पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अवस्थितउदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, चार आयुकर्म, चार गतियां, पांच जातियां, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, तीन आंगोपांग, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरके योग्य बन्धन एवं संघात, छह संस्थान, छह संहनन, कर्कश, गुरु, लघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इन प्रकृतियोंकी भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इनकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सात समय मात्र है । तैजस व कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य बन्धन व संघात, वर्ण, गन्ध, रस,

[1] ताप्रतौ 'अणुदीरगा उदीरेदि' इति पाठः ।

मत्तसमया । तेजा-कम्मइयसरीर-तप्पाओग्गबंधण-संघाद-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरु-अलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणुच्चागोदाणं भुजगार-अप्पदर-उदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिदउदीरणकालो जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । चदुण्णमाणुपुव्वीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-कालो जो जिस्से पयडीए उदीरणकालो सो समऊणो[1] होदि । तित्थयरणामाए भुजगारउदीरणकालो जह० उक्कस्सेण वि अंतोमुहुत्तं । णत्थि[2] [अप्पदरउदीरणा ।] अवट्ठिदउदीरणाकालो जह० वासपुधत्तं, उक्क०[3] पुव्वकोडी देसूणा देसूणचुलसीदि[4]-पुव्वसदसहस्साणि वा ।

एयजीवेण अंतरं[5] । तं जहा— णाणावरणीयस्स भुजगार-अप्पदरउदीरणाणमंतरं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिदमंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । एवं सव्वासिं धुवोदयपयडीणं । णवरि कक्खड-गरुववज्जअसुहणामाणं[6] अप्पदर-उदीरणंतरं मउअ-लहुअवज्जसुहणामाणं भुजगारुदीरणंतरं च उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदरउदीरणाणमंतरं जह० एगसमओ, उक्क० बे-छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । तित्थयरस्स णत्थि अंतरं । जाणि कम्माणि

स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और उच्चगोत्रकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। इनकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है। चार आनुपूर्वियोंकी भुजाकार, अल्पतर व अवस्थित उदीरणाओंका काल, जो जिस प्रकृतिका उदीरणाकाल है उससे एक समय कम है। तीर्थंकर नामकर्मकी भुजाकार उदीरणाका काल जघन्य व उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उसकी अल्पतर उदीरणा नहीं होती। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि अथवा कुछ कम चौरासी लाख वर्षपूर्व प्रमाण है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा करते हैं। यथा—ज्ञानावरणीयकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। उसकी अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक प्रमाण है। इसी प्रकारसे समस्त ध्रुवोदयी प्रकृतियोंकी उदीरणाके अन्तरका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि कर्कश व गुरुको छोड़कर शेष अशुभ नामप्रकृतियोंकी अल्पतर उदीरणाका अन्तर तथा मृदु व लघुको छोड़कर शेष शुभ नामप्रकृतियोंकी भुजाकार उदीरणाका अन्तर उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र काल तक होता है। मिथ्यात्व प्रकृतिकी भुजाकार व अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण होता है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता। जो कर्म उदयकी अपेक्षा परिवर्तमान हैं उनकी

१ अ-काप्रत्योः 'समऊणा' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'ण (अ) त्थि' इति पाठः। ३ ताप्रतौ [उक्क०] इति पाठः। ४ अप्रतौ 'देसूणा चूलसीदि', काप्रतौ देसूणचूलसीदि' इति पाठः। ५ प्रतिषु 'णाणाजीवस्स' इति पाठः। ६ ताप्रतौ 'कक्खडगरुअवज्ज असुहणामाणं इति पाठः।

उदएण परियत्तमाणयाणि तेसिं भुजगार-अप्पदरउदीरणंतरं जहा पयडिउदीरणाए अंतरं परूविदं तहा परूवेयव्वं । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं जाओ णामपयडीओ धुवमुदीरिज्जंति तासिं च[1] भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-उदीरया णियमा अत्थि । मिच्छत्त-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-णवुंसयवेद-थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि । अवत्तव्व-उदीरया भजियव्वा— सिया एदे च अवत्तव्वउदीरओ च, सिया एदे च अवत्तव्व-उदीरया च, धुवसहिया एत्थ तिण्णि भंगा । सम्मामिच्छत्त-आहारसरीराणं आहारसरीरपाओग्गअंगोवंग[2]-बंधण-संघादाणं तिण्णमाणुपुव्वीणं च असीदिभंगा, धुवभंगाभावादो । ८० ।

सम्मत्त-इत्थि-पुरिसवेद - तिण्णिआउ-तिण्णिगइ-जादिचउक्क-ओरालियसरीरअंगोवंग-वेउव्वियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-आदाव-पंचसंठाण-छसंघडण- पसत्थापसत्थविहाय-गइ-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं भुजगार-अप्पदरउदीरया णियमा अत्थि । अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरया भजियव्वा । तेणेत्थ णव भंगा होंति ९ । पंचदंसणा-वरणीय - सादासाद - सोलसकसाय - हस्स-रदि-अरदि - सोग-भय - दुगुंछा- तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ - ओरालियसरीर - तप्पाओग्गबंधण-संघाद - हुंडसंठाण - तिरिक्खाणुपुव्वी -

भुजाकार व अल्पतर अनुभागउदीरणाके अन्तरकी प्ररूपणा प्रकृतिउदीरणाके अन्तरके समान करना चाहिये । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन करते हैं । यथा—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायके तथा जिन नामप्रकृतियोंकी ध्रुव उदीरणा होती है उनके भी भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे होते हैं । मिथ्यात्व, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, नपुंसकवेद, स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे होते हैं । अवक्तव्य उदीरक भजनीय हैं— कदाचित् उपर्युक्त ये तीन उदीरक बहुत व अवक्तव्य उदीरक एक होता है, कदाचित् ये तीन उदीरक बहुत और अवक्तव्य उदीरक भी बहुत होते हैं, इनमें ध्रुवभंगके मिला देनेसे यहां तीन भंग होते हैं । सम्यग्मिथ्यात्व, आहारक-शरीर, आहारकशरीरप्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघात तथा तीन आनुपूर्वी; इनके अस्सी (८०) भंग होते हैं, कारण ध्रुव भंगका अभाव है ।

सम्यक्त्व, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, तीन आयुकर्म, तीन गतियां, चार जातियां, औदारिकशरी-रांगोपांग, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिक बन्धन व संघात, आतप, पांच संस्थान, छह संहनन, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र; इनके भुजाकार व अल्पतर उदीरक नियमसे होते हैं । अवस्थित व अवक्तव्य उदीरक भजनीय हैं । इस कारण यहां नौ (९) भंग होते हैं । पांच दर्शनावरण, साता व असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, औदारिकशरीर, तत्प्रायोग्य

---

१ ताप्रतौ 'च' इत्येतत्पदं नास्ति । २ ताप्रतौ 'अंगोवंगाणं' इति पाठः ।

उवघाद-परघाद-आदाव-उज्जोव-उस्सास-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेयसरीर-साहारण-जसगित्ति-अजसगित्तीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरया णियमा अत्थि। णवरि पत्तेयसरीरस्स अवट्ठिदउदीरया भजियव्वा। तेणेत्थ तिण्णिभंगा।

णाणाजीवेहि कालो— जेसिं कम्माणं भंगविचए एक्को भंगो तेसिं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वउदीरयकालो सव्वद्धा। जेसिं तिण्णिभंगा तेसिमवत्तव्वउदीरयाण कालो[1] जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। सेसाणं सव्वद्धा। जेसिं णवभंगा तेसिं अवत्तव्व-अवट्ठिदउदीरयकालो जह० एगसमओ, उक्क० आव० असंखे० भागो। असीदिभंगएसु सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदराणं जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवत्तव्व-अवट्ठिदउदीरयाणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। तिण्णमाणुपुव्वीणं भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद अवत्तव्व-उदीरयाणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। आहारचउक्क० भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिदावत्तव्वउदीरयाणं[2] जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एवं णाणाजीवेहि कालो समत्तो।

बन्धन व संघात, हुण्डकसंस्थान, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति और अयश-कीर्ति; इनके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरक नियमसे होते हैं। विशेष इतना है कि प्रत्येकशरीरके अवस्थित उदीरक भजनीय हैं। इसलिये यहां तीन भंग होते हैं।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालका कथन किया जाता है—जिन कर्मोका भंगविचयमें एक भंग होता है उनके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरकोंका काल सर्वकाल होता है। जिन कर्मोंके तीन भंग होते हैं उनके अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे आवलीका असंख्यातवां भाग होता है। शेप कर्मोंका सर्वकाल होता है। जिन कर्मोके नौ भंग होते हैं उनके अवक्तव्य व अवस्थित उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। अस्सी भंगवाले कर्मोंमें सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उदीरकों और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। अवक्तव्य व अवस्थित उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है। तीन आनुपूर्वियोंके भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे आवलीके असं-ख्यातवें भाग प्रमाण होता है। आहारकचतुष्कके भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। आहारचतुष्कके अवस्थित व अवक्तव्य उदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्पसे संख्यात समय मात्र होता है। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

१ ताप्रतौ '-उदीरणकालो' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'अवट्ठिदावत्तव्वा' इति पाठः।

णाणाजीवेहि अंतरं। तं जहा— जेसिं कम्माणमवट्ठिदउदीरया भजा तेसिमवट्ठिदउदीरयंतरमसंखेज्जा लोगा। सम्मत्तस्स अवत्तव्वउदीरयंतरं बारस अहोरत्ता। चदुगदिं पडुच्च सत्त रादिंदियाणि। भुजगार-अप्पदरउदीरयंतरं णत्थि। मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अवत्तव्वउदीरयंतरं जहण्णमेगसमओ, उक्क० चउवीसमहोरत्ते सादिरेगे पलिदो० असंखे० भागो। तिण्णं वेदाणमवत्तव्वउदीरयंतरं अंतोमुहुत्तं। चत्तारिगदि-पंचजादि-वेउव्वियसरीर-पंचसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-छसंघडण-तिण्णिआणुपुव्वी-दोविहायगदि-तस-थावर-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-उच्चा-णीचागोदाणं अवत्तव्व० जह० एगसमओ, उक्क अंतोमुहुत्तं।

अप्पाबहुअं। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा। अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। भुजगारउदीरया विसेसाहिया। विसेसो सगसंखेज्जदिभागो। सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं आभिणिबोहियणाणावरणभंगो। पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसायाणं सव्वत्थोवा अवट्ठिदउदीरया। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसाहिया। जेसिं णामकम्माणमवत्तव्वउदीरया असंखे० भागो

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है। यथा—जिन कर्मोंके अवस्थित उदीरक भजनीय हैं उनके अवस्थित उदीरकोंका अन्तर असंख्यात लोक मात्र काल तक होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर बारह अहोरात्र प्रमाण होता है। चार गतियोंकी अपेक्षा वह सात रात्रिंदिन प्रमाण होता है। उसके भुजाकार और अल्पतर उदीरकोंका अन्तर सम्भव नहीं है। मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः साधिक चौबीस अहोरात्र और पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। तीन वेदोंके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। चार गतियां, पांच जातियां, वैक्रियिकशरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक आंगोपांग, छह संहनन, तीन आनुपूर्वियां, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, उच्चगोत्र और नीचगोत्र; इनके अवक्तव्य उदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। उनसे उसके अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण अपना संख्यातवां भाग है। श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरण; इनके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा आभिनिबोधिकज्ञानावरणके समान है। पांच दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय और आठ नोकषाय; इनके अवस्थित उदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। जिन नामकर्मोंके अवक्तव्य उदीरक असंख्यातवें भाग मात्र

तेसिं णामकम्माणमवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसाहिया। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमवत्तव्व० थोवा। अवट्ठिय० अणंतगुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसाहिया। अचक्खुदंसणावरण-सम्मत्त-पंचंतराइयाणं अवट्ठिदउदीरया थोवा। जत्थ अवत्तव्वया अत्थि ते असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदर० विसेसाहिया। सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठि० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसे०। सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणे सत्थाणे भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला। मिच्छत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंतजीवा थोवा। सम्मत्तादो गच्छंता असंखे० गुणा। जे सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति ते सम्मामिच्छत्तस्स भुजगारउदीरया होंति। कुदो? संकिलेसत्तादो। जे मिच्छत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति ते सम्मामिच्छत्तस्स अप्पदरउदीरया होंति, विसुज्झमाणपरिणामादो। तेण अप्पदरउदीरएहिंतो भुजगार-उदीरयाणं विसेसाहियत्तं सिद्धं।

पदणिक्खेवे सामित्तं। तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सिया अणुभागउदीरणवड्ढी[1] कस्स? जो संतकम्मेण उक्कस्सउदीरणापाओग्गेण तप्पाओग्गसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं

हैं उन नामकर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारउदीरक विशेष अधिक हैं। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यंच-गति, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक अनन्तगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारउदीरक विशेष अधिक हैं। अचक्षुदर्शनावरण, सम्यक्त्व और पांच अन्तरायके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। जहां अवक्तव्य उदीरक हैं वे असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं। सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानमें स्वस्थानमें भुजाकार और अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य हैं। मिथ्यात्व-से सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले जीव स्तोक हैं, परन्तु सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। जो जीव सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं वे सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उदीरक होते हैं, क्योंकि, वे संक्लेश परिणामोंसे युक्त होते हैं। जो मिथ्यात्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं वे सम्यग्मिथ्यात्वके अल्पतरउदीरक होते हैं, क्योंकि, वे विशुध्यमान परिणामोंसे संयुक्त होते हैं। इसीलिये उसके अल्पतर उदीरकोंकी अपेक्षा भुजा-कारउदीरकोंका विशेष अधिक होना सिद्ध है।

पदनिक्षेपमें स्वामित्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि किसके होती है? जो उत्कृष्ट उदीरणाके योग्य सत्कर्मके साथ

१ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमेतत्।

गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो उक्कस्समुदीरणमुदीरेदूण मदो एइंदिओ जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तत्थेव उक्कस्समवट्ठाणं। सुद-मणपज्जव-णाणावरण-केवलणाण-केवलदंसणावरण- मिच्छत्त-सोलसकसायाणं मदिआवरणभंगो। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणमुक्कस्सियाए वड्ढीए मदिआवरणभंगो। णवरि ओहिलंभो णत्थि। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो विणा ओहिलंभेण उक्कस्समुदीरणमुदीरेदूण मदो णेरइयो जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? जो उक्कस्समुदीरण-मुदीरेंतो संतो सागारक्खएण पडिभग्गो तप्पाओग्गजहण्णउदए पदिदो से काले तत्थेव अवट्ठिदो तस्स उक्कस्समवट्ठाणं।

चक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तीइंदियो तप्पाओग्गविसुद्धो संतो संकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो तेइंदियो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो संतो मदो एइंदियो जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव उक्कस्समवट्ठाणं। अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो पुव्वहरो मिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो संतो मदो सुहुमेइंदिओ जहण्णखओवसमो जादो

तत्प्रायोग्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट उदीरणापूर्वक उदीरणा करके मृत्युको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रिय हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है। वहींपर उत्कृष्ट अवस्थान भी होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, मिथ्यात्व और सोलह कषायोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि अवधिज्ञानकी प्राप्ति सम्भव नहीं है। उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-हानि किसके होती है ? जो जीव अवधिज्ञानकी प्राप्तिके विना उत्कृष्ट उदीरणा पूर्वक उदीरणा करके मृत्युको प्राप्त होता हुआ नारकी हुआ है उसके उत्कृष्ट हानि होती है। उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो उत्कृष्ट उदीरणा पूर्वक उदीरणा करता हुआ साकार उपयोगके क्षयसे प्रतिभग्न होकर तत्प्रायोग्य जघन्य उदयमें आ पड़ता है व अनन्तर कालमें वहींपर अवस्थित होता है उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

चक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि किसके होती है ? जो त्रीन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो त्रीन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त होकर मृत्युको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रिय होता है उसके उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके उत्कृष्ट अवस्थान होता है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो पूर्वधर मिथ्यादृष्टि जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर जघन्य क्षयोपशमसे संयुक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय होता है उसके

१ प्रतिषु 'मिच्छत्तस्स सोलस' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'भंगो' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'तीइंदिय-' इति पाठः। ४ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'उक्कस्ससंकिलेसं' इति पाठः। ५ अप्रतौ 'तस्स उक्कस्स उक्कस्सिया' इति पाठः।

तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। अचक्खुदंसणावरणस्स उक्कस्सिया हाणी कस्स? सुहुमेइंदियस्स जहण्णलद्धिस्स से काले तप्पाओग्गविसोहीए सव्वविसुद्धस्स उक्कस्सिया हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स? जो बादरेइंदिओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो सागारक्खएण तप्पाओग्गविसुद्धो जादो तत्थेव अवट्ठिदो तस्स उक्कस्सयमवट्ठाणं। दंसणावरणपंचयस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो णिद्दावेदओ तप्पाओग्गविसुद्धो संतो तप्पाओग्गउक्कस्ससंकिलिट्ठो जादो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो णिद्दावेदओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्णए उदए पदिदो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। एवं सेसाणं चदुण्णं पि वत्तव्वं।

सादस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो देवो तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णसादोदयादो उक्कस्सयं सादोदयं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो देवो उक्कस्ससादवेदओ मदो मणुस्सो तप्पाओग्गजहण्णसादावेदओ जादो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तत्थेव उक्कस्समवट्ठाणं। असादस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो णेरइओ तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णअसादोदयादो उक्कस्सयं असादोदयं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? उक्कस्सअसादोदएण वट्ट-

उत्कृष्ट वृद्धि होती है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? अनन्तर कालमें तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे सर्वविशुद्ध होनेवाले ऐसे जघन्य क्षयोपशम संयुक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है? जो बादर एकेन्द्रिय जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ वहींपर अवस्थित रहता है उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो निद्राका वेदक जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर फिर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके निद्रा प्रकृतिकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा-वृद्धि होती है। इसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो निद्राका वेदक जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य उदयमें आ पड़ता है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसके ही अनन्तर कालमें उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकारसे प्रचला आदि शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये।

सातावेदनीयकी उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणा वृद्धि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो देव तत्प्रायोग्य जघन्य साताके उदयसे उत्कृष्ट साताके उदयको प्राप्त होता है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? उत्कृष्ट सातावेदनीयका वेदक जो देव मृत्युको प्राप्त होकर तत्प्रायोग्य जघन्य साताका वेदक मनुष्य होता है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। वहींपर उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो नारकी जीव तत्प्रायोग्य जघन्य असाताके उदयसे उत्कृष्ट असाताके उदयको प्राप्त होता है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? उत्कृष्ट असाताके उदयमें वर्तमान जो जीव मरकर तत्प्रायोग्य असाताके

माणओ[1] मदो तप्पाओग्गजहण्णअसादोदए पदिदो तस्स[2] उक्कस्सिया हाणी। से काले उक्कस्समवट्ठाणं।

अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेदाणं असादभंगो। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो उक्कस्ससंकिलेसादो तप्पाओग्गजहण्ण-संकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। हस्स-रदीणं सादभंगो। णवरि सहस्सारओ त्ति वत्तव्वं। इत्थि-पुरिसवेदाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स होदि? जो तिरिक्खो अट्ठवस्सिओ अट्ठवस्सओ[3] जादो तप्पाओग्गजहण्णवेदोएण उक्कस्ससंकिलेसं गंतूण उक्कस्सयं वेदोदयं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स? जो तिरिक्खो अट्ठवस्सिओ अट्ठवस्सओ जादो उक्कस्सवेदोदयादो सागार-क्खएण तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसं जहण्णवेदोदयं गदो च तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव उक्कस्सयमवट्ठाणं।

णिरयाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ तप्पा-ओग्गजहण्णसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया

जघन्य उदय में आया है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अनन्तर कालमें उसके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेश-से उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो उत्कृष्ट संक्लेशसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसके ही अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। हास्य और रतिकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। विशेष इतना है कि यहां तेतीस साग-रोपम स्थितिवाले देवके स्थानमें सहस्रार कल्पवासी देवका कथन करना चाहिये। स्त्रीवेद और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो आठ वर्षकी आयुवाला तिर्यंच आठ वर्षका होकर तत्प्रायोग्य जघन्य वेदोदयके साथ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर उत्कृष्ट वेदोदयको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो आठ वर्षकी आयुवाला तिर्यंच आठ वर्षका होकर उत्कृष्ट वेदोदयसे साकार उपयोगके क्षयके साथ तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेश और जघन्य वेदोदयको भी प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

नारकायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रा-योग्य जघन्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी

१ ताप्रतौ 'वड्ढमाणओ' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'पलिदोवमस्स तस्स', ताप्रतौ 'पलिदोवमस्स (पदिदो) तस्स' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'वस्स' इति पाठः।

हाणी कस्स ? जो तेत्तीससागरोवमट्ठिदीओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो सागारक्खएण तप्पाओग्ग-जहण्णे संकिलेसे पदिदो तस्स[1] उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। मणुस-तिरिक्खाउआणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तिण्णिपलिदोवमाउट्ठिदीओ तप्पाओग्ग-जहण्णविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्ण-विसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। देवाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीओ तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? तस्सेव उक्कस्सआउओदयादो जो सागारक्खएण पडिभग्गो[2] तस्स उक्क० हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं।

णिरयगईए णिरयाउभंगो। मणुसगईए मणुसाउभंगो। देवगईए देवाउभंगो। तिरिक्खगईए इत्थिवेदभंगो। ओरालियसरीर-ओरालियअंगोवंग-बंधण-संघादाणं मणुस-गइभंगो। आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो जो उक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी

उत्कृष्ट हानि किसके होती है? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आ पड़ा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। मनुष्यायु और तिर्यगायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उक्त दो आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगका क्षय होनेसे तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला जो जीव तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो साकार उपयोगके क्षयपूर्वक आयुके उत्कृष्ट उदयसे प्रतिभग्न हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। अनन्तर कालमें उसके ही उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

नरकगतिकी वृद्धि-हानिकी प्ररूपणा नारकायुके समान है। मनुष्यगतिकी उक्त वृद्धि-हानिकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान, देवगतिकी देवायुके समान, और तिर्यंचगतिकी स्त्रीवेदके समान है। औदारिकशरीर, औदारिकआंगोपांग तथा औदारिक बन्धन व संघातकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग एवं आहारक बन्धन व संघातकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके

१ अ-काप्रत्योः 'पलिदोवमस्स तस्स', ताप्रतौ पलिदोवमस्स (पदिदो) तस्स' इति पाठः। २ अप्रतौ 'पडिभग्गो' इति पाठः।

कस्स ? जो उक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण[1] जहण्णविसोहिं गदो तस्स उक्क० हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। वेउव्वियसरीरचउक्क-समचउरसमंठाण-परघाद-पसत्थ-विहायगइ-पत्तेयसरीराणं आहारसरीरभंगो।

तेजा-कम्मइयसरीर-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ण-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-णिमिण-उच्चागोदाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? चरमसमयसजोगिस्स। उक्क० हाणी कस्स ? पढमसमयसकसायस्स। जेणेदाओ तिरिक्ख-मणुसाणं परिणामपच्चइयाओ तेण ण देवस्स, सुहुमसांपराइयस्सेव। उक्कस्सय-मवट्ठाणं कस्स ? जो अप्पमत्तसंजदो सव्वविसुद्धो सागारक्खएण अवट्ठाणं गदो तस्स। चदुसंठाण-पंचसंघडणाणं तिरिक्खगदिभंगो। वज्जरिसहस्स मणुस्सो तिपलिदोवमिओ। अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-ल्हुक्खाणं मिच्छत्तभंगो। मउअ-लहुअ-उज्जोवाणमाहार-सरीरभंगो। कक्खड-गरुआणमित्थिवेदभंगो। अथिर-असुभ-दूभग-अणादेज्ज-अजस-कित्तीणं मिच्छत्तभंगो। पंचिंदियजादि-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-सुस्सराणं देवगइभंगो।

उन चारों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयपूर्वक जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। वैक्रियिकशरीरादि चार, समचतुरस्रसंस्थान, परघात, प्रशस्त विहायोगति और प्रत्येकशरीर; इनकी वृद्धि व हानिकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है।

तैजसशरीर, कार्मणशरीर, तैजसशरीर बन्धन व संघात, कार्मणशरीर बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, निर्माण और उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है। इनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उनकी उत्कृष्ट हानि प्रथम समयवर्ती सकषाय प्राणीके होती है। चूंकि ये तिर्यंचों और मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती हैं, इसीलिये वे देवके सम्भव न होकर सूक्ष्मसाम्परायिक मनुष्यके ही सम्भव हैं। इनका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो सर्वविशुद्ध अप्रमत्तसंयत साकार उपयोगके क्षयसे अवस्थानको प्राप्त हुआ है उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। चार संस्थानों व पांच संहननोंकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। वज्रर्षभनाराचसंहननकी उत्कृष्ट वृद्धि तीन पल्योपम प्रमाण आयुवालेके होती है। अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस तथा शीत व रूक्ष स्पर्शोंकी प्ररूपणा मिथ्यात्व प्रकृतिके समान है। मृदु, लघु और उद्योतकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है। कर्कश और गुरु स्पर्शोंकी प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है। अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय और अयशकीर्तिकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। पंचेन्द्रिय जाति, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और सुस्वरकी प्ररूपणा देवगतिके समान है।

१ अप्रतौ 'सागारक्खएण' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'संकिलिट्ठ' इति पाठः।

थावरणामाए उक्क० वड्ढी कस्स ? जो बादरो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। सो चेव मदो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसे पदिदो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्सयमवट्ठाणं। एइंदिय-विगलिंदिय-सुहुम-साहारणणामाणं थावरभंगो। णवरि वेदओ कायव्वो। साहारणणामाए बादर-साहारणकाइओ कायव्वो। अपज्जत्तणामाए उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? मणुस्सस्स अपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उप्पज्जिय चरिमसमयतब्भवत्थस्स। सो चेव मदो सुहुमेइंदियअपज्जत्तएसु उववण्णो तस्स उक्कस्सिया हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। अप्पसत्थविहायगदि-दुस्सर-णीचागोदाणं णिरयगइभंगो।

पंचण्णमंतरायाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो सण्णिपंचिंदिओ तप्पाओग्गुक्कस्सियाए लद्धीए संजुत्तो मदो सुहुमेइंदिएसु जहण्णलद्धिसंजुत्तो जादो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। तस्सेव उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स सागारक्खएण तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसे पदिदस्स तस्स उक्क० हाणी। तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं। आदावणामाए उक्कस्सवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं थावरभंगो। णवरि बादरपुढविकाइएसु विसोहीए वत्तव्वं। तित्थयरणामाए उक्क० वड्ढी कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स। एवं [उक्कस्स] सामित्तं समत्तं।

स्थावर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो बादर जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके स्थावर नामकर्मको उत्कृष्ट वृद्धि होती है। वही मरकर जब तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आता है तब उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, सूक्ष्म और साधारण नामकर्मोंकी प्ररूपणा स्थावर नामकर्मके समान है। विशेष इतना है कि विवक्षित प्रकृतिका वेदक कहना चाहिये। साधारण नामकर्मकी प्ररूपणामें बादर साधारणकायिक कहना चाहिये। अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह मनुष्य अपर्याप्तके होती है जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर चरम समयवर्ती तद्भवस्थ होता है। वही मरकर जब सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होता है तब उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। अप्रशस्त विहायोगति, दुस्वर और नीचगोत्रकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है।

पांच अन्तराय कर्मोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट क्षयोपशमसे संयुक्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य क्षयोपशमसे संयुक्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त वही जब साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशमें आता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। आतप नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा स्थावर नामकर्मके समान है। विशेष इतना है कि बादर पृथिवीकायिकोंमें विशुद्धिके द्वारा स्वामित्व कहना चाहिये। तीर्थंकर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

मदिआवरणस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? जो चोद्दसपुव्वहरो उदएण अणंतभागवड्ढीए वड्ढिदो तस्स जह० वड्ढी । तेणेव जहण्णवड्ढिमेत्तं चेव हाइदूण उदीरिदे तस्स जह० हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । सुदावरणस्स मदिआवरणभंगो । चक्खु अचक्खुदंसणाणं पि मदिआवरणभंगो चेव, चोद्दसपुव्वहरम्हि चक्खु-अचक्खुदंसणावरणाणमुक्कस्सखओवसमदंसणादो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? परमोहिणाणिस्स जहण्णवड्ढीए वड्ढियस्स वड्ढी, तेणेव हाइदस्स हाणी, एगदरत्थमवट्ठाणं । मणपज्जवणाणावरणस्स जहण्ण-वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? विउलमइस्स । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं जह० हाणी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स । जह० वड्ढी कस्स ? पढमसमयसकसायस्स संजदस्स । अवट्ठाणं कस्स ? उवसंतकसायस्स । णिद्दा-पयलाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? तप्पाओग्गविसुद्धस्स अप्पमत्तसंजदस्स उदएण सव्वजहण्णाणंतभागवड्ढीए[1] वड्ढिदस्स जहण्णिया वड्ढी । तं चेव हाइदूण उदीरिदे जहण्णिया हाणी । एगदरत्थमवट्ठाणं[2] । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं णिद्दाभंगो । णवरि पमत्तसंजदो

मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो चौदह पूर्वोंका धारक उदयकी अपेक्षा अनन्तभाग वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त है उसके मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि होती है । वही जब जघन्य वृद्धि मात्र ही हानिको प्राप्त होकर उदीरणा करता है तब उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे एकतरमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । श्रुतज्ञानावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणकी प्ररूपणा भी मतिज्ञानावरणके ही समान है, क्योंकि, चौदह पूर्वोंके धारक प्राणीके चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणका उत्कृष्ट क्षयोपशम देखा जाता है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? जघन्य वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त हुए परमावधिज्ञानीके उनकी वृद्धि, जघन्य हानिसे हानिको प्राप्त हुए उसके ही उनकी हानि, तथा दोनोंमेंसे किसी एकमें अवस्थान होता है । मनःपर्ययज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? वे विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानीके होते हैं । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य हानि किसके होती है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह प्रथम समयवर्ती सकषाय संयतके होती है । उनका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? उपशान्तकषायके उनका जघन्य अवस्थान होता है । निद्रा और प्रचलाकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होते हैं ? जो उदयकी अपेक्षा सर्वजघन्य अनन्तभागवृद्धिके द्वारा वृद्धिको प्राप्त हुआ है ऐसे तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त अप्रमत्तसंयतके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । उतनी ही हानिको प्राप्त होकर उदीरणा करनेपर उसके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला

१ अ-काप्रत्योः 'सव्वजहण्णाणंतब्भागवड्ढीए', ताप्रतौ 'सव्वजहण्णाणं तब्भागवड्ढीए' इति पाठः ।
२ ताप्रतौ 'एगदरत्थमवट्ठाणं-' इति पाठः ।

सामी । सादासादाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अण्णदरस्स ।

मिच्छत्तस्स जहण्णिया हाणी कस्स ? चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले संजमं पडिवज्जंतस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापवत्तमिच्छाइट्ठिस्स तप्पाओग्ग-विसुद्धस्स उदयादो अणंतभाएण वड्ढियस्स जह० वड्ढी । तस्सेव से काले जहण्ण-मवट्ठाणं । अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो । सम्मत्तस्स जहण्णिया हाणी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तसम्माइट्ठिस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स उदयादो अणंतभागेण वड्ढियस्स तस्स जहण्णिया वड्ढी अवट्ठाणं च । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? जो अधापमत्तसम्मामिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गविसुद्धो अणंतभाएण उदयादो वड्ढिदो तस्स जहण्णिया वड्ढी । तस्सेव से काले जहण्णमवट्ठाणं । सम्मामिच्छत्तस्स जह० [हाणी] कस्स ? से काले सम्मत्तं[2] पडिवज्जंतस्स ।

अपच्चक्खाणकसायाणं जहण्णिया हाणी कस्स[3] ? सम्माइट्ठिस्स असंजदस्स से

और स्त्यानगृद्धिकी प्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है । विशेष इतना है कि उनका स्वामी प्रमत्तसंयत होता है । साता व असाता वेदनीयकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होते हैं ? वे किसीके भी होते हैं ।

मिथ्यात्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होनेवाला है ऐसे अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके मिथ्यात्वकी जघन्य हानि होती है । उसकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होते हैं ? तत्प्रायोग्य विशुद्ध व उदयकी अपेक्षा अनन्तभाग-वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त ऐसे अधःप्रवृत्त मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । सम्यक्त्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? जिसके दर्शन-मोहनीयके अक्षीण रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य हानि होती है । उसकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान किसके होते हैं ? जो अधः-प्रवृत्त सम्यग्दृष्टि तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे संयुक्त है व उदयकी अपेक्षा अनन्तवें भागसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उसकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान होता है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो अधःप्रवृत्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे संयुक्त व उदयकी अपेक्षा अनन्तवें भागसे वृद्धिंगत है उसके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? अनन्तर कालमें जो सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाला है उसके उसकी जघन्य हानि होती है ।

अप्रत्याख्यानावरण कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो अविरत सम्यग्दृष्टि

१ ताप्रतौ 'अधापम (व) त्तमिच्छाइट्ठिस्स' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'सम्मत्ते' इति पाठः । ३ अतोऽग्रे अ-काप्रत्योः 'पच्चक्खाणावरणकसायाणं जहण्णिया हाणी कस्स' इत्येतावत्पर्यन्तः पाठस्त्रुटितोऽस्ति ।

काले संजमं पडिवज्जंतस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि[1] कस्स ? अधापमत्तअसंजदसम्माइट्ठिस्स । पच्चक्खाणावरणकसायाणं जहण्णिया हाणी कस्स ? संजदासंजदस्स से काले संजमं पडिवज्जंतस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तसंजदासंजदस्स । चदुण्णं संजलणाणं जहण्णिया हाणी कस्स ? कोह-माण-मायाणं खवओ चरिमसमयवेदओ सामी । लोभस्स पुण समयाहियावलियचरिमसमयसकसायस्स खवयस्स जहण्णिया हाणी । लोभस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयसुहुमसांपराइयस्स । मायाए जह० वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयमायावेदयस्स । माणस्स जह० वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयमाणवेदयस्स । कोधस्स जह० वड्ढी कस्स ? परिवदमाणस्स दुसमयकोधवेदयस्स[2] । चदुण्णं पि संजलणाणं जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंजदस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स अणंतभाएण वड्ढिदूण हाइदूण वा अवट्ठियस्स ।

तिण्णं पि वेदाणं जह० हाणी कस्स ? खवयस्स समयाहियावलियचरिमसमय-वेदयस्स अप्पिदवेदोदयजुत्तस्स जह० हाणी । जह० वड्ढी कस्स ? अप्पिदवेदोदएण

अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होनेवाला है उसके उनकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान किसके होता है ? अधःप्रवृत्त असंयत सम्यग्दृष्टिके उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है । प्रत्याख्यानावरण कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त करनेवाले संयतासंयत जीवके उनकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होते हैं ? वे अधःप्रवृत्त संयतासंयतके होते हैं । चार संज्वलन कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? उसका स्वामी संज्वलन क्रोध, मान और मायाके क्षपणमें उद्यत उनका अन्तिम समयवर्ती वेदक जीव होता है । परन्तु संज्वलन लोभकी जघन्य हानि, जिस क्षपकके अन्तिम समयवर्ती सकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है, उसके होती है । संज्वलन लोभकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । संज्वलन मायाकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती मायावेदकके होती है । संज्वलन मानकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती मानवेदकके होती है । संज्वलन क्रोधकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह उपशमश्रेणिसे गिरते हुए द्वितीय समयवर्ती क्रोधवेदकके होती है । चारों ही संज्वलन कषायोंका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? वह अनन्तवें भागसे वृद्धि अथवा हानिको प्राप्त होकर अवस्थित हुए तत्प्रायोग्य विशुद्ध अधःप्रवृत्तसंयतके होता है ।

तीनों ही वेदोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? विवक्षित वेदके उदयसे संयुक्त क्षपकके उसके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर उनकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है । विवक्षित वेदके उदयके साथ श्रेणिसे

१ अ-काप्रत्योः 'सव्वट्ठअवट्ठाणाणि' इति पाठः । २ अप्रतौ 'कोधवेदएण' इति पाठः ।

परिवदमाणस्स दुसमयवेदयस्स । तिण्णं वेदाणं जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंजदस्स । छण्णोकसायाणं जह० हाणी कस्स ? चरिमसमयअपुव्वखवयस्स । वड्ढी ओदरमाणविदियसमयअपुव्वस्स । अवट्ठाणं सत्थाणसंजदस्स ।

चदुण्णमाउआणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अप्पप्पणो जहण्णियाए णिव्वत्तीए उववण्णाणं जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च ।

णिरयगइणामाए जह० वड्ढी कस्स ? अण्णदरस्स[1] अण्णदरिस्से पुढवीए जहण्णवड्ढीए वड्ढियस्स। हाइदस्स हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचजादीणं च णिरयगइभंगो । ओरालियसरीरणामाए जहण्णिया वड्ढी कस्स? सुहुमेइंदियस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णस्स दुसमयआहारयस्स दुसमयतब्भवत्थस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी वा कस्स ? तस्स चेव खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण मदस्स सुहुमेसुववण्णस्स पढमसमयआहारयस्स जह० हाणी[2] । जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? जहण्णियाए वड्ढीए हाणीए वा वड्ढिदूण हाइदूण अवट्ठियस्स सुहुमेइंदियस्स पज्जत्तस्स । ओरालियसरीरबंधण-ओरालियसरीरसंघाद-हुंडसंठाण-उवघादाणं ओरालियसरीरभंगो ।

गिरते हुए उनके द्वितीय समयवर्ती वेदकके उनकी जघन्य हानि होती है। तीन वेदोंका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? वह अधःप्रवृत्त संयतके होता है। छह नोकषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? उनकी जघन्य हानि अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होती है। और उनकी जघन्य वृद्धि श्रेणिसे उतरते हुए द्वितीय समयवर्ती अपूर्वकरणके होती है। उनका जघन्य अवस्थान स्वस्थान संयतके होता है।

चार आयु कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होते हैं ? अपनी अपनी जघन्य निर्वृत्तिसे उत्पन्न जीवोंके उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान होते हैं।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह अन्यतर पृथिवीमें जघन्य वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त अन्यतर नारक जीवके होती है। उसीके हानिको प्राप्त होनेपर उसकी जघन्य हानि और दोनोंमेंसे किसी एकमें जघन्य अवस्थान होता है। तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति और पांच जाति नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। औदारिकशरीर नामकर्मकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर द्वितीय समयवर्ती आहारक और द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके उसकी जघन्य वृद्धि होती है। उसकी जघन्य हानि किसके होती है? क्षुद्रभवग्रहण मात्र जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त हो सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए उपर्युक्त जीवके ही प्रथम समयवर्ती आहारक होनेपर उसकी जघन्य हानि होती है। उसका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? जघन्य वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त होकर अथवा जघन्य हानि द्वारा हानिको प्राप्त होकर अवस्थानको प्राप्त हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके उसका जघन्य अवस्थान होता है। औदारिकशरीरबन्धन, औदारिकशरीरसंघात, हुण्डकसंस्थान और उपघात नामकर्मोंकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। औदारिकशरीरांगोपांग और असंप्राप्तासृपाटिकासंहननकी जघन्य

१ ताप्रतौ 'अण्णदरस्स' इत्येतत्पदं नास्ति । २ अ-काप्रत्योः 'हाणीए' इति पाठः ।

ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणाणं[1] जह० वड्ढी कस्स ? दुसमय-बेइंदियस्स । णवरि संघडणस्स बारसवासाउदुसमयबेइंदियो[2] सामी । ओरालियसरीर-अंगोवंगस्स जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णो दुसमयबेइंदियो सामी। जहण्णिया हाणी कस्स ? जो एसु चेव खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण मदो एदासु[3] चेव ट्ठिदीसु उववण्णो पढमसमयआहारओ पढमसमयतब्भवत्थो तस्स जह० हाणी। जहण्णमवट्ठाणं कस्स ? बेइंदियस्स बहुसमयपज्जत्तयस्स । वेउव्वियसरीरस्स जह० वड्ढी कस्स ? बादरवाउ-जीवस्स बहुसमयउत्तरविउव्वियस्स । हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? तस्स चेव बादरवाउ-जीवस्स वेउव्वियसरीरेण दुसमयपज्जत्तयस्स । वेउव्वियसरीरबंधण-संघादाणं वेउव्विय-सरीरभंगो । आहारचउक्कस्स वेउव्वियचउक्कभंगो । पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं जहण्णिया वड्ढी[4] कस्स ? जा जस्स जहण्णिया अणुभागउदीरणा तत्तो से काले सव्वजहण्णियाए वड्ढीए वड्ढिदस्स जह० वड्ढी । तेणेव हाइदस्स जहण्णिया हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अण्णदरस्स विग्गह-गदीए वट्टमाणस्स जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कुणंतस्स । तेजा-कम्मइयसरीर-पसत्थ-

वृद्धि किसके होती है ? वह द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय जीवके होती है । विशेष इतना है कि उक्त संहननकी जघन्य वृद्धिका स्वामी बारह वर्ष प्रमाण आयु वाला द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय होता है । औदारिकशरीरांगोपांगकी जघन्य वृद्धिका स्वामी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न द्वितीय समयवर्ती द्वीन्द्रिय होता है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो इनमें ही क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त हो इन्हीं स्थितियोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थके उसकी जघन्य हानि होती है । उसका जघन्य अव-स्थान किसके होता है ? बहुसमयवर्ती पर्याप्त द्वीन्द्रियके उसका जघन्य अवस्थान होता है । वैक्रि-यिकशरीरकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह बहुत समय उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले बादर वायुकायिक जीवके होती है । उसकी जघन्य हानि व अवस्थान किसके होता है ? वे वैक्रियिकशरीरके द्वारा द्वितीय समयवर्ती पर्याप्त हुए उसी बादर वायुकायिक जीवके होते हैं । वैक्रि-यिकशरीरबन्धन और संघातकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है । आहारकचतुष्ककी प्ररूपणा वैक्रियिकचतुष्कके समान है । पांच संस्थानों और पांच संहननोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो जिसकी जघन्य अनुभागउदीरणा है उसके अनन्तर कालमें सर्वजघन्य वृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत जीवके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । उसीसे हानिको प्राप्त हुए जीवके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है ।

चार आनुपूर्वियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? विग्रहगतिमें वर्तमान होकर जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थानको करनेवाले अन्यतरके उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान होता है । तैजस व कार्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, व रस, स्निग्ध, उष्ण,

१ अ-काप्रत्योः '-सरीरसंघडणाणं', ताप्रतौ '[सरीरस्स] संघडणाणं' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'बेइंदियाणि', ताप्रतौ 'बेइंदियाणि (बेइंदियो)' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'एदोसु', का-ताप्रत्योः 'एदेसु' इति पाठः । ४ अप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम् ।

वण्ण-गंध-रस-णिद्ध-उण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? उक्कस्ससंकिलिट्ठस्स । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-ल्हुक्ख-अथिर-असुहणामाणं जहण्णिया हाणी कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । जहण्णिया वड्ढी कस्स ? पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स परिवदमाणयस्स । अवट्ठाणं कस्स ? दुसमयउवसंतकसायस्स । कक्खड-गरुआणं जह० हाणी कस्स ? णियत्तमाणमंथे[1] वट्टमाणयस्स । वड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? सण्णिस्स दुसमयतब्भवत्थस्स । एवं मउअ-लहुआणं । णवरि हाणी सण्णिस्स आहारयस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स ।

उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-थावर - बादर-सुहुम -पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-जसगित्ति-अजसगित्ति-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-उच्च-णीचागोदाणं जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा कस्स ? अण्णदरस्स अप्पिदपयडिवेदयस्स । आदाव-उज्जोवाणं विहायगइभंगो । तित्थयरस्स जहण्णवड्ढि-अवट्ठाणाणि कस्स ? सजोगिकेवलिस्स । पंचण्णमंतराइयाणं केवलणाणावरणभंगो ।

एत्तो अप्पाबहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स सव्वत्थोवा उक्कस्सिया वड्ढी ।

अगुरुलघु, स्थिर, शुभ और निर्माण नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि आदि उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जीवके होती हैं । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, शीत, रूक्ष, अस्थिर और अशुभ नामप्रकृतियोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है । उनकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? वह श्रेणिसे गिरते हुए प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके होती है । उनका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? द्वितीय समयवर्ती उपशान्तकषायके उनका जघन्य अवस्थान होता है । कर्कश और गुरुकी जघन्य हानि किसके होती है ? वह निवर्तमान अवस्थामें मन्थ (प्रतर) समुद्घातमें वर्तमान केवलीके होती है । उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होती है ? द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ संज्ञी जीवके उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है । इसी प्रकारसे मृदु और लघु स्पर्श नामकर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनकी हानि तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संज्ञी आहारकके होती है ।

उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति, अयशकीर्ति सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, उच्चगोत्र और नीचगोत्रकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान किसके होता है ? विवक्षित प्रकृतिके वेदक अन्यतर जीवके उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि आदि होती हैं । आतप और उद्योतकी प्ररूपणा विहायोगतिके समान है । तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होता है ? वे सयोगकेवली होते हैं । पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा केवलज्ञानावरणके समान है ।

अब यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाकी जाती है । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी

---

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'मज्झे' इति पाठः ।

हाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण - चक्खुदंसणावरण-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला - थीणगिद्धि-णिद्दा - पयला-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसायाणं णवणोकसाय-णिरय-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-णिरयगई[1]-तिरिक्ख-मणुस-देवगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर - ओरालिय - वेउव्विय-आहार-सरीरअंगोवंग-तिण्णबंधण-संघाद-छसंठाण-छसंघडण - चत्तारिआणुपुव्वी - उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय[2]-साहारणसरीर - अथिर-असुह-अजसगित्ति- दुभग-सुस्सर - दुस्सर[3]-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणं उक्कस्सपदणिक्खेवप्पाबहुअस्स मदिआवरणभंगो । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणा-वरणाणं उक्क० वड्ढी थोवा । अवट्ठाणं विसेसाहियं । हाणी विसेसाहिया । अचक्खुदंसणावर-णस्स सव्वत्थोवमुक्कस्समवट्ठाणं[4] । हाणी अणंतगुणा । वड्ढी अणंतगुणा । पंचण्णमंतरा-इयाणं अचक्खुदंसणावरणभंगो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सहाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्क० वड्ढी अणंतगुणा । तेजा-कम्मइयसरीर-पसत्थवण्ण-गंध-रस-णिद्धुण्ह-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-जसगित्ति-सुभग-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्कस्सिया हाणी थोवा । अवट्ठाणमणंतगुणं । उक्क० वड्ढी अणंतगुणा । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-सीद-

उत्कृष्ट वृद्धि सबसे स्तोक है । उसकी हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पांच जातियां, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीर औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग; तीन बन्धन और संघात, छह संस्थान, छह संहनन, चार आनुपूर्वियां, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकीर्ति, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र; इनके उत्कृष्ट-पद-निक्षेपविषयक अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । अवस्थान उससे विशेष अधिक है । हानि विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका उत्कृष्ट अवस्थान सबसे स्तोक है । हानि अनन्तगुणी है । वृद्धि अनन्तगुणी है । पांच अन्तरायोंकी प्ररूपणा अचक्षुदर्शनावरणके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि व अव-स्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उत्कृष्ट वृद्धि अनन्तगुणी है । तैजस व कार्मण शरीर, प्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, स्निग्ध, उष्ण, अगुरुलघु, स्थिर, शुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय और उच्च-गोत्रकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । उनका उत्कृष्ट अवस्थान अनन्तगुणा है । उत्कृष्ट वृद्धि अनन्त-गुणी है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध व रस, शीत, रूक्ष, कर्कश, गुरु, मृदु और लघु; इनके उत्क

---

१ अप्रतौ 'देवाउ वि णिरयगइ' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'पज्जत्तापत्तेय' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'दुस्सर-सुस्सर-' इति पाठः । ४ अप्रतौ '-मुवट्ठाणं' इति पाठः ।

ल्हुक्ख-कक्खड-गरुअ-मउअ-लहुआणं च मदिणाणावरणभंगो। अपज्जत्तणामाए उक्क० वड्ढी थोवा। हाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि।

जहण्णपदणिक्खेवे अप्पाबहुअं। तं जहा— आभिणि-सुद-ओहि-मणपज्जवणाणावरणीय-चक्खु अचक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणं जह० वड्ढी जह० हाणी जहण्णमवट्ठाणं च तिण्णि वि तुल्लाणि, तेणेत्थ अप्पाबहुअं णत्थि। केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं जहण्णिया हाणी थोवा। अवट्ठाणमणंतगुणं। वड्ढी अणंतगुणा। पंचदंसणावरण-सादासादाणं जहण्ण-वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तुल्लाणि, तेणेत्थ अप्पाबहुअं णत्थि। मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-कक्खड-मउअ-लहुआणं जहण्णिया हाणी थोवा। वड्ढि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि। बारसकसायाणं मिच्छत्तभंगो। चदुसंजलण-तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं जह० हाणी थोवा। वड्ढी अणंतगुणा। अवट्ठाणमणंतगुणं। चदुण्णमाउआणं चदुण्णं गदीणं पंचण्णं जादीणं सादभंगो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं जह० वड्ढी थोवा। हाणी अणंतगुणा। अवट्ठाणमणंतगुणं। वेउव्वियआहार-सरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं जह० वड्ढी थोवा। हाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि। छसंठाण-छसंघडण-उवघाद-पत्तेय-साहारणसरीराणं ओरालियसरीरभंगो। पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-आणुपुव्वीचउक्क-अगुरुवलहुअ-उस्सास-

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अपर्याप्त नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है। उसकी हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं।

जघन्य-पद-निक्षेपके विषयमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। यथा– आभिनिबोधिकज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और अवधिदर्शनावरणकी जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं; इसीलिये उनमें अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी जघन्य हानि स्तोक है। उनका जघन्य अवस्थान उससे अनन्तगुणा है। वृद्धि अनन्तगुणी है। पांच दर्शनावरण तथा साता व असाता वेदनीयकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं; इसलिये इनमें अल्पबहुत्व नहीं है। मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, कर्कश, मृदु और लघु; इन प्रकृतियोंकी जघन्य हानि स्तोक है। वृद्धि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं। बारह कषायोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। चार संज्वलन, तीन वेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी जघन्य हानि स्तोक है। वृद्धि अनन्तगुणी हैं। अवस्थान अनन्तगुणा है। चार आयु कर्मों, चार गतियों और पांच जातियोंकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है। औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन व औदारिकसंघातकी जघन्य वृद्धि स्तोक है। हानि अनन्तगुणी है। अवस्थान अनन्तगुणा है। वैक्रियिक व आहारक शरीर, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग तथा उनके बन्धन और संघातकी जघन्य वृद्धि स्तोक है। हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं। छह संस्थान, छह संहनन, उपघात, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीरकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, चार आनुपूर्वी नामकर्म, अगुरु-

पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-थिर-सुभ-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोदाणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि। अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अथिर-असुहणामाणं जहण्णिया हाणी थोवा। अवट्ठाणमणंतगुणं। वड्ढी अणंतगुणा। पंचण्णमंतराइयाणं जह० वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि सरिसाणि। एवं पदणिक्खेवो समत्तो।

एत्तो वड्ढिउदीरणा। तं जहा— मदिआवरणस्स अत्थि अणंतभागउदीरणा असंखेज्जभागवड्ढिउदीरणा संखेज्जभागवड्ढिउदीरणा संखेज्जगुणवड्ढिउदीरणा असंखेज्ज-गुणवड्ढिउदीरणा अणंतगुणवड्ढिउदीरणा अणंतभागहाणिउदीरणा असंखेज्जभागहाणि-उदीरणा संखेज्जभागहाणिउदीरणा संखेज्जगुणहाणिउदीरणा असंखेज्जगुणहाणिउदीरणा अणंतगुणहाणिउदीरणा अवट्ठिदउदीरणा चेदि। एवं सव्वेसिं कम्माणं तेरस पदाणि होंति। अवत्तव्वउदीरणाए सह केसिं चि[1] चोद्दस पदाणि। एवं समुक्कित्तणा समत्ता।

एत्तो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुए त्ति एदाणि अणियोगद्दाराणि जहा अणुभागवड्ढिबंधे परूविदाणि तहा एत्थ परूवेयव्वाणि। पुणो अणुभागउदीरणट्ठाणपरूवणा जीवसमुदाहारो च परूवेयव्वो। एवमणुभागउदीरणा समत्ता।

लघु, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, स्थिर, शुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच और ऊंच गोत्र; इनकी जघन्य हानि, वृद्धि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं। अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, अस्थिर और अशुभ नामकर्मोंकी जघन्य हानि स्तोक है। अवस्थान अनन्तगुणा है। वृद्धि अनन्तगुणी है। पांच अन्तराय कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान सदृश हैं। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

यहां वृद्धि-उदीरणाकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी अनन्तभागवृद्धिउदीरणा, असंख्यातभागवृद्धिउदीरणा, संख्यातभागवृद्धिउदीरणा, संख्यातगुणवृद्धिउदीरणा, असंख्यातगुणवृद्धिउदीरणा, अनन्तगुणवृद्धिउदीरणा, अनन्तभागहानिउदीरणा, असंख्यातभागहानिउदीरणा, संख्यातभागहानिउदीरणा, संख्यातगुणहानिउदीरणा, असंख्यातगुणहानिउदीरणा अनन्तगुणहानिउदीरणा और अवस्थितउदीरणा भी होती है। इस प्रकार सब कर्मोंके ये तेरह पद होते हैं। किन्हीं कर्मोंके अवक्तव्यउदीरणाके साथ चौदह पद भी होते हैं। इस प्रकार समुत्कीर्तना समाप्त हुई।

यहां स्वामित्व, काल, अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा जिस प्रकार अनुभागवृद्धिबन्धमें की गयी है उसी प्रकारसे यहां भी प्ररूपणा करना चाहिये। तत्पश्चात् अनुभागउदीरणास्थानप्ररूपणा और जीवसमुदाहारकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अनुभागउदीरणा समाप्त हुई।

१ अप्रतौ 'केसि वि' इति पाठः।

एत्तो पदेसउदीरणा दुविहा मूलपयडिपदेसउदीरणा उत्तरपयडिपदेसउदीरणा चेदि। मूलपयडिपदेसउदीरणं चउवीसअणियोगद्दारेहि मग्गिदूण भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढीसु परूविदासु मूलपयडिपदेसउदीरणा समत्ता होदि।

उत्तरपयडिपदेसउदीरणाए सामित्तं। तं जहा—मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेसउदीरणा कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स। सुदावरण-केवलणाण-केवलदंसण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-मणपज्जवणाणावरणाणं मदिणाणावरणभंगो। एवमोहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पि उक्कस्सपदेसउदीरणा वत्तव्वा। णवरि विणा ओहिलंभेण, पमत्तापमत्तद्धासु ओहिणाणमहेज्जुक्कस्सविसोहीहि ओकड्डिय सुहुमीकयउदयगोवुच्छत्तादो। णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया पदेसउदीरणा कस्स? उवसंतवीयरागस्स। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासादाणं उक्कस्सिया उदीरणा कस्स? पमत्तसंजदस्स से काले अप्पमत्तगुणं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स।

मिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं उक्क० उदीरणा कस्स? चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठिदस्स। सम्मत्तस्स उक्क० उदीरणा कस्स? समयाहियावलियकदकरणिज्जस्स। सम्मामिच्छत्तस्स उक्क० उदी० कस्स? चरिम-

यहां प्रदेशउदीरणा दो प्रकारकी है— मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणा। इनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणाको चौबीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा खोजकर भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर चुकनेपर मूलप्रकृतिप्रदेशउदीरणा समाप्त हो जाती है।

उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदीरणामें स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है। श्रुतज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और मनःपर्ययज्ञानावरण सम्बन्धी उक्त उदीरणाकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। इसी प्रकार अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी भी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि उसका कथन अवधिलब्धिके बिना करना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त व अप्रमत्त कालोंमें अवधिज्ञानसे रहित उत्कृष्ट विशुद्धियोंके द्वारा अपकर्षण करके उदयगोपुच्छाओंको सूक्ष्म किया गया है। निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है? वह उपशान्तकषाय वीतरागके होती है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, सातावेदनीय व असातावेदनीयकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है? जो प्रमत्तसंयत अनन्तर कालमें अप्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होगा, इस अवस्थामें स्थित है; उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है।

मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा किसके होती है? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्व व संयमको प्राप्त होगा, इस स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उनकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है। सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है? जिसके कृतकरणीय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है उसके सम्यक्त्व प्रकृतिको

समयसम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि ति ट्ठियस्स ।

अपच्चक्खाणचउक्कस्स उक्क० उदी० कस्स ? चरिमसमयअसंजदसम्माइट्ठिस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स । पच्चक्खाणचदुक्कस्स उक्क० उदी० कस्स ? चरिमसमयसंजदासंजदस्स से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स । संजलणकोहस्स उक्कस्सप[1]देसउदीरणाए को सामी ? खवओ चरिमसमयकोधवेदओ । माणस्स० चरिमसमयमाणवेदओ । मायाए० खवओ चरिमसमयमायावेदओ । लोभस्स० खवओ समयाहियावलियचरिमसमयसकसाओ । तिण्णं वेदाणं पदेसउदीरणाए उक्कस्सियाए को सामी ? खवओ अप्पप्पणो वेदस्स समयाहियावलियचरिमसमयवेदगो । छण्णं णोकसायवेदणीयाणमुक्कस्सउदीरणाए को सामी ? खवओ सव्वविसुद्धो चरिमसमय-अपुव्वकरणो ।

णिरयाउअस्स उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? जो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीओ णेरइओ उक्कस्सए असादोदए वट्टमाणओ । मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सपदेसउदीरओ

उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त होगा, ऐसी स्थिति युक्त अन्तिम समयवर्ती सम्यग्मिथ्या-दृष्टिके उसकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा होती है ।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती असंयत सम्यग्दृष्टिके उक्त उदीरणा होती है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणा किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितियुक्त अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके उक्त उदीरणा होती है । संज्वलनक्रोधकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है ? उसका स्वामी अन्तिम समयवर्ती क्रोधका वेदक क्षपक होता है । संज्वलनमानकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी अन्तिम समयवर्ती मानका वेदक क्षपक होता है । संज्वलनमायाकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी अन्तिम समयवर्ती मायाका वेदक क्षपक होता है । संज्वलनलोभकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी ऐसा क्षपक जीव होता है जिसके अन्तिम समयवर्ती सकषाय रहनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है । तीन वेदोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है ? उसका स्वामी ऐसा क्षपक जीव होता है जिसके अपने अपने वेदके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है । छह नोकषाय वेदनीयोंकी उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामी कौन होता है ? उसका स्वामी सर्वविशुद्ध अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपक होता है ।

नारकायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है ? तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुस्थिति-वाला जो नारकी जीव उत्कृष्ट असातोदयमें वर्तमान है वह उसका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है । मनुष्यायु और तिर्यगायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है ? आठ वर्ष प्रमाण आयुवाला

---

१ अ-काप्रत्योः '-उदीरणा' इति पाठः ।

को होदि ? जो अट्ठवस्सिओ अट्ठवस्सओ[1] जादो उक्कस्सए असादोदए[2] वट्टमाणओ। देवाउअस्स उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? जो दसवस्ससहस्साउओ उक्कस्सए[3] असादोदए वट्टमाणो।

णिरयगइणामाए उक्कस्सपदेसस्स उदीरगो को होदि ? णेरइओ सम्माइट्ठी सव्वविसुद्धो। तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? संजदासंजदो सव्वविसुद्धो। देवगइणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? देवसम्माइट्ठी सव्वविसुद्धो। मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा- कम्मइयसरीर- तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघाद-छसंठाण-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास- अगुरुअलहुअ- उवघाद-परघाद -पसत्थापसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? चरिमसमयसजोगिकेवली। वेउव्विय-आहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग - बंधण-संघादाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ[4] को होदि ? संजदो सव्वविसुद्धो।

पंचण्णं संघडणाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि। संजदो तप्पाओग्गविसुद्धो। चदुण्णमाणुपुव्वीणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? तप्पाओग्गविसुद्धो सम्माइट्ठी।

जो जीव आठ वर्षका होकर उत्कृष्ट असातोदयमें वर्तमान है वह उनका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है। देवायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक कौन होता है ? दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवाला जो देव उत्कृष्ट असातोदयमें वर्तमान है वह देवायुका उत्कृष्ट प्रदेशउदीरक होता है।

नरकगति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध नारक सम्यग्दृष्टि होता है। तिर्यग्गति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध संयतासंयत [तिर्यंच] होता है। देवगति नामकर्म सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध देव सम्यग्दृष्टि होता है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक चरम समयवर्ती सयोगकेवली होता है। वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके योग्य आंगोपांग, बन्धन व संघातके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक सर्वविशुद्ध संयत जीव होता है।

पांच संहननोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त संयत होता है। चार आनुपूर्वियोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य

---

१ प्रतिषु 'अट्ठवस्स' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'असादोदएण', ताप्रतौ 'असादोएण [ण]' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उवकस्स' इति पाठः। ४ अप्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः।

आदावणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? पुढवीजीवो सव्वविसुद्धो। उज्जोवणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? वेउव्वियउत्तरसरीरो संजदो सव्वविसुद्धो। उस्सासणामाए[1] उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? चरिमसमयउस्सासणिरोहकारओ[2] सजोगी। अजसगित्ति-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? सव्वविसुद्धो असंजदसम्माइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जिहिदि त्ति। बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामाणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? जहाकमेण बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियसव्वविसुद्धो। एइंदिय-थावर-साहारणसरीराणमुक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? बादरेइंदियसव्वविसुद्धो। सुहुमणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? सुहुमेइंदियसव्वविसुद्धो[3]। अपज्जत्तणामाए उक्कस्सपदेसउदीरओ को होदि ? मणुस्सो उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णो चरिमसमयतब्भवत्थो सव्वविसुद्धो।

पंचण्णमंतराइयाणमुक्कस्सपदेस० को होदि ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थो। सुस्सर-दुस्सरणामाणं उक्कस्सपदेस०को होदि ? वचिजोगस्स चरिमसमयणिरोह-

---

विशुद्धिको प्राप्त सम्यग्दृष्टि होता है। आतप नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध पृथिवीकायिक जीव होता है। उद्योत नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसने उत्तर शरीरकी विक्रिया की है ऐसा सर्वविशुद्ध संयत जीव उद्योतके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है। उच्छ्वास नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उच्छ्वासनिरोधके अन्तिम समयमें वर्तमान सयोगकेवली उसके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक होते हैं। अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक सर्वविशुद्ध असंयत सम्यग्दृष्टि होता है जो कि अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक यथाक्रमसे सर्वविशुद्ध द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव होते हैं। एकेन्द्रिय, स्थावर और साधारणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध बादर एकेन्द्रिय जीव होता है। सूक्ष्म नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वविशुद्ध सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होता है। अपर्याप्त नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिसे उत्पन्न होकर तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें वर्तमान है ऐसा सर्वविशुद्ध मनुष्य अपर्याप्तके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है।

पांच अन्तराय कर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसके चरम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है ऐसा जीव उनके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है। सुस्वर व दुस्वर नामकर्मोंके उत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वचनयोगनिरोधके अन्तिम समयमें वर्तमान सयोगकेवली उन दो प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशके उदीरक

---

१ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्सासमाणाए' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'णिरोहोकारओ' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'इंदिओ सव्वविसुद्धो' इति पाठः।

कारओ सजोगिकेवली । एवमुक्कस्सं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो जहण्णयं सामित्तं । तं जहा—मदि-सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं जहण्णपदेसउदीरओ[1] को होदि ? उक्कस्ससंकिलिट्ठो । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णपदेसुदीरओ[2] को होदि ? पंचिंदियो उक्कस्ससंकिलिट्ठो जस्स ओहिलंभो अत्थि सो जहण्णपदेसउदीरओ । दंसणावरणपंचयस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? सण्णिपंचिंदियो पज्जत्तो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो ।

सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसायाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? उक्कस्ससंकिलिट्ठो । सम्मत्तस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? वेदगसम्माइट्ठी असंजदो से काले मिच्छत्तं पडिवज्जंतओ । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णपदेस० को होदि ? सम्मामिच्छाइट्ठी से काले मिच्छत्तं पडिवज्जंतओ । णिरयाउअस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? दसवस्ससहस्साउओ उक्कस्सए सादोदए वट्टमाणओ णेरइयो । तिरिक्ख-मणुस्साउआणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? जहाकमेण मणुस्स-तिरिक्खो[3] तिपलिदो-

होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव होता है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जिसके अवधिलब्धि है ऐसा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव उन दो प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव होता है ।

सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव इनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीव सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होता है ।

नारकायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक दस हजार वर्षकी आयुवाला व उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान नारक जीव होता है । तिर्यगायु व मनुष्यायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? तीन पल्योपम प्रमाण आयुस्थितिवाले एवं उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान

१ अ-काप्रत्योः 'उदीरणा' इति पाठः । २ अप्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'मणुस्स (सो) तिरिक्ख (क्खो)' इति पाठः ।

वमाउट्ठिदीया उक्कस्सएं सादोदए वट्टमाणा[२]। देवाउअस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? देवो तेत्तीससागरोवमाउओ उक्कस्सए सादोदए वट्टमाणओ।

चत्तारिगदि-पंचजादि-चत्तारिसरीर-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघाद-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद- परघाद-उज्जोव[३]-उस्सास- पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग - सुस्सर-दुस्सर -आदेज्ज - अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? सण्णिपंचिंदिओ पज्जत्तओ उक्कस्ससंकिलिट्ठओ। णवरि गदि-जादीणं अप्पप्पणो जादि-वेदओ सव्वसंकिलिट्ठो। छसंट्ठाण-छसंघडणाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? अप्पिद-अप्पिदसंठाणं-संघडणाणं वेदओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो।

आहारसरीर-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघादाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? पमत्तसंजदो उट्ठाविदआहारसरीरो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो। चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्ण-पदेसउदीरओ को होदि ? तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो विग्गहगदीए वट्टमाणओ। आदाव-णामाए जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? पुढवीजीवो पज्जत्तो सव्वसंकिलिट्ठो। थावर-

मनुष्य व तिर्यंच यथाक्रमसे उन दो आयुकर्मोंके जघन्य प्रदेशके उदीरक होते हैं। देवायुके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला व उत्कृष्ट सातोदयमें वर्तमान ऐसा देव होता है।

चार गतिनामकर्म, पांच जातिनामकर्म, चार शरीर और तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन एवं संघात नामकर्म, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच गोत्र, ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय; इनके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव उक्त प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। विशेषता इतनी है कि गति व जाति नामकर्मोंमें अपनी अपनी जातिका वेदक सर्वसंक्लिष्ट जीव उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। छह संस्थानों और छह संहननोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? विवक्षित विवक्षित संस्थान व संहननका वेदक प्राणी उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता हुआ उनके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है।

आहारकशरीर और तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघातके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाला तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ प्रमत्तसंयत जीव होता है। चार आनुपूर्वी नामकर्मोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? उसका उदीरक तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ विग्रहगतिमें वर्तमान जीव होता है। आतप नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? सर्वसंक्लिष्ट पृथिवीकायिक पर्याप्त

१ अ-काप्रत्योः '-ट्ठिदीयादिउक्कस्सए, ताप्रतौ '-ट्ठिदीयादि (यो) उक्कस्सए' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'वट्टमाणओ' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'उवघाद-उज्जोव' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'अप्पिदअणप्पिदसंठाण-' इति पाठः।

साहारणणामाणं जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? बादरइंदिओ सव्वसंकिलिट्ठो। सुहुमणामाए जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? सुहुमेइंदिओ सव्वसंकिलिट्ठो। अपज्जत्तणामाए जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? मणुस्सो उक्कस्सियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उववण्णो चरिमसमयतब्भवत्थो उक्कस्ससंकिलिट्ठो। तित्थयरस्स जहण्णपदेसउदीरओ को होदि ? पढमसमयकेवलिमादिं कादूण जाव आवज्जिदकरणस्स अकारओ[1] त्ति। एवं जहण्णसामित्तं समत्तं। एगजीवेण कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्सपदभंगविचओ जहण्णपदभंगविचओ चेदि। एदेसिं दोण्णं पि भंगविचयाण अट्ठपदं सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं। णाणाजीवेहि कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणिदव्वं।

एत्तो सण्णियासो दुविहो सत्थाणसण्णियासो परत्थाणसण्णियासो चेदि। तत्थ सत्थाणसण्णियासो। तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेसमुदीरेंतो सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरणाणं णियमा उक्कस्सपदेसमुदीरेदि[2]। ओहिणाणावरणस्स सिया उक्कस्सं सिया अणुक्कस्सं उदीरेदि। जदि अणुक्कस्सं णियमा असंखेज्जगुणहीणं। एवं सेस-

जीव आतपके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। स्थावर और साधारण नामकर्मोंके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वसंक्लेशको प्राप्त हुआ बादर एकेन्द्रिय जीव होता है। सूक्ष्म नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? वह सर्वसंक्लेशको प्राप्त हुआ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होता है। अपर्याप्त नामकर्मके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? जो उत्कृष्ट अपर्याप्त निवृत्तिसे उत्पन्न होकर तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें वर्तमान है ऐसा उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ मनुष्य अपर्याप्तके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। तीर्थंकर प्रकृतिके जघन्य प्रदेशका उदीरक कौन होता है ? प्रथम समयवर्ती केवलीको आदि करके जब तक वह आवर्जित करणको नहीं करता है तब तक तीर्थंकर प्रकृतिके जघन्य प्रदेशका उदीरक होता है। इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ। एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तरकी प्ररूपणा स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है— उत्कृष्ट-पद-भंगविचय और जघन्य-पद-भंगविचय। इन दोनों ही भंगविचयोंके अर्थपदका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका भी कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये।

यहां संनिकर्ष दो प्रकार है—स्वस्थान संनिकर्ष और परस्थान संनिकर्ष। इनमें स्वस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करनेवाला नियमसे श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है। वह अवधिज्ञानावरणके कदाचित् उत्कृष्ट और कदाचित् अनुत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है। यदि वह उसके अनुत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करता है तो नियमसे असंख्यातगुणे हीनकी करता है। इसी प्रकार शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी विवक्षामें भी संनिकर्षका कथना

१ प्रतिपु 'आकारओ' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'उक्कस्सपदमुदीरेदि' इति पाठः।

चदुण्णमावरणाणं पि वत्तव्वं।

मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसमुदीरेंतो अणंताणुबंधिकोधस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ। जदि उदीरओ उक्कस्समणुक्कस्सं वा उदीरेदि। जदि अणुक्कस्सं असंखेज्ज-भागहीणं संखे० भागहीणं संखे० गुणहीणं[1] असंखे० गुणहीणं वा उदीरेदि। एवमुक्कस्स-सण्णियासो जाणिदूण णेदव्वो।

जहण्णपदसण्णियासं वत्तइस्सामो। तं जहा—मदिआवरणस्स जहण्णपदेसउदीरओ[2] सुदआवरणस्स जहण्णमजहण्णं वा उदीरेदि। जदि अजहण्णं तो चउट्ठाणपदिदमुदीरेदि। एदेण बीजपदेण जहण्णपदसण्णियासो वत्तव्वो। एवं परत्थाणसण्णियासो वि जहण्णुक्कस्सपदभेयभिण्णो णेयव्वो। एवं सण्णियासो समत्तो। एत्थेव अप्पाबहुअं जाणिदूण भाणियव्वं।

पदेसभुजगारउदीरणाए अट्ठपदं— अणंतरहेट्ठिमसमए उदीरिद[3]पदेसग्गादो एण्हिमुदीरिज्जमाणपदेसग्गं जदि बहुअं होदि तो एसा भुजगारउदीरणा। अणंतरादिक्कंते समए उदीरिदपदेसग्गादो जमेण्णि[4]मुदीरिज्जमाणपदेसग्गं जइ थोवं होदि तो एसा अप्पदरउदीरणा। जदि दोसु वि समएसु तत्तियं चेव उदीरेदि तो एसा अवट्ठिद-

करना चाहिये।

मिथ्यात्वके उत्कृष्ट प्रदेशकी उदीरणा करनेवाला अनन्तानुबन्धी क्रोधका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है। यदि वह उदीरक होता है तो उत्कृष्ट अथवा अनुत्कृष्ट प्रदेशका उदीरक होता है। यदि वह अनुत्कृष्टकी उदीरणा करता है तो असंख्यातभागहीन, संख्यात-भागहीन संख्यातगुणहीन अथवा असंख्यातगुणहीनकी उदीरणा करता है। इस प्रकार उत्कृष्ट संनिकर्षको जानकर ले जाना चाहिये।

जघन्य-पद-संनिकर्षकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका उदीरक श्रुतज्ञानावरणके जघन्य अथवा अजघन्य प्रदेशकी उदीरणा करता है। यदि वह अजघन्य प्रदेशकी उदीरणा करता है तो वह चतुःस्थानपतित (असंख्यातभागहीन, संख्यात-भागहीन, संख्यातगुणहीन व असंख्यातगुणहीन) की उदीरणा करता है। इस बीजपदसे जघन्य-पद-संनिकर्षका कथन चाहिये। इसी प्रकारसे जघन्य व उत्कृष्ट पदभेदोंमें विभक्त परस्थान संनि-कर्षको भी ले जाना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ। यहींपर अल्पबहुत्वकी भी जान-कर प्ररूपणा करना चाहिये।

प्रदेश-भुजाकार-उदीरणामें अर्थपद— अनन्तर अधस्तन समयमें उदीरित प्रदेशाग्रसे इस समय उदीयमाण प्रदेशाग्र यदि बहुत होता है तो यह भुजाकार उदीरणा कही जाती है। अनन्तर अतीत समयमें उदीरित प्रदेशाग्रसे यदि इस समय उदीयमाण प्रदेशाग्र स्तोक होता है तो यह अल्पतर उदीरणा कहलाती है। यदि दोनों ही समयोंमें उतने मात्र ही प्रदेशाग्रकी उदीरणा की

१ ताप्रतौ 'असंखे० भागहीणं संखे० गुणहीणं' इति पाठः। २ अप्रतौ 'पदेसमुदीरओ' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उदीरदि' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः 'एण्णि-' इति पाठः।

उदीरणा। अणुदीरओ होदूण जदि उदीरगो होदि तो एसा अवत्तव्वउदीरणा।

सामित्तं— मदिआवरणस्स भुजगारउदीरओ अप्पदरउदीरओ अवट्ठिदउदीरओ वा को होदि ? अण्णदरो। एवं सव्वेसिं कम्माणं। णवरि अवत्तव्वउदीरओ केसिंचि कम्माणं भाणियव्वो। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो जहा अणुभागउदीरणाए तहा वत्तव्वो[1]। णवरि भवपच्चइएं[2] जहा चेव परिणामपच्चइएसु तहा कायव्वो। तं जहा— मणुसगदिणामाए पदेसउदीरणाए अवट्ठिदउदीरओ पुव्वकोडिं देसूणं। भवपच्चइयाणमवट्ठिदउदीरयकालं[3] मोत्तूण सेसाणं कम्माणमेयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च[4] जहा अणुभाग- उदीरणाए तहा पदेसउदीरणाए[5] वि भुजगारो कायव्वो।

अप्पाबहुअं। तं जहा— मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा। भुजगार- उदीरया असंखे० गुणा। अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। सेसचदुण्णं णाणावरणीयाणं चदुण्णं दंसणावरणीयाणं च मदिआवरणभंगो। पंचण्णं दंसणावरणीयाणं एवं चेव। णवरि अवट्ठिदउदीरया थोवा। अवत्तव्वउदी० असंखे० गुणा। सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा

जाती है तो यह अवस्थित उदीरणा होती है। अनुदीरक हो करके यदि उदीरक होता है तो यह अवक्तव्य उदीरणा कहलाती है।

स्वामित्व— मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदीरक, अल्पतर उदीरक और अवस्थित उदीरक कौन होता है ? अन्यतर जीव उक्त प्रकारका उदीरक होता है। इसी प्रकारसे सब कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। विशेष इतना है कि अवक्तव्य उदीरक किन्हीं विशेष कर्मोंका कहना चाहिये। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन जैसे अनुभागउदीरणामें किया गया है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि वहां जिस प्रकार भवप्रत्ययिक प्रकृतियोंका काल कहा है उसी प्रकार यहां परिणामप्रत्ययिक प्रकृतियोंका कहना चाहिए। यथा— मनुष्यगति नामकर्मकी प्रदेशउदीरणाके अवस्थितपदका काल कुछ कम एक पूर्वकोटि है। भवप्रत्ययिक प्रकृतियोंके अवस्थित पदके उदीरककालको छोड़कर शेष कर्मोंका एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तर; इनका कथन जिस प्रकार अनुभागउदीरणामें किया है उसी प्रकार यहां प्रदेशउदीरणामें भी भुजाकार पदका आश्रय लेकर करना चाहिए।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं। शेष चार ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंके अल्पबहुत्वकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार ही है। विशेष इतना है कि इनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक उनसे असंख्यात-

१ का-ताप्रत्योः 'तहा कायव्वो' इति पाठः। २ अप्रतौ 'भवपच्चएसु' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उदीरयाकालं', ताप्रतौ 'उदीरया (य) कालं' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'कालो च अंतरं' इति पाठः। ५ प्रतिषु 'उदीरणाए तप्पदेसउदीरणाए' इति पाठः।

अवट्ठिदउदी० । अवत्तव्वउ० असंखे० गुणा । अप्पदरउ० असंखे० गुणा । भुजगार० विसेसाहिया । सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा । अवत्तव्वउ० असंखे० गुणा । भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला असंखे० गुणा । अणुभागउदीरणाए[1] वि सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला कायव्वा । केण कारणेण भुजगार-अप्पदरउदीरयाणं तुल्लत्तं[2] उच्चदे ? जत्तिया मिच्छत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति तत्तिया चेव सम्मामिच्छत्तादो मिच्छत्तं गच्छंति । जत्तिया सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति तत्तिया चेव सम्मामिच्छत्तादो सम्मत्तं गच्छंति[3] । एदेण कारणेण भुजगारउदीरएहिंतो अप्पदरउदीरयाणं तुल्लत्तं । पुव्वमणुभागउदीरणाए अप्पदरुदीरएहितो भुजगारुदीरया विसेसाहिया त्ति जं भणिदं तेणेदस्स कधं ण विरोहो ? सच्चं विरोहो चेव, किंतु दोण्णमुवदेसाणं थप्पत्तपरूवणट्ठं तदुभयणिद्देसो ण विरुज्झदे । सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-णिरय-देव-मणुसगइ-बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - ओरालिय वेउव्वियसरीर-ओरालिय - वेउव्वियसरीरंगोवंग-बंधण-संघाद - छसंठाण-छसंघडण - उवघाद -परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-सुहुम- पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेय-

---

गुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थित उदीरक सबमें स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार व अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य व असंख्यातगुणे हैं । अनुभागउदीरणामें भी सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार उदीरकों व अल्पतर उदीरकोंको तुल्य करना चाहिये ।

शंका—भुजाकार व अल्पतर उदीरकोंकी समानता किस कारणसे कही जाती है ?

समाधान—जितने जीव मिथ्यात्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही जीव सम्यग्मिथ्यात्वसे मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं । जितने जीव सम्यक्त्वसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही सम्यग्मिथ्यात्वसे सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं । इस कारण भुजाकार उदीरकोंसे अल्पतर उदीरकोंकी समानता कही गयी है ।

शंका— पहिले अनुभागउदीरणामें "भुजाकार उदीरक अल्पतर उदीरकोंसे विशेष अधिक हैं" ऐसा जो कहा गया है, उससे इसका विरोध कैसे न होगा ?

समाधान—सचमुच ही उससे इसका विरोध होता है, किन्तु दोनों उपदेशोंको स्थापित करनेकी प्ररूपणा करनेके लिये उन दोनोंका निर्देश करना विरुद्ध नहीं है ।

साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, आठ नोकषाय, नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक व वैक्रियिक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक,

---

१ प्रतिषु 'उदीरयाए' इति पाठः । २ प्रतिषु 'तुल्लं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'जत्तिया सम्मामिच्छत्तादो सम्मत्तं गच्छंति तत्तिया सम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तं गच्छंति' इति पाठः ।

साहारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-अजसगित्ति-उच्चागोदाणं अवट्ठिदउदीरया थोवा। अवत्तव्वउदी० असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदरउ० विसेसा०। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं अवत्तव्व० थोवा। अवट्ठिद० अणंतगुणा। भुज० असंखे० गुणा। अप्पदर० विसेसा०।

जहा मदिआवरणस्स तहा धुवउदीरयाणं पंचण्णमंतराइयाणं च वत्तव्वं। चदुण्णमाउआणं अवट्ठिय० थोवा०। अवत्त० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसेसा०। केण कारणेण आउआणं भुजगारउदीरया बहुआ ? जे असादअपज्जत्ता ते असादोदएण बहुअयरा वड्ढंति[1]। जे सादा अपज्जत्तया ते बहुयरा सादोदएण परिहायंति, थोवयरा वड्ढंति[2]। एदेण कारणेण आउआणं अप्पदर० थोवा, भुजगार० बहुआ। चउण्णमाणुपुव्वीणं अवट्ठिय० थोवा। भुजगार० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० विसेसा०। अप्पदर० विसेसा०। आदेज्ज-जसगित्तीणं उच्चागोदभंगो।

साधारण, सुभग, सुस्वर दुस्वर, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र; इनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरउदीरक विशेष अधिक हैं। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, दुर्भग, अनादेय, और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक अनन्तगुणे हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं।

जैसे मतिज्ञानावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही ध्रुव उदीरणावाली प्रकृतियोंके एवं पांच अन्तराय प्रकृतियोंके भी अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। चार आयु कर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकार उदीरक विशेष अधिक हैं।

शंका—आयु कर्मोंके भुजाकार उदीरक बहुत किस कारणसे हैं ?

समाधान—जो जीव असातारूप संक्लेश परिणामसे सहित होते हुए पर्याप्तियोंसे अपरिपूर्ण होते हैं उनमें अधिकतर जीव दुःखानुभवनरूप असाताके उदयसे संयुक्त होकर बढ़ते हैं, अर्थात् आयुके भुजाकारको करते हैं। तथा जो जीव सातारूप मध्यम विशुद्धि परिणामोंसे परिणत होते हुए अपर्याप्त होते हैं उनमें अधिकतर सुखानुभवनरूप साताके उदयसे संयुक्त होकर हीन होते हैं, अर्थात् आयुके अल्पतरको करते हैं; कुछ थोड़ेसे जीव संक्लेश परिणामोंसे परिणत होते हुए अपर्याप्त होकर बढ़ते हैं, अर्थात् भुजाकारको करते हैं। इस कारणसे आयु कर्मोंके अल्पतर उदीरक स्तोक व भुजाकार उदीरक बहुत होते हैं।

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंके अवस्थित उदीरक स्तोक होते हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं। अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक होते हैं। अल्पतर उदीरक विशेष अधिक होते हैं। आदेय और यशकीर्ति नामकर्मोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा उच्चगोत्रके समान है। तीर्थंकर

१ अप्रतौ 'बहुअयरा भवंति', काप्रतौ 'बहुअयरा हवंति', ताप्रतौ 'बहु [अ] यरा हवंति' इति पाठः।
२ प्रतिषु 'वड्ढंति' इति पाठः।

तित्थयर० अवत्तव्व० थोवा। भुजगार० असंखे० गुणा। अवट्ठिद० असंखे०(?) गुणा। एवं भुजगारउदीरणा समत्ता।

एत्तो पदणिक्खेवो। तत्थ सामित्तं— मदिआवरणीयस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स। उक्कस्सिया हाणी कस्स? पढमसमयदेवस्स वीयरायपच्छायदस्स। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स? विदियसमयदेवस्स वीयरायपच्छायदस्स। सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं मदिआवरणभंगो। ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरणाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स जस्स ताधे चेव ओहिलंभो णट्ठो। हाणि-अवट्ठाणाणं मदिआवरणभंगो। अधवा, ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं वड्ढीए वि मदिणाणावरणभंगो होदि त्ति केसिं पि आइरियाणमुवएसो।

णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो अधापमत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्सविसोहिं गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स? जो उक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण[1] उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया

प्रकृतिके अवक्तव्य उदीरक स्तोक होते हैं। भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे होते हैं। इस प्रकार भुजाकार उदीरणा समाप्त हुई।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणा करते हैं। उसमें स्वामित्व इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जिसके चरम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? वीतराग (उपशान्तमोह) से पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है? वीतरागसे पीछे आये हुए द्वितीय समयवर्ती देवके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष रही है तथा उसी समय ही जिसकी अवधिलब्धि नष्ट हुई है उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। इनकी उत्कृष्ट हानि एवं अवस्थानकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अथवा, अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिका कथन भी मतिज्ञानावरणके ही समान है, ऐसा कितने ही आचार्योंका उपदेश है।

निद्रा और प्रचला दर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो अधःप्रवृत्तसंयत तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयपूर्वक उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। जब वह

१ अ-काप्रत्योः 'सागर-' इति पाठः।

हाणी । हाइदूण अवट्ठाणं गयस्स उक्कस्समवट्ठाणं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो पमत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो तप्पाओग्ग-उक्कस्सविसोहिं[1] गदो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स ? जो उक्कस्सविसोहीदो सागारक्खएण[2] उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स उक्कस्सिया हाणी । से काले अवट्ठाणं गयस्स उक्कस्समवट्ठाणं[3] ।

सादस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो संजदो चरिमसमयपमत्तो सव्वविसुद्धो तस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? सो चेव चरिमसमयपमत्तो सव्वविसुद्धो मदो देवो जादो तस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । असादस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो संजदो[4] चरिमसमयपमत्तो सव्वविसुद्धो तस्स उक्क० वड्ढी । हाणी अवट्ठाणं च तस्सेव उक्कस्सविसोहीदो तप्पाओग्गउक्कस्ससंकिलेसं गयस्स ।

मिच्छत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो मिच्छाइट्ठी से काले संजमं पडिवज्जदि त्ति ट्ठिदो तस्स उक्क० वड्ढी । हाणी अवट्ठाणं च कस्स ? जो मिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गविसुद्धो

हीन होकर अवस्थानको प्राप्त होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो प्रमत्तसंयत तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती ? जो उत्कृष्ट विशुद्धिसे साकार उपयोगके क्षयके साथ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। अनन्तर कालमें अवस्थानको प्राप्त होनेपर उसके उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

सातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयत जीव सर्व-विशुद्धिको प्राप्त है उसके सातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? वही अन्तिम समयवर्ती प्रमत्त सर्वविशुद्ध संयत जीव मरणको प्राप्त होकर जब देव हो जाता है तब उसके उक्त सातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अन्तिम समयवर्ती प्रमत्त संयत सर्वविशुद्धिको प्राप्त है उसके असातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उत्कृष्ट विशुद्धि-से तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होनेपर उसीके उसकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान भी होता है।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितिमें वर्तमान है उसके मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त जो मिथ्यादृष्टि साकार उपयोगके

१ अप्रतौ 'उक्कस्स हिं' इति पाठः। २ अप्रतौ 'सागर' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'से काले अवट्ठाणं मदो देवो जादो तस्स उक्क० हाणी तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः 'संजदा०', ताप्रतौ 'संजदा० (दो)' इति पाठः।

सागारक्खएण तप्पाओग्गुकस्ससंकिलेसं गदो तस्स उकस्सिया हाणी अवट्ठाणं च। सम्मत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स। हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स। जो अधापमत्तसम्माइट्ठी सव्वविसुद्धो सागारक्खएण तप्पाओग्गसंकिलेसं गदो तस्स उक्क० हाणि-अवट्ठाणाणि। सम्मामिच्छत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? सम्मामिच्छाइट्ठिस्स से काले सम्मत्तं पडिवज्जिहिदि त्ति ट्ठियस्स। सम्मामिच्छत्त० उक्क० हाणी अवट्ठाणं च कस्स ? जो सम्मामिच्छाइट्ठी तप्पाओग्गविसुद्धो परिणामक्खएण तप्पाओग्गजहण्णविसोहीए पदिदो तस्स उक्क० हाणी अवट्ठाणं च।

अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो। अपच्चक्खाणकसायाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? जो असंजदसम्माइट्ठी से काले संजमं गाहदि[1] त्ति ट्ठिदो तस्स उक्क० वड्ढी। हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? अधापमत्तसम्माइट्ठिस्स सव्वविसुद्धस्स सागारक्खएण से काले तप्पाओग्गजहण्णविसोहिं गयस्स। पच्चक्खाणकसायाणं अपच्चक्खाणकसायभंगो। णवरि संसदासंजदेसु परूवणा कायव्वा। संजलणाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? कोह-माण-मायाणं खवगस्स चरिमसमयवेदयस्स तस्स उकस्सिया वड्ढी। लोभस्स उक्क०

क्षयसे तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिसके चरम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? जो अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टि सर्वविशुद्ध होकर साकार उपयोगके क्षयसे तत्प्रायोग्य संक्लेशको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त होगा, ऐसी स्थितिमें स्थित है उस सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान किसके होता है ? जो सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव तत्प्रायोग्य विशुद्ध होकर परिणामक्षयसे तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिमें आ पड़ा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान होता है।

अनन्तानुबन्धिचतुष्कके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। अप्रत्याख्यानावरण कषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो असंयत सम्यग्दृष्टि अनन्तर कालमें संयमको प्राप्त करेगा, ऐसी अवस्थामे स्थित है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान किसके होता है ? जो सर्वविशुद्ध अधःप्रवृत्त सम्यग्दृष्टि साकार उपयोगके क्षयसे अनन्तर कालमें तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुआ है उसके उनकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान होता है। प्रत्याख्यानावरण कषायोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा अप्रत्याख्यानावरण कषायोंके समान है। विशेष इतना है कि उसकी प्ररूपणा संयतासंयत जीवोंमें करना चाहिये। संज्वलन कषायों (क्रोध, मान व माया) की उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो क्रोध, मान व मायाका क्षपक अन्तिम समयवर्ती तद्वेदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। संज्वलन लोभकी

१ अप्रतौ 'गहिदि' इति पाठः।

वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयसकसायक्खवगस्स । एदेसिं हाणी कस्स ? जो उवसामगो अप्पिदकसायस्स उक्कस्सउदयट्ठाणं पत्तो संतो मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं ।

छण्णोकसायाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? चरिमसमयअपुव्वखवगस्स । हाणी कस्स ? तस्सेव उवसामयस्स कालं कादूण देवेसु उववण्णस्स । तस्सेव से काले उक्कस्स-मवट्ठाणं । णवरि अरदि-सोगाणं पडिवदमाणयस्स दुसमयवेदगस्स उक्कस्सिया हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? अधापमत्तसंजदस्स कदउक्कस्सावट्ठाणस्स । पुरिसवेदस्स संजलण-भंगो । इत्थि-णवुंसयवेदाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयवेदगस्स खवगस्स । उक्क० हाणी कस्स ? उवसमसेडीदो पडिवदमाणस्स दुसमयवेदयस्स । अवट्ठाणं कस्स ? सत्थाणसंजदस्स सागारक्खएण उक्कस्समवट्ठाणं गदस्स ।

णिरयाउअस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? णिरयगईए जस्स णेरइयस्स[1] असादोदयस्स अणुभागउदीरणाए उक्कस्सिया वड्ढी तस्स णिरयाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? णिरयगईए णेरइयस्स असादोदयस्स अणुभागउदीरणाए उक्क०

उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिस क्षपकके अन्तिम समयवर्ती सकषाय होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। इन चारोंकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उपशामक जीव विवक्षित कषायके उत्कृष्ट उदयस्थानको प्राप्त होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ है उसके देव होनेके प्रथम समयमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

छह नोकषायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुए उसी अपूर्व-करण उपशामकके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। विशेषता इतनी है कि अरति और शोककी उत्कृष्ट हानि श्रेणिसे गिरनेवाले द्वितीय समयवर्ती तद्वेदकके होती है। उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह उत्कृष्ट अवस्थानको प्राप्त अधःप्रवृत्तसंयतके होता है। पुरुषवेदकी प्ररूपणा संज्वलन कषायके समान है। स्त्री व नपुंसक वेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है। जिस क्षपकके उनके अन्तिम समयवर्ती वेदक होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उन दो वेदोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उपशमश्रेणिसे गिरनेवाले द्वितीय समयवर्ती तद्वेदकके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उनका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह साकार उपयोगके क्षयसे उत्कृष्ट अवस्थानको प्राप्त हुए स्वस्थान संयतके होता है।

नारकायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? नरगतिमें जिस नारकीके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उसके नारकायुकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? नरकगतिमें जिस नारकीके असातोदयकी अनुभाग-

१ काप्रतौ 'कस्स' इति पाठः ।

हाणी[1] तस्स णिरयाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्क० हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? णेरइयस्स उक्कस्सियं हाणिं कादूण अवट्ठियस्स। तिरिक्खाउअस्स उक्क० पदेसवड्ढी कस्स ? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागुदीरणाए असादोदयवड्ढी उक्कस्सिया तस्स तिरिक्खस्स तिरिक्खाउअस्स[2] पदेसउदीरणाए[3] उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स ? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागउदीरणाए असादोदयहाणी उक्क० तस्स उक्क० पदेसहाणी। उक्कस्सअवट्ठाणं[4] कस्स ? जस्स तिरिक्खस्स अणुभागउदीरणाए असादोदयस्स उक्कस्समवट्ठाणं तस्स तिरिक्खाउअस्स पदेसउदीरणाए उक्कस्समवट्ठाणं। मणुसाउअस्स तिरिक्खाउअभंगो। णवरि मणुस्सेसु वत्तव्वं। देवाउअस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जस्स देवस्स अणुभागदीरणाए असादोदयवड्ढी उक्क० तस्स पदेसउदीरणाए देवाउअस्स उक्क० वड्ढी। उक्क० हाणी कस्स ? जस्स देवस्स अणुभागउदीरणाए असादोदयहाणी उक्कस्सिया तस्स पदेसउदीरणाए देवाउअस्स उक्क० हाणी। उक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? जस्स देवस्स अणुभागुदीरणाए असादोदयस्स उक्कस्समवट्ठाणं तस्स देवाउअपदेसउदीरणाए उक्कस्समवट्ठाणं।

उदीरणामें उत्कृष्ट हानि होती है उसके नारकायुकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? वह उत्कृष्ट हानिको करके अवस्थानको प्राप्त हुए नारक जीवके होता है। तिर्यंचआयुकी उत्कृष्ट प्रदेशवृद्धि किसके होती है ? जिस तिर्यंचके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उस तिर्यंचके तिर्यंचआयु सम्बन्धी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जिस तिर्यंचके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट हानि होती है उसके तिर्यंच आयुकी उत्कृष्ट प्रदेशहानि होती है। उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जिस तिर्यंचके अनुभागउदीरणामें असातोदयका उत्कृष्ट अवस्थान होता है उसके तिर्यंचआयुकी प्रदेशउदीरणाका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। मनुष्यायुकी प्ररूपणा तिर्यंच आयुके समान है। विशेष इतना है कि मनुष्यायुकी प्रदेशउदीरणाकी वृद्धि आदिका कथन मनुष्योंमें करना चाहिये। देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है उसके प्रदेशउदीरणामें देवायुकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयकी उत्कृष्ट हानि होती है उसके प्रदेशउदीरणामें देवायुकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जिस देवके अनुभागउदीरणामें असातोदयका उत्कृष्ट अवस्थान होता है उसके देवायुकी प्रदेशउदीरणाका उत्कृष्ट अवस्थान होता है।

१ अप्रतौ त्रुटितो जातोऽत्र पाठः, का-ताप्रत्योः 'वड्ढी' इति पाठः। २ अप्रतौ 'कस्स तिरिक्खस्स तिरिक्खाउअस्स', काप्रतौ 'कस्स तिरिक्खाउअस्स' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'पदेसउदीरणा' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः 'कस्स अवट्ठाणं', ताप्रतौ '[कस्स]। अवट्ठाणं' इति पाठः।

णामकम्मस्स जाओ पयडीओ सुभाओ असुभाओ वा केवली वेदयदि तासिं चरिमसमयसजोगिम्हि उक्कस्सिया वड्ढी ? जाओ णामपयडीओ सुहाओ असुहाओ वा उवसंतकसाओ वेदेदि तासिमुक्कस्सिया हाणी पढमसमयदेवस्स उवसंतकसायपच्छायदस्स होदि । तासिं चेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । णवरि मणुसगइ-ओरालियचदुक्क-सरदुग-विहायगइदुगाणमुक्कस्सिया हाणी ओदरमाणपढमसमयसुहुमसांपराइस्स, अवट्ठाणं बिदियसमयउवसंतकसायस्स । जासिं णामपयडीणं केवली उदीरओ ण होदि तासिं तप्पाओग्गजहण्णविसोहीदो उक्कस्सविसोहिं गदस्स संजदस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० विसोहीदो जहण्णविसोहिं गदस्स सागारक्खएण भवक्खएण वा तस्स उक्क० हाणी । अवट्ठियस्स[1] उक्कस्समवट्ठाणं । णीचागोद-दूभग-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं उक्क० वड्ढी कस्स ? चरिमसमयअसंजदस्स उक्क० वड्ढी । उक्क०हाणी कस्स ? णीचागोदस्स[2] (?) सम्माइट्ठिस्स सव्वुक्कस्सविसोहीदो जहण्णविसोहिं गयस्स तस्स उक्कस्सिया हाणी । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । उच्चागोदस्स[3] उक्क० वड्ढी कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? पढमसमयदेवस्स उवसंतकसायस्स पच्छायदस्स । तस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं । पंचण्णमंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो । एवमुक्कस्स-

नामकर्मकी जिन शुभ अथवा अशुभ प्रकृतियोंका वेदन केवली करते हैं उनकी उत्कृष्ट वृद्धि अन्तिम समयवर्ती सयोगकेवलीके होती है। जिन शुभ-अशुभ नामप्रकृतियोंका उपशान्तकषाय वेदन करता है उनकी उत्कृष्ट हानि उपशान्तकषायसे पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके होती है। उन्हींका अनन्तर कालमें उसके उत्कृष्ट अवस्थान होता है। विशेष इतना है कि मनुष्यगति, औदारिकचतुष्क, स्वरद्विक और दोनों विहायोगतियोंकी उत्कृष्ट हानि श्रेणिसे उतरते हुए प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके होती है; तथा उनका उत्कृष्ट अवस्थान द्वितीय समयवर्ती उपशान्तकषायके होता है। जिन नामप्रकृतियोंके केवली उदीरक नहीं होते हैं उनकी उत्कृष्ट वृद्धि तत्प्रायोग्य जघन्य विशुद्धिसे उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त हुए संयतके होती है। साकार उपयोगके क्षयसे अथवा भवके क्षयसे उत्कृष्ट विशुद्धिसे जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुए उक्त जीवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानिको करके अनन्तर कालमें अवस्थानको प्राप्त हुए उक्त जीवके ही उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। नीचगोत्र, दुर्भग, अनादेय और अयशकीर्तिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? चरम समयवर्ती असंयत जीवके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिसे जघन्य विशुद्धिको प्राप्त हुए उक्त सम्यग्दृष्टि जीवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होती है। उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? उपशान्तकषायसे पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उनका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। पांच अन्तराय

१ अ-ताप्रत्योः 'हाणी कादूण अवट्ठियस्स' इति पाठः । २ ताप्रतौ '[णीचागोदस्स]' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'णीचागोदस्स', ताप्रतौ 'णीचा (उच्चा) गोदस्स' इति पाठः ।

सामित्तं समत्तं ।

मदिआवरणस्स जहण्णिया पदेसउदीरणावड्ढी कस्स ? जो उक्कस्ससंकिलिट्ठो तत्तो अणंतभागेण हीणो तस्स जहण्णिया वड्ढी । जहण्णिया हाणी कस्स ? दुचरिमादो संकिलेसादो जो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स जह० हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । सुद-मणपज्जव - केवलणाणावरण-चक्खु -अचक्खु- केवलदंसणावरण- सादासाद - मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसायाणं मदिणाणावरणभंगो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पि मदिणाणावरणभंगो । णवरि देव-णेरइएसु जहण्णसामित्तं दादव्वं । पंचण्णं दंसणा-वरणीयाणं मदिणाणावरणभंगो । णवरि तप्पाओग्गसंकिलिट्ठे जहण्णसामित्तं दादव्वं । णिरयाउअस्स जहण्णिया वड्ढी कस्स ? जो उक्कस्सादो सादोदयट्ठाणादो दुचरिम-सादोदयट्ठाणं गदो णेरइओ तस्स णिरयाउअस्स जह० वड्ढी । जह० हाणी कस्स ? जो दुचरिमसादोदयादो चरिमसादोदयं गदो तस्स जहण्णिया हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । तिरिक्ख-मणुस-देवाउआणं णिरयाउअभंगो । णवरि तिरिक्ख-मणुस-देवेसु उक्कस्स-अणुक्कस्ससादोदएसु जहाकमेण सामित्तं वत्तव्वं ।

सव्वणामपयडीणं जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि भण्णमाणे मदिणाणावरणभंगो । णवरि अप्पिद-अप्पिदणामपयडीणमुदयसंभवपदेसम्हि उक्कस्स-अणुक्कस्ससंकिलेसेसु जहण्ण-

---

कर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

मतिज्ञानावरणकी जघन्य प्रदेशउदीरणावृद्धि किसके होती है ? उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ जो जीव उसके अनन्तवें भागसे हीन होता है उसके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । श्रुत-ज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, केवल-दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी यह प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी भी उक्त प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि उनका जघन्य स्वामित्व देव-नारकियों-में देना चाहिये । निद्रा आदि पांच दर्शनावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि तत्प्रायोग्य संक्लेश युक्त जीवमें उनका जघन्य स्वामित्व देना चाहिये । नारकायु-की जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो नारकी जीव उत्कृष्ट सातोदयस्थानसे द्विचरम सातोदय-स्थानको प्राप्त हुआ है उसके नारकायुकी जघन्य वृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम सातोदयस्थानसे चरम सातोदयस्थानको प्राप्त हुआ है उसके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी भी एकमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । तिर्यगायु, मनुष्यायु और देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट सातोदय युक्त तिर्यंच, मनुष्य और देवमें यथाक्रमसे उनका जघन्य स्वामित्व कहना चाहिये ।

सब नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थानकी प्ररूपणा करनेपर वह मतिज्ञाना-वरणके समान करना चाहिये । विशेष इतना है कि विवक्षित विवक्षित नामप्रकृतियोंके उदयकी

सामित्तं दादव्वं । उच्च-णीचागोद-पंचंतराइयाणं जह० वड्ढी कस्स ? जो उक्कस्ससंकिलेसादो दुचरिमसंकिलेसं गदो तस्स जह० वड्ढी । जह०हाणी कस्स ? जो दुचरिमसंकिलेसादो उक्कस्ससंकिलेसं गदो तस्स जह० हाणी । एगदरत्थमवट्ठाणं । एवं जहण्णसामित्तं समत्तं ।

अप्पाबहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्क० वड्ढी असंखेज्जगुणा । सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरण-सम्मत्त - मिच्छत्त - सम्मामिच्छत्त - सोलसकसाय-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा - पुरिसवेद - पंचिंदियजादि - तेजा-कम्मइयसरीर - तब्बंधणं[1] - संघाद-समचउरससंठाण-वण्ण- गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - तस - बादर - पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं पदेसउदीरणाए उक्कस्सिया हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा । असादस्स उक्क० हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । वड्ढी असंखे०गुणा । दंसणावरणपंचयस्स उक्क० वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । सादस्स हाणि-अवट्ठाणाणि थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । इत्थि-णवुंसयवेद-

सम्भावना युक्त ऐसे उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट संक्लेशवाले जीवोंमें उनके जघन्य स्वामित्वको देना चाहिये । उच्च व नीच गोत्र तथा पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट संक्लेशसे द्विचरम संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । उनकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो द्विचरम संक्लेशसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त होता है उसके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है । इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उसकी उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर तथा उनके बन्धन और संघात, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी प्रदेशउदीरणाकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य एवं स्तोक हैं । उनकी उत्कृष्ट वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है । असातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । उससे उसकी वृद्धि असंख्यातगुणी है । निद्रादिक पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । सातावेदनीयकी हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं । वृद्धि असंख्यातगुणी है । स्त्रीवेद, नपुंसकवेद,

[1] ताप्रतौ '-सरीर-बंधण' इति पाठः ।

अरदि-सोगाणं सव्वत्थोवमवट्ठाणं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखेज्जगुणा । आउआणं वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । तिण्णं गईणं चदुण्णं जादीणं च उक्कस्सिया वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि विसेसा० । मणुसगइणामाए उक्क० हाणी थोवा । अवट्ठाणमसंखे० गुणं । वड्ढी असंखे० गुणा । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग- बंधण-संघाद - पंचसंठाण - वज्जरिसहसंघडण - परघाद - उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-दुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सिया हाणी थोवा । अवट्ठाणमसंखे० गुणं । वड्ढी असंखे० गुणा । वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघाद-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं उक्क० वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च विसेसाहियं । चदुण्णमाणुपुव्वीणमुक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । उवसमसेढिम्हि उदयसंभवसंघडणाणं वड्ढी अवट्ठाणं थोवं । हाणी विसे० । सेसाणं संघडणाणं वड्ढी थोवा । हाणी अवट्ठाणं च विसे० । अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं उक्क० हाणी अवट्ठाणं च थोवं । वड्ढी असंखेज्जगुणा । एवमुक्कस्सप्पाबहुअं समत्तं ।

पदेसउदीरणाए मदिआवरणस्स जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । जधा मदिआवरणस्स तधा सव्वकम्माणं पि अप्पाबहुअं अत्थि, सव्वकम्म-जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं तुल्लत्तुवलंभादो । णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णिया

अरति व शोकका अवस्थान सबमें स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । आयु कर्मोंकी वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । तीन गतियों व चार जातियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । मनुष्यगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । अवस्थान असंख्यातगुणा है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंघात, पांच संस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर; इनकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । अवस्थान असंख्यातगुणा है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । वैक्रियिक व आहारक शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन व संघात; आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं । चार आनुपूर्वियोंका उत्कृष्ट हानि और अवस्थान दोनों स्तोक हैं । वृद्धि असंख्यातगुणी है । उपशमश्रेणिमें जिनका उदय सम्भव है उन संहननोंकी वृद्धि और अवस्थान दोनों स्तोक हैं । हानि विशेष अधिक है । शेष संहननोंकी वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान विशेष अधिक हैं । अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी उत्कृष्ट हानि व अवस्थान दोनों स्तोक हैं । वृद्धि असंख्यातगुणी है । इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

प्रदेशउदीरणामें मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं । जैसे मतिज्ञानावरणके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है वैसे ही सभी कर्मोंके अल्पबहुत्व की प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थानमें तुल्यता पायी जाती है ।

---

१ का-ताप्रत्योः 'पुधअसंभव' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'णत्थि', ताप्रतौ 'ण (अ) त्थि' इति पाठः ।

हाणी थोवा। वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि असंखे० गुणाणि। तित्थयरणामाए हाणि-अवट्ठाणाणि णत्थि, वड्ढी एक्का चेव।

एत्तो वड्ढिउदीरणा[1]। तत्थ समुक्कित्तणा— मदिआवरणस्स अत्थि असंखे० भागवड्ढी संखे० भागवड्ढी संखे०गुणवड्ढी असंखे० गुणवड्ढी असंखेज्जभागहाणी संखे० भागहाणी संखे० गुणहाणी असंखे० गुणहाणी अवट्ठाणं चेदि। एवं सव्वकम्माणं। णवरि केसिंचि सादादीणं अवत्तव्वेण सह दस होंति। तित्थयरणामाए असंखे० गुणवड्ढी अवट्ठिदमवत्तव्वं च तिण्णि चेव होंति। समुक्कित्तणा गदा।

सामित्तं वुच्चदे। तं जहा— चउव्विहाए वड्ढीए चउव्विहाए हाणीए अवट्ठाणस्स य को सामी? अण्णदरो। एवं सव्वकम्माणं वत्तव्वं। एयजीवेण कालो— तिण्णि-वड्ढि-तिण्णिहाणीणं[2] जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। असंखेज्जगुण-वड्ढि-असंखेज्जगुणहाणीणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। जाणि कम्माणि उवसामगो[3] उदीरेदि तेसिं कम्माणमवट्ठाणस्स उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं। जाणि केवली उदीरेदि तेसिमवट्ठियस्स उक्कस्सकालो पुव्वकोडी देसूणा। एयजीवेण अंतरं

विशेष इतना है कि सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य हानि स्तोक है। वृद्धि व अवस्थान दोनों ही तुल्य व असंख्यातगुणे हैं। तीर्थंकर नामकर्मकी हानि व अवस्थान सम्भव नहीं है, उसकी एक मात्र वृद्धि ही होती है।

यहां वृद्धिउदीरणाकी प्ररूपणा करते हैं। उसमें समुत्कीर्तना— मतिज्ञानावरणके असंख्यात-भागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभाग-हानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अवस्थान भी होता है। इसी प्रकार सब कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। विशेष इतना है कि किन्हीं सातावेदनीय आदि विशेष कर्मोंके अवक्तव्यके साथ ये दस पद होते हैं। तीर्थंकर नामकर्मके असंख्यातगुणवृद्धि, अवस्थित और अवक्तव्य ये तीन ही पद होते हैं। समुत्कीर्तना समाप्त हुई।

स्वामित्वका कथन करते हैं। यथा— मतिज्ञानावरणकी चार प्रकारकी वृद्धि, चार प्रकारकी हानि और अवस्थानका स्वामी कौन है? उनका स्वामी अन्यतर जीव है। इसी प्रकार सब कर्मोंके कहना चाहिये।

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन करते हैं— तीन वृद्धियों और तीन हानियोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। जिन कर्मोंकी उपशामक उदीरणा करता है उन कर्मोंके अवस्थानका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त मात्र है। जिन कर्मोंकी केवली उदीरणा करते हैं उनके अवस्थानका उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटि मात्र

१ ताप्रतौ 'वड्ढिउदीरणा' इति पाठः। २ अप्रतौ 'हाणीणं जहण्णीणं' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उवसमगो' इति पाठः।

कालेण साधेदूण णेयव्वं ।

एत्तो णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च भाणियव्वं[1] । एत्तो अप्पाबहुअं— मदिआवरणस्स अवट्ठिदउदीरया थोवा । असंखेज्जभागवड्ढिदउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखे० भागहाणिउदीरया[2] विसेसाहिया । संखे० भागवड्ढिदउ० संखे० गुणा । संखे० भागहाणिउ० विसेसा० । संखे० गुणवड्ढिदउ० संखे० गुणा । संखेज्जभागहाणिउदी० विसे० । असंखे० गुणवड्ढिदउ० असंखे० गुणा । असंखे० गुणहाणिउदीरया विसेसाहिया । एवं सव्वकम्माणं कायव्वं ।

जेसिं कम्माणं अवत्तव्वया अणंता तेसिं अप्पाबहुअं । तं जहा— अवट्ठिदउदीरया थोवा । असंखेज्जभागवड्ढिदउदीरया असंखे० गुणा । असंखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया । संखेज्जभागवड्ढिदउ० संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणिउ० विसेसा० । संखेज्जगुणवड्ढिदउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणिउ० विसे० । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । असंखेज्जगुणवड्ढिदउ० असंखे० गुणा । असंखेज्जगुणहाणिउ० विसेसा० । परित्तजीवियाणं कम्माणं जियो[3] अत्थि तेसिं एसो चेव अप्पाबहुगालावो कायव्वो । जाणि कम्माणि अणंतजीवियाणि परित्ता जेसिं अवत्तव्वया तेसिं

है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरको कालसे सिद्ध करके ले जाना चाहिये ।

यहां नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरका कथन करना चाहिये । यहां अल्पबहुत्व— मतिज्ञानावरणके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । असंख्यातभागवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातगुणवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । असंख्यातगुणवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानि उदीरक विशेप अधिक हैं । इस प्रकार सब कर्मोंके सम्बन्धमें अल्पबहुत्व करना चाहिये ।

जिन कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक अनन्त हैं उनका अल्पबहुत्व कहा जाता है । वह इस प्रकार है— उनके अवस्थित उदीरक स्तोक हैं । असंख्यातभागवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानि उदीरक विशेप अधिक हैं । संख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानि उदीरक विशेष अधिक हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणहानि उदीरक विशेप अधिक हैं । अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणवृद्धि उदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानि उदीरक विशेप अधिक हैं । जिन कर्मोंके उदीरक परीत संख्यावाले जीव हैं उनके यही अल्पबहुत्व आलाप करना चाहिये । जिन कर्मोंके उदीरक अनन्त हैं, उनमें भी जिनका अवक्तव्य पद परीतसंख्याक जीवोंके होता है, उन

---

१ ताप्रतौ 'भाणियव्वो' इति पाठः । २ अप्रतौ 'उदीरणा' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'जिया' इति पाठः ।

कम्माणं अवत्तव्वयादिसेसाणं पदाणं जहापरिवाडीए अप्पाबहुअं वत्तव्वं । एवं पदेस-उदीरणा समत्ता । एवमुदीरणाउवक्कमो समत्तो ।

उवसामणाउवक्कमे उवसामणा णिक्खिविदव्वा । तं जहा— णाम-ट्ठवणा-दविय-भावुवसामणा चेदि उवसामणा चउव्विहा । णाम-ट्ठवणं गदं । आगमभावुवसामणा च गदा । णोआगमभावुवसामणा उवसंतो कलहो जुद्धं वा इच्चेवमादि । आगमदो दव्वुव-सामणा सुगमा । णोआगमदो दव्वुवसामणा दुविहा कम्मउवसामणा णोकम्मउवसामणा चेदि । कम्मउवसामणा दुविहा करणुवसामणा अकरणुवसामणा चेदि । जा सा अकरणुव-सामणा तिस्से दुवे णामाणि— अकरणुवसामणा त्ति च अणुदिण्णोवसामणा त्ति च[1] । सा कम्मपवादे सवित्थरेण परूविदा । जा सा करणुवसामणा[2] सा दुविहा देसकरणुव-सामणा सव्वकरणुवसामणा चेदि । तत्थ सव्वकरणुवसामणाए अण्णाणि दुवे णामाणि गुणोवसामणा[3] त्ति च पसत्थुवसामणा त्ति च । एसा सव्वकरणुवसामणा कसायपाहुडे परूविज्जिहिदि । जा सा देसकरणुवसामणा तिस्से अण्णाणि दुवे णामाणि अगुणोवसामणा

कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक आदि शेष पदोंके अल्पबहुत्वका कथन परिपाटीक्रमके अनुसार करना चाहिये । इस प्रकार प्रदेशउदीरणा समाप्त हुई । इस प्रकार उदीरणा-उपक्रम समाप्त हुआ ।

उपशामनाउपक्रममें उपशामनाका निक्षेप करते हैं । यथा— नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव उपशामनाके भेदसे उपशामना चार प्रकारकी है । उनमें नाम व स्थापना अवगत हैं । आगमभावोपशामना भी अवगत है । नोआगमभावोपशामना— जैसे कलह उपशान्त हो गया, अथवा युद्ध उपशान्त हो गया, इत्यादि । आगमद्रव्योपशामना सुगम है । नोआगमद्रव्योपशामना दो प्रकारकी है— कर्मद्रव्योपशामना और नोकर्मद्रव्योपशामना । इनमें कर्मद्रव्योपशामना दो प्रकारकी है— करणोपशामना और अकरणोपशामना । जो वह अकरणोपशामना है उसके दो नाम हैं—अकरणोपशामना और अनुदीर्णोपशामना । उसकी कर्मप्रवादमें विस्तारके साथ प्ररूपणा की गयी है । जो वह करणोपशामना है वह दो प्रकार है— देशकरणोपशामना और सर्वकरणोपशामना । उनमें सर्वकरणोपशामनाके दो नाम और हैं— गुणोपशामना और प्रशस्तोपशामना । इस सर्वकरणोपशामनाकी प्ररूपणा कषायप्राभृतमें करेंगे । जो वह देश-करणोपशामना है उसके दो नाम और हैं— अगुणोपशामना और अप्रशस्तोपशामना ।

१ करणकया अकरणा वि य दुविहा उवसामण त्थ बिइयाए । अकरण-अणुइन्नाए अणुयोगधरे पणिवयामि ॥ क. प्र. ५, १. करणकय त्ति— इह द्विविधा उपशामना करणकृताऽकरणकृता च । तत्र करणं क्रिया यथा-प्रवृत्तापूर्वानिवृत्तिकरणसाध्यः क्रियाविशेषः, तेन कृता करणकृता । तद्विपरीताऽकरणकृता । या संसारिणां जीवानां गिरि-नदीपाषाणवृत्ततादिसंभववद्यथाप्रवृत्तादिकरणक्रियाविशेषमन्तरेणापि वेदनानुभवनादिभिः कारणै-रुपशामनोपजायते साऽकरणकृतेत्यर्थः । इदं च करणकृताकरणकृतत्वरूपं द्वैविध्यं देशोपशामनाया एव द्रष्टव्यम्, न सर्वोपशामनायाः; तस्याः करणेभ्य एव भावात् । मलय. २ ताप्रतौ 'जा करणुवसामणा' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'गुणोवसामया त्ति' इति पाठः ।

त्ति च अप्पसत्थुवसामणा त्ति[1] च । एदाए पयदं ।

तत्थ अप्पसत्थुवसामणाए अट्ठपदं तं । जहा— अप्पसत्थुवसामणाए जमुवसंतं पदेसग्गं तमोकड्डिदुं पि[2] सक्कं, उक्कड्डिदुं पि सक्कं[3]; पयडीए संकामिदुं पि सक्कं, उदयावलियं पवेसिदुं[4] ण उ सक्कं । वुत्तं च—

उदए संकम-उदए चदुसु वि दादुं कमेण णो सक्कं ।
उवसंतं च णिधत्तं णिकाचिदं चावि जं कम्मं[5] ॥ ४ ॥

एदेण अट्ठपदेण सामित्तं तत्थ पुव्वं गमणिज्जं । सामित्तणिद्देसस्स पयदकरणं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वकम्माणि चरित्तमोहणीयक्खवग-उवसामगाणं[6] अणियट्टिपढमसमयं पविट्ठस्स चेव अप्पसत्थउवसामणाए अणुवसंताणि । दंसणमोहणीयक्खवग-उवसामगाणं अणियट्टिकरणपढमसमयपविट्ठस्सेव दंसणमोहणीयं अप्पसत्थउवसामणाए अणुवसंतं होदि । सेसाणि सव्वकम्माणि तत्थ उवसंताणि अणुवसंताणि च । अणंताणुबंधिविसंजोयणाए अणियट्टिपढमसमए पविट्ठंतकाले[7] चेव अणंताणुबंधिचउक्कमप्पसत्थ-उवसामणाए अणुवसंतं । सेसाणि सव्वकम्माणि उवसंताणि अणुवसंताणि च । णत्थि

यह यहां प्रकृत है ।

उनमेंसे अप्रशस्तोपशामनामें अर्थपदका कथन करते हैं । यथा— अप्रशस्तोपशामनाके द्वारा जो प्रदेशाग्र उपशान्त होता है वह अपकर्षणके लिये भी शक्य है, उत्कर्षणके लिए भी शक्य है, तथा अन्य प्रकृतिमें संक्रमण करानेके लिये भी शक्य है । वह केवल उदयावलीमें प्रविष्ट करानेके लिये शक्य नहीं है । कहा भी है–

जो कर्म उदयमें नहीं दिया जा सकता है वह उपशान्त, जो संक्रमण व उदय दोनोंमें नहीं दिया जा सकता है वह निधत्त, तथा जो चारों (उदय, संक्रमण, अपकर्षण व उत्कर्षण) में भी नहीं दिया जा सकता है वह निकाचित कहा जाता है ॥ ४ ॥

इस अर्थपदके अनुसार प्रथमतः स्वामित्वका परिज्ञान कराना योग्य है । स्वामित्वनिर्देशपूर्वक प्रकृत करणका कथन करते हैं । यथा— चारित्रमोहनीयके क्षपक व उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही सब कर्म अप्रशस्त उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होते हैं । दर्शनमोहनीयके क्षपक व उपशामकोंमेंसे अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट हुए जीवके ही दर्शनमोहनीय कर्म अप्रशस्त उपशामनाके द्वारा अनुपशान्त होता है । शेष सब कर्म वहां उपशान्त और अनुपशान्त भी होते हैं । अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनमें अनिवृत्तिकरणके प्रथम समयमें प्रविष्ट होनेके कालमें ही अनन्तानुबन्धिचतुष्क अप्रशस्त उपशामनासे अनुपशान्त होता है । शेष सब कर्म उपशान्त और अनुपशान्त होते हैं । किसी भी कर्मका सब प्रदेशाग्र

१ सव्वस्स य देसस्स य करणुवसमणा दुसन्नि एक्किक्का । सव्वस्स गुण-पसत्था देसस्स वि तासि विवरीया ॥ क. प्र. ५, २. २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'तमोकड्डिदुं वपि' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'उक्कड्डिदुं व सक्कं' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'पदेसिदुं' इति पाठः । ५ गो. क. ४४०. ६ अप्रतौ '-क्खवणउवसामगाण', का-ताप्रत्योः 'क्खएण उवसामगाण' इति पाठः । ७ अप्रतौ 'पविट्ठंतकाले', ताप्रतौ 'पविट्ठतकाले' इति पाठः, काप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः ।

कस्स वि कम्मस्स पदेसग्गं सव्वमुवसंतं णाम अथवा सव्वमणुवसंतं णाम, सव्वमुवसंतं च अणुवसंतं च। एदेण पयदकरणेण सामित्तं गदं होदि।

एत्तो एयजीवेण कालो। तं जहा— णाणावरणस्स उवसामगो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा। तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सेससत्तण्णं कम्माणं णाणावरणभंगो।

एयजीवेण अंतरं जह०[1] एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एवमट्ठण्णं पि मूलपयडीणं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ। संतकम्मिएसु पयदं— णाणावरणस्स सिया सव्वे जीवा उवसामया, सिया उवसामया च अणुवसामया च, सिया उवसामया[2] च अणुवसामओ च। एवं तिण्णं घादिकम्माणं तिण्णि तिण्णि भंगा। अघादीणं उवसामया अणुवसामया च णियमा अत्थि।

णाणाजीवेहि कालो— अट्ठण्णं पि पयडीणं उवसामया सव्वद्धा। णाणजीवेहि णत्थि अंतरं। अप्पाबहुअं—अट्ठण्णं पि उवसामया तुल्ला। भुजगारउवसामया णत्थि। पदणिक्खेव-वड्ढिउवसामणा च णत्थि। एवं मूलपयडिउवसामणा समत्ता।

उपशान्त अथवा सब अनुपशान्त नहीं होता, किन्तु सब प्रदेशाग्र उपशान्त भी होता है और अनुपशान्त भी होता है। इस प्रकृत करणके साथ स्वामित्व समाप्त होता है।

यहां एक जीवकी अपेक्षा कालका वर्णन करते हैं। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणका उपशामक जीव अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित होता है। उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गल-परिवर्तन मात्र है। शेष सात कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है।

एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। इसी प्रकारसे आठों ही मूल प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं। सत्कर्मिक जीव प्रकृत हैं— ज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक, कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक और एक अनुपशामक होता है। इस प्रकारसे तीन घातिया कर्मोंके तीन तीन भंग होते हैं। अघातिया कर्मोंके बहुत उपशामक और बहुत अनुपशामक नियमसे होते हैं।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— आठों ही प्रकृतियोंके उपशामक सर्व काल होते हैं। नाना जीवोंकी अपेक्षा उनका अन्तर नहीं होता। अल्पबहुत्व— आठों ही कर्मोंके उपशामक तुल्य होते हैं। भुजाकार उपशामक नहीं होते। पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामना भी नहीं है। इस प्रकार मूल-प्रकृतिउपशामना समाप्त हुई।

---

१ अ-काप्रत्योः 'अंतरं जह। जह०' इति पाठः। २ प्रतिषु 'उवसामओ' इति पाठः।

उत्तरपयडिउवसामणा वुच्चदे। तं जहा— सामित्तं तेणेव पायदकरणेण पुव्वपरूविदेण परूवेयव्वं। तं जहा— सव्वकम्माणमुवसामओ को होदि ? अण्णदरो। एयजीवेण कालो। तं जहा— सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्क० बे-छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि। मणुस-तिरिक्खाउआणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं सादिरेयं। उक्कस्सेण मणुस्साउअस्स तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, तिरिक्खाउअस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। देव-णिरयाउआणं जहण्णेण दसवास-सहस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। णिरय-मणुस-देवगइ-तदाणुपुव्वी - वेउव्विय-आहारसरीर - वेउव्विय - आहारसरीरंगोवंग - बंधण संघाद-तित्थयर-उच्चागोदाणं जहा संतकम्मियस्स कालो परूविदो तहा परूवेयव्वो। सेसाणं सव्वकम्माणं उवसामयकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं।

एयजीवेण अंतरं— जेसिं कम्माणं अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा उवसंतकालो तेसिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एयसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। जेसिं

उत्तरप्रकृतिउपशामनाकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— स्वामित्वकी प्ररूपणा पूर्वप्ररूपित उसी प्रकृत करणके अनुसार करना चाहिये। यथा— सब कर्मोंका उपशामक कौन होता है ? सब कर्मोंका उपशामक अन्यतर जीव होता है।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उपशामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। मनुष्यायु और तिर्यगायुका उक्त काल जघन्यसे साधिक क्षुद्रभवग्रहण मात्र है। उत्कर्षसे वह मनुष्यायुका पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम और तिर्यगायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। उक्त काल देवायु और नारकायुका जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है। नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, ये तीनों आनुपूर्वी प्रकृतियां, वैक्रियिक व आहारकशरीर, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग, उनके बन्धन व संघात, तीर्थंकर तथा उच्चगोत्र; इनके कालकी प्ररूपणा जैसे सत्कर्मिकके कालकी की गयी है वैसे करना चाहिये। शेष सब कर्मोंका उपशामककाल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है। जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— जिन कर्मोंका उपशान्तकाल अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित है उन कर्मोंके उपशामकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'जहाकमेण' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'वा। उवसंतकालो तेसिं कम्माणं जो' इति पाठः।

कम्माणं सादियसंतकम्मिओ जीवो तेसिं कम्माणमुवसामयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० जं जिस्से पयडीए संतकम्मस्स अंतरं उक्कस्सेण परूविदं तं परूवेयव्वं । णवरि देवाउअवज्जाणमाउआणं जह० अंतोमुहुत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ— मदिआवरणस्स सिया सव्वे जीवा उवसामया, सिया उवसामया च अणुवसामओ च, सिया उवसामया च अणुवसामया च । जहा मदिआवरणस्स तिण्णि भंगा परूविदा तहा सव्वपयडीणं पि तिण्णि तिण्णि भंगा परूवेयव्वा । णवरि जासिं पयडिसंतं सजोगिम्मि अत्थि तासिमुवसामया अणुवसामया च णियमा अत्थि ।

कालो—णाणाजीवे[1] पडुच्च सव्वद्धा । अंतरं—णाणाजीवे पडुच्च णत्थि अंतरं । अप्पाबहुअं । तं जहा— सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए उवसामया । सम्मत्तस्स उवसामया असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स उव० विसेसाहिया । मणुसाउअस्स असंखेज्जगुणा । णिरयाउअस्स असंखे० गुणा । देवाउअस्स असंखे० गुणा । देवगइणामाए संखे० गुणा । णिरयगइणामाए विसेसा० । वेउव्वियसरीरणामाए विसेसा० वेउव्वियछक्कमुव्वेल्लिऊण पुव्वं देवदुगबंधगे पडुच्च । उच्चागोदस्स अणंतगुणा । मणुसगइणामाए

अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । जिन कर्मोका उपशामक सादिसत्कर्मिक जीव है उन कर्मोके उपशामकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे जिस प्रकृतिके सत्कर्मका जो अन्तर उत्कर्षसे बतलाया गया है उसको कहना चाहिये । विशेष इतना है कि देवायुको छोड़कर शेष आयु कर्मोके उपशामकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— मतिज्ञानावरणके कदाचित् सब जीव उपशामक होते हैं, कदाचित् बहुत उपशामक व एक अनुपशामक, तथा कदाचित् बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक होते हैं । जिस प्रकार ये मतिज्ञानावरणके तीन भंग कहे गये हैं उसी प्रकार सब ही प्रकृतियोंके तीन भंग कहना चाहिये । विशेष इतना है कि जिनका प्रकृतिसत्त्व सयोगकेवलीमें है उनके बहुत उपशामक व बहुत अनुपशामक नियमसे होते हैं ।

काल— नाना जीवोंकी अपेक्षा उपशामकोंका काल सर्वकाल है । अन्तर— नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर सम्भव नहीं है । अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— आहारशरीर नामकर्मके उपशामक सबमें स्तोक हैं । सम्यक्त्वके उपशामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके उपशात्मक विशेष अधिक हैं । मनुष्यायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं । नारकायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके उपशामक असंख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके उपशामक संख्यातगुणे हैं । नरकगति नामकर्मके उपशात्मक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीर नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं । इसका कारण यह है कि वैक्रियिकषट्ककी उद्वेलना करके पहिले देवद्विकके बन्धकोंकी अपेक्षा यह अल्पबहुत्व कहा है । उच्चगोत्रके उपशामक अनन्तगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके उपशामक विशेष अधिक हैं । तिर्यगायुके

[1] प्रतिषु 'णाणाजीवेण' इति पाठः ।

विसेसा० । तिरिक्खाउअस्स विसेसा० । अणंताणुबंधीणं विसेसा० । मिच्छत्तस्स विसेसा० । सेसाणं कम्माणमुवसामया तुल्ला विसेसाहिया । एत्थ भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च णत्थि ।

पयडिट्ठाणुवसामणा— णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणमेक्कं चेव ट्ठाणं । गोदाउआणं दोण्णि ट्ठाणाणि । मोहणीयस्स अत्थि अट्ठावीस-सत्तावीस-छव्वीस-पणुवीस-चउवीस-एक्कवीसपयडिउवसामणट्ठाणाणि । एदेसिं ट्ठाणाणं एयजीवेण सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुअं भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढिउवसामणाओ कायव्वाओ । णामस्स तिउत्तरसदं विउत्तरसदं छण्णउदि-पंचाणउदि-तिणउदि-चउरासीदि-बासीदि त्ति सत्तण्णं ट्ठाणाणमुवसामणा अत्थि, सेसाणं णत्थि । एवं पयडिउवसामणा समत्ता ।

ठिदिउवसामणा दुविहा मूलपयडिट्ठिदिउवसामणा उत्तरपयडिट्ठिदिउवसामणा चेदि । तत्थ मूलपयडिट्ठिदिउवसामणाए ताव अद्धाच्छेदो वुच्चदे । तं जहा— णाणावरणस्स उक्कस्सट्ठिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ । जट्ठिदिउवसामणा तीससागरोवमकोडाकोडीओ आवलियाए ऊणाओ । एवं दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं । मोहणीयस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि

उपशामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धी कषायोंके उपशामक विशेष अधिक हैं । मिथ्यात्वके उपशामक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मोंके उपशामक तुल्य व विशेष अधिक हैं । यहां भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी सम्भावना नहीं है ।

प्रकृतिस्थानउपशामना— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायका एक ही उपशामनास्थान है । गोत्र व आयुके दो उपशामनास्थान हैं । मोहनीयके अट्ठाईस, सत्ताईस, छब्बीस, पच्चीस, चौबीस और इक्कीस प्रकृतियोंके उपशामनास्थान हैं । एक जीवकी अपेक्षा इन स्थानोंके स्वामित्व, काल व अन्तर एवं नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल व अन्तर तथा अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप व वृद्धि उपशामनाको करना चाहिये । नामकर्म सम्बन्धी एक सौ तीन, एक सौ दो, छ्यानवै, पंचानबै, तेरानबै, चौरासी और ब्यासी प्रकृतियों रूप इन सात स्थानोंकी उपशामना है । शेष स्थानोंकी उपशामना नहीं है । इस प्रकार प्रकृतिउपशामना समाप्त हुई ।

स्थितिउपशामना दो प्रकार है— मूलप्रकृतिस्थितिउपशामना और उत्तरप्रकृतिस्थितिउपशामना । उनमें पहिले मूलप्रकृतिस्थितिउपशामनाके अद्धाछेदकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र काल तक होती है । उसकी जस्थितिउपशामना एक आवलीसे कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र काल तक होती है । इसी प्रकार दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना तथा जस्थितिउपशामनाका कथन करना चाहिये । मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र

आवलियाहि ऊणाओ । आउअस्स पुव्वकोडितिभागेण सादिरेयतेत्तीसंसागरोवमाणि दोआवलिऊणाणि[1] । जट्ठिदि आवलिऊणा । णामा-गोदाणं वीससागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि ऊणाओ ।

जहण्णअद्धाच्छेदो— णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदि-उवसामणा सागरोवमस्स तिण्णि-सत्तभागा पलिदो० असंखे० भागेण ऊणया । मोहणीयस्स सागरोवमं पलिदो० असंखे० भागेण ऊणयं । णामा-गोदाणं सागरोवमस्स बे-सत्तभागा पलिदो० असंखे० भागेण ऊणया । आउअस्स खुद्दाभवग्गहणसंखेज्जदि-भागो । एवमद्धाछेदो समत्तो ।

सामित्तं । तं जहा— सव्वकम्माणं जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए सामित्तं कदं तहा एत्थ वि कायव्वं । जहा अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णट्ठिदिउदीरणासामित्तं कदं तहा उवसामणाट्ठिदिसामित्तं ओघजहण्णम्मि कायव्वं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं चेदि एदाणि अणियोगद्दाराणि जहा अभवसिद्धियपाओग्गट्ठिदिउदीरणाए कदाणि तहा एत्थ कायव्वाणि । भुजगारो[2] पदणिक्खेवो वड्ढी च जहा ट्ठिदिउदीरणाए कदा तहा ट्ठिदिउवसामणाए वि कायव्वा । उत्तरपयडि-

काल तक होती है । आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आवलियोंसे कम और पूर्व-कोटित्रिभागसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र काल तक होती है । उसकी जस्थिति उपशामना एक आवलीसे कम उतनी मात्र होती है । नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिउपशामना दो आव-लियोंसे कम बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र होती है ।

जघन्य अद्धाच्छेद— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायकी जघन्य स्थितिउप-शामना एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तीन भाग प्रमाण होती है । वह मोहनीयकी पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम मात्र काल तक होती है । नाम व गोत्र कर्मकी एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग-से हीन दो भाग मात्र होती है । आयुकी जघन्य स्थितिउपशामना क्षुद्रभवग्रहणके संख्यातवें भाग मात्र होती है । इस प्रकार अद्धाछेद समाप्त हुआ ।

स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें सब कर्मोंका स्वामित्व किया गया है वैसे ही उसे यहां भी करना चाहिये । जिस प्रकारसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य स्थितिउदीरणाका स्वामित्व किया गया है उसी प्रकारसे ओघ जघन्यमें उपशामना-स्थितिस्वामित्वको करना चाहिये । एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंको जैसे अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य स्थितिउदीरणामें किया गया है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा जैसे स्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे स्थितिउपशामनामें भी करना

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'आवलिऊणाणि' इति पाठः । २ अप्रतौ 'तहा कायव्वाणि एत्थ भुजगारो' इति पाठः ।

ट्ठिदिउवसामणाए जहा उत्तरपयडिट्ठिदिउदीरणाए परूवणा कदा तहा कायव्वा। एवं ट्ठिदिउवसामणा समत्ता।

अणुभागउवसामणा दुविहा मूलपयडिअणुभागुवसामणा उत्तरपयडिअणुभागुवसामणा चेदि। मूलपयडिअणुभागुवसामणा सुगमा। उत्तरपयडिअणुभागुवसामणाए पयदं— तत्थ उक्कस्सेण जहा उक्कस्सओ अणुभागसंतकम्मस्स पमाणाणुगमो कदो तहा उक्कस्सओ अणुभागुवसामणापमाणाणुगमो कायव्वो। जहा अक्खवय-अणुवसामय-पाओग्गो जहण्णओ अणुभागसंतकम्मपमाणाणुगमो कदो तहा जहण्णगो अणुभागुवसामणापमाणाणुगमो कायव्वो। सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो च जहा अणुभागसंतकम्मस्स परूविदो तहा अणुभागुवसामणाए वि परूवेयव्वो। एत्तो अणुभागुवसामणाए तिव्व-मंदप्पाबहुअं। तं जहा— उक्कस्सेण छावट्ठिपदेहि जहा उक्कस्सए अणुभागबंधे अप्पाबहुअं कदं तहा एत्थ वि कायव्वं। एवं जहण्णं पि कायव्वं। एवमणुभागउवसामणा समत्ता। पदेसउवसामणा जाणिदूण परूवेयव्वा।

विपरिणामउवक्कमो चउव्विहो पयडिविपरिणामणा ट्ठिदिविपरिणामणा अणुभागविपरिणामणा पदेसविपरिणामणा चेदि। पयडिविपरिणामाणा दुविहा मूलपयडिविपरिणामणा

चाहिये। उत्तरप्रकृतिस्थितिउपशामनाकी प्ररूपणा जैसे उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। इस प्रकार स्थितिउपशामना समाप्त हुई।

अनुभागउपशामना दो प्रकारकी है— मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना और उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना। इनमें मूलप्रकृतिअनुभागउपशामना सुगम है। उत्तरप्रकृतिअनुभागउपशामना प्रकृत है— उसमें उत्कर्षसे जैसे उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये। जिस प्रकार अक्षपक और अनुपशामक प्रायोग्य जघन्य अनुभागसत्कर्मका प्रमाणानुगम किया गया है उसी प्रकारसे जघन्य अनुभागउपशामनाके प्रमाणानुगमको करना चाहिये। स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल व अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्षकी प्ररूपणा जैसे अनुभागसत्कर्ममें की गयी है वैसे ही उसे अनुभागउपशामनामें भी करना चाहिये। यहां अनुभागउपशामनामें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— उत्कर्षसे छ्यासठ पदोंके द्वारा जिस प्रकार उत्कृष्ट अनुभागबन्धमें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही यहां भी उसे करना चाहिये। इसी प्रकारसे उसके जघन्य अल्पबहुत्वको भी करना चाहिये। इस प्रकार अनुभागउपशामना समाप्त हुई। प्रदेशउपशामनाकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये।

विपरिणामउपक्रम चार प्रकारका है— प्रकृतिविपरिणामना, स्थितिविपरिणामना, अनुभागविपरिणामना और प्रदेशविपरिणामना। इनमें प्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है— मूलप्रकृति-

---

१ अ-का-ताप्रतिषु त्रुटितोऽयं अग्रिम 'दुविहा' पदपर्यन्तः पाठो मप्रतितोऽत्र योजितः।

उत्तरपयडिविपरिणामणा त्ति । तत्थ मूलपयडिविपरिणामणा दुविहा देसविपरिणामणा सव्वविपरिणामणा चेदि । एत्थ अट्ठपदं — जामिं पयडीणं देसो णिज्जरिज्जदि अधट्ठिदि-गलणाए सा देसपयडिविपरिणामणा णाम । जा पयडी सव्वणिज्जराए णिज्जरिज्जदि सा सव्वविपरिणामणा णाम । एदेण अट्ठपदेण मूलपयडिविपरिणामणाए सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं च णेयव्वं । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च एत्थ णत्थि ।

उत्तरपयडिविपरिणामणाए अट्ठपदं । तं जहा— णिज्जिण्णा पयडी देसेण सव्व-णिज्जराए वा, अण्णपयडीए देससंकमणेण वा सव्वसंकमणेण वा जा संकामिज्जदि एसा उत्तरपयडिविपरिणामणा णाम । एदेण अट्ठपदेण सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो विपरिणामयाणमप्पाबहुअं च कायव्वं । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च णत्थि । पुणो पयडिट्ठाणविपरिणामणा परूवेयव्वा । एवं पयडि-विपरिणामणा समत्ता ।

ट्ठिदिविपरिणामणाए अट्ठपदं— ट्ठिदी ओवट्टिज्जमाणा वा उव्वट्टिज्जमाणा[1] वा अण्णं पयडिं संकामिज्जमाणा वा विपरिणामिदा[2] होदि । एदेण अट्ठपदेण जहा ठिदिसंकमो तहा अविसेसेण ट्ठिदिविपरिणामणा कायव्वा ।

विपरिणामना और उत्तरप्रकृतिविपरिणामना । उनमें मूलप्रकृतिविपरिणामना दो प्रकार है— देश-विपरिणामना और सर्वविपरिणामना । यहां अर्थपद— जिन प्रकृतियोंका अधःस्थितिगलनके द्वारा एक देश निर्जराको प्राप्त होता है वह देशप्रकृतिविपरिणामना कही जाती है । जो प्रकृति सर्वनिर्जरा-के द्वारा निर्जराको प्राप्त होती है वह सर्वविपरिणामना कही जाती है । इस अर्थपदके अनुसार मूल-प्रकृतिविपरिणामनाके स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्पबहुत्वको भी ले जाना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहां नहीं हैं ।

उत्तरप्रकृतिविपरिणामनामें अर्थपद । यथा— देशनिर्जरा अथवा सर्वनिर्जराके द्वारा निर्जीर्ण प्रकृति अथवा जो प्रकृति देशसंक्रमण या सर्वसंक्रमणके द्वारा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त करायी जाती है वह उत्तरप्रकृतिविपरिणामना कहलाती है । इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्व,काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और विपरिणामकोंके अल्प-बहुत्वको भी करना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहां नहीं हैं । तत्पश्चात् प्रकृति-स्थानविपरिणामनाकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार प्रकृतिविपरिणामना समाप्त हुई ।

स्थितिविपरिणामनामें अर्थपद— अपवर्तमान, उद्वर्तमान अथवा अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण करायी जानेवाली स्थिति विपरिणामिता (स्थितिविपरिणामना) कहलाती है । इस अर्थपदके अनुसार जैसे स्थितिसंक्रम किया गया है वैसे ही निर्विशेष स्वरूपसे स्थितिविपरि-णामनाको भी करना चाहिये ।

१ अ-काप्रत्योः 'उवट्टिज्जमाणा', ताप्रतौ '[उ] वट्टिज्जमाणा' इति पाठः । २ अप्रतौ 'विपरिणामदा' इति पाठः ।

अणुभागविपरिणामणाए अट्ठपदं— ओकड्डिदो वि उक्कड्डिदो वि अण्णपयडिं णीदो त्ति अणुभागो विपरिणामिदो होदि। एदेण अट्ठपदेण जहा अणुभागसंकमो तहा णिरवयवं अणुभागविपरिणामणा कायव्वा।

पदेसविपरिणामणाए अट्ठपदं— जं पदेसग्गं णिज्जिण्णं अण्णपयडिं वा संकामिदं सा पदेसविपरिणामणा णाम। एदेण अट्ठपदेण जारिसो पदेससंकमो तारिसी पदेसविपरिणामणा। णवरि जं णिज्जरिज्जमाणं उदएण तमदिरेगं पदेससंकमादो विपरिणामणाए। एवमुवक्कमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं।

अनुभागविपरिणामनामें अर्थपद— अपकर्षणप्राप्त, उत्कर्षणप्राप्त अथवा अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया भी अनुभाग विपरिणामित होता है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे अनुभाग-संक्रम किया गया है वैसे ही पूर्णतया अनुभागविपरिणामनाको करना चाहिये।

प्रदेशविपरिणामनामें अर्थपद— जो प्रदेशाग्र निर्जराको प्राप्त हुआ है अथवा अन्य प्रकृतिमें संक्रमणको प्राप्त हुआ है वह प्रदेशविपरिणामना कही जाती है। इस अर्थपदके अनुसार जैसे प्रदेशसंक्रम किया गया है वैसे ही प्रदेशविपरिणामनाको करना चाहिये। विशेष इतना है कि जो प्रदेशाग्र उदयके द्वारा निर्जीर्यमाण है वह प्रदेशसंक्रमसे विपरिणामनामें अधिक है। इस प्रकार उपक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

१०

उदयाणियोगद्दारं

पणमिय संतिजिणिंदं घाइयणिस्सेसदोससंघायं ।
उदयाणियोगदारं किंचि समासेण वण्णेहं ॥ १ ॥

एत्तो उदओ कायव्वो— णामादिउदएसु एत्थ केण उदएण पयदं ? णोआगमदो कम्मदव्वउदएण पयदं । सो कम्मदव्वुदओ चउव्विहो । तं जहा— पयडिउदओ ट्ठिदि-उदओ अणुभागउदओ पदेसउदओ चेदि । तत्थ पयडिउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि । मूलपयडिउदओ चिंतिय वत्तव्वो । उत्तरपयडिउदए पयदं । तत्थ सामित्तं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं को वेदओ ? सव्वो छदुमत्थो । पंचण्णं दंसणावरणीयाणं को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तमादिं कादूण उवरिमो अण्णदरो तप्पाओग्गो वेदओ । णवरि थीणगिद्धि-तियस्स देव-णेरइय-अप्पमत्तसंजदा आहारसरीरमुट्ठाविय पमत्तसंजदा च अवेदया । अण्णेसिमुवदेसेण एदे पुव्वुत्ता अवेदया होदूण असंखेज्जवस्साउआ च उत्तरविउव्विद-तिरिक्ख-मणुस्सा च अवेदया । सादासादाणमण्णदरो संसारत्थो तप्पाओग्गो वेदओ ।

मिच्छत्तं सव्वो मिच्छाइट्ठी वेदयदि, सम्मामिच्छत्तं सव्वसम्मामिच्छाइट्ठी, सम्मत्तं

समस्त दोषसंघातको नष्ट कर देनेवाले शांति जिनेन्द्रको नमस्कार करके मैं कुछ संक्षेपसे उदयानुयोगद्वारका वर्णन करता हूं ॥ १ ॥

यहां उदयकी प्ररूपणा की जाती है— नामउदयादिकोंमें यहां कौनसा उदय प्रकृत है ? यहां नोआगमकर्मद्रव्यउदय प्रकृत है । वह कर्मद्रव्यउदय चार प्रकारका है । यथा— प्रकृतिउदय, स्थितिउदय, अनुभागउदय और प्रदेशउदय । उनमें प्रकृतिउदय दो प्रकार है— मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय । मूलप्रकृतिउदयका कथन विचार कर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदय प्रकृत है । उसमें स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— पांच ज्ञानावरण, चक्षु आदि चार दर्शनावरण, और पांच अन्तरायका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी छद्मस्थ जीव होते हैं । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वेदक कौन होता है ? शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके द्वितीय समयवर्ती-को आदि करके आगेका कोई भी तत्प्रायोग्य जीव उनका वेदक होता है । विशेष इतना है कि देव, नारकी, अप्रमत्तसंयत तथा आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाले प्रमत्तसंयत भी स्त्यानगृद्धित्रिक-के अवेदक होते हैं । अन्य आचार्योंके उपदेशके अनुसार ये पूर्वोक्त जीव स्त्यानगृद्धित्रिकके अवेदक हैं, इनके अतिरिक्त असंख्यातवर्षायुष्क तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले तिर्यंच व मनुष्य भी उसके अवेदक होते हैं । साता व असाता वेदनीयका वेदक तत्प्रायोग्य अन्यतर संसारी जीव होता है ।

मिथ्यात्वका वेदन सब ही मिथ्यादृष्टि जीव करते हैं । सम्यग्मिथ्यात्वका वेदन सब

वेदयसम्माइट्ठी सव्वो । अणंताणुबंधीणं मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वा वेदओ । अपच्चक्खाणकसायाणं असंजदो वेदओ । पच्चक्खाणावरणीयस्स को वेदओ ? असंजदो संजदासंजदो वा वेदओ । तिण्णं संजलणाणं अप्पप्पणो बंधज्झवसाणेसु वट्टमाणओ । लोहसंजलणाए को वेदओ ? अण्णदरो सकसाओ । छण्णं णोकसायाणं को वेदओ ? अण्णदरो णियट्टिम्हि[1] वट्टमाणगो । णवरि पढमसमयदेवो णियमा साद-हस्स-रदीणं वेदगो । पढमसमयणेरइओ णियमा असाद-अरदि-सोगाणं वेदओ । पुरिसवेदं पुरिसो, इत्थिवेदमित्थी, णवुंसयवेदं णवुंसओ वेदेदि ।

मणुसाउअं सव्वो मणुस्सो, णिरयाउअं सव्वो णेरइओ, तिरिक्खाउअं सव्वो तिरिक्खो, देवाउअं सव्वो देवो वेदेदि ।

मणुसगइं मणुस्सो, णिरयगइं णेरइओ, तिरिक्खगइं तिरिक्खो, देवगइं देवो वेदेदि । जादिणामाणं गदिभंगो । ओरालियसरीरस्स को वेदगो ? ओरालियसरीरो सजोगो । ओरालियसरीरबंधण-संघादाणं ओरालियसरीरभंगो । ओरालियसरीरअंगोवंग-वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं को वेदगो ? सत्थाणे आहारओ ।

सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृति और सम्यक्त्वका वेदन सब वेदकसम्यग्दृष्टि करते हैं । अनन्तानुबन्धी कषायोंका वेदक मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि होता है । अप्रत्याख्यानावरण कषायोंका वेदक असंयत होता है । प्रत्याख्यानावरणका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक असंयत और संयतासंयत होता है । तीन संज्वलन कषायोंका वेदक अपने अपने बन्धाध्यवसानोंमें वर्तमान जीव होता है । संज्वलनलोभका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक अन्यतर सकषाय जीव होता है । छह नोकषायोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक निवृत्ति अवस्थामें वर्तमान (मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक) अन्यतर जीव होता है । विशेष इतना है कि प्रथम समयवर्ती देव नियमसे सातावेदनीय,हास्य और रतिका वेदक होता है । प्रथम समयवर्ती नारकी नियमसे असातावेदनीय, अरति और शोकका वेदक होता है । पुरुषवेदका वेदन पुरुष, स्त्रीवेदका वेदन स्त्री, और नपुंसकवेदका वेदन नपुंसक करता है ।

मनुष्यायुका वेदन सब मनुष्य, नारकायुका वेदन सब नारकी, तिर्यगायुका वेदन सब तिर्यंच और देवायुका वेदन सब देव करते हैं ।

मनुष्यगतिका वेदन मनुष्य, नरकगतिका वेदन नारकी, तिर्यग्गतिका वेदन तिर्यंच, और देवगतिका वेदन देव करता है । जाति नामकर्मोंके उदयकी प्ररूपणा गतिनामकर्मोंके समान है । औदारिकशरीरका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक औदारिकशरीरसे संयुक्त सयोग जीव होता है । औदारिकशरीरबन्धन और संघातके उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है । औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, इन दोनोंके आंगोपांग, बन्धन और संघातका वेदक कौन होता है ? इनका वेदक स्वस्थानमें वर्तमान आहारक जीव होता है । तैजस और

१ अ-ताप्रत्योः 'अणियट्टिम्हि' इति पाठः ।

तेजा-कम्मइय-तप्पाओग्गबंधण-संघादाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगी ।

छण्णं संठाणाणं को वेदओ ? आहारओ[1] सजोगी । छण्णं संघडणाणं को वेदओ ? जो जेण आहारओ सो णियमा वेदओ । वण्ण-गंध-रस-फासाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगी । तिण्णमाणुपुव्वीणं को वेदओ ? पढमसमयतब्भवत्थो [बिदियसमय-तब्भवत्थो] वा । तिरिक्खाणुपुव्वीए वेदओ को होदि ? पढमसमय-दुसमय-तिसमय-तब्भवत्थो वा । अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगी ।

उवघादस्स को वेदओ ? आहारओ । परघादस्स को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सजोगी । आदावुज्जोवाणं को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तप्पाओग्गो । उस्सासस्स आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो जाव चरिमसमयउस्सासणिरोहकारओ त्ति ताव वेदओ । पसत्थापसत्थविहायगईणं को वेदगो ? तसो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सजोगी । तस-बादर-पज्जत्तणामाणं को वेदओ ? सजोगी अजोगी वा । पत्तेयसरीरस्स को वेदओ ? आहारओ । थावर-सुहुम-अपज्जत्तणामाणं को वेदओ ? थावर-सुहुम-

कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य बन्धन व संघातका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी सयोग प्राणी होते हैं ।

छह संस्थानोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक योगसहित आहारक जीव होता है । छह संहननोंका वेदक कौन होता है ? जो जिस संहननसे आहारक है वह नियमसे उसका वेदक होता है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक योग सहित सब जीव होते हैं । तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा [द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ] जीव होता है । तिर्यगानुपूर्वीका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक प्रथम समयवर्ती, द्वितीय समयवर्ती अथवा तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ जीव होता है । अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सब योग सहित प्राणी होते हैं ।

उपघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । परघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ सयोग प्राणी होता है । आतप और उद्योतका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ तत्प्रायोग्य जीव होता है । उच्छ्वासका वेदक आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक चरम समयवर्ती उच्छ्वास-निरोधकारक है तब तक होता है । प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ योगसे संयुक्त त्रस जीव है । त्रस, बादर और पर्याप्त नाम-कर्मोंका वेदक कौन है ? उनका वेदक योगसे सहित और उससे रहित भी जीव होता है । प्रत्येक-शरीरका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक क्रमशः स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त

१ ताप्रतौ 'आहारो' इति पाठः ।

अपज्जत्तया। साहारणसरीरस्स को वेदओ? आहारओ। जसकित्ति-सुभग-आदेज्जाणं को वेदओ? सजोगो अजोगो वा। अजसकित्ति-दुभग-अणादेज्जाणं को वेदओ? अगुण-पडिवण्णो अण्णदरो तप्पाओग्गो। तित्थयरणामाए को वेदओ? सजोगो अजोगो वा। उच्चागोदस्स तित्थयरभंगो। णीचागोदस्स अणादेज्जभंगो। सुस्सर-दुस्सराणं को वेदओ? भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदो जाव भासाणिरोहस्स अकारओ त्ति। एवं सामित्तं समत्तं।

एगजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो त्ति एदाणि अणियोगद्दाराणि सामित्तादो साहेदूण वत्तव्वाणि। एत्तो अप्पाबहुअं पि जहा पयडिउदीरणाए कदं तहा कायव्वं। णवरि णाणत्तं— मणुसगइणामाए मणुस्साउअस्स च तुल्ला वेदया। एवं सेसाणं पि गदि-आउआणं च। पवाइज्जंतेण उवएसेण हस्स-रदिवेदएहिंतो सादवेदया जीवा विसेसा०। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जजीवमेत्तेण। अण्णेण उवएसेण सादवेदएहिंतो हस्स-रदिवेदया विसेसा० असंखे० भागमेत्तेण। जुत्तीए च विसेसाहियत्तं णव्वदे। तं जहा— सव्वो आउअघादओ णियमा जेण असादवेदओ हस्स-रदीसु भज्जो तेण सादवेदएहिंतो हस्स-रदिवेदया असंखेज्जा भागा

जीव होते हैं। साधारणशरीरका वेदक कौन होता है? उसका वेदक आहारक जीव होता है। यशकीर्ति, सुभग और आदेयका वेदक कौन होता है? इनका वेदक योग सहित और उससे रहित भी जीव होता है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयका वेदक कौन होता है? उनका वेदक गुणप्रतिपन्नसे भिन्न तत्प्रायोग्य अन्यतर जीव होता है। तीर्थंकर नामकर्मका वेदक कौन होता है? उसका वेदक सयोग व अयोग जीव भी होता है। उच्चगोत्रके उदयका कथन तीर्थंकर प्रकृतिके समान है। नीचगोत्रके उदयका कथन अनादेयके समान है। सुस्वर और दुस्वरका वेदक कौन होता है? उनका वेदक भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक भाषाके निरोधको नहीं करता तब तक होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये। अल्पबहुत्व भी जैसे प्रकृतिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे यहां भी करना चाहिये। परन्तु यहां इतनी विशेषता है— मनुष्यगति नामकर्म और मनुष्यायुके वेदकोंकी संख्या समान है। इसी प्रकार शेष भी गतिनामकर्मों और आयु कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। परस्पराप्राप्त उपदेशके अनुसार हास्य और रतिके वेदकोंसे सातावेदनीयके वेदक जीव विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं? संख्यात जीव मात्रसे विशेष अधिक हैं। अन्य उपदेशके अनुसार सातावेदनीयके वेदकोंकी अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक हैं। इनकी विशेषाधिकता युक्तिसे भी जानी जाती है। यथा— आयुके घातक सब जीव नियमसे असाताके वेदक होकर भी चूंकि हास्य व रतिके वेदनमें भजनीय हैं इसीलिए सातावेदकोंकी

१ प्रतिषु 'अजसकित्ति-' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'अणेण' इति पाठः। ३ काप्रतौ 'असंखेज'- इति पाठः।

विसेसा० । अरदि-सोगवेदया थोवा । असादवेदया विसे० । के० मेत्तेण ? पवाइज्जंतेण उवदेसेण संखेज्जजीवमेत्तेण विसे० । अण्णेण[1] उवदेसेण असंखे० भागमेत्तेण विसे० । एदाणि पयडिउदीरणअप्पाबहुआदो पयडिउदयअप्पाबहुअस्स णाणत्ताणि[2] । भुजगार-पदणिक्खेव[3]-वड्ढीओ णत्थि । जहा पयडिट्ठाणउदीरणा तहा पयडिट्ठाणउदओ वि कायव्वो । एवं पयडिउदओ समत्तो ।

एत्तो ट्ठिदिउदओ दुविहो मूलपयडिट्ठिदिउदओ उत्तरपयडिट्ठिदिउदओ चेदि । मूलपयडिट्ठिदिउदए अट्ठपदं— उदओ दुविहो पओअसा ट्ठिदिक्खएण चेदि । ट्ठिदिक्खओ उदओ[4] सुगमो । जो सो पओअसा उदओ सो दुविहो संपत्तीदो सेचीयादो च । संपत्तीदो[5] एगा ट्ठिदी उदिण्णा, संपहि उदिण्णपरमाणूणमेगसमयावट्ठाणं मोत्तूण दुसमयादिअवट्ठाणंतराणुवलंभादो । सेचीयादो अणेगाओ ट्ठिदीओ उदिण्णाओ, एण्हि जं पदेसग्गं उदिण्णं तस्स दव्वट्ठियणयं पडुच्च पुव्विल्लभावोवयारसंभवादो । एदेण अट्ठपदेण ट्ठिदिउदयपमाणाणुगमो चउव्विहो उक्कस्सो अणुक्कस्सो जहण्णो अजहण्णो चेदि । णाणावरणस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिउदओ तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ । दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं णाणा-

अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवें भागसे विशेष अधिक हैं । अरति व शोकके वेदक स्तोक हैं । उनसे असातावेदनीयके वेदक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे अधिक हैं ? पारम्परित उपदेशके अनुसार वे संख्यात जीव मात्रसे विशेष अधिक हैं । अन्य उपदेशके अनुसार वे असंख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक हैं । प्रकृतिउदीरणा सम्बन्धी अल्पबहुत्वसे प्रकृतिउदय सम्बन्धी अल्पबहुत्वमें ये ही कुछ विशेषतायें हैं । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहां नहीं हैं । जैसे प्रकृतिस्थानउदीरणा की गयी है वैसे ही प्रकृतिस्थानउदयको भी करना चाहिये । इस प्रकार प्रकृतिउदय समाप्त हुआ ।

यहां स्थितिउदय दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिस्थितिउदय और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदय । मूल-प्रकृतिस्थितिउदयके विषयमें अर्थपद— प्रयोगजनित और स्थितिक्षयजनितके भेदसे उदय दो प्रकारका है । उनमें स्थितिक्षयजनित उदय सुगम है । जो वह प्रयोगजनित उदय है वह दो प्रकार-का है— संप्राप्तिजनित और निषेकजनित । संप्राप्तिकी अपेक्षा एक स्थिति उदीर्ण होती है, क्योंकि, इस समय उदयप्राप्त परमाणुओंके एक समय रूप अवस्थानको छोड़कर दो समय आदि रूप अवस्था-नान्तर पाया नहीं जाता । निषेककी अपेक्षा अनेक स्थितियां उदीर्ण होती हैं, क्योंकि, इस समय जो प्रदेशाग्र उदीर्ण हुआ है उसके द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा पूर्वीयभावके उपचारकी सम्भावना है । इस अर्थपदके अनुसार स्थितिउदयप्रमाणानुगम चार प्रकार है— उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य । ज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायके स्थितिउदयका प्रमाण ज्ञानावरणके

१ अ-काप्रत्योः 'अणेण' इति पाठः । २ प्रतिषु 'णाणत्ताणं' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'णिक्खेवो' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'चे ट्ठिदिक्खओदओ' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'सपत्ती' इति पाठः ।

वरणीयभंगो। मोहणीयस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि सम- ऊणाहि ऊणाओ। आउअस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाए आवलियाए ऊणाणि। णामा-गोदाणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वेहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ।

जहण्णट्ठिदिउदयपमाणाणुगमो। तं जहा— अट्ठण्णं पि मूलपयडीणं जहण्णओ ट्ठिदिउदओ एगा ट्ठिदी। एत्तो सामित्तं। तं जहा— उक्कस्सट्ठिदिउदयसामित्तं जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए परूविदं तहा परूवेयव्वं। जहण्णट्ठिदिउद० सामी उच्चदे— णाणा- वरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? चरिम [समय] छदुमत्थ- मादिं कादूण जाव आवलियचरिमसमयछदुमत्थो त्ति। मोहणीयस्स जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? चरिमसमयसकसायस्स, तमादिं काऊण जाव आवलियचरिमसमयसकसाओ त्ति। णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? पढमसमयअजोगिस्स, तमादिं कादूण जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति। आउअ-वेदणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स? पढमसमयअप्पमत्तस्स, तमादिं कादूण जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति। आउअस्स अण्णो वि जहण्णट्ठिदिउदओ अत्थि जस्स आउअमुदयावलियं पविट्ठं।

समान है। मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोड़ा- कोड़ि सागरोपम प्रमाण है। आयुका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम एक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है। नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र है।

जघन्य स्थितिउदयके प्रमाणानुगमका कथन करते हैं। यथा— आठों ही मूल प्रकृतियोंके जघन्य स्थितिउदयका प्रमाण एक स्थिति है। अब यहां स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— उत्कृष्ट स्थितिउदयके स्वामित्वकी प्ररूपणा जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। जघन्य स्थितिउदयके स्वामित्वका कथन करते हैं— ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थको आदि लेकर जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें आवली मात्र काल तक शेष है उसके होता है। मोहनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह अन्तिम समयवर्ती सकषाय जीवके तथा उसको आदि लेकर जिसके चरम समयवर्ती सकषाय होनेमें आवली मात्र काल तक शेष है उसके होता है। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह प्रथम समयवर्ती अयोगीके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है। आयु और वेदनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है? वह प्रथम समय- वर्ती अप्रमत्तके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है। आयुका अन्य भी जघन्य स्थितिउदय उसके होता है जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है।

१ ताप्रतौ [सम] इति पाठः। २ 'एत्तो सामित्त' इत्यतः प्राक्तनोऽयं पाठस्ताप्रतौ नास्ति। ३ अप्रतौ 'अट्ठ पि' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः '-ट्ठिदिउदओ सामी०' इति पाठः। ५ ताप्रतौ '-ट्ठिदि [ओ] उदओ' इति पाठः।

एयजीवेण कालो। तं जहा— जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणकालो परूविदो तहा उक्कस्सट्ठिदिउदयकालो वि परूवेयव्वो। जहण्णट्ठिदिउदओ। तं जहा— णामा-गोद-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिउदिउदओ[1] केवचिरं० ? जहण्णुक०[2] अंतोमुहुत्तं। णवरि वेयणीय० जह० एयसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। आउअस्स जह० ट्ठिदिउदओ केव० ? जह० एगावलिया, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। चदुण्णं पि घाइकम्माणं जह० केवचिरं० ? जहण्णुक० आवलियं[3]। सत्तण्णं कम्माणमजहण्णट्ठिदिउदयकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो। मोहणीयं वेयणीयं च पडुच्च सादिओ सपज्जवसिदो। तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो[4] तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढ-पोग्गलपरियट्टं। आउअस्स अजहण्णट्ठिदिवेदयकालो जह० अंतोमुहुत्तमेगसमओ वा, उक्क० तेत्तीससागरोवमाणि आवलियूणाणि।

एयजीवेण अंतरं। तं जहा— जहा[5] उक्कस्सट्ठिदिउदीरयंतरं परूवियं तहा उक्कस्सट्ठिदिवेदयंतरं परूवेयव्वं। आउअस्स जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं जह० खुद्दाभवग्गहणं आवलियूणं एगसमओ वा, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि। पंचण्णं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं णत्थि। मोहणीय-वेदणीयाणं जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं जह०

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाके कालकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयके कालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। जघन्य स्थितिउदयकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— नाम, गोत्र और वेदनीयका जघन्य स्थिति-उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त रहता है। विशेष इतना है कि वेदनीयके जघन्य स्थितिउदयका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है। आयुकर्मका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र रहता है। चारों ही घातिया कर्मोंका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक आवली मात्र रहता है। सात कर्मोंके अजघन्य स्थितिउदयका काल अनादि-अपर्यवसित व अनादि-सपर्यवसित है। मोहनीय व वेदनीयकी अपेक्षा वह सादि-सपर्यवसित है। उसका जो सादि-सपर्यवसित काल है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है। आयुकी अजघन्य स्थितिका वेदककाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र है।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका कथन करते हैं। यथा— जिस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिउदीरकके अन्तरकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार उत्कृष्ट स्थितिवेदकके अन्तरकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। आयुकर्मके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र होता है। पांच कर्मोंके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर नहीं होता। मोहनीय और वेदनीयके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर जघन्य-

१ प्रतिषु '-ट्ठिदिउदीरओ' इति पाठः। २ प्रतिषु 'अणुक०' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'आवलियाए', काप्रतौ 'आवलिया०' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः 'तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो' इत्येतावान् पाठो नोपलभ्यते। ५ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम्।

अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो त्ति एदाणि अणियोगद्दाराणि जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए[1] कदाणि तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए कादव्वाणि । एदाणि चेव जहण्णट्ठिदिउदए वत्तइस्सामो । तं जहा— भंगविचए ताव अट्ठपदं । जो जहण्णट्ठिदीए वेदओ सो अजहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ, जो अजहण्णट्ठिदीए वेदगो सो जहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ । जाओ पयडीओ वेदयदि तासु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारो । एदेण अट्ठपदेण आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णियाए ट्ठिदीए णाणाजीवा वेदया णियमा अत्थि । सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदीए सिया सव्वे जीवा अवेदया, सिया अवेदया च वेदओ च, सिया अवेदया च वेदया च । एवं तिण्णिभंगा । अजहण्णियाएँ[2] ट्ठिदीए वेदयाणं तव्विवरीएण तिण्णिभंगा वत्तव्वा ।

[णाणाजीवेहि कालो–] आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं० ? सव्वद्धा । णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं० ? णाणाजीवे पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदया जह० आवलि० उवसामगं पडुच्च मोहणीयस्स एगसमओ वा, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अट्ठण्णं पि कम्माणं अजहण्णट्ठिदिवेदयाणं णाणा-

से अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्पसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्प; इन अनुयोगद्वारोंका कथन जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी करना चाहिये । इन्हींका कथन जघन्य स्थितिउदयमें किया जाता है । यथा—पहिले भंगविचयमें अर्थपद बतलाते हैं । जो जीव जघन्य स्थितिका वेदक होता है वह अजघन्य स्थितिका नियमसे अवेदक होता है, जो अजघन्य स्थितिका वेदक होता है वह जघन्य स्थितिका नियमसे अवेदक होता है । जिन प्रकृतियोंका वेदन करता है वे प्रकृत हैं, अवेदकोंमें व्यवहार नहीं है । इस अर्थपदके अनुसार आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक नाना जीव नियमसे हैं । शेप कर्मोंकी जघन्य स्थितिके कदाचित् सब जीव अवेदक, कदाचित् बहुत अवेदक व एक वेदक, तथा कदाचित् अवेदक भी बहुत और वेदक भी बहुत; इस प्रकार तीन भंग हैं । इनकी अजघन्य स्थितिके वेदकोंके तीन भंग पूर्वोक्त भंगोंकी अपेक्षा विपरीत (कदाचित् सब जीव वेदक, कदाचित् बहुत वेदक व एक अवेदक, तथा कदाचित् बहुत वेदक और बहुत अवेदक भी) क्रमसे कहने चाहिये ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल— आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं ? सर्वकाल रहते हैं । नाम व गोत्र कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं ? वे नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य व उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं । शेप कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक जघन्यसे आवली मात्र, अथवा उपशामककी अपेक्षा मोहनीयकी उक्त स्थितिके वेदक जघन्यसे एक समय तथा उत्कर्पसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहते हैं । आठों ही कर्मों सम्बन्धी

१ अ-काप्रत्योः 'उदीरणा' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'च तिण्णिभंगा एवं अजहण्णियाए' इति पाठः ।

जीवे पडुच्च सव्वद्धं ।

णाणाजीवेहि अंतरं— आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदयाणं[1] णत्थि अंतरं । सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदगंतरं[2] जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा ।

सण्णियासो । तं जहा— णाणावरणस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ मोहणीयस्स अवेदओ, णामा-गोदाणं णियमा अजहण्णट्ठिदिवेदओ, जहण्णादो अजहण्णा असंखेज्जगुणब्भहिया । सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदओ ।[3] दंसणावरणंतराइयाणं णाणावरणभंगो । वेदणीयस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ चदुण्णं घादिकम्माणं सिया वेदओ सिया णोवेदओ । जदि वेदओ सिया जहण्णं सिया अजहण्णं वेदेदि । जदि अजहण्णं दुगुणमादिं कादूण णिरंतरं जाव असंखे० गुणं वेदेदि । आउअस्स णियमा जहण्णं वेदेदि । णामा-गोदाणं जहण्णमजहण्णं वा वेदेदि । जदि अजहण्णं णियमा असंखे० गुणं वेदेदि । जहा वेयणीयं घाइकम्मेहि सण्णिकासिदं तहा आउअं पि घाइकम्मेहि सण्णिकासियव्वं ।

आउअस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ णामा-गोद[4]-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिमजहण्णट्ठिदिं वा वेदेदि । जदि अजहण्णं णियमा असंखे० गुणं । णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिवेदओ

अजघन्य स्थितिके वेदकोंका काल नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर— आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर नहीं होता । शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है ।

अब संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—ज्ञानावरणकी जघन्य स्थितिका वेदक मोहनीयका अवेदक तथा नाम व गोत्रकी नियमसे अजघन्य स्थितिका वेदक होता है । जघन्यकी अपेक्षा यह अजघन्य स्थिति असंख्यातगुणी अधिक है । वह शेष कर्मोंकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदक होता है । दर्शनावरण और अन्तरायके संनिकर्षकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । वेदनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक चार कर्मोंका कदाचित् वेदक और कदाचित् नोवेदक होता है । यदि वह वेदक होता है तो कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य स्थितिका वेदन करता है । यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो दुगुणी स्थितिको आदि करके निरन्तर असंख्यातगुणी तकका वेदन करता है । वह आयु कर्मकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदन करता है, नाम व गोत्रकी जघन्य अथवा अजघन्यका वेदन करता है । यदि वह अजघन्यका वेदन करता है तो नियमसे असंख्यातगुणीका वेदन करता है । जिस प्रकार घातिया कर्मोंके साथ वेदनीयका संनिकर्ष बतलाया गया है उसी प्रकारसे घातिया कर्मोंके साथ आयुका भी संनिकर्ष बतलाना चाहिये ।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव नाम, गोत्र और वेदनीयकी जघन्य स्थिति अथवा अजघन्य स्थितिका वेदन करता है । यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो नियमसे

१ प्रतिषु 'वेदणीयाणं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'वेदगंतं', काप्रतौ 'वेदगं', ताप्रतौ 'वेदगत्तं' इति पाठः । ३ अ-का-ताप्रतिषु 'जहण्णादो अजहण्णा असंखेज्जगुणब्भहिया । सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदओ' इत्ययं पाठो नास्ति, मप्रतितोऽत्र योजितः सः । ४ अप्रतौ 'गोदाणं' इति पाठः ।

आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णट्ठिदिं वेदेदि । सेसाणमवेदगो । मोहणिज्जस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदगो । सेसाणं कम्माणं णियमा अजहण्णं असंखेज्जगुणं वेदगो । एवं सण्णियासो समत्तो ।

एत्तो अप्पाबहुअं । तं जहा— जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए अप्पाबहुअं कदं तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए कायव्वं । जहण्णट्ठिदिउदए अप्पाबहुअं । तं जहा— अट्ठण्णं पि कम्माणं जहण्णट्ठिदिउदओ तत्तियो[1] चेव । एवं अप्पाबहुअं गदं । जहा ट्ठिदिउदीरणाए भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च कदा तहा एत्थ वि ट्ठिदिउदए कायव्वा । एवं मूलपयडिट्ठिदिउदओ समत्तो ।

एत्तो उत्तरपयडिट्ठिदिउदओ— तत्थ अट्ठपदं पुव्वं व कायव्वं । जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए वि पमाणाणुगमो कायव्वो । णवरि उदयट्ठिदीए अब्भहियं । जहण्णट्ठिदिउदयपमाणाणुगमं वत्तइस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-सादासादवेदणीय - लोभसंजलण - तिण्णिवेद -सम्मत्त-मिच्छत्त - आउचदुक-मणुसगइ - पंचिंदियजादि-तस - बादर-पज्जत्त- जसकित्ति-सुभगादेज्ज-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ एगा ट्ठिदी एगसमयकालो ।

असंख्यातगुणीका वेदन करता है। नाम व गोत्रकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदन करता है, शेष कर्मोंका वह अवेदक है। मोहनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदक तथा शेष कर्मोंकी नियमसे असंख्यातगुणी अजघन्य स्थितिका वेदक होता है। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा— जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी उसे करना चाहिये। जघन्य स्थितिउदयमें अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा— आठों ही कर्मोंकी जघन्य स्थितिका उदय उतना ही है अर्थात् समान है। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिका कथन जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही यहां स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदय समाप्त हुआ।

यहां उत्तरप्रकृतिस्थितिउदयकी प्ररूपणा की जाती है— उसमें अर्थपद पहिलेके ही समान करना चाहिये। जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थिति-उदयमें भी प्रमाणानुगम करना चाहिये। विशेष इतना है कि उदयस्थितिमें अधिक है। जघन्य स्थितिके उदयका प्रमाणनुगम कहते हैं। वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता-वेदनीय, असातावेदनीय, संज्वलनलोभ, तीन वेद, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार आयु कर्म, मनुष्य-गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिका उदय एक समय कालवाली एक स्थिति मात्र है। संज्वलनक्रोध,

१ अ-काप्रत्योः 'तत्तिया' इति पाठः ।

कोह-माण-मायासंजलणाणं जहण्णट्ठिदिउदओ दोण्णिट्ठिदीओ। जट्ठिदिउदओ आवलिया समयाहिया। सेसाणं कम्माणं जहा जहण्णट्ठिदिउदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा जहण्णट्ठिदिउदए वि कायव्वो। एवमद्धाछेदो। समत्तो।

एत्तो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं चेदि एदाणि अणिओगद्दाराणि जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए कदाणि तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए वि कायव्वाणि। जहण्णट्ठिदिउदीरणादो जं किंचि णाणत्तं पि सामित्तादो साधेदूण कायव्वं। भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढिउदओ च जहा ट्ठिदिउदीरणाए कदो तहा ट्ठिदिउदए वि कायव्वो। एवं ट्ठिदिउदओ समत्तो।

एत्तो अणुभागउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि। तत्थ मूलपयडिअणुभागउदए चउव्वीस अणियोगद्दाराणि परूविय पुणो भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढीसु परूविदासु मूलपयडिउदओ समत्तो भवदि। एत्तो उत्तरपयडिअणुभागुदए तत्थ पमाणाणुगमो जहा अणुभागुदीरणाए परूविदो तहा एत्थ वि परूवेयव्वो। पच्चय-परूवणा ठाणपरूवणा सुहासुहपरूवणा त्ति एदेहि अणिओगद्दारेहि अणुभागपरूवणं काऊण तदो सामित्तं जहा अणुभागउदीरणाए कदं तहा कायव्वं। णवरि जहण्णसामित्ते णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा— पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-सम्मत्त-

---

मान और मायाकी जघन्य स्थितिका उदय दो स्थिति मात्र होता है। जस्थितिउदय एक समय अधिक आवली मात्र होता है। शेष कर्मोंके प्रमाणानुगमका कथन जैसे जघन्य स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही जघन्य स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार अद्धाछेद समाप्त हुआ।

यहां स्वामित्व, काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंका कथन जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिदयमें भी करना चाहिये। यहां जघन्य स्थितिउदीरणाकी अपेक्षा जो कुछ विशेषता है उसे भी स्वामित्वसे सिद्ध करके कहना चाहिये। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदय जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार स्थिति-उदय समाप्त हुआ।

यहां अनुभाग उदय दो प्रकार है— मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय। उनमेंसे मूलप्रकृतिअनुभागउदयमें चौबीस अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर देनेपर मूलप्रकृतिअनुभागउदय समाप्त हो जाता है। यहां उत्तरप्रकृति-अनुभागउदयमें उनमेंसे प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा जैसे अनुभागउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। प्रत्ययप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा इन तीन अनुयोग-द्वारोंके द्वारा अनुभागकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् स्वामित्व जैसे अनुभागउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे यहां अनुभागउदयमें भी करना चाहिये। विशेष इतना है कि जघन्य स्वामित्वमें कुछ विशेषता है, उसे कहते हैं। यथा—पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, तीन वेद, संज्वलन-

तिण्णिवेद-लोहसंजलण-पंचअंतराइयाणं जहण्णओ अणुभागउदओ कस्स ? जो एदेसिं कम्माणं जहण्णअणुभागउदीरओ होदूण तदो आवलियाए अदिक्कंताए सो चेव जहण्णाणुभागवेदओ होदि । एवं जहण्णाणुभागुदीरणासामित्तादो जहण्णाणुभागउदयस्स सामित्तस्स णाणत्तं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढि त्ति एदेहि अणियोगद्दारेहि अणुभागउदीरणादो अणुभागउदयस्स णाणत्ताभावादो जहा एदेहि अणियोगद्दारेहि अणुभागउदीरणा परूविदा तहा अणुभागउदओ परूवेयव्वो । एवमणुभागउदओ समत्तो ।

एत्तो पदेसउदओ दुविहो मूलपयडिपदेसउदओ उत्तरपयडिपदेसउदओ चेदि । तत्थ मूलपयडिपदेसउदओ सव्वाणिओगद्दारेहि जाणिऊण परूवेयव्वो । उत्तरपयडिउदए पयदं । सामित्तं जाणावणट्ठं इमाओ एत्थ दस गुणसेडीओ परूवेदव्वाओ । तं जहा—

सम्मत्तुप्पत्तीए सावय विरदे अणंतकम्मंसे ।
दंसणमोहक्खवए कसायउवसामए य उवसंते ॥ ५ ॥
खवए य खीणमोहे जिणे य णियमा भवे असंखेज्जा ।
तव्विवरीओ कालो संखेज्जगुणाए सेडीए[1] ॥ ६ ॥

एदाहि दोहि गाहाहि दसण्णं गुणसेडीणं परूवणं णिक्खेवं च परूवेदूण तदो

लोभ और पांच अन्तराय, इनका जघन्य अनुभागउदय किसके होता है ? जो जीव इन कर्मोंका जघन्य अनुभागउदीरक होकर तत्पश्चात् एक आवलीको बिताता है वही उक्त आवलीके बीतनेपर उनके जघन्य अनुभागका वेदक होता है। इस प्रकार जघन्य अनुभागउदीरणाके स्वामीकी अपेक्षा जघन्य अनुभागउदयके स्वामीमें विशेषता है। एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष, अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि; इन अनुयोगद्वारोंमें अनुभागउदीरणाकी अपेक्षा चूंकि अनुभागउदयमें कोई भेद नहीं है अत एव इन अनुयोगद्वारोंके द्वारा जैसे अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही अनुभागउदयकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अनुभागउदय समाप्त हुआ।

यहां प्रदेशउदय दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिप्रदेशउदय और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदय। उनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदयकी प्ररूपणा सब अनुयोगद्वारोंके द्वारा जानकर करना चाहिये। उत्तरप्रकृति-उदय प्रकृत है। स्वामित्वके ज्ञापनार्थ यहां इन दस गुणश्रेणियोंकी प्ररूपणा की जाती है। यथा—

सम्यक्त्वोत्पत्ति, श्रावक, विरत (संयत), अनन्तकर्मांश (अन्तानुबन्धिविसंयोजक), दर्शनमोहक्षपक, कषायोपशामक, उपशान्तकषाय, क्षपक, क्षीणमोह और जिन; इनके क्रमशः उत्तरोत्तर असंख्यातगुणी निर्जरा होती है। किन्तु इस निर्जराका काल संख्यातगुणित श्रेणि रूपसे विपरीत है। जैसे— जिन भगवान्‌की गुणश्रेणिनिर्जराका जितना काल है उससे क्षीणकषायको गुणश्रेणि-निर्जराका काल संख्यातगुणा है, इत्यादि ॥ ५-६ ॥

इन दो गाथाओंके द्वारा दस गुणश्रेणियोंको प्ररूपणा और निक्षेपकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् जो

---

१ ष. खं. पु. १२ पृ. ७८.

जाओ गुणसेडीओ अण्णभवं संकामंति ताओ वत्तइस्सामो। तं जहा— उवसमसम्मत्तगुण-सेडी संजदासंजदगुणसेडी अधापमत्तगुणसेडी एदाओ तिण्णिगुणसेडीओ अप्पसत्थमरणेण वि मदस्स परभवे दिस्संति। सेसासु गुणसेडीसु झीणासु अप्पसत्थमरणं भवे[1]। एत्तो सामित्तं कायव्वं। तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सपदेसउदओ कस्स? जो गुणिदकम्मंसिओ मणुस्सो गब्भादिअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवण्णो, तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं चरित्तमोहक्खवणाए उवट्ठिदो तस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ। सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरणाणं चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। ओहिणाण-ओहिदंसणाणं पि मदिआवरणभंगो चेव। णवरि जस्स ओहिलंभो णत्थि तस्स उक्कस्सं सामित्तं दादव्वं। णिद्दा-पयलाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स उवसंतकसायस्स। थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? दोण्णिगुणसेडिसीसयगुणिदकम्मंसियस्स।

सादासादाणं उक्कस्सपदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स। मिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स दोगुण-

गुणश्रेणियां अन्य भवमें संक्रमणको प्राप्त होती हैं उनको बतलाते हैं। यथा— उपशमसम्यक्त्व गुणश्रेणि, संयतासंयत गुणश्रेणि और अधःप्रमत्त गुणश्रेणि; ये तीन गुणश्रेणियां अप्रशस्त मरणसे भी मृत्युको प्राप्त हुए जीवके परभवमें दिखती हैं। शेष गुणश्रेणियोंके क्षीण होनेपर अप्रशस्त मरण होता है।

यहां स्वामित्वका कथन करते हैं। यथा— आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका उदय किसके है? जो गुणितकर्मांशिक मनुष्य गर्भसे लेकर आठ वर्षोंमें संयमको प्राप्त हुआ है तथा उस अवस्थामें अन्तर्मुहूर्त रहकर सर्वलघु कालमें चरित्रमोहनीयके क्षपणमें उद्यत हुआ है उस अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका उदय होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण तथा चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणके भी उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके ही समान है। विशेष इतना है कि जिसके अवधिलब्धि नहीं है उसके उनका उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिये। निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह गुणितकर्मांशिक उपशान्तकषायके होता है। स्त्यानगृद्धि आदि तीनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह दो गुणश्रेणिशीर्षक गुणितकर्मांशिकके होता है।

साता और असाता वेदनीयका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक जीव अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक है उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह दो गुणश्रेणिशीर्षवाले गुणितकर्मांशिकके होता है।

१ क. प्र. ५, १०. २मप्रतिपाठोऽयम्। अप्रतौ 'सीसगुणिद', काप्रतौ 'सीसयस्स गुणिद', ताप्रतौ 'सीस [यस्स-] गुणिद' इति पाठः।

सेडिसीसयस्स । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स उदिण्णसंजमासंजम-संजमगुणसेडिसीसयस्स । सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स ।

अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो । अट्ठण्णं पि कसायाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसायउवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स अंतोमुहुत्तमुववण्णस्स जाधे गुणसेडिसीसयमुदिण्णं ताधे उक्कस्सओ उदओ[2] । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसायउवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स जाधे अपच्छिमं गुणसेडिसीसयमुदयमागदं ताधे उक्कस्सओ उदओ । अपज्जत्तपाओग्गजहण्णिया हस्स-रदिवेदगद्धा थोवा । जेण कालेण गुणसेडिसीसयमुदयमेदि सो कालो संखेज्जगुणो[3] । उक्कस्सिया हस्स-रदिवेदगद्धा संखेज्जगुणा । एदेण कारणेण जस्स हस्स-रदीणमुक्कस्सओ उदओ तस्स चेव अरदि-सोगाणं पि उक्कस्सओ उदओ कायव्वो । अधवा छण्णमेदासिं हस्सादियाणं उक्कस्सओ पदेसुदओ चरिमसमयअपुव्वकरणखवयस्स । तिण्णं वेदाणं उक्कस्सओ उदओ कस्स ? चरिमसमयउदए वट्टमाणस्स खवयस्स गुणिदकम्मंसियस्स । तिण्णं संजलणाण-

---

सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह संयमासंयम और संयम गुणश्रेणिशीर्षके उदय युक्त गुणितकर्मांशिकके होता है । सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो अन्तिम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह है ऐसे गुणितकर्मांशिक जीवके सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । आठों ही कषायोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें वर्तमान रहकर मरणको प्राप्त होता हुआ देव उत्पन्न हुआ है उसके उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्तमें जब गुणश्रेणिशीर्षक उदीर्ण होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें मरणको प्राप्त होकर देव उत्पन्न हुआ है उसके जब अन्तिम गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य और रतिका अपर्याप्त योग्य जघन्य वेदककाल स्तोक है । जिस कालमें गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होता है वह संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट हास्य-रतिवेदककाल संख्यातगुणा है । इस कारण जिसके हास्य व रतिका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है उसके ही अरति और शोकका भी उत्कृष्ट उदय करना चाहिये । अथवा इन हास्यादि छह प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होता है । तीन वेदोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

---

१ अप्रतौ 'गुणसेडीए सीसय-', का-ताप्रत्योः 'गुणसेडीसीसय-' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्स-ओदइओ' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'असंखेज्जगुणो' इति पाठः ।

मुक्कस्सओ उदओ कस्स ? सग-सगउदएण खवगसेडिं चडिय सगचरिमोदए वट्टमाणस्स । लोभसंजलणस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? खवगस्स गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमय-सरागस्स ।

णिरयाउअस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? सण्णिणा उक्कस्सजोगेण उक्कस्सियाए बंधगद्धाए उक्कस्सआबाधाए दससहस्साणि जेण आउअं णिबद्धं जहण्णियाए ट्ठिदीए कदणिसेगुक्कस्सपदं तस्स पढमसमयणेरइयस्स उक्कस्सओ उदओ । देवाउअस्स णिरयाउ-भंगो । मणुस्स-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? उक्कस्सियाए बंधगद्धाए तप्पाओग्गेण उक्कस्सजोगेण च आउअं बंधिदूण कमेण कालं करिय तिपलिदोवमिएसु उववण्णो सव्वलहुं आउअं पभिण्णो सव्वजहण्णगं जीविदव्वं मोत्तूण सेसं ओवट्टिदं, जम्हि समए ओवट्टिज्जमाणमोवट्टिदं तत्थ उक्कस्सओ पदेसउदओ तिरिक्ख मणुस्साउआणं ।

णिरयगइणामाए उक्कस्सपदेसउदओ कस्स ? जो संजदासंजदो सव्वुक्कस्सविसोहीए गुणसेडिणिज्जरं कुणमाणो संजमं पडिवज्जिय संजमगुणसेडिणिज्जरं कादुं पयट्टो[3] तत्थ

तीन संज्वलन कषायोंका उत्कृष्ट उदय किसके होता है ? अपने अपने उदयके साथ क्षपकश्रेणि चढ़कर अपने उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। संज्वलनलोभका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती सरागी क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

नारकायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? उत्कृष्ट योग युक्त जिस संज्ञी जीवने उत्कृष्ट बन्धककालमें उत्कृष्ट आबाधाके साथ दस हजार वर्ष मात्र आयुको बांधकर जघन्य स्थितिके निषेका उत्कृष्ट पद किया है ऐसे उस प्रथम समयवर्ती नारकीके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है । मनुष्य व तिर्यंच आयुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उत्कृष्ट बन्धककालमें तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगके द्वारा आयुको बांधकर क्रमसे मृत्युको प्राप्त हो तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले जीवोंमें उत्पन्न हुआ है तथा जिसने सर्व-लघु कालमें आयुको प्रभेद कर सर्वजघन्य जीवितव्य (अन्तर्मुहूर्त मात्र) को छोड़कर शेषका अप-वर्तन किया है उसके जिस समयमें अपवर्त्यमान आयु अपवर्तित हो चुकती है उस समयमें तिर्यंच आयु और मनुष्यायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

नरकगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिके द्वारा गुणश्रेणिनिर्जराको करनेवाला जो संयतासंयत जीव संयमको प्राप्त होकर संयमगुणश्रेणिनिर्जराको

---

१ अ-काप्रत्योः 'सण्णियासउक्कस्स-' इति पाठः । २ अद्धा-जोगुक्कोसो बंधित्ता भोगभूमिगेसु लहुं । सव्वप्प-जीवियं वज्जइत्तु ओवट्टिया दोण्हं ॥ क. प्र. ५, १६. अद्ध त्ति– उत्कृष्टे बन्धकाले उत्कृष्टे च योगे वर्तमानो भोगभूमिगेसु तिर्यक्षु मनुष्येषु वा विषये कश्चित्तिर्यगायुः कश्चिन्मनुष्यायुः उत्कृष्टं त्रिपल्योपमस्थितकं बध्वा लघु शीघ्रं च मृत्वा त्रिपल्योपमायुष्केष्वेकस्तिर्यक्ष्वपरो मनुष्येषु मध्ये समुत्पन्नः तत्र च सर्वाल्पजीवितमन्तर्मुहूर्तप्रमाणं वर्जयित्वाऽन्तर्मुहूर्तमेकं धृत्वेत्यर्थः, शेषमशेषमपि (तौ द्वावपि) स्व-स्वायुरपवर्तनाकरणेनापवर्तयतः । ततोऽपवर्तनानन्तरं प्रथमसमये तयोस्तिर्यङ्-मनुष्ययोर्यथासंख्यं तिर्यङ्-मनुष्यायुषोरुत्कृष्टः प्रदेशोदयः । मलय. ३ ताप्रतौ 'पविट्ठो' इति पाठः ।

अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गंतूण णिरयाउअं बंधिय सम्मत्तं घेत्तूण पुणो दंसणमोहणीयं खइय अंतोमुहुत्तस्सुवरि संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीसु उदयमागच्छमाणासु णेरइएसु उववण्णो, तस्स णिरयगइणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ। तिरिक्खगदिणामाए णिरयगदिभंगो। मणुसगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयभवसिद्धियस्स। देवगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? उवसंतकसायस्स पढमगुणसेडिसीसयस्स से काले उदओ होहिदि त्ति मदस्स देवेसुप्पज्जिय पढमसमयदेवस्स उक्कस्सओ पदेसुदओ।

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो[1]। आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? पमत्तसंजदस्स उट्ठाविदआहारसरीरस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स जाधे गुणसेडिसीसयं उदयं अपत्तं ताधे तेसिं उक्कस्सओ पदेसउदओ,[2] णत्थि अण्णा गुणसेडी।

ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-

करनेके लिये प्रवृत्त हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो नारकायुको बांधकर व सम्यक्त्वको ग्रहण कर पुनः दर्शनमोहका क्षय करके अन्तर्मुहूर्तके ऊपर संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहक्षपक गुणश्रेणियोंके उदयमें आनेपर नारकियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके नरकगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। तिर्यग्गति नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा नरकगति नामकर्मके समान है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है। देवगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? अनन्तर कालमें जिसके प्रथम गुणश्रेणिशीर्षकका उदय होगा, इस स्थितिमें वर्तमान जो उपशान्तकषाय मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके देवगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है।

वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन और संघातकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन व संघातका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है? जिसने आहारकशरीरको उत्पादित किया है तथा जो तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे संयुक्त है ऐसे प्रमत्तसंयत जीवके जब गुणिश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त नहीं होता तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है, अन्य गुणश्रेणि नहीं होती।

औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीरबन्धन एवं संघात, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,

१ उवसंतपढमगुणसेढीए निद्दादुगस्स तस्सेव। पावइ सीसगमुदयं ति जाय देवस्स सुरनवगे॥ क. प्र. ५, १२. ××× तथा तस्यैवोपशान्तकषायस्यात्मीयप्रथमगुणश्रेणीशीर्षकोदयमनन्तरसमये प्राप्स्यतीति तस्मिन् पाश्चात्ये समये जाते देवस्य, ततः प्रथमगुणश्रेणीशिरसि वर्तमानस्य सुरनवकस्य वैक्रियिकसप्तक-देवद्विकरूपस्योत्कृष्टः प्रदेशोदयः। मलय. २ आहारग-उज्जोयाणुत्तरतणु अप्पमत्तस्स॥ क. प्र. ५, १८.

पसत्थापसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणमुक्कस्सओ पदेस-उदओ कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स । पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ट्ठिय-संजदस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि तिण्णि वि उदयमागदाणि ताधे पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ । णिरयाणुपुव्वीए णिरयगइभंगो । तिरिक्खाणुपुव्वीए तिरिक्खगइभंगो । देवाणुपुव्वीए देवगइभंगो । मणुसाणुपुव्वीए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण मणुस्सेसु विग्गहं कादूणुववण्णस्स ।

उज्जोवणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो संजदो उत्तरसरीरं विउव्विदो अप्पमत्तभावं गदो तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ । आदावणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो गुणिदकम्मंसिओ मदो बीइंदिएसु बीइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण एइंदियत्तं गदो, तत्थ वि सव्वलहुअं एइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण बादरपुढवी-जीवेसु उववण्णो तस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ[1] । उस्सासस्स

प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण; इन नामकर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होता है। शेष पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और अनन्तानु-बन्धिविसंयोजन रूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके स्थित संयतके जब तीनों ही गुणश्रेणि-शीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उन पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। नारकानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तिर्यगानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यग्गतिके समान है। देवानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। मनुष्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमा-संयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपण स्वरूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके मनुष्योंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए जीवके उसका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है।

उद्योत नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो संयत जीव उत्तर शरीरकी विक्रिया करके अप्रमत्त अवस्थाको प्राप्त हुआ है उसके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। आतप नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक मरणको प्राप्त होकर द्वीन्द्रियोंमें द्वीन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके एकेन्द्रियपनेको प्राप्त हुआ है, वहां भी सर्वलघु कालमें एकेन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तकके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। उच्छ्वासका

१ बेइंदिय थावरगो कम्मं काऊण तस्समं खिप्पं । आयावस्स उ तव्वेइ पढमसमयम्मि वट्टंतो ॥ क. प्र. ५, १९. गुणितकर्मांशः पंचेन्द्रियः सम्यग्दृष्टिर्जातः, ततः सम्यक्त्वनिमित्ता गुणश्रेणिं कृतवान् । ततस्तस्या गुण-श्रेणीतः प्रतिपतितो मिथ्यात्वं गतः । गत्वा च द्वीन्द्रियमध्ये समुत्पन्नः । तत्र च द्वीन्द्रियप्रायोग्या स्थितिं मुक्त्वा शेषां सर्वामप्यपवर्तयति । ततस्ततोऽपि मृत्वा एकेन्द्रियो जातः । तत्रैकेन्द्रियसमां स्थितिं करोति । शीघ्रमेव च शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः, तस्य तद्वेदिन आतपवेदिन खरबादरपृथ्वीकायिकस्य शरीरपर्याप्त्यनन्तरं प्रथमसमये

उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयउस्सासणिरोहकारयस्स । सुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयवचिजोगणिरोहकारयस्स ।

पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स । सव्वेकम्माणं पि[1] जम्हि जम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति ण भणिदं तम्हि तम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति वत्तव्वं । चदुजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजमगुणसेडीओ एगट्ठं कादूण अप्पिदेसुप्पण्णस्स । अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवगगुण-सेडिसीसयाणि[2] तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ट्ठियस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि उदयमागदाणि ताधे उक्कस्सओ पदेसउदओ ।

पंचण्णमंतराइयाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? चरिमसमयछदुमत्थस्स । तित्थयरणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धि-यस्स । एवमुक्कस्सं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो जहण्णसामित्तं । तं जहा— मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो

उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती उच्छ्वासनिरोधकके होता है । सुस्वर और दुस्वरका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती वचनयोग-निरोधकके होता है ?

पचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । सभी कर्मोंके जहां जहां 'गुणितकर्मांशिक' नहीं कहा है वहां वहां 'गुणितकर्मांशिक' कहना चाहिये । चार जाति नामकर्म, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? संयमासंयम और संयम गुणश्रेणियोंको एकत्र करके विवक्षित जीवोंमें उत्पन्न हुए जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है । अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपक; इन तीनों ही गुणश्रेणिशीर्षकोंको एकत्र करके स्थित जीवके जब गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

पांच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके होता है । तीर्थंकर नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह गुणित-कर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य स्वामित्वका कथन करते हैं । यथा— मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय

आतपनाम्नः उत्कृष्टः प्रदेशोदयः । एकेन्द्रियो द्वीन्द्रियस्थितिं झटित्येव स्वयोग्या करोति, न त्रीन्द्रियादिस्थिति-मिति द्वीन्द्रियग्रहणम् । मलय. १ अ-काप्रत्योः 'भवसिद्धियसव्व' इति पाठः । २ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम् । ३ ताप्रतौ '-सजमगुणसेडीओ-दसणमोहणीयक्खवगसीसयाणि' इति पाठः ।

सुहुमणिगोदजीवेसु कम्मट्ठिदिमच्छिदाउओ सव्वेहि आवासएहि अभवसिद्धियपाओग्ग-जहण्णयं काऊण तदो संजमासंजमं संजमं च बहुसो लद्धूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण एइंदिएसु सुहुमेसु गदो, तत्थ य असंखेज्जाणि वस्ससहस्साणि अच्छिदूण मणुस्सेसु आगदो पुव्वकोडिं[1] संजममणुपालेदूण अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो दसवास-सहस्सिएसु देवेसु उववण्णो पुणो तत्थ सम्मत्तं घेत्तूण आउअमणुपालिय अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो वियट्ठिदाओ ट्ठिदीओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो एइंदिएसु गदो तस्स पढमसमयस्स मदिआवरणस्स जहण्णगो पदेसउदओ। सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं मदिणाणावरणभंगो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स अपच्छिमे[3] संजमभवग्गहणे वट्टमाणगो सो चेव अपरिवट्टिदेण सम्मत्तेण वेमाणिएसु उववण्णो मिच्छत्तं गदो अंतोकोडाकोडीदो तीसंसागरोवमकोडाकोडीओ पबद्धाओ जाधे उक्क० ट्ठिदी आवलियपबद्धा ताधे ओहि-णाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ पदेसउदओ। णिद्दा-पयलाणं जहण्णओ पदेस-

किसके होता है ? जो सूक्ष्म निगोद जीवोंमें कर्मस्थिति मात्र सूक्ष्म निगोदकी आयुके साथ रहकर सब आवासों द्वारा अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य करके, तत्पश्चात् संयमासंयम और संयमको बहुत वार प्राप्त करके, चार वार कषायोंको उपशमा कर सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें गया है और वहां असंख्यात हजार वर्ष रहकर मनुष्योंमें आया है, यहां पूर्वकोटि काल तक संयमको पालकर अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर दस हजार वर्ष मात्र आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, पुनः वहां सम्यक्त्वको ग्रहणकर आयुको पालकर उसके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्व-को प्राप्त होकर स्थितियोंका विकर्पण करता हुआ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हो एकेन्द्रियोंमें पहुंचा है उसके प्रथम समयमें मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्यय-ज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधि-दर्शनावरणका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके अन्तिम संयमभव-ग्रहणमें वर्तमान है वही अपरिवर्तित सम्यक्त्वके साथ वैमानिक देवोंमें उत्पन्न होकर मिथ्यात्व-को प्राप्त हो अन्तःकोड़ाकोड़िसे तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंको बांधता है जब उत्कृष्ट स्थिति आवली समयप्रबद्ध मात्र होती है तब उसके अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणका जघन्य प्रदेश उदय होता है। निद्रा और प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो जीव

१ अ-काप्रत्योः 'पुव्वकोडी' इति पाठः। २ पगयं तु खवियकम्मे जहन्नसामी जहन्नदेवठिइ। भिन्नमुहुत्ते सेसे मिच्छत्तगतो अतिकिलिट्ठो ॥ कालगएगिंदियगो पढमे समये व मइ-सुयावरणे। केवलदुग-मणपज्जव-चक्खु-अचक्खूण आवरणा ॥ क. प्र. ५, २०-२१. ३ का-ताप्रत्योः 'अपच्छिम' इति पाठः। ४ ओहीणसंजमाओ देवत्तगए गयस्स मिच्छत्तं। उक्कोसट्ठिइबंधे विकड्डणा आलिगं गंतुं ॥ क. प्र. ५, २२. आहीण त्ति– क्षपितकर्मांशः संयमं प्रतिपन्नः समुत्पन्नावधि-ज्ञानदर्शनोऽप्रतिपतितावधिज्ञानदर्शन एव देवो जातः, तत्र चान्तर्मुहूर्तं गते मिथ्यात्वं प्रतिपन्नः। ततो मिथ्यात्वप्रत्ययेनोत्कृष्टां स्थितिं बद्धुमारभते,

उदओ कस्स? जो ओहिणाणावरणस्स जहण्णपदेसवेदओ तस्स चेव जाधे उक्कस्सट्ठिदिबंध-गद्धा पुण्णा ताधे जो उक्कस्सट्ठिदिबंधादो पडिभग्गो संतो णिद्दं पयलं[1] वा पवेदयदि तस्स णिद्दा-पयलाणं जहण्णओ पदेसउदओ[2]। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णओ पदेसुदओ कस्स? जो मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेसउदओ दिट्ठो सो चेव जाधे पज्जत्ति गदो [ताधे] तस्स एइंदियपज्जत्तीए पढमसमयपज्जत्तयस्स थीणगिद्धितियं वेदयमाणस्स जहण्णओ पदेसउदओ[3]। सादासादाणं ओहिणाणावरणभंगो।

मिच्छत्तस्स जहण्णगो पदेसउदओ कस्स? उदीरणउदयादो[4] उवरि आवलियं गदस्स। सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तस्स य मिच्छत्तभंगो[5]। अणंताणुबंधीणं जहण्णगो पदेसउदओ कस्स? अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णसंतकम्मं कादूण सम्मत्तं संजमासंजमं संजमं च बहुसो लद्धूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण पुणो विसंजोइदं संजुत्तं कादूण बेछावट्ठीओ सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं गदो, तस्स आवलियमिच्छाइट्ठिस्स अणंताणु-

अवधिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक है उसीका जब स्थितिबन्धककाल पूर्ण होता है तब जो उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे प्रतिभग्न होकर निद्रा अथवा प्रचलाका वेदन करता है उसके निद्रा और प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? जिसके मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय कहा गया है वही जब पर्याप्तिको प्राप्त होता है [तब] एकेन्द्रिय पर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें उसके स्त्यानगृद्धित्रिकका वेदन करते हुए उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। साता और असाता वेदनीयकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है।

मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? उदीरणाउदयसे ऊपर आवलीको प्राप्त हुए जीवके मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय होता है। सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? अभव्यसिद्धिकके योग्य जघन्य सत्कर्मको करके; सम्यक्त्व, संयमासंयम और संयमको बहुत बार प्राप्त करके; चार बार कषायोंको उपशमाकर, फिरसे भी विसंयोजित संयुक्त करके (अनन्तानुबन्धी कषायोंको बांधकर) दो छयासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वको पालकर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस आवली कालवर्ती मिथ्यादृष्टिके अनन्तानुबन्धी कषायों-

प्रभूतं च दलिकं विकर्षयति उद्वर्तयतीत्यर्थः। तत आवलिकां गत्वाऽतिक्रम्य बन्धावलिकायामतीतायामित्यर्थः, अवध्योरवधिज्ञानावरणावधिदर्शनावरणयोर्जघन्यः प्रदेशोदयः। मलय. १ताप्रतौ 'णिद्दा-पयले' इति पाठः। २ निद्रा-प्रचलयोरपि तथैव। केवलमुत्कृष्टस्थितिबन्धात् प्रतिभग्नस्य प्रतिपतितस्य निद्रा-प्रचलयोरनुभवितुं लग्नस्य चेति द्रष्टव्यम्। उत्कृष्टस्थितिबन्धो हि अतिशयेन संक्लिष्टस्य भवति, न चातिसंक्लेशे वर्तमानस्य निद्रोदयसम्भवः। तत उक्तं उत्कृष्टस्थितिबन्धात्प्रतिभग्नस्येति। क. प्र. ५, २३. (मलय.). ३ निद्रानिद्रा-दयोऽपि तिस्रः प्रकृतयो जघन्यप्रदेशोदयविषये मतिज्ञानावरणवद्भावनीयाः। नवरमिन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्तस्य प्रथमसमये इति द्रष्टव्यम्, ततोऽनन्तरसमये उदीरणाया सम्भवेन जघन्यप्रदेशोदयासम्भवात्, क. प्र. ५, २४. (मलय.). ४ताप्रतौ 'उदीरणाउदयादो' इति पाठः। ५ दंसणमोहे तिविहे उदीरणुदये उ आलिगं गंतुं। क. प्र. ५, २५.

बंधीणं जहण्णओ पदेसउदओ[1]। अट्ठण्णं कसायाणं चदुण्णं संजलणाणं पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो उवसंतकसाओ मदो देवो जादो तस्स आवलियतब्भवत्थस्स जहण्णओ पदेसउदओ[2]। अरदि-सोगाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? एदासिं पयडीणं जहा ओहिणाणावरणस्स परूवणा कदा तहा कायव्वा। इत्थिवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जाव अपच्छिमसंजमभवग्गहणे त्ति ताव जहा मदिआवरणस्स परूविदं तहा परूवेयव्वं। तदो अपच्छिमे संजमभवग्गहणे देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालेदूण सव्वजहण्णए जीविदसेसे मिच्छत्तं गदो, तदो देवीसु उववण्णो, उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण अंतोकोडाकोडिबंधादो पण्णारससागरोवमकोडाकोडीओ पबद्धाओ, तदो ताए देवीए जाधे पण्णारससागरोवमकोडाकोडिट्ठिदी पबद्धा तदो[3] बंधावलियचरिमसमए इत्थिवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ[4]। णवुंसयवेदस्स मदिआवरणभंगो।

का जघन्य प्रदेश उदय होता है। आठ कषाय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय और जुगुप्साका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उपशान्तकषाय मर करके देव हुआ है उस आवली कालवर्ती तद्भवस्थके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। अरति और शोकका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? इन प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा जैसे अवधिज्ञानावरणके सम्बन्धमें की गयी है वैसे करना चाहिये। स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अन्तिम संयमभवग्रहण तक जैसे मतिज्ञानावरणके सम्बन्धमें प्ररूपणा की गयी है वैसे यहां प्ररूपणा करना चाहिये। तत्पश्चात् अपश्चिम संयमभवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमको पालकर जीवितके सबसे जघन्य शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् देवियोंमें उत्पन्न हुआ, वहां उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तःकोड़ाकोड़ि मात्र बन्धकी अपेक्षा पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण बन्ध किया, पश्चात् उक्त देवीके द्वारा जब पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र स्थिति बांधी जाती है तब बन्धावलीके अन्तिम समयमें स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेश उदय होता है। नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है।

१ चउरुवसमित्तु पच्छा संजोइय दीहकालसम्मत्ता। मिच्छत्तगए आवलिगाए संजोयणाणं तु ॥ क. प्र. ५, २६. २ सत्तरसण्ह वि एवं उवसमइत्ता गए देवे ॥ क. प्र. ५, २५. तथाऽनन्तानुबन्धिवर्जद्वादशकषाय-पुरुषवेद-हास्य-रति-भय-जुगुप्सारूपाः सप्तदश प्रकृतीरुपशमय्य देवलोकं गतस्य एवंभवति उदीरणोदयचरमसमये तासां सप्तदशप्रकृतीनां जघन्यः प्रदेशोदयः। मलय. ३ ताप्रतौ '-कोडाकोडीओ पबद्धाओ ट्ठिदीओ तदो' इति पाठः। ४ इत्थीए संजमभवे सव्वनिरुद्धम्मि गंतु मिच्छत्तं। देवीए लहुमिच्छी जेट्ठठिइ आलिगं गंतुं ॥ क. प्र. ५, २७. × × × × इयमत्र भावना— क्षपितकर्मांशा काचित् स्त्री देशोना पूर्वकोटिं यावत्संयममनुपाल्यान्तर्मुहूर्ते आयुषोऽवशेषे मिथ्यात्वं गत्वा अनन्तरभवे देवी समुत्पन्ना, शीघ्रमेव च पर्याप्ता। तत उत्कृष्टे संक्लेशे वर्तमाना स्त्रीवेदस्योत्कृष्टां स्थितिं बध्नाति, पूर्वबद्धां चोद्वर्तयति। तत उत्कृष्टबन्धारम्भात् परत आवलिकायाश्चरमसमये तस्याः स्त्रीवेदस्य जघन्यः प्रदेशोदयो भवति। मलय.

णिरयाउअस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णेहि जोगट्ठाणेहि तप्पाओग्गजहण्णियाए बंधगद्धाए आउअं पबद्धं, हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण मदो[1] तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णो सव्वमहंत[2]असादोदए वट्टमाणस्स तस्स चरिमसमयणेरइयस्स[3] जहण्णपदेसउदओ । मणुस्साउअस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णजोगट्ठाणेहि तप्पाओग्गजहण्णबंधगद्धाए मणुस्साउअं पबद्धं हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण मदो तिपलिदोवमाउट्ठिदिओ मणुस्सो जादो, असादोदया सव्वबहुआ सव्वचिरं[4] सादोदया वि मंदाणुभागा, तस्स तिपलिदोवमियस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णओ पदेसउदओ । तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअभंगो । देवाउअस्स वि मणुसाउअभंगो । णवरि देवेसु तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स वत्तव्वं[5] ।

णिरयगइणामाए जाव दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो । तदो दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णेण पुणो सम्मत्तं लद्धं, अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोइदं, अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो विकड्डिदाओ[6] ट्ठिदीओ मदो एइंदिएसु उववण्णो, तत्तो

नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें नारक आयुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार बांधकर मरणको प्राप्त हो जो तेतीस सागरोपम आयुवाले नारकियोंमें उत्पन्न होता हुआ सबसे महान् असाता वेदनीयके उदयमें वर्तमान है ऐसे नारकीके अन्तिम समयमें नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय होता है । मनुष्यायुका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें मनुष्यायुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार बांधकर जो मरणको प्राप्त हो तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है, जिसके असातोदय सबमें बहुत व सर्वचिर काल रहनेवाले तथा सातोदय भी मन्द अनुभागवाले हैं; उस तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्यके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें मनुष्यायुका जघन्य प्रदेश उदय होता है । तिर्यगायुके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है । देवायुकी भी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है । विशेष इतना है कि तेतीस सागरोपम आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुए उसके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें कहना चाहिये ।

नरकगति नामकर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होने' तक मतिज्ञानावरणके समान है । तत्पश्चात् दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होकर फिरसे सम्यक्त्वको प्राप्त हो जिसने अनन्तानुबन्धिचतुष्कका विसंयोजन किया है, अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हो स्थितियोंको विकर्षित करके मरकर

१ ताप्रतौ 'तदो' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'महत्त' इति पाठः । ३ अ-ताप्रत्योः 'चरिमसमए णेरइयस्स' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'सव्वचिरं०' इति पाठः । ५ अप्पद्धा-जोगचियाणाऊणुक्कस्सगठिईणंते । उवरिं थोवनिसेगे चिरतिव्वासायवेईणं ॥ क. प्र. ५, २८. ६ ताप्रतौ 'विओकड्डिदाओ' इति पाठः ।

मदो असण्णीसु उववण्णो, तत्तो अंतोमुहुत्तेण णेरइओ जादो, तस्स सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स णिरयगइणामाए जहण्णओ पदेसउदओ[1]। तिरिक्खगइणामाए मदिआवरण-भंगो। णवरि इगितीससवेदएसु उववज्जावेदव्वो। मणुसगइणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो। तदो एइंदियभवग्गहणादो मणुस्सो जादो, सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो, तस्स मणुसगइणामाए जहण्णओ पदेसउदओ। देवगदिणामाए ओहिणाणा-वरणभंगो। णवरि जाधे ट्ठिदीओ विकट्टिदाओ ताधे उत्तरसरीरं विउव्विदो, उज्जोवणामाए वेदओ, तस्स देवगदिणामाए जहण्णओ पदेसुदओ[2]।

वेउव्वियसरीरस्स[3] मदिआवरणभंगो। णवरि सो एइंदिओ सण्णितिरिक्खो होदूण उज्जोवुदएण उत्तरं विउव्विदो, जाधे ट्ठिदीओ विकट्टिदाओ ताधे जहण्णपदेसुदओ। ओरा-लियसरीरणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो। पुणो एइंदिएहिंतो तसेसु उववज्जावेयव्वो जेसु उववण्णो तीसण्णं पयडीणं वेदओ होदि। तदो जाधे तीसं वेद-यदि ताधे ओरालियसरीरस्स जहण्णओ पदेसुदओ। चदुजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-तेजा-

---

एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ है, उनमेंसे मरकर असंज्ञियोंमें उत्पन्न हुआ है, पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें नारकी हुआ है, उसके सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होनेपर नरकगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। तिर्यग्गति नामकर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुका वेदन करनेवाले देवोंमें उत्पन्न कराना चाहिये। मनुष्यगति नामकर्मकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' तक मतिज्ञानावरणके समान है। पश्चात् एकेन्द्रिय भवग्रहणसे मनुष्य उत्पन्न हुआ, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ, उसके मनुष्यगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। देवगति नामकर्मकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि जब स्थितियां विकर्षित की जाती हैं तब उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त होता हुआ उद्योत नामकर्मका वेदक होता है, तब उसके देवगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है।

वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि वह एकेन्द्रिय जीव संज्ञी तिर्यंच होकर उद्योतके उदयके साथ उत्तर शरीरकी विक्रिया करता है, वह जब स्थितियोंको विकर्षित करता है तब उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। औदारिक शरीर नामकर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' पर्यन्त मति-ज्ञानावरणके समान है। पश्चात् एकेन्द्रियोंमेंसे त्रसोंमें उत्पन्न कराना चाहिये, जिनमें उत्पन्न होकर तीस प्रकृतियोंका वेदक होता है। पश्चात् जब वह तीसका वेदन करता है तब उसके औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेश उदय होता है। चार जातियां, तैजस व कार्मण शरीर, तैजस

---

१ संजोयणा विजोजिय देवभवजहन्नगे अइनिरुद्धे। बेयिय उक्कस्सठिई गंतूणेगिंदिया सन्नी॥ सव्वलहुं नरयगए निरयगई तम्मि सव्वपज्जत्ते। क. प्र. ५, २९-३०. २ देवगई ओहिसमा नवरिं उज्जोववेयगो ताहे। क. प्र. ५, ३१. ३ अ-काप्रत्योः 'वेउव्वियसत्तयस्स' इति पाठः।

कम्मइयसरीरबंधण-संघाद- छसंठाण-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उज्जोव - उस्सास- पसत्थापसत्थविहायगइ -तस-बादर-पज्जत्त -पत्तेयसरीर- थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति -णिमिणणामाणं ओरालियसरीरभंगो । आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं जहण्णउदओ कस्स ? अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णयं कादूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण अपच्छिमे भवग्गहणे देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालेऊण आहारएण उत्तरसरीरं विउव्विदो सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो, तस्स जहण्णओ पदेसउदओ ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? पढमसमयतब्भवत्थस्स । आदावणामाए जहण्णओ उदओ कस्स ? मदिआवरणस्स खविदकम्मंसियविहाणेण आगंतूण जो आदावणामाए वेदएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पढमसमयपज्जत्तयदस्स जहण्णगो पदेसउदओ । एइंदिय-थावर-णीचागोदाणं मदिआवरणभंगो । णवरि एइंदिय-थावराणं सव्वपज्जत्तयदो ।

सुहुमणामाए जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेसवेदओ सो तम्हि भवे खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण सुहुमेइंदिएसु पज्जत्तएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो, तस्स पढमसमए सुहुमणामाए जहण्णगो पदेसउदओ । साहारणणामाए

व कार्मण शरीरों सम्बन्धी बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और निर्माण; इन नामकर्मोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग, आहारकशरीरबन्धन व संघातका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य [सत्कर्म] को करके, चार वार कषायोंको उपशमा कर अन्तिम भवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमका पालन कर आहारकशरीररूपमें उत्तर शरीरकी विक्रिया करके जो सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है ।

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? वह प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थके होता है । आतप नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? मतिज्ञानावरण सम्बन्धी क्षपितकर्मांशिकके विधानसे आकर जो आतप नामकर्मके वेदकोंमें उत्पन्न होकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तके उसका जघन्य प्रदेश उदय होता है । एकेन्द्रिय, स्थावर और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय और स्थावरका जघन्य प्रदेश उदय सर्व पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुए जीवके होता है ।

सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक उस भवमें क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हो आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ है उसके प्रथम समयमें सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है।

जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेसवेदओ खुद्दाभवग्गहणं जीविऊण मदो साहारणकाइएसु उज्जोवणामाए वेदएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पज्जत्तयदस्स पढमसमए साहारणसरीरणामाए जहण्णओ पदेसउदओ। तित्थयरणामाए जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? तप्पाओग्गेण जहण्णएण जोगेण बंधिय सव्वुक्कस्सियाहि गुणसेडिणिज्जराहि गालिय केवलणाणमुप्पाइय सजोगिपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णगो पदेसउदओ। उच्चागोद-पंचंतराइयाणं ओहिणाणावरणभंगो। एवं सामित्तं समत्तं।

एत्तो एयजीवेण कालो अंतरं णाणजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो चेदि अणियोगद्दाराणि सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वाणि।

एत्तो अप्पाबहुअं। ओघुक्कस्सपदेसुदयदंडओ— मिच्छत्तस्स पदेसुदओ थोवो। सम्मामिच्छत्तस्स विसेसाहिओ। पयलापयलाए संखेज्जगुणो। णिद्दाणिद्दाए विसेसाहिओ। थीणगिद्धीए विसेसा०। अणंताणुबंधीसु अण्णदरस्स विसे०। अपच्चक्खाण० असंखे० गुणो। पच्चक्खाणावरणिज्ज० विसे०। पयलाए असंखे० गुणो। णिद्दाए विसे०। सम्मत्ते असंखे० गुणो। केवलणाणावरणे संखे० गुणो। केवलदंसणावरणे विसे०। देवाउअस्स अणंतगुणो। णिरयाउअस्स विसे०। मणुस्साउअस्स संखे० गुणो। तिरिक्खाउअस्स

साधारण नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त होता हुआ उद्योत नामकर्मके वेदक साधारण-कायिकोंमें उत्पन्न होकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्तक हुआ है उसके पर्याप्तक होनेके प्रथम समय-में साधारणशरीर नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। तीर्थंकर नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? तत्प्रायोग्य जघन्य योगसे उसे बांधकर व सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणिनिर्जराओंके द्वारा गलाकर केवलज्ञानको उत्पन्न कर सयोगकेवलीके प्रथम समयमें वर्तमान जीवके तीर्थंकर प्रकृतिका जघन्य प्रदेश उदय होता है। उच्चगोत्र और पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञाना-वरणके समान है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

यहां एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये।

यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। उसमें ओघ उत्कृष्ट प्रदेश उदयका दण्डक— मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। प्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रचलाका असंख्यातगुणा है। निद्राका विशेष अधिक है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। देवायुका अनन्तगुणा है। नारकायुका विशेष अधिक है। मनुष्यायुका संख्यातगुणा है। तिर्यगायुका विशेष अधिक

विसे० । आहारसरीरणामाए असंखे० गुणो । णिरयगइणामाए असंखे० गुणो । तिरिक्खगइणामाए विसे० । अजसगित्तीए विसे० । णीचागोदस्स संखे० गुणो । वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो । देवगइणामाए संखे० गुणो । दुगुंछाए असंखे० गुणो । भय० तत्तियो चेव । हस्स-सोग० विसेसा० । रदि-अरदि० विसे० । इत्थिवेदे[1] असंखे० गुणो । णवुंसयवेदे[1] विसेसा० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोधसंजलणाए असंखे० गुणो । माणसंजलणाए असंखे० गुणो । माया० असंखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसेसाहिओ । कम्मइयसरीर० विसे० । मणुसगई० असंखे० गुणो । दाणंतराइयस्स असंखे० गुणो । लाहंतराइयस्स विसेसा० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइयस्स विसेसा० । ओहिणाणावरण० विसे० । मणपज्जवणाणावर० विसे० । ओहिदंसणावर० विसे० । सुदणाणावरण० विसे० । मदिणाणावरण० विसे० । अचक्खुदंसणावर० विसे० । चक्खुदंस० विसे० । जसगित्तिणामाए विसेसा० । उच्चागोदस्स विसे० । लोभसंजलण० विसे० । सादासादाणं विसे० । ओघुक्कस्सपदेसुदयदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए उक्कस्सओ पदेसउदओ सम्मामिच्छत्तस्स थोवो । पयलाए संखेज्ज-

है । आहारकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । नरकगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गति नामकर्मका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । देवगति नामकर्मका संख्यातगुणा है । जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । भयका उतना मात्र ही है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका असंख्यातगुणा है । दानान्तरायका असंख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकीर्ति नामकर्मका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । ओघ-उत्कृष्ट-प्रदेश-उदयदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

१ अ-काप्रत्योः 'वेदो' इति पाठः ।

गुणो। णिद्दाए विसे०। मिच्छत्तस्स असंखे० गुणो। अणंताणुबंधि० संखे० गुणो। केवलणाणावरण० असंखे० गुणो। केवलदंसणावरण० विसेसा०। अपच्चक्खाणाव० विसे०। पच्चक्खाणावरण० विसे०। सम्मत्ते असंखे० गुणो। णिरयाउ० अणंतगुणो समयपबद्धस्स संखे० भागो०। ओहिणाणावरण० संखे० गुणो। ओहिदंसणावर० विसे०। वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो। तेजासरीर० विसे०। कम्मइयसरीर० विसे०। णिरयगई० संखे० गुणो। अजसकित्ति० विसेसा०। णवुंसयवेद० संखे० गुणो। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। भय-दुगुंछा० विसे०। हस्स० विसे०। सोग० विसे०। रदि० विसे०। अरदि० विसेसा०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाणावरण० विसे०। मदिणाणावरण० विसे०। अचक्खु० विसे०। [चक्खु० विसे०।] संजलणकसाय० अण्णदर० विसे०। णीचागोद० विसे०। साद० विसे०। असाद० विसे०। एवं णिरयगईए उक्कस्सओ पदेसउदओ समत्तो।

तिरिक्खगईए उक्कस्सओ सम्मामिच्छत्तस्स पदेसउदओ थोवो। पयलाए संखे० गुणो। णिद्दाए विसेसा०। पयलापयला० विसे०। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धीए विसे०।

निद्राका विशेष अधिक है। मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धीका संख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। नारकायुका अनन्तगुणा है जो समयप्रबद्धके संख्यातवें भाग प्रमाण है। अवधिज्ञानावरणका संख्यातगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजस शरीरका विशेष अधिक है। कार्मण शरीरका विशेष अधिक है। नरकगतिका संख्यातगुणा है। अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। शोकका विशेष अधिक है। रतिका विशेष अधिक है। अरतिका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। [चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है।] संज्वलनकषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। सातावेदनीयका विशेष अधिक है। असाता वेदनीयका विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशउदय समाप्त हुआ।

तिर्यग्गतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है। प्रचलाका संख्यातगुणा है। निद्राका विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है।

मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । केवलणाणावरण० असंखे० गुणो । केवलदंसणाव० विसे० । अपच्चक्खाणावर० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । सम्मत्त० असंखे० गुणो । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । अजसगित्ति० असंखे० गुणो । इत्थि-णवुंसयवेद० संखे० गुणो । उच्चागोद० संखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगदि० संखे० गुणो० । जसगित्ति० विसे० । पुरिसवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसेसा० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । ओहिणाणावरण० विसे० । मणपज्जव० विसेसाहिओ । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाए अण्णदरिस्से विसे० । णीचागोद० विसे० । सादासाद० दो वि तुल्ला विसे० । एवं तिरिक्खगईए उक्कस्सदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सपदेसउदओ सम्मामिच्छत्ते[1] थोवो । पयलाए संखे० गुणो । णिद्दाए विसेसाहिओ । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीण-

स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी कषायोंमेंसे अन्यतरका संख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । तिर्यगायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । स्त्री व नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रका संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय व जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलन कषायोंमेंसे अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीय दोनोंका ही तुल्य व विशेष अधिक है । इस प्रकार तिर्यग्गतिमें उत्कृष्ट दण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यंच योनिमतियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है। प्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'सम्मामिच्छत्तादो', ताप्रतौ 'सम्मामिच्छत्तादो (तस्स)' इति पाठः ।

गिद्धीए विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो० । अणंताणुबंधी० संखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्च-क्खाण० विसे० । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । ओरा-लियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्तीणं उदओ तुल्लो विसेसाहिओ । इत्थिवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतरा० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलण० विसे० । उच्च-णीच० उदओ तुल्लो विसे० । सादासादाणं विसे० । तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मणुसगईए उक्कस्सओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते विसे० । पयला-पयला० संखे० गुणो । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । अणंताणुबंधीणं

विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानु-बन्धिचतुष्कमें अन्यतरका संख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । तिर्यगायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिका संख्यात-गुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरण विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । उच्च व नीच गोत्रका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । तिर्यंच योनिमतियोंमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें

१ ताप्रतौ 'अणंताणुबंधी० सखे० गुणो । केवलदंसण०' इति पाठः ।

विसे० । अपच्चक्खाणकसाएसु असंखे० गुणो । पच्चक्खाणकसाएसु विसे० । पयलाए असंखे० गुणो । णिद्दाए विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंसण० विसे० । मणुस्साउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो । आहारसरीरस्स विसे० । अजसकित्तीए असंखे० गुणो । णीचागोदे संखे० गुणो । भय-दुगुंछा० असंखे० गुणो । हस्स-सोग० विसेसा० । रदि-अरदीसु विसे० । इत्थिवेद० असंखे० गुणो । णवुंसयवेद० विसे० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोधसंजलणाए असंखे० गुणो । माण० असंखे० गुणो । माया० असंखे० गुणो । ओरालियसरीरणामाए असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुसगइ० असंखे० गुणो । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतरा० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । जसकित्ति० विसे० । उच्चागोदे विसे० । लोहसंजलणाए विसे० । सादासादाणं विसे० । एवं मणुसगदीए उक्कस्सपदेसउदओ समत्तो ।

देवगदीए उक्कस्सओ पदेसउदओ सम्मामिच्छत्ते थोवो । पयलाए संखे० गुणो ।

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रचलाका असंख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । आहारशरीरका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । भय और जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तैजस-शरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । कार्मणशरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । मनुष्यगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । दानान्तरायका संख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय समाप्त हुआ ।

देवगतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

णिद्दाए विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । अपच्चक्खाण-कसाए असंखे० गुणो । पच्चक्खाणकसाए विसे० । केवलणाण० असंखे० गुणो । केवल-दंसण० विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । देवाउ० अणंतगुणो । ओहिणाणावरण० संखे० गुणो । ओहिदंसणाव० विसे० । अजसगित्ति० असंखे० गुणो । इत्थिवेद० संखे० गुणो । भय-दुगुंछा० असंखे० गुणो । सोग० विसे० । हस्स विसे० । अरदि० विसे० । रदि० विसे० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोहसंजलणाए असंखे० गुणो । माणस्स असंखे० गुणो । मायस्स असंखे० गुणो । लोभस्स असंखे० गुणो । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । देवगई० संखे० गुणो । जसगित्ति० विसे० । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतराइय० विसे०[1] । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खुदं० विसे० । उच्चागोद० विसेसाहिओ । असाद० विसे० । साद० विसे० । एवं देवगदीए उक्कस्सओ पदेसुदय-दंडओ समत्तो ।

असण्णीसु उक्कस्सओ पदेसुदओ पयलाए थोवो । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए

निद्राका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतर-का संख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कषायमें अन्यतरका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शना-वरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । देवायुका अनन्तगुणा है । अवधि-ज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असं-ख्यातगुणा है । स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । भय व जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । शोकका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमान-का असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । संज्वलनलोभका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । देवगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । दानान्तरायका संख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परि-भोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । असातावेदनीयका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार देवगतिमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञियोंमें प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचला-

१ अप्रतौ 'सखे० गुणो' इति पाठः ।

विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धीए विसेसा० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । अणंताणुबंधि० विसे० । णिरयगई० अणंतगुणो । देवगई० विसे० । मणुसगई० विसे० । देवाउ० असंखे० गुणो । णिरयाउ० विसे० । मणुसाउ० संखे० गुणो । उच्चागोद० असंखे० गुणो । तिरिक्खाउ० संखे० गुणो । णिरय-देव-मणुसगईणं देव-णिरय-मणुस्साउ-आणमुच्चागोदस्स य कधमसण्णीसुदओ ? ण, असण्णिपच्छायदाणं णेरइयादीणमुवयारेण[2] असण्णित्तब्भुवगमादो । मणुसगइपदेसोदयादो देवाउआदीणं पदेसोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं ? ण, विगलिंदिए मोत्तूण पयदअसण्णिपंचिंदिएसु चेव संचिददव्वग्गहणे तदविरोहादो । मणुस्साउअउक्कस्सोदयादो उच्चागोद-तिरिक्खाउआणमुक्कस्सोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं[3] ? ण, बंधगद्धाए असंखेज्जगुणत्तेण च आवलियाए असंखेज्जदि-भागस्स अंतोमुहुत्तत्तमसिद्धं, एदम्हादो चेव सुत्तादो तस्स तब्भावसिद्धीदो ।

प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण-चतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नरकगतिका अनन्तगुणा है । देवगतिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवायुका असंख्यातगुणा है । नारकायुका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रका असंख्यातगुणा है । तिर्यगायुका संख्यातगुणा है ।

शंका— नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, देवायु, नारकायु, मनुष्यायु और उच्चगोत्रका उदय असंज्ञी जीवोंमें कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आये हुए नारकी आदिकोंको उपचारसे असंज्ञी स्वीकार किया गया है ।

शंका— मनुष्यगतिके प्रदेशोदयकी अपेक्षा देवायु आदिकोंका प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि विकलेन्द्रियोंको छोड़कर प्रकृत असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें ही संचित द्रव्यका ग्रहण करनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका— मनुष्यायुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयसे उच्चगोत्र और तिर्यंचआयुका उत्कृष्ट प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे है ?

समाधान— नहीं, बन्धककालके असंख्यातगुणे होनेसे भी आवलीके असंख्यातवें भागके अन्तर्मुहूर्तता असिद्ध है, इसी सूत्रसे ही उसके असंख्यातगुणत्व सिद्ध है ।

---

१ अप्रतौ 'णिरयगई०' इति पाठः । २ अप्रतौ 'णेरयईाण', काप्रतौ 'णिरयादीण', ताप्रतौ 'णेरयादीण' इति पाठः । ३ ताप्रतौ असंखेगुणत्तं' 'इति पाठः ।

सव्वमेदं होदु णाम, ण उच्चागोदादो तिरिक्खाउअस्स संखेज्जगुणत्तं; संखेज्जा-वलियमेत्तुच्चागोदसमयपबद्धेसु दिवड्ढगुणहाणीए छिण्णेसु एगसमयबद्धस्स असंखे० भागुवलंभादो संखेज्जावलियछिण्णतिरिक्खाउअम्हि समयपबद्धस्स संखेज्जदिभागत्तुव-लंभादो। ण च उव्वेलणाचरिमफालिदव्वे वि गहिदे संखेज्जगुणत्तं जुज्जदे, तिस्से पलिदोवमस्स असंखे० भागपमाणत्तादो। जदि असण्णीसु उच्चागोदस्स उक्कस्ससंचयं करिय वाउक्काइएसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तुव्वेल्लणाए संखेज्जावलियमेत्तट्ठिदिं ठविय असण्णीसु-प्पज्जिय उच्चागोदोदइल्लेसुप्पज्जदि तो एदं घडदे। ण च उव्वेल्लणकालो जहण्णओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो अत्थि, एइंदिएहि आढत्तट्ठिदिखंडयाणमायामस्स पलिदोवमस्स असंखे० भागणियमुवलंभादो त्ति ? ण, सयलसुदविसयावगमे पयडि-जीवभेदेण णाणाभेद-भिण्णे असंते एदं ण होदि त्ति वोत्तुमसक्कियत्तादो। तम्हा सुत्ताणुसारिणा सुत्ताविरुद्धं वक्खाणमवलंबेयव्वं।

ओरालिय० संखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। तिरिक्खगइ० संखे० गुणो। जसकित्ति-अजसकित्ति० विसेसा०। अण्णदरवेदे विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। [3]भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। विरि-

शंका— यह सब वैसा हो, किन्तु उच्चगोत्रकी अपेक्षा तिर्यंच आयुके संख्यातगुणत्व सम्भव नहीं है; क्योंकि, संख्यात आवलियों मात्र उच्चगोत्रके समयप्रबद्धोंमें डेढ़ गुणहानिका भाग देनेपर एक समयप्रबद्धका असंख्यातवां भाग पाया जाता है, तथा संख्यात आवलियोंसे भाजित तिर्यंच आयुमें समयप्रबद्धका संख्यातवां भाग पाया जाता है। यदि कहा जाय कि उद्वेलनाकी अन्तिम फालिके द्रव्यको ग्रहण करनेपर तिर्यंच आयुके संख्यातगुणत्व बन सकता है, तो यह भी ठीक नहीं है; क्योंकि वह (फालि) पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। यदि असंज्ञी जीवोंमें उच्चगोत्रके उत्कृष्ट संचयको करके फिर वायुकायिक जीवोंमें उत्पन्न होकर अन्त-र्मुहूर्त उद्वेलना द्वारा संख्यात आवली मात्र स्थितिको स्थापित कर असंज्ञियोंमें उत्पन्न होकर उच्च-गोत्रके उदय युक्त जीवोंमें उत्पन्न होता है तो यह घटित हो सकता है, परन्तु उद्वेलनाका काल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त मात्र नहीं है; क्योंकि, एकेन्द्रियोंके द्वारा प्रारम्भ किये गये स्थितिकाण्डकोंके आयामके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होनेका नियम पाया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि प्रकृतियों और जीवोंके भेदसे नाना भेदोंको प्राप्त हुए समस्त श्रुतविषयक ज्ञानके न होनेपर 'यह नहीं हो सकता' ऐसा कहना शक्य नहीं है। इस कारण सूत्रका अनुसरण करनेवाले प्राणीको सूत्रसे अविरुद्ध व्याख्यानका अवलम्बन करना चाहिये।

तिर्यंच आयुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयकी अपेक्षा औदारिकशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशोदय संख्यातगुणा है। उससे तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति व अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। अन्यतर वेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है।

१ अ-काप्रत्योः 'उच्चागोदइल्लेसु-' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'आदत्त' इति पाठः। ३ का-ताप्रत्योर्नोप-लभ्यते वाक्यमिदम्।

यंतराइय० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाणं अण्णयरस्स विसे० । णीचागोद० विसे० । सादासाद० विसेसाहिओ । एवमसण्णीसु उक्कस्सपदेसुदय-दंडओ समत्तो ।

एत्तो जहण्णगो– जहण्णपदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अपच्चक्खाण० असंखे० गुणो । पच्चक्खाण० विसे० । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । पयलापयला० असंखे० गुणो । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धी० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । केवलदंसण० विसे० । दुगुंछा० अणंतगुणो । भय० विसे० । हस्स० विसे० । रदि० विसे० । पुरिसवेद० विसे० । संजलणस्स अण्णदरस्स विसे० । ओहिणाण० असंखे० गुणो । ओहिदंसण० विसे० । णिरयाउ० असंखे० गुणो । णेदं जुज्जदे, एइंदियसमयपबद्धमेत्तओहिदंसणावरण-जहण्णुदयादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदएगसमयपबद्धमेत्तणिरयाउअजहण्णुदयस्स

भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलन कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी जीवोंमें उत्कृष्ट प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य प्रदेशोदय दण्डक अधिकार प्राप्त है— वह जघन्य प्रदेशोदय मिथ्यात्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रचलाप्रचलाका असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । जुगुप्साका अनन्तगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । नारकायुका असंख्यातगुणा है ।

शंका— यह योग्य नहीं है, क्योंकि एकेन्द्रियके समयप्रबद्ध मात्र जो अवधिदर्शनावरणका जघन्य प्रदेशोदय है उसकी अपेक्षा अंगुलके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित एक समयप्रबद्ध

असंखेज्जगुणत्तविरोहादो ? ण, ओकड्डुकड्डणाए विणा अवट्ठिदट्ठिदिपदेससंतकम्मे विवक्खिदे दिवड्ढगुणहाणिभागहारुववत्तीए। ण च एसो अत्थो पारमत्थिओ, ओकड्डुकड्डणाहि हेट्ठुवरि पक्खित्ते पदेसग्गणिसेगस्स असंखेज्जलोगभागहारे संते विरोहाभावादो। तम्हा उभयत्थ जदि वि भागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो तो वि थोवबहुत्तं सुत्तबलेण अवगंतव्वं।

देवाउ० विसे०। तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो। मणुस्साउ० विसे०। ओरालिय० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। वेउव्विय० विसे०। तिरिक्खगइ० संखे० गुणो। जसकित्ति-अजसकित्ति० दो वि तुल्ला विसे०। देवगइ० विसे०। मणुसगइ० विसे०। णिरयगइ० विसे०। सोग० संखे० गुणो। अरदि० विसे०। इत्थिवेद० विसे०। णवुंसयवेद० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। विरियंतरा० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदिआवरण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। उच्चागोदे विसे०। णीचागोदे विसे०। सादासादेसु विसे०। एवमोघजहण्णपदेसुदयदंडओ समत्तो।

मात्र नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयके असंख्यातगुणे होनेमें विरोध है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि अपकर्षण-उत्कर्षणके बिना अवस्थित स्थितिवाले प्रदेशसत्कर्मकी विवक्षा होनेपर डेढ़ गुणहानि भागहार बन जाता है। परन्तु यह अर्थ पारमार्थिक नहीं है, क्योंकि, अपकर्षण-उत्कर्षण द्वारा नीचे ऊपर प्रक्षेप करनेपर प्रदेशाग्र सम्बन्धी निषेकका असंख्यात लोक भागहार होनेमें कोई विरोध नहीं है। इस कारण दोनों स्थानोंमें यद्यपि भागहार अंगुलका असंख्यातवां भाग है तो भी उनमें सूत्रबलसे स्तोकता व अधिकता समझनी चाहिये।

नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयसे देवायुका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है। तिर्यंच आयुका असंख्यातगुणा है। मनुष्यायुका विशेष अधिक है। औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजस शरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति व अयशकीर्ति दोनोंका भी तुल्य विशेष अधिक है। देवगतिका विशेष अधिक है। मनुष्यगतिका विशेष अधिक है। नरकगतिका विशेष अधिक है। शोकका संख्यातगुणा है। अरतिका विशेष अधिक है। स्त्रीवेदका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघ जघन्य प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ।

णिरयगईए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असं० गुणो। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाणा० असंखे० गुणो। केवलदंसणा० विसे०। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। अपच्चक्खाण० विसे०। पच्चक्खाण० विसे०। ओहिणाणावरण० अणंतगुणो। ओहिदंसणावरण० विसे०। णिरयाउ० असंखे० गुणो। वेउव्विय० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसेसा०। णिरयगइ० संखे० गुणो। अजसकित्ति० विसे०। दुगुंछा० संखे० गुणो। भय० विसे०। सोग० विसे०। हस्स० विसे०। अरदि० विसे०। रदि० विसे०। णवुंसयवेद० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतरा० विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुद-णाण० विसे०। मदिणाण० विसे०। अचक्खुदं० विसेसा०। चक्खुदं० विसे०। संज-लण० विसे०। णीचागोद० विसे०। असाद० विसे०। साद० विसेसाहिओ। एवं णिरयगईए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो।

तिरिक्खगईए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाण० असंखे०

नरकगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। नारकायुका असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। नरकगतिका संख्यातगुणा है। अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेषअधिक है। शोकका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। अरतिका विशेष अधिक है। रतिका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्यय-ज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। असातावेद-नीयका विशेष अधिक है। सातावेदनीयका विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

तिर्यंचगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यात-गुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा

गुणो । पयलाए विसे० । णिद्दा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धी० विसे० । केवलदं० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणो । ओहिदंस० विसे० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । ओरालिय० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । वेउ० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसे० । दुगुंछाए संखेज्जगुणो । भये विसे० । हस्स० विसे० । सोगे[1] विसे० । रदि-अरदीसु विसे० । णवुंसयवेदे विसे० । इत्थि-पुरिसवेदे विसे० । दाणंतराइय० विसेसा० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतराइय० विसेसा० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलण० विसे० । णीचागोद० विसे० । उच्चागोद० विसेसा०, खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सण्णीसुप्पज्जिय संजमासंजमं घेत्तूण पुणो मिच्छत्तं पडिवज्जिय गुणसेडीओ गालिय पुणो वि संजमासंजमं पडिवज्जिय आवलियसंजदासंजदस्स उदयट्ठिदिग्गहणादो । सादासादाणं

है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है। निद्रानिद्राका विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। तिर्यंचआयुका असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। जुगुप्साका संख्यातगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। शोकका विशेष अधिक है। रति और अरतिका विशेष अधिक है। नपुंसकवेदका विशेष अधिक है। स्त्री और पुरुष वेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिकस्वरूपसे आकर, संज्ञियोंमें उत्पन्न होकर, संयमासंयमको ग्रहणकर, फिर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर, गुणश्रेणियोंको गलाकर, फिरसे भी संयमासंयमको प्राप्त होकर आवली मात्र संयतासंयतकी उदयस्थिति यहां ग्रहण की गयी है। उच्चगोत्रके जघन्य प्रदेशोयसे साता व असाता वेदनीयका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है। इस प्रकार

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रती 'दुगुंछाए० विसे० सोगे०', काप्रती 'दुगुंछाए विसेसं गए सोगे०', ताप्रती 'दुगुंछाए संखेजगुणो । सोगे' इति पाठः ।

विसेसाहिओ । एवं तिरिक्खगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे० गुणो । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसणावरण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणो । ओहिदंस० विसे० । मणुस्साउअ० असंखे० गुणो। ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । वेउ० विसे० । तेया० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुसगईए संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसेसाहियो । दुगुंछाए संखे० गुणो । भय० विसे० । हस्स-सोगे विसे० । रदि-अरदि० विसे० । अण्णदरवेदे तुल्लो विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपज्जवणाणावरणे विसे० । सुदणाणावरणे विसे० । मदिआवरणे विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्च-णीच० विसे० । सादासाद० विसे० । आहारसरीर० असंखे० गुणो । तित्थयर० असंखे० गुणो । एवं मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

तिर्यंचगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका तुल्य विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । ऊंच व नीच गोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । आहारशरीरका असंख्यातगुणा है । तीर्थंकरप्रकृतिका असंख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

देवगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। सम्मत्ते असंखे० गुणो। अपच्चक्खाणे असंखे० गुणो। पच्चक्खाणे विसेसा०। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाणावरणे असंखे० गुणो। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। केवलदंस० विसे०। दुगुंछाए अणंतगुणो। भय० विसे०। हस्स० विसे०। रदि० विसे०। पुरिसवेदे० विसे०। संजलणाए अण्णदर० विसे०। ओहिणाण० असंखे० गुणो। ओहिदंसण० विसे०। देवाउ० असंखे० गुणो। वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। देवगइ० असंखे० गुणो। जसकित्तीए विसे०। अजसकित्तीए विसे०। सोगे संखे० गुणो। अरदि० विसे०। इत्थिवेद० विसे०। दाणंतरा० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदि० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। उच्चागोदे विसे०। सादासाद० तुल्लो विसेसाहिओ। एवं देवगईए जहण्णपदेसुदयदंडओ समत्तो।

असण्णीसु जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो सासणपच्छायदं पडुच्च उदीरणोदओ त्ति। अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो। केवलणाणा० असंखे० गुणो। पयला०

देवगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। प्रचलाका विशेष अधिक है। निद्राका विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। जुगुप्साका अनन्तगुणा है। भयका विशेष अधिक है। हास्यका विशेष अधिक है। रतिका विशेष अधिक है। पुरुषवेदका विशेष अधिक है। संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। देवायुका असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कार्मणशरीरका विशेष अधिक है। देवगतिका असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिका विशेष अधिक है। अयशकीर्तिका विशेष अधिक है। शोकका संख्यातगुणा है। अरतिका विशेष अधिक है। स्त्रीवेदका विशेष अधिक है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। उच्चगोत्रका विशेष अधिक है। साता व असाता वेदनीयका तुल्य विशेष अधिक है। इस प्रकार देवगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ।

असंज्ञी जीवोंमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है, यह सासादन गुणस्थानसे पीछे मिथ्यात्वमें आये हुए जीवकी अपेक्षा उदीरणोदय स्वरूप है। अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें

विसे० । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । णिरयाउ० अणंतगुणो । देवाउ० विसेसा० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । मणुसाउ० विसेसा० । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसेसाहिओ । कम्मइय० विसे० । वेउव्विय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसे० । मणुसगई० विसे० । देवगई० विसे० । णिरयगई० विसे० । दुगुंछाए संखे० गुणो । भय० विसे० । हस्स-सोगे विसे० । रदि-अरदि० विसेसा० । अण्णदरवेदे विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतरा० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाणा० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदि० विसेसा० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाए विसे० । णीचागोद० विसे० । उच्चागोदे विसे० । सादासादाणं विसेसा० । एवमसण्णिपंचिंदिएसु जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

एत्तो भुजगारपदेसउदओ । तत्थ अट्ठपदं— जमेण्हिं पदेसग्गमुदिण्णं तत्तो

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नारकायुका अनन्तगुणा है । देवायुका विशेष अधिक है । तिर्यंचआयुका असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुका विशेष अधिक है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवगतिका विशेष अधिक है । नरकगतिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

यहां भुजाकार प्रदेशोदयका अधिकार है । उसमें अर्थपद कहा जाता है— इस समय

अणंतरउवरिमसमए बहुपदेसग्गे उदिदे एसो भुजगारो णाम। जमेण्हिपदेसग्गमुदिदं अणंतरउवरिमसमए तत्तो थोवदरे पदेसग्गे उदयमागदे एसो अप्पदरउदओ णाम। तत्तिए तत्तिए चेव पदेसग्गे उदयमागदे अवट्ठिदउदओ णाम। अणंतरादीदसमए उदएण विणा एण्णिमुदयमागदे एसो अवत्तव्वउदओ णाम। एदेण अट्ठपदेण सामित्तं। तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदओ कस्स ? अण्णदरस्स। एवं सव्वकम्माणं। णवरि जासिं पयडीणमवत्तव्वमत्थि तं जाणिय वत्तव्वं।

एयजीवेण कालो। तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगारउदओ केवचिरं कालादो होदि ? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदरउदओ केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिदवेदगो केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं मदिआवरणभंगो।

अचक्खु ओहि-केवलदंसणावरणाणं पि मदिआवरणभंगो। णिद्दाए अवट्ठिदवेदगो केवचिरं० ? जह० एगसमओ,उक्क० संखेज्जा समया। भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं० ?

जो प्रदेशाग्र उदयको प्राप्त है उससे अनन्तर आगेके समयमें बहुत प्रदेशाग्रके उदित होनेपर यह भुजाकार प्रदेशोदय कहा जाता है। जो इस समय प्रदेशाग्र उदित है उससे अनन्तर आगे-के समयमें स्तोकतर प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर यह अल्पतर प्रदेशोदय कहलाता है। उतने उतने मात्र प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर अवस्थित प्रदेशोदय कहलाता है। अनन्तर वीते हुए समयमें उदयके विना इस समय उदयको प्राप्त होनेपर यह अवक्तव्य उदय कहा जाता है। इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरण-का भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदय किसके होता है ? वह अन्यतर जीवके होता है। इसी प्रकारसे सब सब कर्मोंके सम्बन्धमें स्वामित्वका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि जिन प्रकृतियोंका अवक्तव्य प्रदेशोदय है उसका कथन जानकर करना चाहिये।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अल्पतर उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है।

अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी भी प्ररूपणा मतिज्ञाना-वरणके समान है। निद्राका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। उसका भुजाकार और अल्पतर वेदक कितने काल

१ ताप्रतौ 'मत्थित्त' इति पाठः।

जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तो। एवं सेसचदुण्णं दंसणावरणीयपयडीणं। सोलस-कसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिद्दाभंगो। सादस्स भुजगार-अप्पदरउदओ केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा[1]। अवट्ठिदउदओ केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० संखे० समया। असादस्स भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं०? जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया।

सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। सम्मत्त० भुजगारवेदग० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। तिण्णं पि वेदाणं मदिआवरणभंगो। णिरयाउअस्स अप्पदर-अवत्तव्वपदाणि अत्थि, सेसपदाणि णत्थि। तेण तत्थ कालो सुगमो। मणुस्साउअस्स भुजगारवेदओ[2] जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु० विसेसाहिओ, गोवुच्छरयणाए उक्कस्सियाए वि अंतोमुहुत्तदीहत्तादो। अवट्ठिदवेदगो जह० एगसमओ, उक्क० अट्ठसमया। मणुस्साउअस्स अप्पदरउदओ जह०

रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है। साता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास रहता है। उसका अवस्थित उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है। असाता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र होता है।

सम्यग्मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र होता है। सम्यक्त्व प्रकृतिका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम छ्यासठ सागरोपम मात्र होता है। मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है। तीनों भी वेदोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। नारकायुके अल्पतर और अवक्तव्य ये दो पद हैं, शेष पद नहीं हैं। इस कारण उसके विषयमें कालप्ररूपणा सुगम है। मनुष्यायुका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्त विशेष अधिक काल तक रहता है, क्योंकि, उत्कृष्ट भी गोपुच्छरचना अन्तर्मुहूर्त दीर्घ होती है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय मात्र रहता है। मनुष्यायु-

१ अप्रतौ 'उक्क० अंतोमुहुत्तं छम्मासा' इति पाठः। २ अप्रतौ 'भुजगारउदओ' इति पाठः।

एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि समऊणाणि। तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअभंगो। देवाउअस्स णिरयाउअभंगो।

णिरयगइणामाए भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। मणुसगइ-तिरिक्खगइ-देवगइणामाणं णिरयगइभंगो।

ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं मदिआवरणभंगो। आहारसरीरस्स णिद्दाए भंगो। समचउरससंठाण-वज्जरिसहणारायणसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो। चदुसंठाण-पंचसंघडणाणं भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। अवट्ठिदं सुगमं। हुंडसंठाण-णीचागोदाणं मदिआवरणभंगो। उज्जोवणामाए भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं भुजगारो अप्पदरो वा उक्क० अंतोमुहुत्तं। सेसं सुगमं। एसुवदेसो णागहत्थिखमणाणं[1]।

का अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तीन पल्योपम मात्र रहता है। तिर्यंच आयुकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है। देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है।

नरकगति नामकर्मका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है। उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है। उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय रहता है। मनुष्यगति, तिर्यंचगति और देवगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है।

औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। आहारशरीरकी प्ररूपणा निद्राके समान है। समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। चार संस्थान और पांच संहननोंका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र रहता है। उनके अवस्थित उदयकी प्ररूपणा सुगम है। हुण्डकसंस्थान और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। उद्योत नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है। आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मोंका भुजाकार और अल्पतर उदय उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है। शेष प्ररूपणा सुगम है। यह उपदेश नागहस्ती श्रमणका है।

१ अ-काप्रत्योः 'खवगाणं', ताप्रतौ 'खवणाणं' इति पाठः।

अण्णेणं[1] उपएसेण मदिआवरणस्स भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि सव्वट्ठे[2]। अप्पदरवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि संखेज्जवस्सब्भहियाणि णेरइयस्स[3] संकिलेसेण। सुद मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चदुण्णं दंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। असादस्स भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। अप्पदर० पलिदो० असंखेज्जदिभागो। णिरयगइणामाए भुजगारवेदओ अप्पदरवेदओ वा तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। णिरयगइणामाए अप्पदरवेदयकालस्स साहणं[4] वुच्चदे। तं जहा— णिसेयगुणहाणिट्ठाणाणंतरं थोवं। जोगट्ठाणेसु जीवगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि। मणुसगइणामाए तिरिक्खगइणामाए च भुजगारो अप्पदरो[5] च तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। देवगइणामाए भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरो०देसूणाणि। ओरालियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं पढमसंघडणस्स मणुसगइभंगो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो। सव्वासिं धुवबंधपयडीणं परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं च देवगइभंगो। अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-असुभ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं णिरयगइभंगो। उज्जोवणामाए ओरालियसरीरभंगो। उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णाणावरण-

अन्य उपदेशके अनुसार मतिज्ञानावरणके भुजाकार वेदकका काल सर्वार्थसिद्धिमें कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। उसके अल्पतर वेदकका काल नारकीके संक्लेशके कारण संख्यात वर्ष अधिक तेतीस सागरोपम मात्र है। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। आसातावेदनीयके भुजाकार वेदकका काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है। उसके अल्पतर वेदकका काल पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। नरकगति नामकर्मके भुजाकारवेदक व अल्पतर वेदकका काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है। नरकगति नामकर्मके अल्पतर वेदकके कालका साधन कहा जाता है। वह इस प्रकार है— निषेकगुणहानिस्थानोंका अन्तर स्तोक है। योगस्थानोंमें जीवगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्म और तिर्यंचगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तीन पल्योपम काल मात्र रहता है। देवगति नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है। औदारिकशरीर व उसके आंगोपांग, बन्धन और संघातका तथा प्रथम संहननकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरआंगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी तथा परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा भी देवगतिके समान है। अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्तिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान

१ अप्रतौ 'अणेण' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'देसूणाणि। सव्वट्ठे' इति पाठः ३ ताप्रतौ 'वस्सब्भहियाणि। णेरइयस्स' इति पाठः। ४ मप्रतौ 'साहूणं' इति पाठः। ५ अ-काप्रत्योः 'भुजगारअप्पदरो' इति पाठः।

भंगो। णीचागोदस्स भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि। एदम्हि उवदेसे जाणि कम्माणि ण भणिदाणि तेसिं कम्माणं णत्थि दो उवदेसा, पढमेण चेव उवदेसेण[1] ताणि णेयव्वाणि।

एयजीवेण अंतरं[2] पवाइज्जंतेण उवएसेण वत्तइस्सामो। तं जहा— णाणावरणस्स भुजगारवेदयंतरं अप्पदरवेदयंतरं वा जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठिदवेदयंतरं जह० एयसमओ, उक्क० अणंतकालं। चदुण्णं दंसणावरणीयाणं णाणावरणभंगो। सव्वकम्माणमवट्ठियवेदयंतरस्स वि णाणावरणभंगो। सेसाणं कम्माणं भुजगार-अप्पदरवेदयंतरं पगदिउदयादो भुजगारकालादो[3] च साधेदूण भाणियव्वं। णाणाजीवेहि कालो अंतरं सण्णियासो च एत्थ कायव्वो।

एत्तो अप्पाबहुअं। तं जहा— मदिआवरणस्स अवट्ठिदवेदया थोवा। अप्पदरवेदया अणंतगुणा। भुजगारवेदया संखेज्जगुणा। सुद-मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो। णिद्दाए अवट्ठिदवेदया थोवा। अवत्तव्ववेदया अणंतगुणा। अप्पदरवेदया असंखे० गुणा। भुजगारवेदया संखे०

है। उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। नीचगोत्रका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है। इस उपदेशमें जिन कर्मोंका कथन नहीं किया गया है उन कर्मोंके विषयमें दो उपदेश नहीं हैं, उनको प्रथम ही उपदेशके अनुसार ले जाना चाहिये।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा प्रवाहस्वरूपसे आये हुए उपदेशके अनुसार की जाती है। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणके भुजाकारवेदक और अल्पतरवेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। उसके अवस्थित-वेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है। चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अन्तरकालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। सब कर्मोंके अवस्थितवेदकके अन्तरकालकी भी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। शेषकर्मोंके भुजाकार व अल्पतर वेदकोंके अन्तरकालका कथन प्रकृतिउदय और भुजाकारकालसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, अन्तर और संनिकर्षका भी कथन यहांपर करना चाहिये।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्राके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं।

---

१ ताप्रतौ 'चेव [दो] उवदेसेण' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'अंतरे' इति पाठः। ३ प्रतिषु '-कालो' इति पाठः।

गुणा । पयला-णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिद्दाभंगो । मिच्छत्तस्स अवत्तव्ववेदया थोवा । अवट्ठिदवेदया अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । सम्मत्तस्स अवट्ठिदवेदया थोवा । भुजगारवेदया संखे० गुणा[1] । अवत्तव्ववेदया असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिद० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । णवुंसयवेदस्स[2] मिच्छत्तभंगो । इत्थि-पुरिसवेदाणं अवट्ठिदवेदया थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसेसा० ।

देव-णेरइयाउआणं अवत्तव्ववेदया थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । मणुसाउअस्स[3] अवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्ववेदया असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर-वेदया संखे[5]० गुणा । तिरिक्खाउअस्स अवत्तव्ववेदया थोवा । अवट्ठिदवेदया अणंतगुणा । भुजगारवेदया अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।

णिरयगइणामाए अवट्ठिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । तिरिक्खगइणामाए अवत्तव्व० थोवा । अवट्ठिद० अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । मणुसगइणामाए अवट्ठिद०

भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, सातावेदनीय, असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है । मिथ्यात्वके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकार-वेदक, संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं ।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । मनुष्यायुके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असं-ख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं । तिर्यंचआयुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं ।

नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । तिर्यंचगति नामकर्मके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार-

---

१ सत्कर्मपंजिकायां 'असंखेज्जगुणा' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'णवुंसयवेदयस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'असंखे० गुणा ।''''''। मणुसाउअस्स' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'उच्चागोद०', ताप्रतौ 'उच्चागोद० (अवट्ठिद०) इति पाठः । ५ सत्कर्मपंजिकाया 'अस०' इति पाठः ।

थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० विसे०। भुजगार० असंखे० गुणा। देवगदिणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसे०। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-परघाद-उज्जोव-उस्सास-बादर-सुहुम-साहारण-जसकित्ति-अजसकित्तीणं अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाणाणं देवगइभंगो।

जाओ पयडीओ धुवबंधीओ ताणमवट्ठिदवेदया थोवा। अप्पदर० अणंतगुणा। भुजगार० संखे० गुणा। असंपत्तसेवट्ट० अवट्ठिद० थोवा। अप्पदर० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। चदुण्णं संठाणाणं पंचण्णं संघडणाणं च अवट्ठिय० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। णिरयाणुपुव्वीणामाए अवट्ठिद० थोवा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० विसे०। अवत्तव्व० विसे०। एवं देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए। मणुस्साणुपुव्वीणामाए अवट्ठिय० थोवा। भुजगार० असंखे० गुणा। अवत्तव्व० विसे०। अप्पदर० विसेसा०। एवं तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए। णवरि भुजगार० अणंतगुणा।

आदाव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सरणामाणं अवट्ठिदवेदया थोवा। अवत्त० असंखे०

वेदक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। देवगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं। औदारिकशरीर, हुण्डकसंस्थान, परघात, उद्योत, उच्छ्‌वास, बादर, सूक्ष्म, साधारण, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीर और समचतुरस्रसंस्थानकी प्ररूपणा देवगतिके समान है।

जो प्रकृतियां ध्रुवबन्धी हैं उनके अविस्थतवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। असंप्राप्तासृपाटिकासंहननके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजारवेदक असंख्यातगुणे हैं। चार संस्थानों आर पांच संहननोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। नारकानुपूर्वीके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं। अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा करना चाहिये। मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक हैं। अल्पतरवेदक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार तिर्यगानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा है। विशेष इतना है कि उसके भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं।

आतप, अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वर नामकर्मोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं।

गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। थावर-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिरिक्खगइभंगो। अपज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्पदर० संखे० गुणा। सुस्सरणामाए अवट्ठिय० थोवा। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा। भुजगार० संखे० गुणा। पज्जत्त-णामाए अवट्ठिद० थोवा। अवत्तव्व० अणंतगुणा। भुजगार० असंखे० गुणा। अप्प-दर० संखे० गुणा।

ट्ठिदीणं[1] बंधेण ओकड्डुकड्डणाए [च] पदेसुदयस्स वड्ढी हाणी वा होदि, एदेण हेदुणा पदेसुदयभुजगारे अण्णारिसं[2] अप्पाबहुअं भवदि। तं जहा– णिरयगइणामाए थोवा अवट्ठिय०। अवत्तव्व० असंखे० गुणा। अप्पदर० असंखे० गुणा[3]। भुजगार० असंखे०[4] गुणा। एदेण अणुमाणेण मग्गिदूण[5] सव्वकम्माणं णेयव्वं। एदं पुणो हेदुणा अप्पाबहुअं ण पवाइज्जदि[6]। एवं पदेसभुजगारो समत्तो।

एत्तो पदणिक्खेवो– मदिणाणावरणस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसिओ अप्पाए सम्मत्तद्धाए संजमद्धाए च सव्वलहुं चरिमसमयछदुमत्थो जादो तस्स चरिम-

अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। अपर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यात-गुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं। सुस्वर नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्य-वेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं। पर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं।

स्थितियोंके बन्ध, अपकर्षण और उत्कर्षणसे प्रदेशोदयकी वृद्धि और हानि होती है; इस हेतुसे प्रदेशोदय सम्बन्धी भुजाकारके विषयमें अन्य प्रकार अल्पबहुत्व होता है। यथा— नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं। अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं। अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं। भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं। इस अनुमानसे खोजकर सब कर्मोंके उक्त अल्पबहुत्वको ले जाना चाहिये। परन्तु यह हेतुप्ररूपित अल्पबहुत्व परम्परागत नहीं है। इस प्रकार प्रदेशभुजाकार समाप्त हुआ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणाकी जाती है— मतिज्ञानावरण की उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक जीव अल्प सम्यक्त्वकालमें और अल्प संयमकालमें शीघ्र ही अन्तिम

१ ताप्रतौ 'संखे० गुणा। गुणट्ठिदीणं' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'भुजगारण्णारिसं', ताप्रतौ 'भुज-गार० अण्णासि' इति पाठः। ३ अप्रतौ नास्तीदं वाक्यम्। ४ सत्कर्मपंजिकायां तु 'संखे०' इति पाठः। ५ प्रतिषु 'मज्झिदूण' इति पाठः। सत्कर्मपंजिकायामेतस्य स्थाने 'अणुमाणेऊण' इत्येतत्पदमुपलभ्यते। ६ प्रतिषु 'पाविज्जदि', सत्कर्मपंजिकायां तु 'पवाइज्जदि' इति पाठः।

समयछदुमत्थस्स पढमसमयओहिलद्धस्स उक्क० मदिआवरणस्स पदेसुदयवड्ढी। कुदो? ओहिणाणवुड्ढीए अणहिमुहस्स[1] गुणसेडिपदेसगुणगारादो तदहिमुहगुणसेडिपदेसगुणगारस्स असंखे० गुणत्तादो। कधमेदं णव्वदे? सुत्तण्णहाणुववत्तीदो। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पुण झीयमाणोहिक्खओवसमाणं[2] तत्तो तग्गुणयारवड्ढी असंखे० गुणा।

एवं सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु[3]-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च वत्तव्वं। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० वड्ढी कस्स? चरिमसमयछदुमत्थस्स, जस्स पढमसमयणट्ठा ओही, तस्स। णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? उवसंतकसायस्स जाधे सगपढमसमयगुणसेडिसीसयं पवेदेदि[4] तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गसंकिलिट्ठो होदूण से काले सव्वविसुद्धो जादो तस्स सव्वविसुद्धस्स जं गुणसेडिसीसयं तम्हि उदयमागदे जो थीणगिद्धितियस्स अण्णदरिस्से पयडीए पढमसमयवेदगो तस्स

समयवर्ती छद्मस्थ हुआ है उस प्रथम समयवर्ती अवधिलब्धियुक्त अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके मतिज्ञानावरण सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशोदयवृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि जो जीव अवधिज्ञानकी वृद्धिके अभिमुख नहीं है उसके गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकारकी अपेक्षा तदभिमुख जीवका गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकार असंख्यातगुणा होता है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— वह सूत्रकी अन्यथानुपपत्तिसे जाना जाता है।

परन्तु हीयमान अवधिक्षयोपशम युक्त अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उक्त गुणकारवृद्धि उससे असंख्यातगुणी है।

इसी प्रकार (मतिज्ञानावरणके समान) श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिके स्वामीका कथन करना चाहिये।

अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके अवधिलब्धि नष्ट होनेके प्रथम समयमें होती है। निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह उपशान्तकषाय जीवके होती है, जब वह अपने प्रथम समय सम्बन्धी गुणश्रेणिशीर्षका वेदन करता है, तब उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो अधःप्रवृत्तसंयत जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशसे संयुक्त होकर अनन्तर कालमें सर्वविशुद्धिको प्राप्त होता है उस सर्वविशुद्ध जीवका जो गुणश्रेणिशीर्ष है उसके उदयको प्राप्त होनेपर जो स्त्यानगृद्धि आदि तीनमेंसे अन्यतर प्रकृतिका प्रथम समयवर्ती वेदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट

१ अप्रतौ 'अणहिमाहस्स', काप्रतौ 'अणहिप्पायस्स', ताप्रतौ 'अणहिमा (मु) हस्स' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'ओहिणाणोहिदंसणावर [णा•] ण पुण झीयमाणेहि खओवसमाणं' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'केवलणाणावर [णा] णं चक्खु' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'वेदेदि' इति पाठः।

उक्क० वड्ढी।

चदुण्णं णाणावरणीयाणं तिण्णं दंसणावरणीयाणं उक्क० हाणी कस्स ? जो पढमसमयउवसंतकसाओ मदो संतो से काले देवो[1] जादो तस्स अंतोमुहुत्तदेवस्स जाधे गुणसेडिसीसयं पढमसमयणिज्जिण्णं ताधे उक्क० हाणी। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० हाणी कस्स ? परिवदमाणयस्स सुहुमसांपराइयस्स जाधे अपच्छिमं गुणसेडिसीसयं णिज्जरिज्जमाणं णिज्जिण्णं ताधे तस्स उक्क० हाणी। णवरि पढमसमयउप्पण्णओहिणाणस्से त्ति वत्तव्वं।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीयाणमुक्कस्समवट्ठाणं कस्स ? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसादो तप्पाओग्गमज्झिमपरिणामुक्कस्सविसोहिं गदो से काले वि तारिसिं विसोहिं गदो जहा पलिदो० असंखे० भागपडिभागब्भहिया गुणसेडी जादो, जाधे एदाणि गुणसेडिसीसयाणि पवेदेदि ताधे तस्स उक्कस्समवट्ठाणं। एवं सेसाणं पि कम्माणं उक्कस्सवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं सामित्तं जाणिऊण वत्तव्वं।

जहण्णिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च सव्वकम्माणमेको पदेसो अण्णदरस्स भवे। णवरि देवणिरयाउअ-तित्थयरणामकम्माणि मोत्तूण वत्तव्वं।

वृद्धि होती है।

चार ज्ञानावरणीय और तीन दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो प्रथम समयवर्ती उपशान्तकषाय जीव मरकर अनन्तर कालमें देव हो जाता है उस अन्तर्मुहूर्तवर्ती देवका गुणश्रेणिशीर्ष जब प्रथम समय निर्जराप्राप्त होता है तब उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट हानि होती है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? श्रेणिसे गिरते हुए सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका जब निर्जीर्यमाण अन्तिम गुणश्रेणिशीर्ष निर्जीर्ण हो चुकता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है। विशेष इतना है कि अवधिज्ञान उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें, यह कहना चाहिये।

पांच ज्ञानावरणीय और नौ दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो अधःप्रवृत्त संयत जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे तत्प्रायोग्य मध्यम परिणाम रूप उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त होता है व अनन्तर कालमें भी वैसी विशुद्धिको प्राप्त होता है जिससे गुणश्रेणि पल्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अधिक हो जाती है, जब वह इन गुणश्रेणिशीर्षकोंका वेदन करता है तब उसके उपर्युक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान होता है। इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि व अवस्थानके स्वामित्वको जानकर कथन करना चाहिये।

सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान एक प्रदेश स्वरूप होकर अन्यतर जीवके होते हैं। विशेष इतना है कि देवायु, नारकायु और तीर्थंकर नामकर्मको छोड़कर यह कथन करना चाहिये।

---

१ अप्रतौ 'मदो संते से काले देवे' इति पाठः।

एत्तो अप्पाबहुअं– पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। उक्कस्सिया हाणी असंखेज्जगुणा। उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा। णिद्दा-पयलाणं पि उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। उक्क० हाणी असं० गुणा। वड्ढी असंखेज्जगुणा। णिद्दाणिद्दा-पयला-पयला-थीणगिद्धि-मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असं० गुणा। हाणी विसेसा०। अट्ठण्णं कसायाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसेसा०। सम्मत्त-णवणोकसाय-चदुसंजलणाणं णाणावरणभंगो। सम्मा-मिच्छत्तस्स मिच्छत्तभंगो। देव-णिरयाउआणं उक्क० हाणी कस्स? दसवस्ससहस्साउ-ट्ठिदीएसु देव-णेरइएसु उववण्णस्स दुसमयतब्भवत्थस्स। वड्ढी अवट्ठाणं वा णत्थि। मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी विसे-साहिया। तिण्णं गइणामाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं। वड्ढी असंखे० गुणा। हाणी विसे०। मणुसगइणामाए उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। ओरालियसरीरणामाए मणुसगइभंगो। तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-पढमसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-सुभग-आदेज्ज-सुस्सर-दुस्सर-णिमिणुच्चा-गोदाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं। हाणी असंखे० गुणा। वड्ढी असंखे० गुणा। वेउव्विय-आहार

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं– पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। निद्रा व प्रचलाका भी उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। उत्कृष्ट हानि असंख्यात-गुणी है। उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। आठ कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। सम्यक्त्व, नौ नोकषाय और चार संज्वलन कषायोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिसे युक्त देवों व नारकियोंमें उत्पन्न हुए जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है। उनकी वृद्धि व अवस्थान नहीं हैं। मनुष्यायु और तिर्यगायुका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि विशेष अधिक है। तीन गति नामकर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। हानि विशेष अधिक है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि असंख्यातगुणी है। औदारिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। तैजसशरीर, कार्मणशरीर, छह संस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, सुस्वर, दुस्वर, निर्माण और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है। हानि असंख्यातगुणी है। वृद्धि

सरीर-पंचसंघडण-चदुआणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसे० ।

देव-णिरयाउअ-तित्थयरवज्जाणं सव्वकम्माणं पि जहण्णवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि तुल्लाणि, एगपदेसपमाणत्तादो । तित्थयरणामाए जह० हाणी अधापमत्तकेवलिगुणसेडि-सीसएसु उदयमागदेसु । जह० वड्ढी दुसमयकेवलिस्स । तदो हाणी थोवा । जह० वड्ढी असंखे० गुणा । अवट्ठाणं जहण्णमुक्कस्सं वा णत्थि । तित्थयरणामाए जह० हाणी थोवा । उक्क० हाणी विसेसा० । जह० वड्ढी असंखे० गुणा । उक्क० वड्ढी असंखे० गुणा । एवं पदणिक्खेवा समत्तो । एत्तो वड्ढिउदए अप्पाबहुए कदे तदो उदए त्ति अणि-योगद्दारं समत्तं होदि ।

असंख्यातगुणी है । वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, पांच संहनन, चार आनुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है ।

देवायु, नारकायु और तीर्थंकर प्रकृतियोंको छोड़कर सभी कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तुल्य हैं; क्योंकि, वे एक प्रदेश प्रमाण हैं। तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य हानि अधःप्रवृत्त केवली गुणश्रेणिशीर्षकोंके उदयप्राप्त होनेपर होती है । उसकी जघन्य वृद्धि द्वितीय समयवर्ती केवलीके होती है । इस कारण उसकी हानि स्तोक है और जघन्य वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है । उसका जघन्य व उत्कृष्ट अवस्थान नहीं है । तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य हानि स्तोक है। उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है । जघन्य वृद्धि असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ । यहां वृद्धिउदय विषयक अल्पबहुत्वके करनेपर उदय-अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

उदयानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

